DILCHASP MALOOMAT (HINDI)

92 मौज़ूआत पर मुश्तमिल मदनी चैनल के सिलसिले
ज़ेह्नी आज़माइश का तहरीरी मदनी गुलदस्ता

हिस्सा 1

दिलचस्प मा'लूमात

(सुवालन जवाबन)

इश्क़ के बोल

इल्म नूर है

कुरआनी मा'लूमात

जोश के साथ मगर होश से

ZEHNI AZMAISH

DAWAT-E-ISLAMI

المدینۃ العلمیۃ
(دعوتِ اسلامی)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : *शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी* دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या **इस्लामी सबक़** पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई **दुआ** पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे **याद रहेगा**। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : *ऐ* ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ *! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले !*

(اَلْمُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** सब से ज़ियादा **ह़सरत** क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में **इ़ल्म ह़ासिल** करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने **इ़ल्म ह़ासिल किया** और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस **इ़ल्म** पर अ़मल न किया)

(تاریخِ دمشق لابن عساکر، ج ۵۱ ص ۱۳۸ دار الفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो ***मक्तबतुल मदीना*** *से रुजूअ़ फ़रमाइये।*

www.dawateislami.net

मजलिसे तराजिम (हिन्दी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी की मजलिस "अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या" ने येह किताब "दिलचस्प मा'लूमात" उर्दू ज़बान में पेश की है और **मजलिसे तराजिम** ने इस किताब का **हिन्दी रस्मुल ख़त़** करने की सआ़दत ह़ासिल की है [**भाषांतर** (*Translation*) नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** (*Transliteration*) या'नी बोली तो **उर्दू** ही है जब कि लीपि **हिन्दी** की गई है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है। इस किताब में अगर किसी जगह **ग़लत़ी** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए ***Sms***, ***E-mail*** या ***Whats App*** ब शुमूल सफ़्ह़ा व सत़र नम्बर) **मुत्तलअ़** फ़रमा कर सवाबे आख़िरत कमाइये।

मदनी इल्तिजा : इस्लामी बहनें डायरेक्ट राबित़ा न फ़रमाएं।...

राबित़ा :- मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, नागर वाड़ा, बरोडा, गुजरात (अल हिन्द) ☎ 9327776311
E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ी = ی	ु = ؤ	आ = آ	य = ی	ह = ھ	व = و	न = ن

www.dawateislami.net

A-3

दिलचस्प मा'लूमात

हिस्सा 1

(सुवालन जवाबन)

पेशकश

मजलिसे मदनी चैनल

व

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

नाशिर मक्तबतुल मदीना, देहली-6

www.dawateislami.net

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللہ وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحٰبِکَ یَا حَبِیْبَ اللہ

नाम किताब : दिलचस्प मा'लूमात (सुवालन जवाबन) हिस्सा 1

पहली बार : ज़ुल हिज्जतिल हराम, सिने 1438 हिजरी

ता'दाद : 3100

नाशिर : मक्तबतुल मदीना, देहली-6

तस्दीक़ नामा

तारीख़ : 26 रबीउ़स्सानी, सिने 1438 हि. **हवाला नम्बर :** 210

الحمد للّٰہ رب العٰلمین والصلٰوۃ والسلام علٰی سید المرسلین وعلٰی اٰلہ واصحابہ اجمعین

तस्दीक़ की जाती है कि किताब

"दिलचस्प मा'लूमात (सुवालन जवाबन) हिस्सा 1" (उर्दू)

(मत़बूआ़ मक्तबतुल मदीना) पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़रे सानी की कोशिश की गई है। मजलिस ने इसे अ़क़ाइद, कुफ़्रिय्या इबारात और फ़िक़ही मसाइल वग़ैरा के ह़वाले से मक़्दूर भर मुलाह़ज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़लतियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं।

मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल

(दा'वते इस्लामी)

26-12-2016

Web : www.dawateislami.net / E.mail : ilmiapak@dawateislami.net

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं।

www.dawateislami.net

याद दाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़नवान	सफ़ह़ा	उ़नवान	सफ़ह़ा

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस्त

उ़नवान	सफ़्हा	उ़नवान	सफ़्हा
ईमान व अ़क़ाइद		सुन्नतें और नवाफ़िल	66
अल्लाह तआ़ला	9	तरावीह़	69
नुबुव्वत	11	क़ज़ा नमाज़ें	72
फ़िरिश्ते	14	सजदए तिलावत	75
जिन्नात	16	मुसाफ़िर की नमाज़	77
जन्नत	19	जुमुआ़	80
दोज़ख़	21	ईदैन	83
आ़लमे बरज़ख़	24	बीमारी, इयादत और मौत	87
क़ियामत की निशानियां	27	मय्यित का ग़ुस्ल और कफ़न	90
क़ियामत	30	नमाज़े जनाज़ा	93
ईमान व कुफ़्र	32	क़ब्र व दफ़्न	95
विलायत	35	ज़कात	98
मसाइल व अह़काम		सदक़ा	102
त़हारत	38	रोज़ा	105
वुज़ू	41	ह़ज और उ़मरह	108
ग़ुस्ल	44	क़ुरबानी	111
तयम्मुम	46	निकाह़	114
अज़ान व इक़ामत	49	त़लाक़, इ़द्दत और सोग	117
नमाज़	53	क़सम	120
नमाज़ की शराइत़	56	लुक़्त़ा	122
नमाज़ के फ़राइज़	59	वक़्फ़ और चन्दा	125
वाजिबाते नमाज़ और सजदए सह्व	61	मस्जिद	128
नमाज़े वित्र	64	कस्ब और तिजारत	132

www.dawateislami.net

क़र्ज़ और सूद	135	हिर्स	206
सुन्नतें और आदाब		झूट	209
खाना	139	बुग़्ज़ो कीना	212
दा'वत और मेहमान नवाज़ी	141	ह़सद	215
लिबास, अंगूठी और ज़ेवर	144	गुस्सा	218
ज़ीनत	147	तकब्बुर	221
बैठने, सोने और चलने के आदाब	150	रियाकारी	224
सलाम व मुसाफ़ह़ा	153	**सीरत व ह़ालात**	
छींक और जमाही	156	सीरते सय्यिदुल अम्बिया ﷺ	227
क़ब्रों की ज़ियारत	159	सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رضی اللہ عنہ	230
कुरआने करीम		सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رضی اللہ عنہ	235
कुरआने करीम (फ़ज़ाइल व मा'लूमात)	163	सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رضی اللہ عنہ	238
आयात और सूरतों की मा'लूमात	166	सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رضی اللہ عنہ	242
अम्बियाए किराम علیہم الصلوٰۃ والسلام	168	अ़शरए मुबश्शरा رضی اللہ تعالٰی عنہم	246
अच्छी ख़स्लतें		सह़ाबए किराम رضوان اللہ تعالٰی علیہم اجمعین	249
हुस्ने अख़्लाक़	171	उम्महातुल मोमिनीन رضی اللہ تعالٰی عنہن	254
ख़ौफ़े ख़ुदा	174	अह्ले बैते अत़हार رضی اللہ تعالٰی عنہم	257
सिलए रेह़्मी	178	उ़लमा व मुज्तहिदीन رحمہم اللہ تعالٰی	261
सब्रो शुक्र	180	औलिया व सालिह़ीन رحمہم اللہ تعالٰی	264
तौबा व इस्तिग़फ़ार	183	इमामे अह्ले सुन्नत, आ'ला ह़ज़रत رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	267
इ़ल्म के फ़ज़ाइल	186	अमीरे अह्ले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ	271
वालिदैन और इन के हुक़ूक़	189	**मुतफ़र्रिक़ात**	
औलाद और इन के हुक़ूक़	194	ज़िक्रो अज़्कार	274
बुरी ख़स्लतें		दुरूदे पाक	277
ग़ीबत	197	बैअ़त व त़रीक़त	279
बद शुगूनी	200	मुक़द्दस मक़ामात	282
बद गुमानी	203	दा'वते इस्लामी	286

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

"ज़ेह्नी आज़माइश" के 10 हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की "10 निय्यतें"

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ या'नी मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।

(معجم کبیر، ۶/۱۸۵، حدیث: ۵۹۴۲)

दो मदनी फूल :

۞ बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

۞ जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

(1) हर बार ह़म्द व सलात और तअ़व्वुज़ व तस्मिया से आग़ाज़ करूंगा। (इसी सफ़्हे पर ऊपर दी हुई दो अ़रबी इबारात पढ़ लेने से इस पर अ़मल हो जाएगा) (2) रिज़ाए इलाही के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ालआ़ करूंगा। (3) ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगा। (4) क़ुरआनी आयात और अह़ादीसे मुबारका की ज़ियारत करूंगा। (5) जहां जहां "**अल्लाह**" का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और जहां जहां "**सरकार**" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और जहां जहां किसी सह़ाबी या बुज़ुर्ग का नाम आएगा वहां رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه और رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه पढ़ूंगा। (6) रिज़ाए इलाही के लिये इ़ल्म ह़ासिल करूंगा। (7) अगर कोई बात समझ न आई तो उ़लमा से पूछ लूंगा। (8) (अपने ज़ाती नुस्ख़े के) "याद दाश्त" वाले सफ़्हे पर ज़रूरी निकात लिखूंगा। (9) दूसरों को येह किताब पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा। (10) किताबत वग़ैरा में शरई ग़लत़ी मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्तलअ़ करूंगा।

(नाशिरीन वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

www.dawateislami.net

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

अज़ : *शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई* دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى اِحْسَانِهٖ وَبِفَضْلِ رَسُوْلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **"दा'वते इस्लामी"** नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्ने ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मुतअ़द्दिद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस **"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या"** भी है जो **दा'वते इस्लामी** के **उ़लमा व मुफ़्तियाने किराम** كَثَّرَهُمُ اللّٰه تَعَالٰى पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल **छे शो'बे** हैं :

(1) शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत
(2) शो'बए दर्सी कुतुब
(3) शो'बए इस्लाही कुतुब
(4) शो'बए तख़रीज
(5) शो'बए तफ़्तीशे कुतुब
(6) शो'बए तराजिमे कुतुब[1]

"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या" की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना

1.....ता दमे तह़रीर (रबीउ़ल आख़िर 1437 हिजरी) 10 शो'बे मज़ीद क़ाइम हो चुके हैं : (7) फ़ैज़ाने कुरआन (8) फ़ैज़ाने ह़दीस (9) फ़ैज़ाने सह़ाबा व अहले बैत (10) फ़ैज़ाने सह़ाबियात व सालिह़ात (11) शो'बए अमीरे अहले सुन्नत مدظله (12) फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा (13) फ़ैज़ाने औलिया व उ़लमा (14) बयानाते दा'वते इस्लामी (15) रसाइले दा'वते इस्लामी (16) अ़रबी तराजुम। (**मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**)

www.dawateislami.net

अलहाज अल हाफ़िज़ अल क़ारी शाह **इमाम अहमद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को असरे हाज़िर के तक़ाज़ों के मुताबिक़ हत्तल वस्अ सहल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इल्मी, तहक़ीक़ी और इशाअती **मदनी काम** में हर मुमकिन तआवुन फ़रमाएं और **मजलिस** की तरफ़ से शाएअ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुतालआ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **"दा'वते इस्लामी"** की तमाम मजालिस ब शुमूल **"अल मदीनतुल इल्मिय्या"** को **दिन ग्यारहवीं** और **रात बारहवीं** तरक़्क़ी अता फ़रमाए और हमारे हर अमले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर **दोनों जहां की भलाई** का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ में मदफ़न और **जन्नतुल फ़िरदौस** में **जगह** नसीब फ़रमाए। اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

रमज़ानुल मुबारक 1425 हि.

कौन कब और कहां मरेगा ?

.....जंगे बद्र के मौक़अ पर हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने चन्द जां निसारों के साथ रात में मैदाने जंग का मुआइना फ़रमाया, उस वक़्त दस्ते अन्वर में एक छड़ी थी। आप उस छड़ी से ज़मीन पर लकीर बनाते हुवे फ़रमा रहे थे कि फ़ुलां काफ़िर के क़त्ल होने की जगह है और कल यहां फ़ुलां काफ़िर की लाश पड़ी हुई मिलेगी। चुनान्चे, ऐसा ही हुवा कि आप ने जिस जगह जिस काफ़िर की क़त्ल गाह बताई थी उस काफ़िर की लाश ठीक उसी जगह पाई गई उन में से किसी एक ने लकीर से बाल बराबर भी तजावुज़ नहीं किया।

(مسلم، کتاب الجهاد والسیر، باب غزوة بدر، ص۹۸۱، حدیث:۱۷۷۸۔ شرح الزرقانی علی المواهب، باب غزوة بدر، الکبری، ۲/ ۲۶۹)

www.dawateislami.net

पेशे लफ़्ज़

इल्मे दीन के दीनी और दुन्यावी बेशुमार फ़वाइद हैं। इल्म की तलाश इबादत....इस की जुस्तजू जिहाद...बे इल्म को सिखाना सदक़ा, और अह्ल को पढ़ाना नेकी है...येह ह़लाल व ह़राम की पहचान....जन्नतियों के रास्ते का निशान है....फ़िरिश्ते इल्म वालों की दोस्ती में रग़बत करते और उन्हें अपने परों से छूते हैं... इन के लिये हर ख़ुश्को तर शै, समन्दर की मछलियां और ख़ुश्की के दरिन्दे व चौपाए इस्तिग़फ़ार करते हैं...बन्दा इल्म के सबब औलिया की मन्ज़िलें पा लेता है और दुन्या व आख़िरत में बुलन्द मर्तबे पर फ़ाइज़ हो जाता है।

इल्म वह्शत में तस्कीन....सफ़र में हम नशीन....तन्हाई का साथी...तंगी व ख़ुशह़ाली में राहनुमा....दुश्मन के मुक़ाबले में हथयार और दोस्तों के ह़क़ में ज़ीनत है....इस के ज़रीए क़ौमों को बुलन्दी व बरतरी दे कर पेश्वा बना दिया जाता है....इल्म जहालत के मुक़ाबले में दिलों की ज़िन्दगी और तारीकियों के मुक़ाबले में आंखों का नूर है....इल्म अ़मल का इमाम है और अ़मल इस के ताबेअ़ है....ख़ुश बख़्तों को इल्म का इल्हाम किया जाता है जब कि बद बख़्तों को इस से मह़रूम कर दिया जाता है।

"दा'वते इस्लामी" के बुन्यादी मक़ासिद में से एक अ़ज़ीम मक़्सद इल्मे दीन की रौशनी फैलाना और दुन्या भर के लोगों को नूरे इल्म से मुनव्वर करना है और इस अहम काम के लिये तह़रीरी, तक़रीरी और इल्मी कोशिशें मुसलसल जारी हैं। दारुल इफ़्ता अह्ले सुन्नत हो या जामिअ़तुल मदीना, अल मदीनतुल इल्मिय्या हो या मक्तबतुल मदीना, दारुल मदीना हो या मुख़्तलिफ़ तरबिय्यती कोर्सिज़ सब का एक ही मक़्सद है कि **"प्यारे आक़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **की प्यारी उम्मत को ज़ेवरे इल्म से आरास्ता किया जाए ताकि वोह अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करे।"**

www.dawateislami.net

"मदनी चैनल" के मुख़्तलिफ़ सिलसिले (प्रोग्राम्ज़) भी इसी मक़्सद की मुख़्तलिफ़ कड़ियां हैं, हर सिलसिला अपनी जगह अहम मगर बा'ज़ सिलसिले अ़वामो ख़वास में बेहद मक़्बूल हैं जिन में **"मदनी मुज़ाकरा"** सरे फ़ेहरिस्त है जिस में क़िब्ला शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه शरई, रूह़ानी, त़िब्बी और समाजी सुवालात के इ़ल्मो ह़िक्मत से भरपूर जवाबात इरशाद फ़रमाते हैं। यूं ही ह़िक्मत भरे अन्दाज़ में मुसलमानों को इ़ल्मे दीन सिखाने के लिये **मदनी चैनल** का सिलसिला **"ज़ेह्नी आज़माइश"** भी मक़्बूल तरीन सिलसिलों में से एक है, इस मक़्बूले आ़म सिलसिले में पूछे जाने वाले सुवालात के जवाबात कुरआनो ह़दीस और मुस्तनद दीनी कुतुब से अख़्ज़शुदा मा'लूमात और मदनी फूलों पर मुश्तमिल होते हैं।

दा'वते इस्लामी की मजलिस **"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या"** ने इन सुवालात व जवाबात को कांट छांट, तन्क़ीह़ व तह़क़ीक़, तक़्दीम व ताख़ीर और तस्ह़ीह़ व तख़रीज के मराह़िल से गुज़ार कर तह़रीरी शक्ल में ब नाम **"दिलचस्प मा'लूमात"** पेश कर दिया है ताकि मा'लूमात का येह ख़ज़ाना किताबी शक्ल में मह़फ़ूज़ हो जाए। फ़िलह़ाल हुज़ूर ताजदारे अम्बिया व ख़ातमुर्रुसुल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुक़द्दस नाम **"मुह़म्मद"** के अ़दद 92 की निस्बत से 92 मौज़ूआ़त रखे गए हैं, हर मौज़ूअ़ के तह़्त बारहवीं शरीफ़ की निस्बत से 12 सुवालात रखे गए हैं और इन को जन्नत के 8 दरवाज़ों की निस्बत से इन 8 उ़नवानात के तह़्त लाया गया है :

(1) ईमान व अ़क़ाइद (2) मसाइल व अह़काम (3) सुन्नतें और आदाब (4) कुरआने करीम (5) अच्छी ख़स्लतें (6) बुरी ख़स्लतें (7) सीरत व ह़ालात (8) मुतफ़र्रिक़ात।

www.dawateislami.net

पेशे नज़र किताब में इल्मे दीन का बहुत बड़ा ख़ज़ाना दिलचस्प सुवालात जवाबात की शक्ल में मौजूद है, किताब मुख़्तलिफ़ शो'बहाए ज़िन्दगी से तअ़ल्लुक़ रखने वाली इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों के लिये यक्सां मुफ़ीद है, सुवालात का अन्दाज़ आसान होने की वज्ह से बच्चे भी इन्तिहाई ज़ौक़ के साथ इस का मुत़ालआ़ कर सकते हैं। फ़र्ज़ उ़लूम के मौज़ूआ़त भी शामिल हैं जो हर मुसलमान के लिये निहायत अहम हैं, साथ ही साथ कसीर सुन्नतें, आदाब और सीरत के ख़ूब सूरत पहलू भी इस किताब में मौजूद हैं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ है कि हमें इस किताब को पढ़ने, इस पर अ़मल करने और दूसरे इस्लामी भाइयों को इस के मुत़ालए़ की तरग़ीब देने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

तफ़्सीर की अहम्मिय्यत

ह़ज़रते इयास बिन मुआ़विया رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : जो लोग कुरआने मजीद पढ़ते हैं और वोह उस की तफ़्सीर नहीं जानते उन की मिसाल उन लोगों की त़रह़ है जिन के पास रात के वक़्त उन के बादशाह का ख़त़ आया और उन के पास चराग़ नहीं जिस की रौशनी में वोह उस ख़त़ को पढ़ सकें तो उन के दिल डर गए और उन्हें मा'लूम नहीं कि उस ख़त़ में क्या लिखा है ? और वोह शख़्स जो कुरआन पढ़ता है और उस की तफ़्सीर जानता है उस की मिसाल उस क़ौम की त़रह़ है जिन के पास क़ासिद चराग़ ले कर आया तो उन्हों ने चराग़ की रौशनी से ख़त़ में लिखा हुवा पढ़ लिया और उन्हें मा'लूम हो गया कि ख़त़ में क्या लिखा है ?

(تفسیر قرطبی، باب ماجاء فی فضل تفسیر القرآن واھلہ، ۱/۴۱، الجزء الاول ملخصاً)

www.dawateislami.net

अल्लाह तआ़ला

सुवाल वाजिबुल वुजूद किस को कहते हैं और इस से क्या मुराद है ?

जवाब ज़ाते बारी तआ़ला को वाजिबुल वुजूद कहते हैं और इस से मुराद वोह ज़ात है जिस का वुजूद ज़रूरी हो ।[1]

सुवाल **अल्लाह** तआ़ला के क़दीम और अज़ली होने का क्या मत़लब है ?

जवाब **अल्लाह** तआ़ला के क़दीम और अज़ली होने का मत़लब येह है कि वोह हमेशा से है ।[2]

सुवाल **अल्लाह** तआ़ला के अबदी होने से क्या मुराद है ?

जवाब **अल्लाह** तआ़ला के अबदी होने से मुराद येह है कि वोह हमेशा रहेगा ।[3]

सुवाल इल्मे ज़ाती का क्या मा'ना है ?

जवाब इल्मे ज़ाती का येह मा'ना है कि बे खुदा के दिये खुद ह़ासिल हो ।[4]

सुवाल इल्मे ज़ाती किस का ख़ास्सा है ?

जवाब इल्मे ज़ाती **अल्लाह** तआ़ला का ख़ास्सा है ।[5]

सुवाल **अल्लाह** तआ़ला की ज़ाती सिफ़ात कौन कौन सी हैं ?

जवाब (1) ह़यात (2) कुदरत (3) सुनना (4) देखना (5) कलाम (6) इल्म और (7) इरादा । येह **अल्लाह** तआ़ला की ज़ाती सिफ़ात हैं ।[6]

---

1 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1, 1 / 2 ।

2 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1, 1 / 3-2 ।

3 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1,1 / 3 ।

4 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1,1 / 11 ।

5 ... الدولة المكية بالمادة الغيبية، ص ٣٩۔

6 ... مسامرة شرح مسايرة، ص ٣٩١۔ حديقة ندية، ١/ ٢٥٣۔

www.dawateislami.net

सुवाल अल्लाह तआ़ला के क़ादिर होने से क्या मुराद है ?

जवाब मुराद येह है कि वोह हर मुमकिन पर क़ादिर है कोई मुमकिन उस की कुदरत से बाहर नहीं ।[1]

सुवाल दुन्या की ज़िन्दगी में जागती आंखों से अल्लाह तआ़ला का दीदार किस के लिये ख़ास है ?

जवाब दुन्या की ज़िन्दगी में अल्लाह तआ़ला का दीदार इमामुल अम्बिया ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये ख़ास है ।[2]

सुवाल आख़िरत में किसे अल्लाह तआ़ला का दीदार नसीब होगा ?

जवाब आख़िरत में हर सुन्नी मुसलमान को अल्लाह तआ़ला का दीदार नसीब होगा ।[3]

सुवाल क्या अल्लाह तआ़ला की ज़ात व सिफ़ात के सिवा कोई चीज़ क़दीम है ?

जवाब जी नहीं बल्कि अल्लाह तआ़ला की ज़ात व सिफ़ात के सिवा सब चीज़ें ह़ादिस हैं या'नी पहले न थीं फिर मौजूद हुईं ।[4]

सुवाल तक़्दीर का मत़लब क्या है ?

जवाब हर भलाई, बुराई उस ने अपने इल्मे अज़ली के मुवाफ़िक़ मुक़द्दर फ़रमा दी है जैसा होने वाला था और जो जैसा करने वाला था अपने इल्म से जाना और वोही लिख लिया । तो येह नहीं कि जैसा उस ने

---

1 ... تفسیر کبیر، پ۱۵، الکھف، تحت الآیۃ: ۲۵، ۷/۴۵۴۔ बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा, 1, 1 / 6

2 ... فتاوی حدیثیۃ، ص۲۰۰۔ المعتقد المنتقد، ص۵۶۔

3 ... بخاری، کتاب التوحید، باب قول اللہ تعالی: وجوہ یومئذ ناضرۃ، ۴/۵۵۱، حدیث: ۷۴۳۷۔ الفقہ الاکبر، ص۸۳۔ बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा, 1, 1 / 21 मुल्तक़त़न ।

4 ... شرح عقائد نسفیۃ، ص۹۸۔

www.dawateislami.net

लिख दिया वैसा हम को करना पड़ता है बल्कि जैसा हम करने वाले थे वैसा उस ने लिख दिया। ज़ैद के ज़िम्मे बुराई लिखी इस लिये कि ज़ैद बुराई करने वाला था अगर ज़ैद भलाई करने वाला होता वोह उस के लिये भलाई लिखता तो उस के इल्म या उस के लिख देने ने किसी को मजबूर नहीं कर दिया।[1]

सुवाल कोई बुराई सरज़द हो जाने पर इसे तक़्दीर की त़रफ़ मन्सूब करना कैसा है ?

जवाब बुरा काम कर के तक़्दीर की त़रफ़ निस्बत करना और मशिय्यते इलाही के ह़वाले करना बहुत बुरी बात है बल्कि हुक्म येह है कि जो अच्छा काम करे उसे मिन जानिबिल्लाह कहे और जो बुराई सरज़द हो उस को शामते नफ़्स तसव्वुर करे।[2]

नुबुव्वत व रिसालत

सुवाल नबी किसे कहते हैं ?

जवाब जिस इन्सान को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हिदायत के लिये वह़्य भेजी हो उसे नबी कहते हैं।[3]

सुवाल रसूल किसे कहते हैं ?

जवाब अम्बियाए किराम में से जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से कोई नई आस्मानी किताब और नई शरीअ़त ले कर आएं वोह रसूल कहलाते हैं।[4]

---

1 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1,1 / 11-12।

2 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1,1 / 19।

3 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1,1 / 28, मुलख़्ख़सन।

4 ... شرح عقائد نسفية، النوع الثانی خبر الرسول ... الخ، ص ۸۲-۸۳۔

www.dawateislami.net

सुवाल वह़्य किसे कहते हैं ?

जवाब वह़्य उस कलाम को कहते हैं जो किसी नबी पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से नाज़िल हुवा हो ।[1]

सुवाल वह़्य की कितनी अक़्साम हैं ?

जवाब अम्बिया के ह़क़ में वह़्य तीन क़िस्म पर है :

(1) **बिल वासित़ा :** फ़िरिश्ते की वसात़त से कलामे रब्बानी नबी के पास आए जैसे जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام का वह़्य लाना ।

(2) **बिला वासित़ा :** फ़िरिश्ते की वसात़त के बिग़ैर ब नफ़्से नफ़ीस कलामे रब्बानी को सुनना जैसे मे'राज की रात हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सुना और कोहे तूर पर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने सुना ।

(3) अम्बियाए किराम के क़ुलूब में मआ़नी का इल्क़ा किया जाए (दिलों में बात डाल दी जाए) ।[2]

सुवाल क्या ग़ैरे नबी के पास वह़्य आ सकती है ?

जवाब वह़्ये नुबुव्वत ग़ैरे नबी के पास नहीं आती, जो इस का क़ाइल हो वोह काफ़िर है ।[3]

सुवाल क्या अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام से गुनाह मुमकिन हैं ?

जवाब जी नहीं, वोह मा'सूम होते हैं उन से किसी भी त़रह़ का कोई भी गुनाह मुमकिन नहीं ।[4]

सुवाल क्या सब अम्बिया पर ईमान लाना ज़रूरी है या किसी एक पर ईमान लाना काफ़ी है ?

---

1 .....नुज़्हतुल क़ारी, 1 / 234 ।

2 .....नुज़्हतुल क़ारी, 1 / 234, मुलख़्ख़सन ।

3 ... المعتقد المنتقد، ص ۱۰۵ ۔شفاء، فصل فی بیان ماھو من المقالات کفر، جزء: ۲، ص ۲۸۵۔

4 ... حدیقۃ ندیۃ، ۱/ ۲۸۸۔

www.dawateislami.net

जवाब जी हां तमाम अम्बिया पर ईमान लाना ज़रूरी है इन में से किसी एक का इन्कार करना सब का इन्कार करना है।[1]

सुवाल सब से पहले और आख़िरी पैग़म्बर का नाम बताएं ?

जवाब सब से पहले पैग़म्बर ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام हैं और सब से आख़िरी पैग़म्बर ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं।[2]

सुवाल अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام को ग़ैब का इ़ल्म होने के बारे में हमारा क्या अ़क़ीदा है ?

जवाब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام को इ़ल्मे ग़ैब अ़त़ा फ़रमाया, ज़मीनो आस्मान का हर ज़र्रा हर नबी के पेशे नज़र है मगर इन को येह इ़ल्मे ग़ैब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दिये से है, लिहाज़ा इन का इ़ल्म अ़त़ाई हुवा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का इ़ल्म ज़ाती।[3]

सुवाल अ़क़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत से क्या मुराद है ?

जवाब अ़क़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत से मुराद येह मानना है कि हमारे आक़ा व मौला ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आख़िरी नबी हैं। या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ात पर सिलसिलए नुबुव्वत को ख़त्म फ़रमा दिया। हुज़ूर के ज़माने में या इस के बा'द क़ियामत तक कोई नया नबी नहीं हो सकता।[4]

सुवाल जो शख़्स ख़त्मे नुबुव्वत को न माने उस के मुतअ़ल्लिक़ क्या हुक्म है ?

---

1 . . . تفسیر مدارک، پ۱۹، الشعراء، تحت الآیۃ: ۱۰۵، ص۸۲۵۔

2 . . . شرح عقائد نسفیہ، اول الانبیاء آدم . . . الخ، ص۳۰۰۔

3 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1,1 / 41-45, मुलख़्ख़सन।

4 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1,1 / 63।

www.dawateislami.net

जवाब जो शख़्स सरवरे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़माने में या आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द किसी को नुबुव्वत मिलने का अ़क़ीदा रखे या किसी नए नबी के आने को मुमकिन माने वोह काफ़िर है।[1]

सुवाल अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ह़याते त़य्यिबा के मुतअ़ल्लिक़ हमारा अ़क़ीदा क्या है ?

जवाब अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ह़याते त़य्यिबा के मुतअ़ल्लिक़ हमारा अ़क़ीदा येह है कि वोह अपनी अपनी क़ब्रों में उसी त़रह़ ब ह़याते ह़क़ीक़ी ज़िन्दा हैं जैसे दुन्या में थे, खाते पीते हैं और जहां चाहें आते जाते हैं।[2]

फ़िरिश्ते

सुवाल फ़िरिश्ते कौन सी मख़्लूक़ हैं ?

जवाब फ़िरिश्ते एक नूरी मख़्लूक़ हैं, वोह मर्द हैं न औ़रत, अलबत्ता वोह मुख़्तलिफ़ शक्लें इख़्तियार कर सकते हैं।[3]

सुवाल फ़िरिश्तों के वुजूद का इन्कार करना या उन्हें नेकी की क़ुव्वत कहना कैसा ?

जवाब फ़िरिश्तों के वुजूद का इन्कार करना या येह कहना कि फ़िरिश्ता नेकी की क़ुव्वत को कहते हैं, इस के सिवा कुछ नहीं। येह दोनों बातें कुफ़्र हैं।[4]

सुवाल इब्लीस ज़लीलो रुस्वा होने से पहले किस मक़ाम पर फ़ाइज़ था ?

---

1 ...المعتقد المنتقد، ص ۱۲۰۔

2 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1,1 / 58।

3 ...منح الروض الازہر، ص ۱۲۔ مسلم، کتاب الزھد، باب فی احادیث متفرقۃ، ص ۱۵۹۷، حدیث: ۲۹۹۶۔

4 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1,1 / 95।

www.dawateislami.net

जवाब इब्लीस जिन्नात में से था मगर बहुत बड़ा आ़बिदो ज़ाहिद था यहां तक कि गुरौहे मलाइका में उस का शुमार था।[1]

सुवाल उन फ़िरिश्तों के नाम बताएं जो तमाम मलाइका पर फ़ज़ीलत रखते हैं?

जवाब ह़ज़रते जिब्राईल, ह़ज़रते मीकाईल, ह़ज़रते इस्राफ़ील और ह़ज़रते इ़ज़राईल (عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام)[2]

सुवाल इन्सान के साथ हर वक़्त रहने वाले दो फ़िरिश्तों को क्या कहते हैं?

जवाब किरामन कातिबीन (या'नी आ'माल लिखने वाले मुअ़ज़्ज़ज़ फ़िरिश्ते)।[3]

सुवाल क़ब्र में सुवाल करने वाले फ़िरिश्तों को क्या कहते हैं?

जवाब उन फ़िरिश्तों को "मुन्कर नकीर" कहते हैं।[4]

सुवाल सब से आख़िर में किस को मौत आएगी?

जवाब सब से आख़िर में ह़ज़रते मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام को मौत आएगी।[5]

सुवाल ह़ज़रते इस्राफ़ील عَلَيْهِ السَّلَام के ज़िम्मे क्या काम है?

जवाब ह़ज़रते इस्राफ़ील عَلَيْهِ السَّلَام के ज़िम्मे क़ियामत के दिन सूर फूंकना है।[6]

सुवाल फ़िरिश्तों की कुल ता'दाद कितनी है?

---

1 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1,1 / 50 - ۳۱ : المدثر ، ۲۹ پ

2 ... تفسیر کبیر، البقرۃ: تحت الآیۃ: ۳۰، ۱/۳۸۶، ملتقطاً۔

3 ... پ۳۰، الانفطار: ۱۱۔

4 ... ترمذی، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی عذاب القبر، ۲/۳۳۷، حدیث: ۱۰۷۳۔

5 ... شرح اصول اعتقاد اھل السنۃ والجماعۃ، ماورد فی کتاب اللہ ... الخ، ۱/۲۰۲۔ الحبائک فی اخبار الملائک، ص ۲۷۲-۲۷۳۔

6 ... الحبائک فی اخبار الملائک، ص ۳۱۔

www.dawateislami.net

जवाब इन की ता'दाद वोही जाने जिस ने इन को पैदा किया और उस के बताए से उस का रसूल ।[1]

सुवाल वोह कौन सा फ़िरिश्ता है जिसे पानी बरसाना और रिज़्क़ देना वग़ैरा ज़िम्मेदारियां सिपुर्द हैं ?

जवाब हज़रते मीकाईल عَلَيْهِ السَّلَام ।[2]

सुवाल तमाम फ़िरिश्तों के सरदार कौन हैं ?

जवाब हज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ।[3]

सुवाल अ़र्श का त़वाफ़ करने वाले फ़िरिश्तों को क्या कहते हैं ?

जवाब जो मलाइका अ़र्श का त़वाफ़ करने वाले हैं उन्हें "करूबी" (کَرُوبِی) कहते हैं और येह मलाइका में साहिबे सियादत हैं ।[4]

जिन्नात

सुवाल जिन्नात कौन हैं ?

जवाब जिन्नात एक मख़्लूक़ है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें आग के शो'ले से पैदा फ़रमाया है, इन में नेक भी हैं और बद भी, येह ऐसे अ़जीबो ग़रीब और मुश्किल काम करने की त़ाक़त रखते हैं जिन्हें करना आ़म इन्सान के बस की बात नहीं ।[5]

सुवाल जिन्न को जिन्न क्यूं कहते हैं ?

---

1 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1,1 / 94 ।

2 ...تفسیر بغوی، النازعات، تحت الآیۃ: ۵: ۴/ ۴۱۱۔

3 ...الحبائک فی اخبار الملائک، ص ۱۹۔

4 .....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान पारह 24, अल मोमिन, तह़तुल आयत, स. 864 ।

5 ...پ۲۷، الرحمن: ۱۵۔ تفسیر قرطبی، پ۲۹، الجن، تحت الآیۃ: ۱۱، ۱۰/ ۱۲۔ حدیقۃ ندیۃ، ۱/ ۷۲۔

www.dawateislami.net

जवाब लुग़त में जिन्न का मा'ना है "सत्र और ख़िफ़ा" और जिन्न को इसी लिये जिन्न कहते हैं कि वोह आ़म लोगों की निगाहों से पोशीदा होता है ।[1]

सुवाल जिन्नात के वुजूद का इन्कार करना कैसा ?

जवाब जिन्नात के वुजूद का इन्कार या बदी की कुव्वत का नाम जिन्न या शैत़ान रखना कुफ़्र है ।[2]

सुवाल अल्लाह तआ़ला ने इन्सानों और जिन्नात में से पहले किस को पैदा फ़रमाया ?

जवाब जिन्नों को इन्सानों से पहले पैदा फ़रमाया, ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام की तख़्लीक़ से दो हज़ार साल पहले ज़मीन पर जिन्नात रहते थे ।[3]

सुवाल जिन्नात कितनी ता'दाद में हैं ?

जवाब इन्सानों के मुक़ाबले में जिन्नात की ता'दाद 9 गुना है ।[4]

सुवाल बुरे जिन्नात को क्या कहा जाता है ?

जवाब बुरे जिन्नात को शयात़ीन कहा जाता है ।[5]

सुवाल जिन्नात से ह़िफ़ाज़त के लिये कुरआने पाक की किन सूरतों और आयात की तिलावत की जाए ?

जवाब (1) आयतुल कुरसी (2) यासीन शरीफ़ (3) सूरए मोमिनून की

---

1 . . . عمدة القاری، کتاب بدء الخلق، باب ذکر الجن وثوابهم وعقابهم، ۱۰/۶۴۴۔

2 .....बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा, 1,1 / 97 ।

3 . . . درمنثور، پ ۱، البقرة، تحت الآیة: ۳۰، ۱/۱۱۱۔ کتاب العظمة، صفة ابتداء الخلق، ص ۲۹۹، حدیث: ۸۹۱۔

4 . . . تفسیر طبری، پ ۱۷، الانبیاء، تحت الآیة: ۹۶، ۹/۸۵، ماخوذاً۔

5 . . . تفسیر کبیر، الکتاب الاول فی العلوم المستنبطة من قوله: اعوذ بالله . . . الخ، الباب الثانی . . . الخ، ۱/۸۵۔

आख़िरी आयात (4) सूरए मोमिन की इब्तिदाई आयत (5) सूरतुल बक़रह (6) सूरए आले इमरान (7) सूरतुल आ'राफ़ (8) सूरए ह़श्र की आख़िरी आयात (9) सूरए इख़्लास (10) सूरतुल फ़लक़ और सूरतुन्नास।[1]

सुवाल क्या इन्सानों की त़रह़ जिन्नात पर शरई अह़काम लागू होते हैं ?

जवाब जी हां ! जिन्नात भी शरीअ़ते मुत़ह्हरा के पाबन्द हैं। मुसलमान जिन्नात नमाज़ पढ़ते, रोज़ा रखते, ह़ज करते, तिलावते कुरआन करते और इन्सानों से दीनी उ़लूम और रिवायते ह़दीस ह़ासिल करते हैं अगर्चे इन्सानों को पता न चले।[2]

सुवाल इमामुल अइम्मा, इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के विसाल पर जिन्नात क्या कह रहे थे ?

जवाब जिन्नात एक दूसरे से कह रहे थे : फ़क़ीह (कुरआनो सुन्नत से अह़काम निकालने और उन्हें वाज़ेह़ करने वाला आ़लिम) चला गया तो अब तुम्हारे लिये कोई फ़क़ीह न रहा लिहाज़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरो और इन के पैरूकार और जा नशीन बनो।[3]

सुवाल क्या जिन्नात ने भी सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत की ख़ुशी मनाई थी ?

जवाब जी हां ! जब हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादते बा सआ़दत हुई तो जबले अबी क़ुबैस और ह़जून के पहाड़ पर जिन्न ने क़सम खा कर येह निदा की : "इन्सानों में से किसी

---

1 .....क़ौमे जिन्नात और अमीरे अहले सुन्नत, स. 159।

2 . . . فتاوی حدیثیة، مطلب الاصح ان الجن لیس فیهم نبی ولا رسول، ص ۹۹، ملتقطاً۔

3 . . . لقط المرجان فی احکام الجان، فی بکاء الجن، ص ۲۰۰۔

www.dawateislami.net

औ़रत ने ऐसा बच्चा नहीं जना जैसा फ़ख़्र व सिफ़ात वाला बच्चा ह़ज़रते आमिना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने जना है।[1]

सुवाल मदीनए मुनव्वरा में नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी की ख़बर सब से पहले किस ने दी थी ?

जवाब येह ख़बर मदीनए मुनव्वरा में सब से पहले एक जिन्न ने दी थी।[2]

सुवाल वोह कौन सी मस्जिद है जिस की ता'मीर जिन्नात से करवाई गई ?

जवाब बैतुल मुक़द्दस।[3]

जन्नत

सुवाल जन्नत क्या है और येह **अल्लाह** तआ़ला ने किस के लिये बनाई है ?

जवाब जन्नत एक मकान है जिसे **अल्लाह** तआ़ला ने ईमान वालों के लिये बनाया है, इस में वोह ने'मतें मुहय्या की हैं जिन को न आंखों ने देखा, न कानों ने सुना, न किसी आदमी के दिल पर इन का ख़त़रा गुज़रा।[4]

सुवाल जन्नत कितनी वसीअ़ है ?

जवाब जन्नत की वुस्अ़त को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के बताए से रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जानें, मुख़्तसर येह कि इस में सौ (100) दरजे हैं।[5]

---

1 ... لقط المرجان فی احکام الجان، نداء الجن ... الخ، ص۱۷۶۔

2 ... معجم اوسط، من اسمہ احمد، ۱/۲۲۴، حدیث: ۷۶۵۔

3 ... تفسیر بغوی، پ۲۲، سبا، تحت الآیۃ: ۱۳، ۳/۴۷۶۔

4 ... مسلم، کتاب الجنۃ وصفۃ نعیمھا واھلھا، ص۱۵۱۶، حدیث: ۲۸۲۴۔ بہارِ شریعت, हिस्सा, 1,1 / 152

5 ... ترمذی، کتاب صفۃ الجنۃ، باب ما جاء فی صفۃ درجات الجنۃ، ۴/۲۳۸، حدیث: ۲۵۳۹۔

www.dawateislami.net

सुवाल जन्नत के दो दरजों के दरमियान कितनी मुसाफ़त है ?

जवाब जन्नत के हर दो दरजों के दरमियान की मुसाफ़त ज़मीनो आस्मान के दरमियान के फ़ासिले के बराबर है ।[1]

सुवाल जन्नत का एक दरजा अपने अन्दर कितनी वुस्अ़त रखता है ?

जवाब ह़दीसे पाक में है कि अगर तमाम आ़लम एक दरजे में जम्अ़ हों तो वोह सब के लिये वसीअ़ है ।[2]

सुवाल जन्नतों की ता'दाद और नाम बताएं ?

जवाब जन्नतें आठ (8) हैं : (1) दारुल जलाल (2) दारुल क़रार (3) दारुस्सलाम (4) जन्नते अ़द्न (5) जन्नतुल मावा (6) जन्नतुल ख़ुल्द (7) जन्नतुल फ़िरदौस (8) जन्नतुन्नईम ।[3]

सुवाल जन्नत के कितने दरवाज़े हैं ?

जवाब जन्नत के त़बक़े बहुत हैं हर त़बक़े का अ़लाहिदा दरवाज़ा है, ख़ुद जन्नत ही के बहुत दरवाज़े हैं ।[4]

सुवाल दारोग़ए जन्नत का नाम बताएं ?

जवाब ह़ज़रते रिज़वान عَلَيْهِ السَّلَام ।[5]

सुवाल अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से जन्नतियों पर सब से आ'ला इन्आ़म क्या होगा ?

---

1 . . . ترمذی، کتاب صفة الجنة، باب ماجاء فی صفة درجات الجنة، ۴/۲۳۸، حدیث: ۲۵۳۹۔

2 . . . ترمذی، کتاب صفة الجنة، باب ماجاء فی صفة درجات الجنة، ۴/۲۳۹، حدیث: ۲۵۴۰۔

3 . . . روح البیان، پ ۱، البقرة، تحت الآیة: ۲۵، ۱/۸۲۔

4 .....मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 608 ।

5 . . . مسند شهاب، باب ان لکل شیئ قلبا . . . الخ، ۲/۱۳۰، حدیث: ۱۰۳۶۔

www.dawateislami.net

जवाब जन्नतियों के लिये सब से बड़ा इन्आ़म येह है कि उन्हें दीदारे इलाही नसीब होगा।[1]

सुवाल जन्नत में किस किस क़िस्म की नहरें बहती हैं ?

जवाब पानी, शहद, दूध और शराबे त़हूर की।[2]

सुवाल जन्नत के दरवाज़े कितने वसीअ़ होंगे ?

जवाब जन्नत के दरवाज़े इतने वसीअ़ होंगे कि एक बाज़ू से दूसरे तक तेज़ घोड़े की सत्तर बरस की राह होगी।[3]

सुवाल ह़ौज़े कौसर क्या है ?

जवाब येह हुज़ूर साक़िये कौसर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का वोह ह़ौज़ है जिस से आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मैदाने मह़शर में अपनी उम्मत को सैराब फ़रमाएंगे।[4]

सुवाल जन्नती जन्नत में कितनी उ़म्र के दिखाई देंगे ?

जवाब तीस (30) या तैंतीस (33) साल के।[5]

दोज़ख़

सुवाल दोज़ख़ क्या है ?

जवाब दोज़ख़ एक मकान है जो **अल्लाह** क़ह्हारो जब्बार के जलाल व क़ह्र का मज़हर है।

---

1 ...مسلم، کتاب الایمان، باب اثبات رؤیۃ المومنین فی الآخرۃ...الخ، ص۱۱۰، حدیث:۱۸۱۔

2 ...ترمذی، کتاب صفۃ الجنۃ، باب ماجاء فی صفۃ انہار الجنۃ، ۳/۲۵۷، حدیث:۲۵۸۰۔

3 ...مسند احمد، حدیث ابی رزین العقیلی، ۵/۴۷۵، حدیث:۱۶۲۰۶۔

4 ...روح البیان، البقرۃ، تحت الآیۃ:۲۵، ۱/۸۳۔

5 ...ترمذی، کتاب صفۃ الجنۃ، باب ماجاء فی سن اھل الجنۃ، ۴/۲۴۴، حدیث:۲۵۵۴۔

www.dawateislami.net

सुवाल दोज़ख़ के बारे में हमारा क्या अ़क़ीदा है ?

जवाब दोज़ख़ ह़क़ है[1] इस का इन्कार करने वाला काफ़िर है[2] और येह पैदा हो चुकी है ।[3]

सुवाल दोज़ख़ की गहराई कितनी है ?

जवाब दोज़ख़ की गहराई को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही जानता है, ह़दीस शरीफ़ में है : अगर एक बहुत बड़ा पथ्थर जहन्नम के किनारे से फैंका जाए और वोह उस में 70 साल तक गिरता रहे तब भी उस की तेह तक न पहुंचेगा ।[4]

सुवाल दोज़ख़ पर मुक़र्रर निगरान फ़िरिश्तों की ता'दाद बताएं ?

जवाब उन की ता'दाद उन्नीस (19) है, एक ह़ज़रते मालिक عَلَيْهِ السَّلَام और अठ्ठारह (18) उन के साथी ।[5]

सुवाल क़ियामत के रोज़ जहन्नम को किस ह़ाल में लाया जाएगा ?

जवाब क़ियामत के रोज़ जहन्नम को इस ह़ाल में लाया जाएगा कि उस की सत्तर (70) लगामें होंगी और हर लगाम को 70 हज़ार फ़िरिश्ते खींच रहे होंगे ।[6]

सुवाल जहन्नम की सख़्तियां कैसी हैं ?

---

1 . . . شرح عقائد نسفية، ص ۲۴۹۔

2 . . . شفا، القسم الرابع، الباب الاول، فصل في بيان ماهو من المقالات . . . الخ، الجزء الثانی، ص ۲۹۰۔

3 . . . تفسير خازن، ال عمران، تحت الآية: ۱۳۳، ۱/۳۰۱۔

4 . . . ترمذی، کتاب صفة جهنم، باب ماجاء في صفة قعر جهنم، ۴/۲۶۰، حديث: ۲۵۸۴۔

5 . . . تفسير خازن، پ ۳۰، المدثر، تحت الآية: ۳۰، ۴/۳۲۹۔

6 . . . ترمذی، کتاب صفة جهنم، باب ماجاء في صفة النار، ۴/۲۵۹، حديث: ۲۵۸۲۔

www.dawateislami.net

जवाब हदीसे पाक में है : अगर जहन्नम को सूई के नाके के बराबर खोल दिया जाए तो तमाम ज़मीन वाले इस की गर्मी से मर जाएं, येह दुन्या की आग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ करती है कि इसे जहन्नम में फिर न ले जाए।[1]

सुवाल जहन्नम का सब से कम दरजे का अ़ज़ाब क्या होगा ?

जवाब जिस को सब से कम दरजे का अ़ज़ाब होगा, उसे आग की जूतियां पहना दी जाएंगी, जिस से उस का दिमाग़ ऐसा खोलेगा जैसे तांबे की पतेली खोलती है, वोह समझेगा कि सब से ज़ियादा अ़ज़ाब उस पर हो रहा है हालांकि येह सब से हल्का होगा।[2]

सुवाल जहन्नम की वोह कौन सी वादी है जिस से ख़ुद जहन्नम भी पनाह मांगता है ?

जवाब उस वादी का नाम "वैल" है और जान बूझ कर नमाज़ क़ज़ा करने वाले उस के मुस्तहिक़ हैं।[3]

सुवाल दोज़ख़ में कितनी वादियां हैं ?

जवाब हदीस शरीफ़ में है : दोज़ख़ में 70 हज़ार वादियां हैं, हर वादी में 70 हज़ार घाटियां, हर घाटी में 70 हज़ार बिल हैं और हर बिल में सांप है जो जहन्नमियों के चेहरों को खाता है।[4]

सुवाल दोज़ख़ की आग किस रंग की है ?

---

1 ...معجم اوسط، ۲/۷۸، حدیث: ۲۵۸۳۔

2 ...مسلم، کتاب الایمان، باب اھون اھل النار عذاباً، ص ۱۳۴، حدیث: ۲۱۲۔

3 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 3, 1 / 434।

4 ...الترغیب والترھیب، کتاب صفۃ الجنۃ والنار، الترھیب من النار، فصل فی اودیتھا وجبالھا، ۴/۲۵۴، حدیث: ۴۰۔

www.dawateislami.net

जवाब हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : दोज़ख़ की आग को हज़ार साल जलाया गया यहां तक कि सफ़ेद हो गई, फिर हज़ार साल जलाया गया तो सुर्ख़ हो गई, फिर हज़ार साल जलाया गया ह़त्ता कि सियाह हो गई, अब येह तारीक रात की त़रह़ सियाह (काली) है।[1]

सुवाल कौन सी चीज़ सब से ज़ियादा लोगों को दोज़ख़ में दाख़िल करेगी ?

जवाब (1) मुंह और (2) शर्मगाह।[2]

सुवाल जहन्नम की आग दुन्या की आग से कितनी ज़ियादा शदीद है ?

जवाब दुन्या की आग जहन्नम की आग के सत्तर जुज़ों में से एक है।[3]

आ़लमे बरज़ख़

सुवाल बरज़ख़ किसे कहते हैं ?

जवाब दुन्या और आख़िरत के दरमियान एक और आ़लम है जिसे आ़लमे बरज़ख़ कहते हैं।[4]

सुवाल आ़लमे बरज़ख़ में कब तक रहना होगा ?

जवाब मरने के बा'द और क़ियामत से पहले तमाम इन्सो जिन्न को ह़स्बे मरातिब उस में रहना होता है।[5]

सुवाल क्या रूह़ व जिस्म दोनों मर जाते हैं ?

---

1 ...ابن ماجہ، کتاب الزھد، باب صفۃ النار، ۴/۵۲۹، الحدیث: ۴۳۲۰۔

2 ...ترمذی، کتاب البر والصلۃ، باب ماجاء فی حسن الخلق، ۳/۴۰۴، حدیث: ۲۰۱۱۔

3 ...ابن ماجہ، کتاب الزھد، باب صفۃ النار، ۴/۵۲۸، حدیث: ۴۳۱۸۔

4 ...تفسیر طبری، پ۱۸، المؤمنون، تحت الآیۃ: ۱۰۰، ۹/۲۴۴۔

5 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1, 1/ 98।

www.dawateislami.net

जवाब मौत के मा'ना सिर्फ़ रूह का जिस्म से जुदा हो जाना हैं, येह मुराद नहीं कि रूह मर जाती है, रूह हमेशा ज़िन्दा रहती है।[1]

सुवाल बरज़ख़ी ज़िन्दगी की कैफ़िय्यत कैसी होती है ?

जवाब बरज़ख़ में किसी को आराम है और किसी को तक्लीफ़। राहत व लज़्ज़त, कुल्फ़त व अज़िय्यत (दुख व मुसीबत), सुरूर व ग़म सब हालतें बरज़ख़ में हैं।[2]

सुवाल क़ब्र के अ़ज़ाब व इन्आ़म का इन्कार करने वाले का क्या हुक्म है ?

जवाब ऐसा शख़्स गुमराह है।[3]

सुवाल क्या मरने के बा'द भी रूह का तअ़ल्लुक़ इन्सान के बदन के साथ बाक़ी रहता है ?

जवाब जी हां ! अगर्चे रूह बदन से जुदा हो गई मगर बदन पर जो गुज़रेगी रूह ज़रूर उस से आगाह होगी।[4]

सुवाल बरज़ख़ में मुसलमान की रूह कहां रहती है ?

जवाब मुसलमान की रूह हस्बे मर्तबा मुख़्तलिफ़ मक़ामों में रहती है।[5]

सुवाल बरज़ख़ में काफ़िर की रूह कहां रहती है ?

जवाब काफ़िरों की ख़बीस रूहें बा'ज़ की उन के मरघट या क़ब्र पर रहती हैं, बा'ज़ की चाहे बरहूत में कि यमन में एक नाला है, बा'ज़ की पहली, दूसरी, सातवीं ज़मीन तक, बा'ज़ की उस के भी नीचे

---

1 ...شرح الصدور، باب فضل الموت، ص ۲۱، باب مقر الارواح، ص ۳۲۴۔ फ़तावा रज़विय्या, 9 / 657

2 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1,1 / 100 मुलख़्ख़सन।

3 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1,1 / 113।

4 ...منح الروض الازهر، ص ۱۰۰۔ شرح عقائد نسفیة، ص ۲۴۱۔

5 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1,1 / 101।

www.dawateislami.net

सिज्जीन में, और वोह कहीं भी हो, जो उस की क़ब्र या मरघट पर गुज़रे उसे देखते, पहचानते, बात सुनते हैं मगर कहीं जाने आने का इख़्तियार नहीं कि क़ैद हैं।[1]

सुवाल क्या मरने के बा'द रूह किसी और बदन में मुन्तक़िल हो सकती है?

जवाब येह ख़याल कि रूह किसी दूसरे बदन में चली जाती है ख़्वाह वोह आदमी का बदन हो या किसी और जानवर का जिस को **तनासुख़** और **आवागोन** कहते हैं महज़ बातिल और इस का मानना कुफ़्र है।[2]

सुवाल "अ़ज बुज़्ज़म्ब" किसे कहते हैं?

जवाब रीढ़ की हड्डी के वोह बारीक अज्ज़ा जिन को न किसी ख़ुर्दबीन से देखा जाता है, न आग उन्हें जला सकती, न ज़मीन उन्हें गला सकती है, येही तुख़्मे जिस्म हैं, लिहाज़ा रोज़े क़ियामत रूहों का इआ़दा (या'नी लौटाना) इसी जिस्म में होगा।[3]

सुवाल वोह कौन हैं जिन के जिस्मों को क़ब्र की मिट्टी नहीं खा सकती?

जवाब अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام, औलियाए किराम, उ़लमाए दीन, शुहदा, क़ुरआने मजीद पर अ़मल करने वाले हुफ़्फ़ाज़, कभी भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी न करने वालों और अपने औक़ात को दुरूद शरीफ़ में मुस्तग़्रक़ रखने वालों के अज्साम को क़ब्र की मिट्टी नहीं खा सकती।[4]

---

1 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1,1 / 103।

2 ...نبراس، والبعث حق، ص ۲۱۳۔

3 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1,1 / 112।

4 ...روح البیان، پ ۱۰، التوبۃ، تحت الآیۃ: ۴۱، ۳/ ۴۳۹۔

شرح الصدور، باب نتن المیت ـــ الخ، ص ۳۱۷-۳۱۸۔ جامع کرامات الاولیاء، ۱/ ۲۷۶۔

www.dawateislami.net

सुवाल क्या क़ब्र हर मुर्दे को दबाती है ?

जवाब अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के इलावा हर एक को क़ब्र दबाती है मगर मुसलमान को दबाना शफ़्क़त के साथ होता है जैसे मां बच्चे को सीने से लगा कर चिमटाए और काफ़िर को सख़्ती से हत्ता कि उस की पस्लियां इधर से उधर हो जाती हैं।[1]

क़ियामत की निशानियां

सुवाल क़ियामत की निशानियों से क्या मुराद है ?

जवाब इस से मुराद दुन्या के फ़ना होने से पहले ज़ाहिर होने वाली छोटी बड़ी निशानियां हैं जिन में से बा'ज़ वाक़ेअ़ हो चुकीं और कुछ बाक़ी हैं।[2]

सुवाल क़ियामत की बा'ज़ छोटी बड़ी निशानियां बयान कीजिये ?

जवाब उ़लमा को उठा कर इ़ल्म उठा लिया जाएगा, जहालत ज़ियादा हो जाएगी, ज़िना, गाने बाजे, शराब ख़ोरी और माल की कसरत होगी, मर्द कम होंगे, औ़रतें ज़ियादा होंगी, वक़्त में बरकत न होगी, बड़े दज्जाल के इलावा नुबुव्वत के झूटे दा'वेदार 30 दज्जाल और होंगे, ज़कात देना भारी होगा, मर्द बीवी की पैरवी करेगा और मां बाप की नाफ़रमानी, लोग अगलों पर ला'नत करेंगे, दरिन्दे और जानवर आदमी से बात करेंगे, लिबास व जूतों से मह़रूम ज़लील लोग मह़ल्लात में फ़ख़्र करेंगे, लोग मस्जिद में चिल्लाएंगे, दज्जाल का

1 ...فیض القدیر، ۵/۴۲۴، تحت الحدیث: ۷۴۹۳۔ منح الروض الازہر، ص ۱۰۱۔
ترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ، ۴/۲۰۸، حدیث: ۲۴۶۸، ملتقطاً۔

2 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1,1 / 116 मुलख़्ख़सन।

www.dawateislami.net

ज़ुहूर होगा, हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام आस्मान से उतरेंगे, हज़रते इमाम महदी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ज़ाहिर होंगे, याजूज माजूज निकलेंगे, एक जानवर दाब्बतुल अर्ज़ ज़ाहिर होगा और सूरज मग़रिब से निकलेगा।[1]

सुवाल तमाम दुन्या में फ़क़त एक ही दीन, दीने इस्लाम कब होगा ?

जवाब जब हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام नुज़ूल फ़रमाएंगे।[2]

सुवाल हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام किस वक़्त और कहां नुज़ूल फ़रमाएंगे ?

जवाब हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام आस्मान से जामेअ़ मस्जिद दिमश्क़ के शरक़ी मीनारे पर सुब्ह़ के वक़्त नुज़ूल फ़रमाएंगे जब कि नमाज़े फ़ज्र की इक़ामत हो चुकी होगी।[3]

सुवाल हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام कितने साल दुन्या में क़ियाम फ़रमाएंगे ?

जवाब आप عَلَيْهِ السَّلَام के ज़मीन पर क़ियाम का मजमूई अ़र्सा 40 साल है, आस्मान पर तशरीफ़ ले जाते वक़्त आप عَلَيْهِ السَّلَام की उ़म्र मुबारक 33 साल थी, अब जो क़ुर्बे क़ियामत में तशरीफ़ लाएंगे तो 7 बरस क़ियाम फ़रमाएंगे।[4]

सुवाल दज्जाल की ख़ास निशानियां बताएं ?

जवाब दज्जाल की एक आंख होगी, वोह काना होगा और उस की पेशानी पर "काफ़िर" लिखा होगा।[5]

---

1 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1,1 / 116-127 मुलख़्ख़सन।

2 ...بخاری، کتاب احادیث الانبیاء، باب نزول عیسی۔۔۔الخ، ۲/۴۵۹، حدیث: ۳۴۴۸۔

تفسیر طبری، پ۶، النساء، تحت الآیۃ: ۱۵۹، ۴/۳۵۶۔

3 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1,1 / 122 मुलख़्ख़सन।

4 ...فتاوی حدیثیۃ، مطلب فی کم یقیم عیسی علیہ السلام بعد نزولہ؟، ص ۲۵۱، ملخصاً۔

5 ...بخاری، کتاب الفتن، باب ذکر الدجال، ۴/۴۵۱، حدیث: ۷۱۳۱۔

www.dawateislami.net

सुवाल दज्जाल के साथ किस की फ़ौजें होंगी ?

जवाब दज्जाल के साथ यहूद की फ़ौजें होंगी ।[1]

सुवाल दज्जाल कितने दिन में तमाम रूए ज़मीन का गश्त करेगा ?

जवाब दज्जाल ह़रमैने त़य्यिबैन के सिवा तमाम रूए ज़मीन का चालीस (40) दिन में गश्त करेगा ।[2]

सुवाल इतने कम दिनों में सारी ज़मीन का गश्त कैसे होगा ?

जवाब क्यूंकि चालीस दिन में पहला दिन साल भर के बराबर होगा, दूसरा दिन महीने भर के बराबर, तीसरा दिन हफ़्ते के बराबर और बाक़ी दिन चोबीस घन्टे के होंगे और वोह बहुत तेज़ी के साथ सफ़र करेगा, जैसे बादल कि जिस को हवा उड़ाती है ।[3]

सुवाल ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام का दज्जाल पर क्या असर होगा ?

जवाब लईन दज्जाल जब ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام को देखेगा तो ऐसे पिघलेगा जैसे पानी में नमक घुलता है और वोह आप से भागेगा ।[4]

सुवाल दज्जाल किस के हाथों क़त्ल होगा ?

जवाब ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام उसे जहन्नम वासिल करेंगे ।[5]

---

1 ...ابن ماجه، ابواب الفتن، باب فتنة الدجال، ۴/۴۰۶، حديث: ۴۰۷۷۔

2 ...مسلم، كتاب الفتن، باب قصة الجساسة، ص ۱۵۷۴، حديث: ۲۹۴۲۔

3 ...مسلم، كتاب الفتن، باب في ذكر الدجال۔۔۔الخ، ص ۱۵۶۸، حديث: ۲۹۳۷۔

4 ...ابن ماجه، ابواب الفتن، باب فتنة الدجال۔۔۔الخ، ۴/۴۰۶، حديث: ۴۰۷۷۔

5 ...ابن ماجه، ابواب الفتن، باب فتنة الدجال۔۔۔الخ، ۴/۴۰۶، حديث: ۴۰۷۷۔

www.dawateislami.net

सुवाल कुर्बे क़ियामत निकलने वाला जानवर "दाब्बतुल अर्ज़" हर शख़्स पर क्या निशानी लगाएगा ?

जवाब हर मुसलमान की पेशानी पर एक निशान नूरानी बनाएगा और अंगुश्तरी (या'नी अंगूठी) से हर काफ़िर की पेशानी पर एक सख़्त सियाह धब्बा, उस वक़्त तमाम मुसलमान व काफ़िर अ़लानिय्या ज़ाहिर होंगे ।[1]

क़ियामत

सुवाल क़ियामत के दिन लोग क़ब्रों से किस ह़ालत में उठेंगे ?

जवाब क़ियामत के दिन लोग अपनी क़ब्रों से नंगे बदन, नंगे पाउं, ना ख़तनाशुदा उठेंगे ।[2]

सुवाल क़ियामत के दिन कौन ह़श्र के मैदान में मुंह के बल चल कर जाएंगे ?

जवाब क़ियामत के दिन काफ़िर मुंह के बल चल कर ह़श्र के मैदान में जाएंगे ।[3]

सुवाल क़ियामत का दिन कितने साल का होगा ?

जवाब पचास हज़ार साल का ।[4]

---

1 ...ابن ماجه، ابواب الفتن، باب دابة الارض، ۴/۳۹۳، حديث: ۴۰۶۶۔
बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1,1 / 126 मुल्तक़त़न ।

2 ...مسلم، كتاب الجنة وصفة نعيمها واهلها، باب فناء الدنيا...الخ، ص ۱۵۲۹، حديث: ۲۸۶۹۔

3 ...مسلم، كتاب صفات المنافقين واحكامهم، يحشر الكافر على وجهه، ص ۱۵۰۸، حديث: ۲۸۰۶۔

4 ...پ ۲۹، المعارج: ۴۔

www.dawateislami.net

सुवाल मुन्किरे क़ियामत का क्या हुक्म है ?

जवाब इस का इन्कार करने वाला काफ़िर है ।[1]

सुवाल इस्राफ़ील عَلَيْهِ السَّلَام जब दूसरी बार सूर फूंकेंगे तो अपनी क़ब्रे मुबारक में से सब से पहले कौन बाहर तशरीफ़ लाएंगे ?

जवाब सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ।[2]

सुवाल मैदाने मह़शर किस ज़मीन पर क़ाइम होगा ?

जवाब मुल्के शाम की सर ज़मीन पर ।[3]

सुवाल जब अह्ले मह़शर शफ़ाअ़त के वासित़े सरकारे दो आ़लम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की बारगाह में ह़ाज़िर होंगे तो आप क्या फ़रमाएंगे ?

जवाब हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाएंगे : اَنَا لَهَا या'नी मैं शफ़ाअ़त के लिये हूं ।[4]

सुवाल "पुल सिरात़" किसे कहते हैं ?

जवाब "सिरात़" जहन्नम का पुल है जो बाल से बारीक और तल्वार से तेज़ है, जन्नत का रास्ता इसी पर है ।[5]

सुवाल पुल सिरात़ कहां नस्ब किया जाएगा ?

जवाब पुल सिरात़ जहन्नम की पुश्त पर नस्ब किया जाएगा, सब से पहले

---

1 ...منح الروض الازهر، ص ۱۹۵۔

2 ...ترمذی، کتاب المناقب، باب قوله صلی الله علیه وسلم۔۔۔الخ، ۴/۳۷۸، حدیث: ۳۶۸۹۔

3 ...مسند احمد، حدیث بهز بن حکیم، ۷/۲۳۵، حدیث: ۲۰۰۴۲۔

4 ...بخاری، کتاب التوحید، باب کلام الرب۔۔۔الخ، ۴/۵۷۷، حدیث: ۷۵۱۰۔

5 ...مسند احمد، مسند السیدة عائشة، ۹/۴۱۵، حدیث: ۲۴۸۴۷۔ حدیقة ندیة، ۱/۲۶۸۔

www.dawateislami.net

सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और आप की उम्मत उस पुल से गुज़रेंगे।[1]

सुवाल क्या क़ियामत का दिन हर एक के लिये यक्सां त़वील होगा ?

जवाब नहीं, रोज़े क़ियामत की दराज़ी बा'ज़ काफ़िरों के लिये हज़ार बरस और बा'ज़ के लिये पचास हज़ार बरस होगी जब कि बन्दए मोमिन के लिये येह दिन फ़क़त़ एक फ़र्ज़ नमाज़ के बराबर होगा जो दुन्या में पढ़ता था।[2]

सुवाल मीज़ान क्या है ?

जवाब वोह तराज़ू है जिस में लोगों के आ'माल तोले जाएंगे। इस की एक ज़बान और दो पलड़े हैं, नेकियां ख़ूब सूरत शक्ल में और गुनाह बुरी शक्ल में मीज़ान में रखे जाएंगे।[3]

सुवाल मैदाने मह़शर में ज़मीन किस चीज़ की कर दी जाएगी ?

जवाब तांबे की।[4]

ईमान व कुफ़्र

सुवाल ईमान किसे कहते हैं ?

जवाब सच्चे दिल से उन सब बातों की तस्दीक़ करना जो ज़रूरियाते दीन से हैं, ईमान कहलाता है।[5]

---

1 ...بخاری، کتاب التوحید، باب قول اللہ تعالی: وجوہ یومئذ ناضرۃ۔۔۔الخ، ۴/۵۵۱، حدیث: ۷۴۳۷۔

2 ...تفسیر خازن، پ ۲۱، السجدۃ، تحت الآیۃ: ۵، ۳/۴۷۶۔

3 ...تفسیر بغوی، پ ۸، الاعراف، تحت الآیۃ: ۸، ۲/۱۲۴، ملخصاً۔

4 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1,1 / 132 ।

5 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1,1 / 172 ।

www.dawateislami.net

सुवाल कुफ़्र किसे कहते हैं ?

जवाब किसी एक ज़रूरते दीनी के इन्कार को कुफ़्र कहते हैं अगर्चे बाक़ी तमाम ज़रूरियाते दीन की तस्दीक़ करता हो ।[1]

सुवाल ज़रूरियाते दीन से क्या मुराद है ?

जवाब ज़रूरियाते दीन से मुराद इस्लाम के वोह अह़काम हैं जिन को हर ख़ासो आ़म जानते हों, जैसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का एक होना, अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की नुबुव्वत, नमाज़ व ज़कात, जन्नत व दोज़ख़, क़ियामत में उठाया जाना, ह़िसाबो किताब लेना वग़ैरा ।[2]

सुवाल ईमाने मुफ़स्सल व ईमाने मुजमल बताइये ?

जवाब ईमाने मुफ़स्सल :

اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَالْقَدْرِ خَيْرِهٖ وَشَرِّهٖ مِنَ اللّٰهِ تَعَالٰى وَالْبَعْثِ بَعْدَ الْمَوْتِ ط

ईमाने मुजमल :

اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ كَمَا هُوَ بِاَسْمَآئِهٖ وَصِفَاتِهٖ وَقَبِلْتُ جَمِيْعَ اَحْكَامِهٖ اِقْرَارٌ بِاللِّسَانِ وَتَصْدِيْقٌ بِالْقَلْبِ ط

सुवाल क्या ईमान व कुफ़्र के दरमियान कोई तीसरा दरजा भी है ?

जवाब ईमान व कुफ़्र के दरमियान कोई वासित़ा (दरजा) नहीं है या तो बन्दा मुसलमान होगा या काफ़िर तीसरी कोई सूरत नहीं कि न मुसलमान हो न काफ़िर ।[3]

---

1 ...مسامرة شرح مسايرة، مفهوم الايمان، ص ٣٣٠۔ बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा, 1,1 / 172

2 ...مسامرة شرح مسايرة، مفهوم الايمان، ص ٣٣٠۔

3 .....बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा, 1,1 / 181, मुलख़्ख़सन ।

www.dawateislami.net

सुवाल काफ़िर के लिये उस के मरने के बा'द मग़फ़िरत की दुआ़ करना कैसा है ?

जवाब जो किसी काफ़िर के लिये उस के मरने के बा'द मग़फ़िरत की दुआ़ करे या किसी मुर्दा मुर्तद को मर्हूम या मग़फ़ूर कहे वोह ख़ुद काफ़िर है ।[1]

सुवाल निफ़ाक़ किसे कहते हैं ?

जवाब ज़बान से इस्लाम का दा'वा करना और दिल में इस का इन्कार करना निफ़ाक़ है और येह भी ख़ालिस कुफ़्र है ।[2]

सुवाल मुर्तद किसे कहते हैं ?

जवाब मुर्तद वोह शख़्स है कि इस्लाम के बा'द किसी ऐसे अम्र का इन्कार करे जो ज़रूरियाते दीन से हो । या'नी ज़बान से (ऐसा) कलिमए कुफ़्र बके जिस में तावीले सहीह़ की गुन्जाइश न हो । यूंही बा'ज़ अफ़्आ़ल भी ऐसे हैं जिन से काफ़िर हो जाता है मसलन बुत को सजदा करना । मुस्ह़फ़ शरीफ़ (कुरआने पाक) को नजासत की जगह फैंक देना ।[3]

सुवाल शिर्क किसे कहते हैं ?

जवाब शिर्क के मा'ना ग़ैरे ख़ुदा को वाजिबुल वुजूद या मुस्तह़िक़े इ़बादत जानना ।[4]

1.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1, 1 / 185, मुल्तक़त़न ।

2...تفسیر خازن، پ ۱، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۲، ۱/ ۲۵۔

3.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 9, 2 / 455 ।

4...شرح عقائد نسفیۃ، اللہ تعالی خالق لافعال العباد، ص ۲۰۳، ملتقطاً۔

www.dawateislami.net

सुवाल इस्लाम की बुन्याद कितनी चीज़ों पर है ?

जवाब इस्लाम की बुन्याद पांच चीज़ों पर है : (1) इस बात की गवाही देना कि **अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूद नहीं और ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस के बन्दे और रसूल हैं (2) नमाज़ क़ाइम करना (3) ज़कात देना (4) रमज़ान के रोज़े रखना और (5) ह़ज करना ।[1]

सुवाल ईमान की कितनी शाख़ें हैं ?

जवाब ह़दीसे पाक में है कि ईमान की सत्तर (70) से कुछ ज़ाइद शाख़ें हैं ।[2]

सुवाल ह़राम को ह़लाल और ह़लाल को ह़राम जानने वाले का क्या हुक्म है ?

जवाब जिस चीज़ की ह़िल्लत नस्से क़त़ई से साबित हो उस को ह़राम कहना और जिस की हुरमत यक़ीनी हो उसे ह़लाल बताना कुफ़्र है जब कि येह हुक्म ज़रूरियाते दीन से हो या मुन्कर इस हुक्मे क़त़ई से आगाह हो ।[3]

विलायत

सुवाल विलायत किसे कहते हैं ?

जवाब विलायत एक क़ुर्बे ख़ास है कि मौला عَزَّوَجَلَّ अपने बरगुज़ीदा बन्दों को मह़ज़ अपने फ़ज़्लो करम से अ़त़ा फ़रमाता है ।[4]

---

1 . . . مسلم، کتاب الایمان، باب بیان الایمان والاسلام . . . الخ، ص ۲۱، حدیث: ۸۔

2 . . . مسلم، کتاب الایمان، باب بیان عدد شعب الایمان . . . الخ، ص ۳۹، حدیث: ۳۵۔

3 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1,1 / 176 ।

4 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1,1 / 264 ।

www.dawateislami.net

सुवाल क्या कोई वली किसी सहाबी से अफ़्ज़ल हो सकता है ?

जवाब कोई वली कितने ही बड़े मर्तबे का हो किसी सहाबी के रुत्बे को नहीं पहुंच सकता ।[1]

सुवाल क्या अकाबिर औलिया भी गुनाहों से पाक होते हैं ?

जवाब अकाबिर औलिया को **अल्लाह** तआला महफ़ूज़ रखता है, उन से गुनाह होता नहीं, अगर हो तो उस पर इसरार नहीं करते फ़ौरी तौबा करते हैं ।[2]

सुवाल करामत किसे कहते हैं ?

जवाब वली से जो बात ख़िलाफ़े आदत सादिर हो उस को करामत कहते हैं ।[3]

सुवाल औलियाए किराम से किस तरह की करामात मुमकिन हैं ?

जवाब मुर्दे ज़िन्दा करना, मादरज़ाद अन्धे और कोढ़ी को शिफ़ा देना, मशरिक़ से मग़रिब तक सारी ज़मीन एक क़दम में तै कर जाना, ग़रज़ तमाम ख़िलाफ़े आदत बातें औलिया से मुमकिन हैं ।[4]

सुवाल करामाते औलिया का इन्कार करना कैसा है ?

जवाब करामते औलिया हक़ है, इस का मुन्किर गुमराह है ।[5]

सुवाल इल्हाम किसे कहते हैं ?

---

1 ...مرقاة، کتاب الفتن، ۹/۲۸۲-۲۸۳، تحت الحدیث: ۵۴۰۱۔

2 ...بریقة محمودیة، الباب الثانی، الفصل الاول، مطلب کرامات الاولیاء...الخ، ۱/۲۶۵۔

رسالة قشیریة، باب کرامات الاولیاء، ص ۳۸۱۔

3 .....बहारे शरीअत, हिस्सा, 1,1 / 58 ।

4 .....बहारे शरीअत, हिस्सा, 1,1 / 269-270 ।

5 ...الفقه الأکبر، ص ۷۹۔ बहारे शरीअत, हिस्सा, 1,1 / 269

www.dawateislami.net

जवाब औलिया के दिल में बा'ज़ औक़ात सोते या जागते में कोई बात इल्क़ा होती है, उसे इल्हाम कहते हैं।[1]

सुवाल वस्वसा और इल्हाम में क्या फ़र्क़ है ?

जवाब बुरे ख़यालात, फ़ासिद फ़िक्र को वस्वसा कहते हैं और अच्छे ख़यालात को इल्हाम। वस्वसा शैतान की त़रफ़ से होता है, इल्हाम रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से।[2]

सुवाल क्या औलियाए किराम को भी इ़ल्मे ग़ैब अ़त़ा होता है ?

जवाब जी हां ! औलियाए किराम को भी इ़ल्मे ग़ैब अ़त़ा होता है मगर अम्बिया के वासित़े से।[3]

सुवाल क्या किसी जाहिल, बे इ़ल्म शख़्स को विलायत मिल सकती है ?

जवाब जी नहीं ! विलायत बे इ़ल्म को नहीं मिलती (बल्कि इस के लिये इ़ल्म ज़रूरी है) ख़्वाह इ़ल्म बत़ौरे ज़ाहिर ह़ासिल किया हो, या इस मर्तबे पर पहुंचने से पेशतर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस पर उ़लूम मुन्कशिफ़ कर दिये हों।[4]

सुवाल सब से अफ़्ज़ल औलियाए किराम किस उम्मत के हैं ?

जवाब सब से अफ़्ज़ल औलियाए किराम हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की उम्मत के हैं।[5]

1.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1,1 / 35 ।

2.....मिरआतुल मनाजीह़, 1 / 81 ।

3...روح البیان، پ ۲۹، الجن، تحت الآیۃ: ۲۷، ۱۰/ ۲۰۱۔

ارشاد الساری، کتاب التفسیر، سورۃ الرعد، تحت الحدیث: ۴۶۹۷، ۱۰/ ۳۶۹۔

4.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1,1 / 264 ।

5...الیواقیت والجواھر، المبحث السابع والاربعون، الجزء الثانی، ص ۳۴۸۔

www.dawateislami.net

सुवाल क्या कोई वली अह़कामे शरइय्या की पाबन्दी से आज़ाद हो सकता है ?

जवाब जी नहीं, कोई वली कैसा ही अ़ज़ीम हो अह़कामे शरइय्या की पाबन्दी से सुबुक दोश नहीं हो सकता ।[1]

त़हारत

सुवाल कुरआने पाक की रौशनी में त़हारत की अहम्मिय्यत बयान करें ?

जवाब पाकीज़गी और पाकीज़ा लोग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को पसन्द हैं चुनान्चे, इरशाद होता है : ﴿وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِيْنَ ﴾ (پ۱۱، التوبة:۱۰۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और सुथरे **अल्लाह** को प्यारे हैं ।" इस के साथ ही नापाकी को इतना ना पसन्द किया गया कि बिग़ैर वुज़ू कुरआने पाक को हाथ तक लगाने से मन्अ़ फ़रमा दिया गया, चुनान्चे, इरशाद हुवा : ﴿لَّا يَمَسُّهٗۤ اِلَّا الْمُطَهَّرُوْنَ ﴾ (پ۲۷، الواقعة:۷۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "इसे न छूएं मगर बा वुज़ू ।"

सुवाल प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने त़हारत की अहम्मिय्यत से मुतअ़ल्लिक़ क्या इरशाद फ़रमाया ?

जवाब फ़रमाया : "त़हारत निस्फ़ ईमान है ।"[2]

सुवाल वोह त़हारत जो नमाज़ की शर्त़ है इस से क्या मुराद है ?

जवाब इस से मुराद येह है कि नमाज़ी का बदन, इस के कपड़े और वोह जगह जहां नमाज़ पढ़नी है नजासत से पाक हो ।[3]

---

1 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1 / 266 ।

2 ...مسلم، کتاب الطهارة، باب فضل الوضوء، ص۱۴۰، حدیث:۲۲۳۔

3 ...شرح وقایة، کتاب الصلوٰة، باب شروط الصلوٰة، الجزء ۱، ص۱۵۶۔

www.dawateislami.net

सुवाल तहारत की कितनी क़िस्में हैं ?

जवाब तहारत की दो क़िस्में हैं : (1) तहारते सुग़रा (2) तहारते कुब्रा। तहारते सुग़रा से मुराद वुज़ू और तहारते कुब्रा से मुराद ग़ुस्ल है।[1]

सुवाल तहारत के बिग़ैर नमाज़ पढ़ने वाले का क्या हुक्म है ?

जवाब बिला उज़्र जान बूझ कर बिग़ैर तहारत के नमाज़ पढ़ना कुफ़्र है जब कि इसे जाइज़ समझे या इस्तिहज़ाअन (या'नी मज़ाक़ उड़ाते हुवे) येह फ़े'ल करे।[2]

सुवाल मछली, मच्छर या मख्खी वग़ैरा का ख़ून अगर कपड़ों पर लग जाए तो क्या हुक्म है ?

जवाब मछली और पानी के दीगर जानवरों और खटमल और मच्छर का ख़ून और ख़च्चर और गधे का लुआ़ब और पसीना पाक है।[3]

सुवाल बिल्ली अगर पानी में मुंह डाल दे तो उस पानी का क्या हुक्म है ?

जवाब घर में रहने वाले जानवर जैसे बिल्ली, चूहा, सांप, छिपकली का झूटा मकरूह है।[4]

सुवाल कुत्ते का लुआ़ब क्या हुक्म रखता है ?

जवाब कुत्ते का लुआ़ब नापाक है।[5]

---

1 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 2,1 / 282 ।

2 ...منح الروض الازہر، ص ۱۷۲۔

3 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 2,1 / 392 ।

4 ...فتاوی ھندیۃ، کتاب الطھارۃ، الباب الثالث فی المیاہ، الفصل الثانی، ۱/۲۴۔

ردالمحتار، کتاب الطھارۃ، باب المیاہ، فصل فی البئر، مطلب فی السؤر، ۱/۴۲۶۔

5 ...ردالمحتار، کتاب الطھارۃ، مطلب فی السؤر، ۱/۴۲۵۔

www.dawateislami.net

सुवाल क्या दूध पीते बच्चे का पेशाब पाक होता है ?

जवाब जी नहीं, एक दिन के दूध पीते बच्चे का पेशाब भी उसी त़रह़ नापाक है जिस त़रह़ आ़म लोगों का ।[1]

सुवाल किन परिन्दों की बीट पाक है ?

जवाब जो परिन्द ह़लाल ऊंचे उड़ते हैं जैसे कबूतर, मीना, मुर्ग़ाबी, इन की बीट पाक है ।[2]

सुवाल नापाक कारपेट (CARPET) को कैसे पाक किया जाए ?

जवाब कारपेट का नापाक ह़िस्सा एक बार धो कर लटका दीजिये यहां तक कि पानी टपकना मौक़ूफ़ हो जाए फिर दोबारा धो कर लटकाइये ह़त्ता कि पानी टपकना बन्द हो जाए फिर तीसरी बार इसी त़रह़ धो कर लटका दीजिये जब पानी टपकना बन्द हो जाएगा तो कारपेट पाक हो जाएगा । चटाई, चमड़े के चप्पल और मिट्टी के बरतन वग़ैरा जिन चीज़ों में पतली नजासत जज़्ब हो जाती हो इसी त़रीक़े पर पाक कीजिये ।[3]

सुवाल दूसरे के कपड़े पर नजासत लगी देखी तो क्या किया जाए ?

जवाब किसी दूसरे मुसलमान के कपड़े में नजासत लगी देखी और ग़ालिब गुमान है कि उस को ख़बर करेगा तो पाक कर लेगा तो ख़बर करना वाजिब है । (ऐसी सूरत में ख़बर नहीं देगा तो गुनहगार होगा) ।[4]

---

1 ...درمختار، کتاب الطہارۃ، باب الانجاس، ۱/۵۷۴۔

2 .....बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा, 2,1 / 39 ।

3 .....इस्लामी बहनों की नमाज़, स. 263 ।

4 .....बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा, 2,1 / 405 ।

www.dawateislami.net

वुज़ू

सुवाल वुज़ू से मुतअ़ल्लिक़ कुरआने पाक में क्या इरशाद हुवा ?

जवाब वुज़ू के मुतअ़ल्लिक़ कुरआने पाक में इरशाद होता है :

﴿يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا قُمْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ فَاغْسِلُوْا وُجُوْهَكُمْ وَاَيْدِيَكُمْ اِلَى الْمَرَافِقِ وَامْسَحُوْا بِرُءُوْسِكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ اِلَى الْكَعْبَيْنِ﴾ (پ٦، المائدة:٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "ऐ ईमान वालो जब नमाज़ को खड़े होना चाहो तो अपना मुंह धोओ और कोहनियों तक हाथ और सरों का मस्ह़ करो और गिट्टों तक पाउं धोओ।"

सुवाल ह़दीसे पाक में वुज़ू की क्या फ़ज़ीलत आई है ?

जवाब हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जब आदमी वुज़ू करता है तो हाथ धोने से हाथों के और चेहरा धोने से चेहरे के और सर का मस्ह़ करने से सर के और पाउं धोने से पाउं के गुनाह झड़ते हैं।"[1]

सुवाल हमेशा बा वुज़ू रहने वाले को कौन सी सात फ़ज़ीलतें मिलती हैं ?

जवाब (1) मलाइका उस की सोह़बत में रग़बत करें (2) क़लम उस की नेकियां लिखता रहे (3) उस के आ'ज़ा तस्बीह़ करें (4) उस से तक्बीरे ऊला फ़ौत न हो (5) जब सोए **अल्लाह** तआ़ला कुछ फ़िरिश्ते भेजे कि जिन्नो इन्स के शर से उस की ह़िफ़ाज़त करें (6) सकराते मौत उस पर आसान हो (7) जब तक वुज़ू हो अमाने इलाही में रहे।[2]

---

1 ...مسند امام احمد، ١/١٣٠، حديث:٤١٥

2 .....फ़तावा रज़विय्या, 1 / 703 ।

www.dawateislami.net

सुवाल वुज़ू के कितने फ़राइज़ हैं ?

जवाब वुज़ू में चार फ़र्ज़ हैं : (1) मुंह धोना (2) कोहनियों समेत दोनों हाथों का धोना (3) सर का मस्ह करना (4) टख़्नों समेत दोनों पाउं का धोना ।[1]

सुवाल किसी उ़ज़्व को धोने के क्या मा'ना हैं ?

जवाब किसी उ़ज़्व के धोने के येह मा'ना हैं कि उस उ़ज़्व के हर हिस्से पर कम से कम दो बूंद पानी बह जाए । भीग जाने या तेल की त़रह़ पानी चुपड़ लेने या एक आध बूंद बह जाने को धोना नहीं कहेंगे न इस से वुज़ू या ग़ुस्ल अदा हो ।[2]

सुवाल क्या मिस्वाक नमाज़ के लिये सुन्नत है या वुज़ू के लिये ?

जवाब मिस्वाक नमाज़ के लिये सुन्नत नहीं बल्कि वुज़ू के लिये, तो जो एक वुज़ू से चन्द नमाज़ें पढ़े, उस से हर नमाज़ के लिये मिस्वाक का मुत़ालबा नहीं, जब तक तग़य्युरे राइह़ा (सांस बदबूदार) न हो गया हो, वरना इस के दफ़्अ़ के लिये मुस्तक़िल सुन्नत है ।[3]

सुवाल हाथ वग़ैरा से ख़ून निकलने के बा वुजूद कब वुज़ू नहीं टूटता ?

जवाब ख़ून निकला लेकिन बहा नहीं तो येह वुज़ू को नहीं तोड़ता ।[4]

सुवाल ख़ून निकल कर बह गया मगर वुज़ू न टूटा, इस की क्या सूरत है ?

जवाब अगर ख़ून बहा मगर बह कर ऐसी जगह नहीं पहुंचा जिस का वुज़ू

---

1 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 2,1 / 288 ।

2 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 2,1 / 288 ।

3 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 2,1 / 295 ।

4 ...فتاوی ھندیۃ، کتاب الطھارۃ، الباب الاول فی الوضوء، الفصل الخامس، ۱/۱۰۔

www.dawateislami.net

या ग़ुस्ल में धोना फ़र्ज़ हो मसलन ख़ून निकल कर आंख या कान में बहा मगर इन से बाहर नहीं आया तो वुज़ू नहीं टूटा।[1]

सुवाल इन्जिक्शन लगाने से वुज़ू टूटेगा या नहीं ?

जवाब गोश्त में इन्जिक्शन लगाने में सिर्फ़ उसी सूरत में वुज़ू टूटेगा जब कि बहने की मिक़्दार में ख़ून निकले।[2]

सुवाल क्या नस का इन्जिक्शन लगाने या टेस्ट के लिये ख़ून निकालने से वुज़ू टूट जाएगा ?

जवाब नस का इन्जिक्शन लगा कर पहले ऊपर की त़रफ़ ख़ून खींचते हैं जो कि बहने की मिक़्दार में होता है लिहाज़ा वुज़ू टूट जाता है यूंही सिरिंज के ज़रीए़ टेस्ट करने के लिये ख़ून निकालने से वुज़ू टूट जाता है क्यूंकि येह बहने की मिक़्दार में होता है।[3]

सुवाल क्या ग्लूकोज़ वग़ैरा की ड्रिप लगवाने से वुज़ू टूट जाता है ?

जवाब ग्लूकोज़ वग़ैरा की ड्रिप नस में लगवाने से वुज़ू टूट जाएगा क्यूंकि बहने की मिक़्दार में ख़ून निकल कर नल्की में आ जाता है।[4]

सुवाल दुखती आंख से निकलने वाले आंसूओं का क्या हुक्म है ?

जवाब आंख की बीमारी के सबब जो आंसू बहा वोह नापाक है और वुज़ू भी तोड़ देगा।[5]

---

1 ...فتاوی ھندیۃ، کتاب الطھارۃ، الباب الاول فی الوضوء، الفصل الرابع، فی المکروھات، ۱/۱۱۔

2 .....नमाज़ के अह़काम, स. 27।

3 .....नमाज़ के अह़काम, स. 26-27।

4 .....नमाज़ के अह़काम, स. 26।

5 ...درمختار وردالمحتار، کتاب الطھارۃ، ۱/۲۹۰۔

www.dawateislami.net

ग़ुस्ल

सुवाल ग़ुस्ल के कितने फ़राइज़ हैं ?

जवाब ग़ुस्ल के तीन फ़राइज़ हैं : (1) कुल्ली करना (2) नाक में पानी चढ़ाना (3) तमाम ज़ाहिरी बदन पर पानी बहाना ।[1]

सुवाल "तमाम ज़ाहिरी बदन पर पानी बहाना" से क्या मुराद है ?

जवाब इस से मुराद येह है कि सर के बालों से ले कर पाउं के तल्वों तक जिस्म के हर पुर्ज़े और हर रौंगटे पर पानी बह जाए, अगर एक ज़र्रा भर जगह या किसी बाल की नोक भी पानी बहने से रह गई तो ग़ुस्ल न होगा ।[2]

सुवाल मर्द के बाल अगर गुंधे हुवे हों तो ग़ुस्ल किस त़रह़ होगा ?

जवाब अगर मर्द के सर के बाल गुंधे हुवे हों तो उन्हें खोल कर जड़ से नोक तक पानी बहाना फ़र्ज़ है ।[3]

सुवाल अगर नाख़ुन पर नेल पॉलिस लगी हुई हो तो क्या ग़ुस्ल हो जाएगा ?

जवाब अगर नेल पॉलिस नाख़ुनों पर लगी हुई है तो उस का छुड़ाना फ़र्ज़ है वरना ग़ुस्ल नहीं होगा ।[4]

सुवाल अगर हाथ में सियाही की तेह लगी रह जाए तो क्या ग़ुस्ल हो जाएगा ?

जवाब पकाने वाले के नाख़ुन में आटा, लिखने वाले के नाख़ुन में सियाही का जिर्म, आ़म लोगों के लिये मख्खी, मच्छर की बीट लगी हुई रह

---

1 . . . فتاوی ھندیة، کتاب الطھارة، الباب الثانی فی الغسل، الفصل الاول فی فرائضة، ۱/۱۳۔

2 .....फ़तावा रज़विय्या, 1 / 443-444 मुल्तक़त़न ।

3 . . . فتاوی ھندیة، کتاب الطھارة، الباب الثانی فی الغسل، الفصل الاول، ۱/۱۳۔

4 .....नमाज़ के अह़काम, स. 106 ।

www.dawateislami.net

गई और तवज्जोह न रही तो ग़ुस्ल हो जाएगा, हां मा'लूम हो जाने के बा'द जुदा करना और उस जगह का धोना ज़रूरी है पहले जो नमाज़ पढ़ी वोह हो गई।[1]

सुवाल बहते पानी में ग़ुस्ल का क्या त़रीक़ा है ?

जवाब अगर बहते पानी मसलन दरया या नहर में ग़ुस्ल किया तो थोड़ी देर उस में रुकने से तीन बार धोने, तरतीब और वुज़ू येह सब सुन्नतें अदा हो गईं।[2]

सुवाल औ़रत के बाल अगर गुंधे हुवे हों तो इस के लिये क्या हुक्म है ?

जवाब औ़रत पर सिर्फ़ बालों की जड़ तर कर लेना ज़रूरी है खोलना ज़रूरी नहीं, हां अगर चोटी इतनी सख़्त गुंधी हुई हो कि बे खोले जड़ें तर न होंगी तो खोलना ज़रूरी है।[3]

सुवाल जिन पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो क्या वोह अज़ान का जवाब दे सकते हैं ?

जवाब जिन पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो उन को अज़ान का जवाब देना जाइज़ है।[4]

सुवाल नापाकी की ह़ालत में दुरूद शरीफ़ पढ़ सकते हैं ?

जवाब जिन पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो उन को दुरूद शरीफ़ और दुआ़एं पढ़ने में ह़रज नहीं, मगर बेहतर येह है कि वुज़ू या कुल्ली कर के पढ़ें।[5]

सुवाल ऐसे दिन ग़ुस्ल फ़र्ज़ हुवा जिस दिन ग़ुस्ल करना सुन्नत या मुस्तह़ब

---

1 .....फ़तावा रज़विय्या, 1 / 455।

2 ...درمختار وردالمحتار، کتاب الطهارة، ۱/۳۲۰-۳۲۱۔

3 ...فتاوی هندیة، کتاب الطهارة، الباب الثانی فی الغسل، الفصل الاول، ۱/۱۳۔

4 ...فتاوی هندیة، کتاب الطهارة، الباب السادس، الفصل الرابع، ۱/۳۸۔

5 .....बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा, 2, 1 / 327।

www.dawateislami.net

है तो क्या उसे फ़र्ज़ के साथ दूसरा गुस्ल अलग से करना होगा ?

जवाब जिस पर चन्द गुस्ल हों मसलन ईद भी है और जुमुआ का दिन भी मज़ीद फ़र्ज़ गुस्ल भी हो तो तीनों की निय्यत कर के एक गुस्ल कर लिया, सब अदा हो गए और सब का सवाब मिलेगा ।[1]

सुवाल किन अय्याम में गुस्ल करना सुन्नत है ?

जवाब जुमुआ, ईदुल फ़ित्र, बक़र ईद, अ़रफ़ा के दिन (या'नी 9 ज़ुल हिज्जतुल ह़राम) और एह़राम बांधते वक़्त नहाना सुन्नत है ।[2]

सुवाल किन मवाक़ेअ़ पर गुस्ल करना मुस्तह़ब है ?

जवाब (1) वुक़ूफ़े अ़रफ़ात (2) वुक़ूफ़े मुज़्दलिफ़ा (3) ह़ाज़िरिये ह़रम (4) ह़ाज़िरिये सरकारे आ'ज़म صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم (5) दुख़ूले मिना (6) जमरों पर कंकरियां मारने के लिये तीनों दिन (7) शबे बराअत (8) शबे क़द्र (9) त़वाफ़ (10) अ़रफ़ा की रात (11) मजलिसे मीलाद शरीफ़ (12) दीगर मजालिसे ख़ैर में ह़ाज़िरी के लिये (13) मुर्दा नहलाने के बा'द (14) मजनून को जुनून जाने के बा'द (15) ग़शी से इफ़ाक़ा के बा'द ।[3]

तयम्मुम

सुवाल कुरआने पाक में तयम्मुम के बारे में क्या हुक्म है ?

जवाब कुरआने पाक में इरशाद हुवा :

---

1 ...ردالمحتار، کتاب الطهارة، مطلب: یوم عرفة افضل ...الخ، ۱/۳۴۱۔

2 ...فتاوی هندیة، الباب الثالث، الفصل الاول، ۱/۱۶۔

3 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1, 1/ 324-325۔ درمختار وردالمحتار ۱/۳۴۱-۳۴۳۔

www.dawateislami.net

﴿وَاِنْ كُنْتُمْ مَّرْضٰۤى اَوْ عَلٰى سَفَرٍ اَوْ جَآءَ اَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ الْغَآئِطِ اَوْ لٰمَسْتُمُ النِّسَآءَ فَلَمْ تَجِدُوْا مَآءً فَتَيَمَّمُوْا صَعِيْدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوْا بِوُجُوْهِكُمْ وَاَيْدِيْكُمْ مِّنْهُ﴾ (پ٦، المائدة:٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अगर तुम बीमार या सफ़र में हो या तुम में कोई क़ज़ाए ह़ाजत से आया या तुम ने औ़रतों से सोह़बत की और इन सूरतों में पानी न पाया तो पाक मिट्टी से तयम्मुम करो तो अपने मुंह और हाथों का इस से मस्ह़ करो।

सुवाल ह़दीसे पाक में तयम्मुम के मुतअ़ल्लिक़ क्या आया है ?

जवाब नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "पाक मिट्टी मुसलमान का वुज़ू है अगर्चे दस बरस पानी न पाए।"[1]

सुवाल तयम्मुम का हुक्म कब और किस मक़ाम पर नाज़िल हुवा ?

जवाब तयम्मुम का हुक्म हिजरत के पांचवें साल मक़ामे बैदा या ज़ातुल जैश में नाज़िल हुवा।[2]

सुवाल आयते तयम्मुम को किस की बरकत कहा गया ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की आल की।[3]

सुवाल तयम्मुम के कितने और कौन कौन से फ़राइज़ हैं ?

जवाब तयम्मुम में तीन फ़राइज़ हैं : (1) निय्यत (2) सारे मुंह पर हाथ फेरना (3) दोनों हाथ का कोहनियों समेत मस्ह़ करना।[4]

---

1 ...مسند احمد، ٨/٨٦، حدیث: ٢١٤٢٩۔

2 ...بخاری، کتاب التیمم، باب التیمم، ١/١٣٣، حدیث: ٣٣٤۔ सीरते मुस्त़फ़ा, स. 320

3 ...بخاری، کتاب التیمم، باب التیمم، ١/١٣٣، حدیث: ٣٣٤۔

4 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 2, 1 / 353-355।

www.dawateislami.net

सुवाल तयम्मुम की कितनी और कौन कौन सी सुन्नतें हैं ?

जवाब तयम्मुम की दस सुन्नतें हैं : (1) بِسْمِ اللّٰہ शरीफ़ कहना (2) हाथों को ज़मीन पर मारना (3) ज़मीन पर हाथ मार कर लौट देना (या'नी आगे बढ़ाना और पीछे लाना) (4) उंगलियां खुली हुई रखना (5) हाथों को झाड़ लेना (6) पहले मुंह फिर हाथों का मस्ह़ करना (7) दोनों का मस्ह़ पै दर पै होना (8) पहले सीधे फिर उलटे हाथ का मस्ह़ करना (9) दाढ़ी का ख़िलाल करना (10) उंगलियों का ख़िलाल करना जब कि ग़ुबार पहुंच गया हो ।[1]

सुवाल किस सूरत में उंगलियों का ख़िलाल करना फ़र्ज़ है ?

जवाब अगर (उंगलियों में) ग़ुबार न हो तो ख़िलाल फ़र्ज़ है ।[2]

सुवाल तयम्मुम किस चीज़ से करना जाइज़ है ?

जवाब जो चीज़ आग से जल कर न राख होती है न पिघलती है न नर्म होती है वोह ज़मीन की जिन्स (या'नी क़िस्म) से है इस से तयम्मुम जाइज़ है ।[3]

सुवाल तयम्मुम किन चीज़ों से टूट जाता है ?

जवाब जिन चीज़ों से वुज़ू टूट जाता है या ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो जाता है उन से तयम्मुम भी टूट जाता है और पानी पर क़ादिर होने से भी तयम्मुम टूट जाता है ।[4]

---

1 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 2,1 / 356 ।

2 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 2,1 / 356 ।

3 ...فتاوی ھندیۃ، کتاب الطھارۃ، الباب الرابع فی التیمم، الفصل الاول، ۱/۲۶۔

4 ...فتاوی ھندیۃ، کتاب الطھارۃ، الباب الرابع فی التیمم، الفصل الثانی، ۱/۲۹۔

www.dawateislami.net

सुवाल वुज़ू और ग़ुस्ल के तयम्मुम में क्या फ़र्क़ है ?

जवाब वुज़ू और ग़ुस्ल दोनों के तयम्मुम का एक ही त़रीक़ा है ।[1]

सुवाल क्या ज़म ज़म शरीफ़ के इलावा दूसरा पानी न होने की सूरत में तयम्मुम किया जा सकता है ?

जवाब अगर इतना आबे ज़म ज़म शरीफ़ पास है जो वुज़ू के लिये काफ़ी है तो तयम्मुम जाइज़ नहीं ।[2]

सुवाल क्या नमक से तयम्मुम जाइज़ है ?

जवाब जो नमक पानी से बनता है उस से तयम्मुम जाइज़ नहीं और जो कान से निकलता है जैसे सींधा नमक उस से जाइज़ है ।[3]

अज़ानो इक़ामत

सुवाल अज़ान की इब्तिदा कब हुई और इस्लाम के सब से पहले मुअज़्ज़िन का नाम बताइये ?

जवाब अज़ान की इब्तिदा हिजरत के पहले साल हुई और इस्लाम के सब से पहले मुअज़्ज़िन ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाले ह़बशी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं ।[4]

सुवाल दीने इस्लाम में अज़ान को क्या अहम्मिय्यत ह़ासिल है ?

जवाब अज़ान की अहम्मिय्यत का अन्दाज़ा इस बात से लगाइये कि पांचों फ़र्ज़ नमाज़ें ब शुमूल जुमुआ़ मुबारक जब जमाअ़ते मुस्तह़ब्बा के

---

1 ...جوھرۃ النیرۃ، کتاب الطہارۃ، باب التیمم، ص ۲۸۔

2 ...فتاوی تاتارخانیۃ، کتاب الطہارۃ، الفصل الخامس فی التیمم، نوع آخر فی بیان شرائطھم، ۱/۲۳۴۔

3 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 2,1 / 358 ।

4 ...شرح المواھب، باب بدء الاذان، ۲/۱۹۵۔ مسند احمد، مسند الانصار، ۸/۲۶۴۔

الاوائل للطبرانی، باب اول من اذن، ص ۱۱۶، رقم: ۸۵۔

www.dawateislami.net

साथ मस्जिद में वक़्त पर अदा की जाएं तो इन के लिये अज़ान सुन्नते मुअक्कदा है और इस का हुक्म मिस्ले वाजिब है कि अगर अज़ान न कही तो वहां के सब लोग गुनहगार होंगे। "फ़तावा ख़ानिया" में है : अज़ान शआइरे इस्लाम में से है हत्ता कि अगर किसी शहर, बस्ती या महल्ले के लोग अज़ान कहना छोड़ दें तो हाकिम उन्हें इस पर मजबूर करेगा और अगर वोह फिर भी न मानें तो उन से लड़ाई करेगा।[1]

सुवाल क्या प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अज़ान देना साबित है ?

जवाब जी हां ! हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सफ़र में अज़ान देना साबित है जिस में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कलिमाते शहादत यूं इरशाद फ़रमाए : اَشْهَدُ اَنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰه ।[2]

सुवाल आंखें दुखने से हिफ़ाज़त का कोई अ़मल बताएं ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं जो शख़्स मुअज़्ज़िन से اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰه सुन कर مَرْحَبًا بِحَبِيْبِيْ وَقُرَّةِ عَيْنِيْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم कहे फिर दोनों अंगूठे चूम कर आंखों पर रखे उस की आंखें कभी न दुखें।[3]

सुवाल पांचों नमाज़ों की अज़ान व इक़ामत का जवाब देने पर मर्दों को कितनी नेकियां मिलती हैं ?

---

1 ....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 3,1 / 464 माख़ूज़न ۔فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الثانی فی الاذان، ۱/۵۳۔ درمختار، کتاب الصلاۃ، ۲/۶۰ ۔ فتاوی خانیۃ، کتاب الصلاۃ، باب الاذان، ۱/۳۴۔

2 ...جدالممتار، باب الاذان، ۳/۸۱۔ फ़तावा रज़विय्या, हिस्सा, 5 / 375

3 ...المقاصد الحسنۃ، حرف المیم، ص ۳۹۰، تحت الحدیث: ۱۰۲۱۔

www.dawateislami.net

जवाब तीन करोड़ चौबीस लाख (3,24,00,000)।[1]

सुवाल अज़ान देने वाला कैसा हो ?

जवाब मुस्तहब येह है कि मुअज़्ज़िन मर्द, आ़क़िल, सालेह़, परहेज़गार, आ़लिम बिस्सुन्नह, ज़ी वजाहत, लोगों के अह़वाल का निगरां और जो जमाअ़त से रह जाने वाले हों, उन को ज़ज्र करने वाला हो, अज़ान पर मुदावमत (हमेशगी) करता हो और सवाब के लिये अज़ान कहता हो।[2]

सुवाल हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के कितने मुअज़्ज़िन थे ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पांच मुअज़्ज़िन थे :

(1) ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल बिन रबाह़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه

(2) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन उम्मे मक्तूम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه

(3) ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन आ़इज़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه

(4) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मह़ज़ूरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه और

(5) ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ियाद बिन ह़ारिस सुदाई رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه।[3]

सुवाल तिलावते कुरआन के दौरान अज़ान शुरूअ़ हो जाए तो क्या करे ?

जवाब जब अज़ान हो तो उतनी देर के लिये सलाम व कलाम और जवाबे सलाम और तमाम काम मौक़ूफ़ कर दीजिये यहां तक कि तिलावत भी, अज़ान को ग़ौर से सुनिये और जवाब दीजिये। इक़ामत में भी इसी त़रह़ कीजिये।[4]

---

1 .....फ़ैज़ाने अज़ान, स. 6।

2 ...فتاوی ہندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الثانی فی الاذان، الفصل الاول، ۱/۵۳۔

3 ...مجموعۃ رسائل اللکنوی، خیر الخبر فی اذان خیر البشر، ۴/۳۲۸۔

4 .....फ़ैज़ाने अज़ान, स. 12।

www.dawateislami.net

सुवाल क्या अज़ान हो जाने के बा'द भी अज़ान का जवाब दिया जा सकता है ?

जवाब अगर ब वक़्ते अज़ान जवाब न दिया और ज़ियादा देर न गुज़री हो तो जवाब दे सकते हैं।[1]

सुवाल ब वक़्ते अज़ान बातें करने वाले के लिये क्या वईद है ?

जवाब जो शख़्स अज़ान के वक़्त बातों में लगा रहे उस पर مَعَاذَاللہ ख़ातिमा बुरा होने का ख़ौफ़ है।[2]

सुवाल क्या अज़ान सिर्फ़ नमाज़ों के लिये दी जा सकती है ?

जवाब जी नहीं ! बल्कि दर्जे ज़ैल मवाक़ेअ़ पर भी अज़ान देना मुस्तहब है : (1) बच्चे (2) ग़मगीन (3) मिर्गी वाले (4) ग़ज़ब नाक और बद मिज़ाज आदमी और (5) बद मिज़ाज जानवर के कान में (6) लड़ाई की शिद्दत के वक़्त (7) आग लगने के वक़्त (8) मय्यित दफ़्न करने के बा'द (9) जिन्न की सरकशी के वक़्त (या किसी पर जिन्न सुवार हो) (10) उस वक़्त जब जंगल में रास्ता भूल जाएं और कोई बताने वाला न हो।[3] और (11) वबा के ज़माने में भी अज़ान देना मुस्तहब है।

सुवाल इक़ामत के वक़्त कोई शख़्स आया तो उस का खड़े हो कर इन्तिज़ार करना कैसा ?

जवाब इक़ामत के वक़्त कोई शख़्स आया तो उसे खड़े हो कर इन्तिज़ार करना मकरूह है बल्कि बैठ जाए जब इक़ामत कहने वाला

---

1 ...ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب الاذان، مطلب: فی کراھۃ تکرار الجماعۃ فی المسجد، ۲/۸۱۔

2 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा 3, 1 / 473 ।

3 .....फ़तावा रज़विय्या, 5 / 370 ।

www.dawateislami.net

حَیَّ عَلَی الْفَلَاح पर पहुंचे उस वक़्त खड़ा हो। यूंही जो लोग मस्जिद में मौजूद हैं, वोह भी बैठे रहें, उस वक़्त उठें, जब इक़ामत कहने वाला حَیَّ عَلَی الْفَلَاح पर पहुंचे, येही हुक्म इमाम के लिये है।[1]

नमाज़

सुवाल हदीसे पाक में नमाज़ का चोर किसे कहा गया है?

जवाब नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : लोगों में बदतरीन चोर वोह है जो अपनी नमाज़ में चोरी करे। अ़र्ज़ की गई : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! नमाज़ का चोर कौन है? इरशाद फ़रमाया : जो रुकूअ़ और सजदे पूरे न करे।[2]

सुवाल अल्लाह तआ़ला कैसी नमाज़ की त़रफ़ नज़र नहीं फ़रमाता?

जवाब प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला बन्दे की उस नमाज़ की त़रफ़ नज़र नहीं फ़रमाता जिस में रुकूअ़ व सुजूद के दरमियान पीठ सीधी न करे।[3]

सुवाल त़वील क़ियाम करना अफ़्ज़ल है या ज़ियादा रक्अ़तें पढ़ना?

जवाब नमाज़ में क़ियाम त़वील होना कसरते रक्आ़त से अफ़्ज़ल है या'नी जब कि किसी वक़्ते मुअ़य्यन तक नमाज़ पढ़ना चाहे मसलन दो रक्अ़त में उतना वक़्त सर्फ़ कर देना चार रक्अ़त पढ़ने से अफ़्ज़ल है।[4]

---

1 ...فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الثانی فی الأذان، الفصل الثانی، ۱/۵۷۔

2 ...مسند احمد، حدیث ابی قتادۃ الانصاری، ۸/۳۸۶، حدیث: ۲۲۷۰۵۔

3 ...مسند احمد، مسند ابی ھریرۃ، ۳/۶۱۷، حدیث: ۱۰۸۰۳۔

4 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा 4, 1 / 667।

www.dawateislami.net

सुवाल किस नमाज़ की जमाअ़त में नया आने वाला मुक़्तदी शरीक नहीं हो सकता ?

जवाब अगर फ़र्ज़ छूट जाने के इलावा किसी सबब से नमाज़े बा जमाअ़त दोहराई जा रही हो तो नया आने वाला मुक़्तदी उस में शरीक नहीं हो सकता, अलबत्ता अगर तर्के फ़र्ज़ के सबब दोहराई जाए तो नया शख़्स शरीक हो सकता है ।(1)

सुवाल एक रुक्न में कितनी बार खुजाने से नमाज़ फ़ासिद हो जाती है ?

जवाब एक रुक्न में तीन बार खुजाने से नमाज़ फ़ासिद हो जाती है, या'नी यूं कि खुजा कर हाथ हटा लिया फिर खुजाया फिर हटा लिया, येह दो बार हुवा अगर अब इसी त़रह़ तीसरी बार किया तो नमाज़ जाती रहेगी ।(2)

सुवाल कब आमीन कहने से नमाज़ टूट जाती है इस की कोई सूरत बयान करें ?

जवाब नमाज़ पढ़ने वाले को छींक आई तो दूसरे ने कहा : يَرْحَمُكَ الله, उस पर छींक वाले ने आमीन कहा तो इस सूरत में आमीन कहने से नमाज़ टूट जाती है ।(3)

सुवाल नमाज़ की ह़ालत में इधर उधर देखने का क्या हुक्म है ?

जवाब इधर उधर मुंह फेर कर देखना चाहे पूरा मुंह फेरा या थोड़ा मकरूहे तह़रीमी है, मुंह फेरे बिग़ैर सिर्फ़ आंखें फिरा कर इधर उधर बे

---

1 .....फ़तावा रज़विय्या, 7 / 52 ।

2 . . . فتاوی ھندیة، کتاب الصلاة، الباب السابع فیمایفسد الصلاة، النوع الثانی، ۱/۱۰۴۔

غنیة المتملی، مفسدات الصلاة، ص ۴۴۸۔

3 . . . غنیة المتملی، کتاب الصلاة، فصل فیمایفسد الصلاة، ص ۴۳۹۔

www.dawateislami.net

ज़रूरत देखना मकरूहे तन्ज़ीही है और नादिरन किसी ग़र्ज़े सहीह से हो तो अस्लन ह़रज नहीं, ह़ालते नमाज़ में निगाह आस्मान की त़रफ़ उठाना भी मकरूहे तह़रीमी है।[1]

सुवाल सुतरा किसे कहते हैं और इस की मिक़्दार कितनी हो ?

जवाब नमाज़ी के आगे किसी ऐसी चीज़ का होना जिस से आड़ हो जाए उसे सुतरा कहते हैं। सुतरा ब क़दर एक हाथ के ऊंचा और उंगली बराबर मोटा हो।[2]

सुवाल किस सूरत में दौराने जमाअ़त एक शख़्स नमाज़ियों के आगे से गुज़रने के बा वुजूद गुनाहगार नहीं होता ?

जवाब जब इमाम के आगे सुतरा मौजूद हो तो अब इमाम का सुतरा मुक़्तदियों के लिये भी सुतरा है, उन के लिये अलग सुतरे की ह़ाजत नहीं, इस सूरत में कोई मुक़्तदियों के आगे से गुज़रा तो गुनाहगार नहीं।[3]

सुवाल नमाज़ में क़ुरआने पाक से देख कर पढ़ना कैसा है ?

जवाब नमाज़ में मुस्ह़फ़ शरीफ़ (क़ुरआने पाक) से देख कर क़ुरआन पढ़ना मुत़लक़न मुफ़्सिदे नमाज़ है, यूंही अगर मेह़राब वग़ैरा में लिखा हो उसे देख कर पढ़ना भी मुफ़्सिद है, हां अगर याद पर पढ़ता हो मुस्ह़फ़ या मेह़राब पर फ़क़त़ नज़र है, तो ह़रज नहीं।[4]

सुवाल ता'दीले अरकान किसे कहते हैं ?

---

1 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा 3, 1 / 626 मुलख़्ख़सन।

2 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा 3, 1 / 615।

3 ...ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب مایفسد الصلاۃ ومایکرہ فیھا، مطلب اذا قرا قولہ ... الخ، ۲/۴۸۷۔

4 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा 3, 1 / 609।

www.dawateislami.net

जवाब ता'दीले अरकान या'नी रुकूअ़, सुजूद, क़ौमा और जल्सा में कम अज़ कम एक बार سُبْحَانَ الله कहने की मिक़्दार ठहरना।[1]

सुवाल अ़मले कसीर क्या है और कब इस से नमाज़ फ़ासिद होती है ?

जवाब अ़मले कसीर कि न आ'माले नमाज़ से हो न नमाज़ की इस्लाह़ के लिये किया गया हो, नमाज़ फ़ासिद कर देता है, जिस काम के करने वाले को दूर से देख कर उस के नमाज़ में न होने का शक न रहे, बल्कि गुमाने ग़ालिब हो कि नमाज़ में नहीं तो वोह अ़मले कसीर है।[2]

नमाज़ की शराइत़

सुवाल नमाज़ की कितनी और कौन कौन सी शराइत़ हैं ?

जवाब नमाज़ की छे शराइत़ हैं (1) त़हारत (2) सित्रे औ़रत (3) इस्तिक़्बाले क़िब्ला (4) वक़्त (5) निय्यत (6) तक्बीरे तह़रीमा।[3]

सुवाल वोह कौन सी जगह है जहां किसी भी त़रफ़ मुंह कर के नमाज़ पढ़ी जा सकती है ?

जवाब का'बा शरीफ़ की इ़मारत के अन्दर या उस की छत पर नमाज़ पढ़े तो जिस त़रफ़ भी चाहे मुतवज्जेह हो कर नमाज़ पढ़ना जाइज़ है।[4]

सुवाल वोह कौन सा पाक व साफ़ कपड़ा है जिसे पहन कर नमाज़ पढ़ना जाइज़ नहीं ?

जवाब चुराया हुवा कपड़ा या धोबी वग़ैरा के यहां से बदला हुवा कपड़ा अगर्चे पाक व साफ़ हो मगर उसे पहन कर नमाज़ पढ़ना मकरूहे

1 ...درمختار ورد المحتار، کتاب الصلاۃ، باب صفۃ الصلاۃ، مطلب: قد یشار الی المثنی...الخ، ۲/۱۹۳۔

2 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा 3, 1 / 609 मुल्तक़त़न।

3 ...درمختار، کتاب الصلاۃ، باب شروط الصلاۃ، ۲/۸۹۔

4 ...فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الثالث فی شروط الصلاۃ، الفصل الثالث فی استقبال القبلۃ، ۱/۶۳۔

www.dawateislami.net

तह़रीमी, नाजाइज़ और गुनाह है, नमाज़ वाजिबुल इआ़दा होगी और ऐसे कपड़े का पहनना मर्द व औ़रत सब को ह़राम है।[1]

सुवाल वोह कौन है जो पानी पर कुदरत और याद होते हुवे बिग़ैर वुज़ू नमाज़ पढ़े तो गुनाहगार नहीं ?

जवाब नाबालिग़ बच्चा ऐसा करे तो गुनाहगार नहीं क्यूंकि नाबालिग़ पर वुज़ू फ़र्ज़ नहीं।[2] मगर उन से वुज़ू कराना चाहिये ताकि आ़दत हो और वुज़ू करना आ जाए और मसाइले वुज़ू से आगाह हो जाएं।

सुवाल वोह कौन सी ज़मीन है जिस से तयम्मुम नहीं कर सकता लेकिन वहां नमाज़ पढ़ सकता है ?

जवाब ऐसी नजिस ज़मीन जो धूप या हवा से पाक हो गई उस पर मुसल्ला बिछाए बिग़ैर नमाज़ पढ़ना जाइज़ है मगर उस से तयम्मुम करना जाइज़ नहीं।[3]

सुवाल मकरूह औक़ात कितने और कौन कौन से हैं ?

जवाब मकरूह औक़ात तीन हैं : (1) तुलूए़ आफ़्ताब से ले कर 20 मिनट बा'द तक (2) गुरूबे आफ़्ताब से 20 मिनट पहले (3) निस्फ़ुन्नहार या'नी ज़ह़्वए कुब्रा से ले कर ज़वाले आफ़्ताब तक।[4]

सुवाल एक पाउं पर खड़े हो कर नमाज़ पढ़ी तो क्या हुक्म है ?

जवाब बिला ज़रूरत एक पाउं पर खड़े हो कर नमाज़ पढ़ी तो मकरूह है

---

1 .....फ़तावा रज़विय्या 7/ 298, 394, मुल्तक़त़न।

2 ...ردالمحتار، کتاب الطهارة، مطلب في اعتبارات المرکب التام، ۱/۲۰۲۔

3 ...شرح وقاية، کتاب الطهارة، باب التيمم، الجزء ۱، ص ۹۸۔

4 ...درمختار وردالمحتار، کتاب الصلاة، مطلب: يشترط العلم بدخول الوقت، ۲/۳۷-۴۰۔

बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 3, 1/ 454 मुलख़्ख़सन।

www.dawateislami.net

हां जिस जगह पाउं रखना है वोह जगह नापाक है तो एक पाउं उठा कर नमाज़ पढ़ सकता है।[1]

सुवाल सजदे में पेशानी पाक जगह जब कि नाक नजिस जगह पर हो तो क्या नमाज़ हो जाएगी ?

जवाब जी हां नमाज़ हो जाएगी कि नाक दिरहम से कम जगह पर लगती है लेकिन बिला ज़रूरत येह भी मकरूह है।[2]

सुवाल अगर नमाज़ की ह़ालत में सिर्फ़ मुंह क़िब्ले से फेर दिया तो क्या हुक्म है ?

जवाब अगर मुंह क़िब्ले से फेरा तो वाजिब है कि फ़ौरन क़िब्ले की जानिब कर ले इस सूरत में नमाज़ फ़ासिद न होगी लेकिन बिला ज़रूरत येह भी मकरूह है।[3]

सुवाल अगर किसी ने नमाज़ की यूं निय्यत की, कि "मैं चार रक्अ़त मग़रिब की या तीन रक्अ़त ज़ोहर की अदा करता हूं" नमाज़ हो जाएगी ?

जवाब जी हां नमाज़ हो जाएगी क्यूंकि निय्यत में ता'दादे रक्आ़त की ज़रूरत नहीं अलबत्ता अफ़्ज़ल ज़रूर है।[4]

सुवाल इमाम ने अगर किसी मख़्सूस शख़्स के मुतअ़ल्लिक़ येह क़स्द कर लिया कि "मैं फ़ुलां का इमाम नहीं हूं" तो ऐसी सूरत में उस शख़्स की नमाज़ होगी या नहीं ?

जवाब उस शख़्स की नमाज़ हो जाएगी क्यूंकि इमाम को निय्यते इमामत करना ज़रूरी नहीं।[5]

---

1 ...ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب شروط الصلاۃ، ۲/۹۲

2 ...ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب شروط الصلاۃ، ۲/۹۲۔

3 ...منیۃ المصلی، الشرط الرابع وھو استقبال القبلۃ، ص ۲۲۳-۲۲۴۔

4 ...درمختار وردالمحتار، کتاب الصلاۃ، مطلب فی حضور القلب والخشوع، ۲/۱۲۱۔

5 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الصلاۃ، الباب الثالث فی شروط الصلاۃ، الفصل الرابع فی النیۃ، ۱/۶۶۔

www.dawateislami.net

सुवाल ऐसे कपड़ों में नमाज़ पढ़ी जिस में बदन नज़र आता हो तो नमाज़ का क्या हुक्म है ?

जवाब इतना बारीक कपड़ा जिस में बदन चमकता हो सत्र के लिये काफ़ी नहीं उस में नमाज़ पढ़ी तो नमाज़ न होगी ।[1]

नमाज़ के फ़राइज़

सुवाल नमाज़ के फ़राइज़ कितने और कौन कौन से हैं ?

जवाब नमाज़ के सात फ़राइज़ हैं : (1) तक्बीरे तह़रीमा (2) क़ियाम (3) क़िराअत (4) रुकूअ़ (5) सुजूद (6) क़ा'दए अख़ीरा (7) ख़ुरूजे बिसुन्इही ।[2]

सुवाल नमाज़ में क़िराअत किस त़रह़ करनी चाहिये ?

जवाब क़िराअत इस त़रह़ करनी चाहिये कि तमाम हुरूफ़ मख़ारिज से अदा किये जाएं कि हर ह़र्फ़ दूसरे से सह़ीह़ त़ौर पर मुमताज़ (नुमायां) हो जाए ।[3]

सुवाल मुक़्तदी ने तक्बीरे तह़रीमा इमाम से पहले ख़त्म कर ली तो नमाज़ का क्या हुक्म होगा ?

जवाब मुक़्तदी ने तक्बीरे तह़रीमा का लफ़्ज़े "**अल्लाह**" इमाम के साथ कहा मगर "**अक्बर**" इमाम से पहले ख़त्म कर लिया तो नमाज़ न होगी ।[4]

सुवाल जो रुकूअ़ में "سُبْحٰنَ رَبِّیَ الْعَظِیْم" का "عظیم" सह़ीह़ अदा न कर सके वोह क्या पढ़े ?

---

1 ...فتاوی ہندیہ، کتاب الصلاۃ، الباب الثالث فی شروط الصلاۃ، الفصل الاول فی الطہارۃ وستر العورۃ، ۱/۵۸۔

2 ...درمختار، کتاب الصلاۃ، باب صفۃ الصلاۃ، ۲/۱۵۸-۱۷۰۔

3 ...فتاوی ہندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الرابع فی صفۃ الصلاۃ، الفصل الاول، ۱/۶۹۔

4 ...فتاوی ہندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الرابع، الفصل الاول، ۱/۶۸-۶۹۔

www.dawateislami.net

जवाब उसे चाहिये कि वोह "سُبْحٰنَ رَبِّیَ الْکَرِیْم" पढ़े।[1]

सुवाल रुकूअ़ का अदना दरजा क्या है ?

जवाब इतना झुकना कि हाथ बढ़ाए तो घुटने को पहुंच जाए, येह रुकूअ़ का अदना दरजा है।[2]

सुवाल रुकूअ़ का मुकम्मल दरजा क्या है ?

जवाब इतना झुकना कि पीठ सीधी बिछा दे येह रुकूअ़ का पूरा दरजा है।[3]

सुवाल हर रक्अ़त में कितनी बार सजदा फ़र्ज़ है ?

जवाब हर रक्अ़त में दो बार सजदा फ़र्ज़ है।[4]

सुवाल सजदे में पेशानी जमने का क्या मत़लब है ?

जवाब जमने के मा'ना येह हैं कि ज़मीन की सख़्ती मह़सूस हो अगर किसी ने इस त़रह़ सजदा किया कि पेशानी न जमी तो सजदा न होगा।[5]

सुवाल नमाज़ में तक्बीरे तह़रीमा की बजाए سُبْحَانَ اللہ कह कर नमाज़ शुरूअ़ की तो क्या हुक्म है ?

जवाब इस सूरत में नमाज़ शुरूअ़ हो जाएगी लेकिन اَللّٰہُ اَکْبَر की जगह سُبْحَانَ اللہ कहना मकरूहे तह़रीमी है।[6]

सुवाल किस सूरत में सामने नमाज़ पढ़ने वाले की पीठ पर सजदा करना जाइज़ है ?

---

1 ...ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صفۃ الصلاۃ، مطلب: قراءۃ البسملۃ...الخ، ۲/۲۴۲۔

2 ...درمختار، کتاب الصلاۃ، باب صفۃ الصلاۃ، ۲/۱۶۵۔

3 ...حاشیۃ طحطاوی، کتاب الصلاۃ، باب شروط الصلاۃ وارکانھا، ص ۲۲۹۔

4 ...درمختار وردالمحتار، کتاب الصلاۃ، ۲/۱۶۷۔

5 ...فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الرابع، الفصل الاول، ۱/۷۰، नमाज़ के अह़काम स. 214 मुल्तक़त़न

6 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الصلاۃ، الباب الرابع فی صفۃ الصلاۃ، الفصل الاول فی فرائض الصلاۃ، ۱/۶۸۔

www.dawateislami.net

जवाब जब भीड़ बहुत ज़ियादा हो तो सामने वाले की पीठ पर सजदा करना जाइज़ है जब कि वोह उस की नमाज़ में शरीक हो।[1]

सुवाल सजदए सह्व करने के बा'द बिग़ैर तशह्हुद पढ़े सलाम फेर दिया तो क्या हुक्म है ?

जवाब फ़र्ज़ अदा हो जाएगा लेकिन ऐसा करने से गुनाहगार होगा और नमाज़ फिर से पढ़नी वाजिब होगी।[2]

सुवाल क़िराअत की जगह सिर्फ़ بِسۡمِ اللّٰہ पढ़ ली तो क्या नमाज़ हो जाएगी ?

जवाब नमाज़ नहीं होगी क्यूंकि सिर्फ़ بِسۡمِ اللّٰہ पढ़ने से फ़र्ज़ अदा न होगा।[3]

वाजिबाते नमाज़ और सजदए सह्व

सुवाल वाजिबाते नमाज़ में से अगर कोई वाजिब भूले से रह जाए तो क्या हुक्म है ?

जवाब वाजिबाते नमाज़ में से अगर कोई वाजिब भूले से रह जाए तो सजदए सह्व वाजिब है।[4]

सुवाल सजदए सह्व का क्या त़रीक़ा है ?

जवाब अत्तहिय्यात पढ़ कर बल्कि अफ़्ज़ल येह है कि दुरूद शरीफ़ भी पढ़ लीजिये, सीधी त़रफ़ सलाम फेर कर दो सजदे कीजिये फिर तशह्हुद, दुरूद शरीफ़ और दुआ़ पढ़ कर सलाम फेर दीजिये।[5]

---

1 ...فتاوی ہندیہ، کتاب الصلاۃ، الباب الرابع فی صفۃ الصلاۃ، الفصل الاول فی فرائض الصلاۃ، ۱/۷۰۔

2 ...بہار شریعت, حصہ 3, 1 / 516، درمختار، کتاب الصلاۃ، ۲/۱۹۳

3 ...بہار شریعت, حصہ 3, 1 / 512، درمختار، کتاب الصلاۃ، باب صفۃ الصلاۃ، ۲/۲۳۶

4 ...درمختار وردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب سجود السھو، ۲/۶۵۱، ۶۵۵۔

5 ...فتاوی ہندیہ، کتاب الصلاۃ، الباب الثانی عشر فی سجود السھو، ۱/۱۲۵۔

www.dawateislami.net

सुवाल अगर दाहिनी त़रफ़ सलाम फेरे बिग़ैर सजदए सह्व कर लिया तो क्या हुक्म है ?

जवाब अगर बिग़ैर सलाम फेरे सजदए सह्व कर लिया तो नमाज़ हो जाएगी लेकिन ऐसा करना मकरूहे तन्ज़ीही है ।[1]

सुवाल सजदए सह्व के बा'द अत्तह़िय्यात पढ़ने का क्या हुक्म है ?

जवाब सजदए सह्व के बा'द भी अत्तह़िय्यात पढ़ना वाजिब है ।[2]

सुवाल क़ियाम में कोई शख़्स सूरए फ़ातिह़ा पढ़ कर कुछ देर सोचता रहा कि कौन सी सूरत पढ़ूं तो क्या हुक्म है ?

जवाब अगर ब क़दरे अदाए रुक्न या'नी जितनी देर में 3 बार "سُبْحَانَ الله" कह लेता इतने वक़्त तक सोचता रहा तो सजदए सह्व लाज़िम है ।[3]

सुवाल अगर सजदए सह्व वाजिब होने के बा वुजूद न किया तो क्या हुक्म है ?

जवाब अस्ल हुक्म येह है (कि) सजदए सह्व वाजिब हुवा अगर न किया नमाज़ मकरूहे तह़रीमी हुई जिस का इआ़दा करना वाजिब (है) ।[4]

सुवाल जान बूझ कर वाजिब तर्क किया तो क्या हुक्म है ?

जवाब जान बूझ कर वाजिब तर्क किया तो सजदए सह्व काफ़ी नहीं बल्कि नमाज़ दोबारा लौटाना वाजिब है ।[5]

---

1 ...درمختار، کتاب الصلاۃ، باب سجود السھو ۲/۶۵۳۔

2 ...فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الثانی عشر فی سجود السھو ۱/۱۲۵۔

3 .....फ़तावा रज़विय्या, 8 / 177 मुल्तक़त़न ।

4 .....फ़तावा रज़विय्या, 8 / 178 मुल्तक़त़न ।

5 ...درمختار و ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب: سجود السھو ۲/۶۵۵۔

www.dawateislami.net

सुवाल फ़र्ज़ तर्क हो गया तो क्या सजदए सह्व से उस की तलाफ़ी हो जाएगी ?

जवाब फ़र्ज़ तर्क हो जाने से नमाज़ जाती रहती है सजदए सह्व से उस की तलाफ़ी नहीं हो सकती लिहाज़ा दोबारा पढ़िये ।[1]

सुवाल नमाज़ में कुरआने पाक पढ़ने से कब सजदए सह्व वाजिब होता है ?

जवाब क़ियाम के इलावा दीगर अरकान में कुरआने मजीद पढ़ने से सजदए सह्व वाजिब होता है ।[2]

सुवाल एक से ज़ाइद वाजिब तर्क हुवे तो कितने सजदए सह्व करने होंगे ?

जवाब नमाज़ में अगर्चे दस वाजिब तर्क हुवे, सह्व के दो ही सजदे सब के लिये काफ़ी हैं ।[3]

सुवाल क़ा'दए ऊला में तशह्हुद के बा'द अगर बे ख़याली में اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ या اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا कह लिया तो इस से नमाज़ पर क्या असर पड़ेगा ?

जवाब फ़र्ज़, वित्र और सुन्नते मुअक्कदा के क़ा'दए ऊला में तशह्हुद के बा'द अगर बे ख़याली में ऐसा हुवा सजदए सह्व वाजिब हो जाएगा और अगर जान बूझ कर कहा तो नमाज़ लौटाना वाजिब है ।[4]

सुवाल किस सूरत में नमाज़ी सलाम फेरने के बा वुजूद नमाज़ से बाहर नहीं होता ?

जवाब जिस पर सजदए सह्व वाजिब हो मगर सह्व होना याद न हो तो इस सूरत में सलाम फेरने के बा वुजूद नमाज़ के बाहर नहीं बशर्त

1 ...درمختاروردالمحتار کتاب الصلاۃ، باب: سجودالسھو ۲/۶۵۵۔

2 ...ردالمحتار کتاب الصلاۃ، باب سجودالسھو ۲/۶۵۷، بہارِ شریعت, हिस्सा, 4,1 / 713

3 ...درمختاروردالمحتار کتاب الصلاۃ، باب: سجودالسھو ۲/۶۵۵۔

4 ...درمختاروردالمحتار کتاب الصلاۃ، باب سجودالسھو ۲/۶۵۷۔

www.dawateislami.net

येह कि सजदए सह्व कर ले लिहाज़ा जब तक कोई फ़े'ल मुनाफ़िये नमाज़ न किया हो उसे हुक्म है कि सजदए सह्व करे और तशह्हुद वग़ैरा पढ़ कर नमाज़ पूरी करे।[1]

नमाज़े वित्र

सुवाल नमाज़े वित्र का वक़्त कब से कब तक है ?

जवाब वित्र का वक़्त इशा के फ़र्ज़ों के बा'द से सुब्हे सादिक़ तक है।[2]

सुवाल नमाज़े वित्र कब अदा करना अफ़्ज़ल है ?

जवाब जो सो कर उठने पर क़ादिर हो उस के लिये अफ़्ज़ल है कि रात के आख़िरी हिस्से में उठ कर पहले तहज्जुद अदा करे फिर वित्र।[3] हदीसे पाक में है : "जिस शख़्स को येह ख़द्शा हो कि वोह रात के पिछले पहर नहीं उठ सकेगा वोह वित्र पढ़ कर सोया करे और जिस शख़्स को रात के उठने पर ए'तिमाद हो वोह रात के पिछले पहर वित्र पढ़े"[4]

सुवाल नमाज़े वित्र का हुक्म बताइये ?

जवाब नमाज़े वित्र वाजिब है।[5] अगर येह छूट जाए तो इस की क़ज़ा लाज़िम है।[6]

---

1 ...درمختار وردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب سجود السھو، ۲/۶۷۰-۶۷۱۔

2 ...مراقی الفلاح وحاشیۃ طحطاوی، ص۱۷۸۔

3 ...غنیۃ المتملی، ص۴۰۳۔

4 ...مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین وقصرھا، باب من خاف ان لا یقوم...الخ، ص۳۸۰، حدیث: ۷۵۵۔

5 ...بحر الرائق، کتاب الصلاۃ، باب الوتر والنوافل، ۲/۶۶۔

6 ...درمختار وردالمحتار، کتاب الصلاۃ، مطلب: فی منکر الوتر...الخ، ۲/۵۳۲۔

www.dawateislami.net

सुवाल वित्र में तक्बीरे कुनूत कहने का क्या हुक्म है ?

जवाब तीसरी रक्अ़त में क़िराअत के बा'द तक्बीरे कुनूत कहना वाजिब है।[1]

सुवाल मश्हूर दुआ़ए कुनूत कौन सी है ?

जवाब मश्हूर दुआ़ए कुनूत येह है :

"اَللّٰھُمَّ اِنَّا نَسْتَعِیْنُكَ وَ نَسْتَغْفِرُكَ وَنُؤْمِنُ بِكَ
وَنَتَوَكَّلُ عَلَیْكَ وَنُثْنِیْ عَلَیْكَ الْخَیْرَ وَنَشْكُرُكَ وَلَا نَكْفُرُكَ وَ نَخْلَعُ وَنَتْرُكُ مَنْ
یَّفْجُرُكَ ؕ اَللّٰھُمَّ اِیَّاكَ نَعْبُدُ وَلَكَ نُصَلِّیْ وَنَسْجُدُ وَاِلَیْكَ نَسْعٰی وَنَحْفِدُ وَنَرْجُوْ
رَحْمَتَكَ وَنَخْشٰی عَذَابَكَ اِنَّ عَذَابَكَ بِالْكُفَّارِ مُلْحِقٌ۔"[2]

सुवाल जो शख़्स दुआ़ए कुनूत न पढ़ सके तो वोह क्या पढ़े ?

जवाब वोह येह पढ़े : "اَللّٰھُمَّ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً وَّفِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ" या तीन मरतबा येह पढ़े : "اَللّٰھُمَّ اغْفِرْلِیْ"।[3]

सुवाल अगर दुआ़ए कुनूत पढ़ना भूल जाएं तो क्या करें ?

जवाब अगर दुआ़ए कुनूत पढ़ना भूल गए और रुकूअ़ में चले गए तो वापस न लौटिये बल्कि सजदए सह्व कर लीजिये।[4]

सुवाल दुआ़ए कुनूत बुलन्द आवाज़ से पढ़ी जाए या आहिस्ता ?

जवाब दुआ़ए कुनूत आहिस्ता आवाज़ से पढ़े इमाम हो या मुन्फ़रिद या मुक़्तदी, अदा हो या क़ज़ा, रमज़ान में हो या और दिनों में।[5]

---

1 ...درمختار وردالمحتار کتاب الصلاۃ، مطلب: فی منکر الوتر...الخ، ۲/۵۳۳۔

2 .....नमाज़ के अह़काम, स. 274।

3 ...مراقی الفلاح، کتاب الصلاۃ، باب الوتر واحکامہ، ص۱۹۷۔

4 ...فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الثامن فی صلاۃ الوتر، ۱/۱۱۱۔

5 ...درمختار وردالمحتار کتاب الصلاۃ، باب الوتر والنوافل، مطلب فی منکر الوتر...الخ، ۲/۵۳۶۔

www.dawateislami.net

सुवाल किस शख़्स को वित्र की नमाज़ में दुआए कुनूत पढ़ना मन्अ़ है ?

जवाब जो शख़्स वित्र की जमाअ़त में तीसरी रक्अ़त के रुकूअ़ में शामिल हुवा और इमाम के साथ कुनूत न पढ़ सका वोह अपनी बक़िय्या नमाज़ में भी कुनूत नहीं पढ़ेगा।[1]

सुवाल मुक़्तदी की दुआए कुनूत ख़त्म होने से क़ब्ल इमाम रुकूअ़ में चला गया तो मुक़्तदी के लिये क्या हुक्म है ?

जवाब अगर मुक़्तदी दुआए कुनूत से फ़ारिग़ न हुवा था कि इमाम रुकूअ़ में चला गया तो मुक़्तदी भी इमाम की इत्तिबाअ़ करते हुवे रुकूअ़ में चला जाए।[2]

सुवाल क्या वित्र के इलावा किसी और नमाज़ में दुआए कुनूत पढ़ सकते हैं ?

जवाब वित्र के सिवा और किसी नमाज़ में कुनूत न पढ़े।[3]

सुवाल क़ा'दए अख़ीरा के इलावा नमाज़ में कब दुरूद शरीफ़ पढ़ना मुस्तहब है ?

जवाब क़ा'दए अख़ीरा के इलावा नमाज़ में दुआए कुनूत के बा'द दुरूद शरीफ़ पढ़ना मुस्तहब है।[4]

सुन्नतें और नवाफ़िल

सुवाल सब सुन्नतों में क़वी तर सुन्नत कौन सी है ?

---

1 ...فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الثامن فی صلاۃ الوتر، ۱/۱۱۱۔

2 ...فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الثامن فی صلاۃ الوتر، ۱/۱۱۱۔

3 ...درمختار وردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب الوتر والنوافل، مطلب فی القنوت للنازلۃ...الخ، ۲/۵۴۱۔

4 ...غنیۃ المتملی، صلاۃ الوتر، ص ۴۱۴۔۴۱۸۔

درمختار وردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب الوتر والنوافل، مطلب فی منکر الوتر...الخ، ۲/۵۳۴، ملتقطاً۔

www.dawateislami.net

जवाब सुन्नते फ़ज्र ।[1]

सुवाल हदीसे पाक में फ़र्ज़ नमाज़ के बा'द सब से अफ़्ज़ल नमाज़ किसे कहा गया ?

जवाब हदीसे पाक में फ़र्ज़ नमाज़ के बा'द रात की नमाज़ को सब से अफ़्ज़ल कहा गया ।[2]

सुवाल किस सूरत में ज़ोहर की दो रक्अ़त सुन्नत को ज़ोहर की चार रक्अ़त सुन्नत से पहले पढ़ना अफ़्ज़ल है ?

जवाब जब कि ज़ोहर की चार रक्अ़त सुन्नत को फ़र्ज़ से पहले न पढ़ सका हो तो इस सूरत में ज़ोहर की दो सुन्नत को ज़ोहर की चार रक्अ़त सुन्नत से पहले पढ़ना अफ़्ज़ल है ।[3]

सुवाल दिन भर में कितनी रक्अ़तें सुन्नते मुअक्कदा हैं ?

जवाब जुमुआ़ के दिन जुमुआ़ पढ़ने वाले पर चौदह रक्अ़तें और इलावा जुमुआ़ के बाक़ी दिनों में हर रोज़ बारह रक्अ़तें सुन्नते मुअक्कदा हैं : (1) दो रक्अ़त नमाज़े फ़ज्र से पहले (2) चार ज़ोहर से पहले, दो बा'द (3) दो मग़रिब के बा'द (4) दो इशा के बा'द और (5) चार जुमुआ़ से पहले, चार बा'द ।[4]

सुवाल वोह कौन सी सुन्नतें हैं जिन की मशरूइय्यत का जान बूझ कर बिला शुब्हा इन्कार करना कुफ़्र है ?

जवाब फ़ज्र की सुन्नतें ।[5]

---

1 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4,1 / 663 ।

2 ...مسلم، کتاب الصیام، باب فضل صوم المحرم، ص ۵۹۱، حدیث: ۱۱۶۳۔

3 ...عمدۃ الرعایۃ، کتاب الصلاۃ، باب ادراک الفریضۃ، ۱/۲۱۴۔

4 ...درمختار، کتاب الصلاۃ، باب الوتر والنوافل، ۲/۵۴۵۔

5 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4,1 / 663 ।

www.dawateislami.net

सुवाल सलातुल अव्वाबीन किसे कहते हैं ?

जवाब मग़रिब के फ़र्ज़ों के बा'द जो छे रक्अ़तें अदा की जाती हैं उन्हें सलातुल अव्वाबीन कहते हैं ।[1]

सुवाल वोह कौन सी नमाज़ है जो सुवारी पर पढ़ी जाए तो उस में क़िब्ला को मुंह करना शर्त़ नहीं ?

जवाब वोह नफ़्ल नमाज़ जो बैरूने शहर (जहां से मुसाफ़िर पर क़स्र वाजिब होता है) सुवारी पर अदा की जाए ।[2]

सुवाल नमाज़े चाश्त का वक़्त कब तक है और इस की कितनी रक्अ़ते हैं ?

जवाब नमाज़े चाश्त का वक़्त आफ़्ताब बुलन्द होने से ज़वाल या'नी निस्फ़ुन्नहारे शरई तक है, इस की कम से कम दो और ज़ियादा से ज़ियादा बारह रक्अ़तें हैं ।[3]

सुवाल सलातुल्लैल किसे कहते हैं ?

जवाब नमाज़े इ़शा के बा'द जो नवाफ़िल पढ़े जाएं उन को सलातुल्लैल कहते हैं ।[4]

सुवाल वोह कौन सी नफ़्ल नमाज़ है जिस के लिये सोना ज़रूरी है ?

जवाब वोह नमाज़े तहज्जुद है कि इ़शा के बा'द रात में सो कर उठें और नवाफ़िल पढ़ें, सोने से क़ब्ल जो कुछ पढ़ें वोह तहज्जुद नहीं ।[5]

---

1 ...ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب الوتر والنوافل، مطلب فی السنن والنوافل، ۲/۵۷۴۔

2 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4,1 / 671 ।

3 ...فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب التاسع فی النوافل، ۱/۱۱۲، बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4,1 / 676 मुल्तक़त़न

4 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4,1 / 677 ।

5 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4,1 / 677 ।

www.dawateislami.net

सुवाल दिन रात के नवाफ़िल में एक सलाम के साथ कितनी रक्अ़तें पढ़ी जा सकती हैं ?

जवाब दिन के नफ़्ल में एक सलाम के साथ चार रक्अ़त से ज़ियादा और रात में आठ रक्अ़त से ज़ियादा पढ़ना मकरूह है और अफ़्ज़ल येह है कि दिन हो या रात हो चार चार रक्अ़त पर सलाम फेरे ।[1]

सुवाल सलातुत्तस्बीह़ में कौन सी तस्बीह़ पढ़ी जाती है ?

जवाब سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ[2]

तरावीह़

सुवाल बा क़ाइदा तौ़र पर तरावीह़ की जमाअ़त कब से शुरूअ़ हुई ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में ।[3]

सुवाल मौलाए काइनात शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने इस मुबारक काम पर क्या दुआ़इया कलिमात इरशाद फ़रमाए ?

जवाब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की क़ब्र को रौशन व मुनव्वर फ़रमाए जैसे इन्हों ने हमारी मस्जिदों को मुनव्वर कर दिया ।[4]

सुवाल उन पहले ह़ाफ़िज़े क़ुरआन का नाम बताएं जिन्हों ने तरावीह़ में क़ुरआने पाक की तिलावत फ़रमाई ?

---

1 ...درمختار، کتاب الصلاۃ، باب الوتر والنوافل، ۲/۵۵۰۔

2 ...غنیۃ المتملی، صلاۃ التسبیح، ص ۴۳۱۔

3 ...بخاری، کتاب صلاۃ التراویح، باب فضل من قام رمضان، ۱/۶۵۸، حدیث: ۲۰۱۰۔

4 ...تاریخ ابن عساکر، رقم: ۵۲۰۶، عمر بن الخطاب، ۴۴/۲۸۰۔

www.dawateislami.net

जवाब हज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ।[1]

सुवाल तरावीह़ की कितनी रक्अ़तें हैं ?

जवाब तरावीह़ की 20 रक्अ़तें हैं । अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़ह्दे मुबारक में 20 रक्अ़तें ही पढ़ी जाती थीं ।[2]

सुवाल नमाज़े तरावीह़ का हुक्म बयान करें ?

जवाब हर आ़क़िल व बालिग़ मुसलमान पर तरावीह़ पढ़ना सुन्नते मुअक्कदा है और इसे छोड़ना जाइज़ नहीं ।[3]

सुवाल तरावीह़ में पूरा कुरआने मजीद पढ़ने या सुनने की शरई हैसिय्यत क्या है ?

जवाब तरावीह़ में पूरा कलामुल्लाह शरीफ़ पढ़ना और सुनना सुन्नते मुअक्कदा है ।[4]

सुवाल तन्हा नमाज़े तरावीह़ अदा करना कैसा ?

जवाब तरावीह़ की जमाअ़त सुन्नते मुअक्कदा अ़लल किफ़ाया है या'नी अगर मस्जिद के सारे लोगों ने छोड़ दी तो सब इसाअत के मुर्तकिब हुवे (या'नी बुरा किया) और अगर चन्द अफ़राद ने बा जमाअ़त पढ़ ली तो तन्हा पढ़ने वाला जमाअ़त की फ़ज़ीलत से मह़रूम रहा ।[5]

---

1 . . . بخاری، کتاب صلاۃ التراویح، باب فضل من قام رمضان، ۱/۶۵۸، حدیث: ۲۰۱۰۔

2 . . . معرفۃ السنن والآثار، کتاب الصلاۃ، باب قیام رمضان، ۲/۳۰۵، حدیث: ۱۳۵۶۔

3 . . . درمختار، کتاب الصلاۃ، باب الوتر والنوافل، مبحث صلاۃ التراویح، ۲/۵۹۶۔

4 . . . . . फ़तावा रज़विय्या, 7 / 458 ।

5 . . . ھدایۃ، کتاب الصلاۃ، باب النوافل، فصل فی قیام شھر رمضان، ۱/۷۰۔

www.dawateislami.net

सुवाल क्या बालिग़ अफ़राद नाबालिग़ इमाम के पीछे तरावीह़ पढ़ सकते हैं ?

जवाब जी नहीं ! नाबालिग़ के पीछे बालिग़ अफ़राद की तरावीह़ (बल्कि कोई भी नमाज़) नहीं होगी ।[1]

सुवाल तरावीह़ में "بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ" बुलन्द आवाज़ से पढ़ना चाहिये या आहिस्ता ?

जवाब तरावीह़ में "بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ" एक बार ऊंची आवाज़ से पढ़ना सुन्नत है और हर सूरत की इब्तिदा में आहिस्ता पढ़ना मुस्तह़ब है ।[2]

सुवाल क्या तरावीह़ बैठ कर पढ़ सकते हैं ?

जवाब जी नहीं ! तरावीह़ बिला उ़ज़्र बैठ कर पढ़ना मकरूह (तन्ज़ीही) है, बल्कि बा'ज़ फ़ुक़हाए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان के नज़दीक तो (बिला उ़ज़्र बैठ कर) तरावीह़ होती ही नहीं ।[3]

सुवाल इ़शा के फ़र्ज़ों से पहले तरावीह़ अदा कर ली तो हो जाएगी ?

जवाब तरावीह़ का वक़्त इ़शा के फ़र्ज़ पढ़ने के बा'द से सुब्ह़े सादिक़ तक है । अगर इ़शा के फ़र्ज़ अदा करने से पहले पढ़ ली तो न होगी ।[4]

सुवाल क्या नमाज़े वित्र पढ़ने के बा'द तरावीह़ पढ़ी जा सकती है ?

जवाब आ़म तौ़र पर तरावीह़ वित्रों से पहले पढ़ी जाती है लेकिन अगर कोई वित्र पहले पढ़ ले तो तरावीह़ बा'द में भी पढ़ सकता है ।[5]

---

1 . . . فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الخامس، الفصل الثالث، ۱/۸۵۔

2 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4, 1 / 694 ।

3 . . . درمختار، کتاب الصلاۃ، باب الوتر والنوافل، مبحث صلاۃ التراویح، ۲/۲۰۳۔

4 . . . فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب التاسع، فصل فی التراویح، ۱/۱۱۵۔

5 . . . تنویر الابصار و درمختار، کتاب الصلاۃ، باب الوتر والنوافل، مبحث صلاۃ التراویح، ۲/۵۹۷۔

www.dawateislami.net

क़ज़ा नमाज़ें

सुवाल क्या क़ज़ा नमाज़ के लिये कोई वक़्त मुअ़य्यन है और कब क़ज़ा नमाज़ पढ़ना जाइज़ नहीं ?

जवाब क़ज़ा के लिये कोई वक़्त मुअ़य्यन नहीं उ़म्र में जब पढ़ेगा बरिय्युज़्ज़िम्मा हो जाएगा मगर तुलूअ़ व गुरूब और ज़वाल के वक़्त कि इन वक़्तों में नमाज़ जाइज़ नहीं ।(1)

सुवाल जान बूझ कर नमाज़ क़ज़ा करने वालों के लिये क्या वईद है ?

जवाब कुरआने पाक में इरशाद होता है :

﴿فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ ۙ الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ ۙ﴾(پ۳۰،الماعون:۴،۵) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "तो उन नमाज़ियों की ख़राबी है जो अपनी नमाज़ से भूले बैठे हैं ।" ह़दीसे पाक में है : इस से मुराद वोह हैं जो नमाज़ का वक़्त गुज़ार कर पढ़ें ।(2)

सुवाल वोह कौन सी नमाज़ है जिसे लोगों पर ज़ाहिर करना गुनाह है ?

जवाब क़ज़ा नमाज़ का लोगों पर ज़ाहिर करना गुनाह है क्यूंकि नमाज़ का तर्क करना गुनाह है और गुनाह का ज़ाहिर करना भी गुनाह है ।(3)

सुवाल क़ज़ा नमाज़ों में ताख़ीर करने का गुनाह कैसे मुआ़फ़ होगा ?

जवाब क़ज़ा नमाज़ों में ताख़ीर करने का गुनाह तौबा या ह़ज्जे मक़्बूल से मुआ़फ़ हो जाएगा और जो नमाज़ छूट गई है उस की क़ज़ा ज़रूरी है ।(4)

1.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4,1 / 702 ।

2...سنن کبری للبیھقی، کتاب الصلوۃ، باب الترغیب فی حفظ...الخ، ۲/۳۰۴، حدیث:۳۱۶۳۔

3...درمختار وردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب قضاء الفوائت، فروع فی قضاء الفوائت، ۲/۶۵۰۔

4...ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب قضاء الفوائت، ۲/۶۲۶۔

www.dawateislami.net

सुवाल किस अन्देशे की वज्ह से नमाज़ क़ज़ा करना जाइज़ है ?

जवाब मुसाफ़िर को चोर और डाकूओं का सहीह़ अन्देशा है यूंही दाई को नमाज़ पढ़ने की वज्ह से बच्चे के मर जाने का अन्देशा है तो नमाज़ क़ज़ा करना जाइज़ है ।(1)

सुवाल वोह कौन सा तन्दुरुस्त मुसलमान है जिस से नमाज़ें फ़ौत हो जाएं तो उस पर क़ज़ा वाजिब नहीं ?

जवाब दारुल ह़र्ब में कोई मुसलमान हुवा और उसे अह़कामे शरइय्या नमाज़, रोज़ा और ज़कात वग़ैरा की इत्तिलाअ़ न हुई तो जब तक वहां रहा उन दिनों की क़ज़ा उस पर वाजिब नहीं ।(2)

सुवाल वोह कौन सा मरीज़ है जिस से नमाज़ें फ़ौत हो जाएं तो उस पर क़ज़ा नहीं ?

जवाब ऐसा मरीज़ कि इशारे से भी नमाज़ नहीं पढ़ सकता अगर येह ह़ालत पूरे छे वक़्त तक रही तो इस ह़ालत में जो नमाज़ें फ़ौत हुईं उन की क़ज़ा वाजिब नहीं ।(3)

सुवाल जिस पर क़ज़ा नमाज़ें हों क्या वोह उन्हें छोड़ कर सुनन व नवाफ़िल पढ़ सकता है ?

जवाब क़ज़ा नमाज़े नवाफ़िल से अहम हैं या'नी जिस वक़्त नफ़्ल पढ़ता है उन्हें छोड़ कर उन के बदले क़ज़ाएं पढ़े कि बरियुज़्ज़िम्मा हो जाए अलबत्ता तरावीह़ और बारह रक्अ़तें सुन्नते मुअक्कदा की न छोड़े ।(4)

1.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4,1 / 702 मुलख़्ख़सन ।

2...ردالمحتار کتاب الصلاۃ، باب قضاء الفوائت، ۲/۶۴۷۔

3.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4,1 / 702 ।

4.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4,1 / 706 ।

www.dawateislami.net

सुवाल नमाज़े फ़ज्र क़ज़ा होने का अन्देशा हो तो बिला ज़रूरते शरइय्या रात देर तक जागना कैसा ?

जवाब नमाज़े फ़ज्र क़ज़ा होने का अन्देशा हो तो बिला ज़रूरते शरइय्या रात देर तक जागना ममनूअ़ है ।[1]

सुवाल एक दिन की क़ज़ा नमाज़ों की कितनी रक्अ़तें हैं ?

जवाब एक दिन की क़ज़ा नमाज़ों की 20 रक्अ़तें हैं । दो रक्अ़तें फ़ज्र की, चार ज़ोहर, चार अ़स्र, तीन मग़रिब, चार इ़शा की और तीन वित्र ।[2]

सुवाल जिस ने कभी नमाज़ें ही न पढ़ीं हों वोह क़ज़ाए उ़म्री कैसे पढ़े ?

जवाब जिस ने कभी नमाज़ें न पढ़ी हों और अब तौफ़ीक़ हुई और क़ज़ाए उ़म्री पढ़ना चाहता है वोह जब से बालिग़ हुवा है उस वक़्त से हि़साब लगाए और तारीखे़ बुलूग़ भी नहीं मा'लूम तो एह़तियात़ इसी में है कि औ़रत नव साल की उ़म्र से और मर्द बारह साल की उ़म्र से नमाज़ों का हि़साब लगाए ।[3]

सुवाल जिस के ज़िम्मे क़ज़ा नमाज़ें हों वोह क्या करे ?

जवाब जिस के ज़िम्मे क़ज़ा नमाज़ें हों उन का जल्द से जल्द पढ़ना वाजिब है मगर बाल बच्चों की परवरिश और अपनी ज़रूरियात की फ़राहमी के सबब ताख़ीर जाइज़ है लिहाज़ा कारोबार भी करता रहे और फ़ुरसत का जो वक़्त मिले उस में क़ज़ा पढ़ता रहे यहां तक कि पूरी हो जाएं ।[4]

---

1 . . . ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، مطلب فی طلوع الشمس من مغربھا، ۲/۳۳۔

2 .....नमाज़ के अह़काम, स, 338 ।

3 .....फ़तावा रज़विय्या, 8 / 154 माख़ूज़न ।

4 . . . درمختار وردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب قضاء الفوائت، ۲/۶۴۶۔ नमाज़ के अह़काम, स, 335

www.dawateislami.net

सजदए तिलावत

सुवाल आयते सजदा पढ़ कर सजदा करने की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जब जब आदमी आयते सजदा पढ़ कर सजदा करता है, शैतान हट जाता है और रो कर कहता है : हाए मेरी बरबादी ! इब्ने आदम को सजदे का हुक्म हुवा उस ने सजदा किया उस के लिये जन्नत है और मुझे हुक्म हुवा मैं ने इन्कार किया मेरे लिये दोज़ख़ है ।[1]

सुवाल कुरआने पाक में आयाते सजदा कितनी हैं ?

जवाब सजदे की चौदह आयतें हैं ।[2]

सुवाल सजदए तिलावत का क्या त़रीक़ा है ?

जवाब खड़ा हो कर اَللّٰهُ اَكْبَرُ कहता हुवा सजदे में जाए और कम से कम तीन बार سُبْحٰنَ رَبِّيَ الْاَعْلٰى कहे फिर اَللّٰهُ اَكْبَرُ कहता हुवा खड़ा हो जाए, सजदए तिलावत के लिये اَللّٰهُ اَكْبَرُ कहते वक़्त न हाथ उठाना है न इस में तशह्हुद है न सलाम ।[3]

सुवाल क्या सजदए तिलावत भी फ़ासिद हो जाता है ?

जवाब जी हां जो चीज़ें नमाज़ को फ़ासिद करती हैं उन से सजदा भी फ़ासिद हो जाएगा ।[4]

सुवाल सजदए तिलावत कब वाजिब होता है ?

---

1 . . . مسلم، کتاب الایمان، باب بیان اطلاق اسم الکفر علی من ترک الصلاۃ، ص ۵۶، حدیث: ۸۱۔

2 . . . ھدایۃ، کتاب الصلاۃ، باب سجود التلاوۃ، الجزء الاول، ص ۷۸۔

3 . . . فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الثالث عشر فی سجود التلاوۃ، ۱/۱۳۲-۱۳۵۔

درمختار، کتاب الصلاۃ، باب سجود التلاوۃ، ۲/۷۰۰-۷۰۲، ملتقطاً۔

4 . . . درمختار، کتاب الصلاۃ، باب سجود التلاوۃ، ۲/۶۹۹۔

www.dawateislami.net

जवाब आयते सजदा पढ़ने या सुनने से सजदा वाजिब हो जाता है, पढ़ने में येह शर्त़ है कि इतनी आवाज़ में हो कि अगर कोई उ़ज़्र न हो तो ख़ुद सुन सके।[1]

सुवाल क्या आयते सजदा लिखने या देखने से सजदा वाजिब होता है ?

जवाब नहीं आयते सजदा लिखने या देखने से सजदा वाजिब नहीं होता।[2]

सुवाल अगर आयते सजदा सुनने की निय्यत न थी बल्कि बिला क़स्द सुन ली तो क्या हुक्म होगा ?

जवाब सुनने वाले के लिये येह ज़रूरी नहीं कि बिल क़स्द सुनी हो, बिला क़स्द सुनने से भी सजदा वाजिब हो जाता है।[3]

सुवाल अगर आयते सजदा का तर्जमा सुना तो इस सूरत में क्या हुक्म है ?

जवाब किसी भी ज़बान में आयत का तर्जमा पढ़ने और सुनने वाले पर सजदा वाजिब हो गया, सुनने वाले ने समझा हो या न समझा हो कि आयते सजदा का तर्जमा है। अलबत्ता येह ज़रूर है कि उसे न मा'लूम हो तो बता दिया गया हो कि येह आयते सजदा का तर्जमा है।[4]

सुवाल अगर नमाज़ के बाहर आयते सजदा पढ़ी तो क्या फ़ौरन सजदा कर लेना वाजिब है ?

जवाब आयते सजदा नमाज़ के बाहर पढ़ी तो फ़ौरन सजदा कर लेना वाजिब नहीं है। अलबत्ता वुज़ू हो तो (बिला उ़ज़्र) ताख़ीर करना मकरूहे तन्ज़ीही है।[5]

---

1 ...فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الثالث عشر فی سجود التلاوۃ، ۱/۱۳۲۔

2 ...غنیۃ المتملی، سجدۃ التلاوۃ، ص ۵۰۰۔

3 ...فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الثالث عشر فی سجود التلاوۃ، ۱/۱۳۲۔

4 ...فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الثالث عشر فی سجود التلاوۃ، ۱/۱۳۲۔

5 ...درمختار، کتاب الصلاۃ، باب سجود التلاوۃ، ۲/۷۰۳۔

www.dawateislami.net

सुवाल कोई शख़्स अपनी नमाज़ पढ़ते हुवे आयते सजदा सुन ले तो क्या हुक्म है ?

जवाब जो शख़्स नमाज़ में नहीं उस ने आयते सजदा पढ़ी और नमाज़ी ने सुन ली तो नमाज़ के बा'द सजदा करे और अगर नमाज़ ही में सजदा कर लिया तो काफ़ी न होगा बा'दे नमाज़ फिर करना होगा ।[1]

सुवाल अगर किसी नाबालिग़ बच्चे से आयते सजदा सुनी तो क्या हुक्म होगा ?

जवाब नाबालिग़ से आयते सजदा सुनने से भी सजदए तिलावत वाजिब हो जाएगा ।[2]

सुवाल पूरी सूरत पढ़ना और आयते सजदा छोड़ देना कैसा है ।

जवाब मकरूहे तह़रीमी है ।[3]

मुसाफ़िर की नमाज़

सुवाल शरई सफ़र की मसाफ़त क्या है ?

जवाब शरअ़न मुसाफ़िर वोह शख़्स है जो साढ़े 57 मील (तक़रीबन 92 किलो मीटर) के फ़ासिले तक जाने के इरादे से अपने मक़ामे इक़ामत (ठहरने की जगह, वत़न) मसलन शहर या गाऊं से बाहर हो गया ।[4]

सुवाल क्या सफ़र की निय्यत करते ही बन्दा शरअ़न मुसाफ़िर बन जाएगा ?

जवाब मह़ज़ निय्यते सफ़र से मुसाफ़िर न होगा बल्कि मुसाफ़िर का हुक्म

---

1 . . . فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الثالث عشر فی سجود التلاوۃ، ۱/۱۳۳۔

2 . . . درمختار، کتاب الصلاۃ، باب سجود التلاوۃ، ۲/۷۰۱۔

3 . . . المبسوط، کتاب الصلاۃ، باب السجدۃ، ۲/۵۔

4 . . . . . फ़तावा रज़विय्या, 8 / 270 मुलख़्ख़सन ।

www.dawateislami.net

उस वक़्त है कि बस्ती की आबादी से बाहर हो जाए, शहर में है तो शहर से, गाऊं में है तो गाऊं से।[1]

सुवाल नमाज़े क़स्र किसे कहते हैं ?

जवाब सफ़र में चार फ़र्ज़ों को दो पढ़ना क़स्र कहलाता है।[2]

सुवाल क्या मुसाफ़िर के लिये क़स्र करना ज़रूरी है ?

जवाब जी हां मुसाफ़िर पर नमाज़ में क़स्र करना वाजिब है।[3]

सुवाल क्या मुसाफ़िर सुन्नतें भी क़स्र कर के पढ़ेगा ?

जवाब सुन्नतों में क़स्र नहीं बल्कि पूरी पढ़ी जाएंगी अलबत्ता ख़ौफ़ और रवारवी (घबराहट) की ह़ालत में मुआ़फ़ हैं और अम्न की ह़ालत में पढ़ी जाएं।[4]

सुवाल अगर कोई शख़्स तीन दिन की राह पर जा रहा है लेकिन उस का दौराने मसाफ़त दो दिन की राह पर किसी काम के ह़वाले से रुकने का इरादा है तो क्या वोह भी नमाज़ क़स्र पढ़ेगा ?

जवाब जी नहीं वोह मुसाफ़िर नहीं हुवा नमाज़ पूरी पढ़ेगा, क़स्र नमाज़ के लिये इस मसाफ़त का तीन दिन पूरा और राह का मुत्तसिल (मिला हुवा, लगातार) होना ज़रूरी है।[5]

सुवाल वत़ने अस्ली किसे कहते हैं ?

---

1 ...درمختار وردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ المسافر، ۲/۷۲۲۔

2 ...فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الخامس عشر في صلاۃ المسافر، ۱/۱۳۹ مفھوماً۔

3 ...فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الخامس عشر في صلاۃ المسافر، ۱/۱۳۹۔

4 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4, 1 / 744।

5 .....फ़तावा रज़विय्या, 8 / 270 मुलख़्ख़सन।

www.dawateislami.net

जवाब वोह जगह जहां उस की पैदाइश हुई है या उस के घर के लोग वहां रहते हैं या वहां सुकूनत कर ली और येह इरादा है कि यहां से न जाएगा ।[1]

सुवाल निय्यते इक़ामत सहीह़ होने के लिये कितनी शराइत़ हैं ?

जवाब निय्यते इक़ामत सहीह़ होने के लिये छे शर्तें हैं : (1) चलना तर्क करे अगर चलने की ह़ालत में इक़ामत की निय्यत की तो मुक़ीम नहीं । (2) वोह जगह इक़ामत की सलाहिय्यत रखती हो जंगल या दरया ग़ैर आबाद टापू (जज़ीरा, ख़ुश्की के टुकड़े) में इक़ामत की निय्यत की मुक़ीम न हुवा । (3) पन्दरह दिन ठहरने की निय्यत हो इस से कम ठहरने की निय्यत से मुक़ीम न होगा । (4) येह निय्यत एक ही जगह ठहरने की हो अगर दो मौज़ओं में पन्दरह दिन ठहरने का इरादा हो, मसलन एक में दस दिन दूसरे में पांच दिन का तो मुक़ीम न होगा । (5) अपना इरादा मुस्तक़िल रखता या'नी किसी का ताबेअ़ न हो । (6) उस की ह़ालत उस के इरादे के मुनाफ़ी न हो ।[2]

सुवाल वत़ने इक़ामत की ता'रीफ़ बताएं ?

जवाब वत़ने इक़ामत वोह जगह जहां मुसाफ़िर ने 15 दिन या इस से ज़ियादा ठहरने का इरादा किया हो ।[3]

सुवाल मुसाफ़िर किसी काम के लिये या साथियों के इन्तिज़ार में दो चार रोज़ या तेरह चौदह दिन की निय्यत से ठहरा और येह इरादा है कि

---

1 . . . فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الخامس عشر في صلاۃ المسافر، ۱/۱۴۲۔ بहारे शरीअ़त, ह़िस्सा, 4,1 / 750

2 .....बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा, 4,1 / 744 ।

3 . . . فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الخامس عشر في صلاۃ المسافر، ۱/۱۴۲۔

www.dawateislami.net

काम हो जाएगा तो चला जाएगा अगर इस सूरत में "आज कल आज कल करते" ज़ियादा दिन गुज़र जाएं तो नमाज़ क़स्र पढ़े या पूरी ?

जवाब इस सूरत में अगर आज कल आज कल करते कई बरस गुज़र जाएं जब भी मुसाफ़िर ही है, नमाज़ क़स्र पढ़े ।[1]

सुवाल मुसाफ़िर ने चार रक्अ़त की निय्यत कर ली तो अब क्या हुक्म होगा ?

जवाब मुसाफ़िर ने क़स्र की बजाए चार रक्अ़त फ़र्ज़ की निय्यत बांध ली फिर याद आने पर दो पर सलाम फेर दिया तो नमाज़ हो जाएगी ।[2]

सुवाल मुसाफ़िर को किस सूरत में चार रक्अ़त फ़र्ज़ पढ़ना ज़रूरी है ?

जवाब मुसाफ़िर जब कि मुक़ीम की इक़्तिदा करे तो उस को चार रक्अ़त फ़र्ज़ पढ़ना ज़रूरी है ।[3]

जुमुआ़

सुवाल वोह कौन सा दिन है जिस को बरोज़े क़ियामत दुल्हन की त़रह़ उठाया जाएगा ?

जवाब जुमुआ़ का दिन ।[4]

सुवाल जुमुआ़ न पढ़ने वालों के लिये क्या वई़द है ?

जवाब सरवरे काइनात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : लोग जुमुआ़ छोड़ने से बाज़ आएं वरना **अल्लाह** तआ़ला उन के दिलों पर मोहर कर देगा फिर वोह ग़ाफ़िलों में से हो जाएंगे ।[5]

---

1 ...فتاوی ھندیة، کتاب الصلاة، الباب الخامس عشر في صلاة المسافر، ۱/۱۳۹۔

2 ...فتاوی ھندیة، کتاب الصلاة، الباب الخامس عشر في صلاة المسافر، ۱/۱۳۹ ماخوذاً۔

3 ...فتاوی ھندیة، کتاب الصلاة، الباب الخامس عشر في صلاة المسافر، ومما یتصل بذلک...الخ، ۱/۱۴۲۔

4 ...درمختار، پ۲۸، الجمعة، تحت الآیة: ۹، ۸/۱۵۶۔

5 ...مسلم، کتاب الجمعة، باب التغلیظ فی ترک الجمعة، ص ۴۳۰، حدیث: ۸۶۵۔

www.dawateislami.net

सुवाल यौमे जुमुआ़ में वोह मुख़्तसर घड़ी कौन सी है जिस में भलाई मांगने वाले मुसलमान को ज़रूर दिया जाता है ?

जवाब इस बारे में अकाबिर मुह़क़्क़िक़ीन उ़लमा और कसीर अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के नज़दीक राजेह़ और क़वी क़ौल दो हैं : (1) वोह रोज़े जुमुआ़ की आख़िरी साअ़त या'नी ग़ुरूबे आफ़्ताब से कुछ पहले का वक़्त है। (2) जब इमाम मिम्बर पर बैठे उस वक़्त से फ़र्ज़े जुमुआ़ के सलाम तक। अलबत्ता इमाम के मिम्बर पर आने के बा'द से फ़र्ज़े जुमुआ़ का सलाम फेरने तक किसी भी क़िस्म का कलाम मन्अ़ होने की वज्ह से दुआ़ फ़क़त़ दिल से की जा सकती है।[1]

सुवाल दौराने ख़ुत़बा खाने पीने या बात चीत करने का क्या हुक्म है ?

जवाब ख़ुत़बे के दौरान खाना पीना, बात करना, سُبْحٰنَ اللّٰه कहना, सलाम का जवाब देना या नेकी की बात बताना ह़राम है।[2]

सुवाल ख़ुत़बे की आवाज़ न पहुंचती हो तो क्या हुक्म है ?

जवाब जिस तक ख़ुत़बे की आवाज़ न पहुंचती हो वोह भी ख़ामोश रहे।[3]

सुवाल क्या ख़ामोशी के इ़लावा ख़ुत़बा सुनने के कुछ और भी आदाब हैं ?

जवाब ख़ुत़बे के वक़्त सिर्फ़ ज़बान से ख़ामोशी काफ़ी नहीं बल्कि सुकून व इत़मीनान से बैठना भी ज़रूरी है, कंकर पथ्थरों से खेलना भी ममनूअ़ है। उ़लमा फ़रमाते हैं कि ख़ुत़बे के वक़्त दामन या पंखे से

---

1 .....फ़ज़ाइले दुआ़, स. 116 ता 119, मुलख़्ख़सन।

2 ...درمختار، کتاب الصلاۃ، باب الجمعۃ، ۳/۳۹۔

3 ...تبیین الحقائق، کتاب الصلاۃ، ۱/۳۴۰۔

www.dawateislami.net

हवा करना भी मन्अ़ है अगर्चे गर्मी हो, इस वक़्त हमा तन ख़ुत़्बे की त़रफ़ मुतवज्जेह होना ज़रूरी है।[1]

सुवाल पहला ख़ुत़्बा हाथ बांध कर और दूसरा ज़ानूओं पर हाथ रख कर सुनने का क्या अज्र है?

जवाब बुज़ुर्गाने दीन फ़रमाते हैं कि दो ज़ानू बैठ कर ख़ुत़्बा सुने, पहले ख़ुत़्बे में हाथ बांधे और दूसरे में ज़ानूओं पर हाथ रखे तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दो रक्अ़त का सवाब मिलेगा।[2]

सुवाल जुमुआ़ के दिन मस्जिद आने वाले किन अफ़राद का नाम फ़िरिश्ते नहीं लिखते?

जवाब जब जुमुआ़ का दिन आता है फ़िरिश्ते मस्जिद के दरवाज़े पर खड़े हो जाते हैं और जल्दी आने वालों का नाम लिखते हैं। फिर जब इमाम ख़ुत़्बे के लिये मिम्बर पर आता है तो येह फ़िरिश्ते अपने दफ़्तर लपेट कर इन्सानों के साथ ख़ुत़्बा सुनने लगते हैं, अब जो उस वक़्त आएगा न उस का नाम उन के दफ़्तर में लिखा जाएगा न उसे जल्द आने का सवाब मिलेगा।[3]

सुवाल हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कितने जुमुआ़ अदा फ़रमाए?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तक़रीबन पांच सौ जुमुए पढ़े हैं क्यूंकि जुमुआ़ बा'दे हिजरत शुरूअ़ हुवा जिस के बा'द आप की ज़ाहिरी ज़िन्दगी मुबारक दस साल रही, इस अ़र्से में जुमुए इतने ही होते हैं।[4]

---

1 .....मिरआतुल मनाजीह, 2 / 335।

2 .....मिरआतुल मनाजीह, 2 / 338।

3 ...بخاری، کتاب الجمعة، باب الاستماع الی الخطبة، ۱/۳۱۹، حدیث: ۹۲۹، मिरआतुल मनाजीह, 2 / 335

4 ...اشعة اللمعات، کتاب الصلاة، باب الخطبة والصلاة، الفصل الثالث، ۱/۶۳۱۔

www.dawateislami.net

सुवाल वोह कौन सी नमाज़ है जिसे अदा करना फ़र्ज़े ऐन है मगर उस की क़ज़ा पढ़ना ह़राम है ?

जवाब वोह नमाज़े जुमुआ़ है कि जिस का पढ़ना फ़र्ज़े ऐन है लेकिन अगर वोह छूट जाए तो उस की क़ज़ा पढ़ना ह़राम है बल्कि उस की क़ज़ा की जगह वोह ज़ोहर पढ़ेगा ।[1]

सुवाल क्या सुस्ती के सबब जुमुआ़ में देर से पहुंचने वाले का जुमुआ़ हो जाएगा ?

जवाब जो जुमुआ़ में सुस्ती से आए और देर में पहुंचे अगर्चे उस का जुमुआ़ तो हो जाएगा मगर वोह सवाब न मिलेगा जो जल्दी पहुंचने वाले को मिलता है ।[2]

सुवाल जुमुए़ के लिये अलग जोड़ा रखने का क्या हुक्म है ?

जवाब मुस्तह़ब है कि जुमुआ़ का जोड़ा अलग रखे जो ब वक़्ते नमाज़ पहन लिया करे और बा'द में उतार दिया करे । इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन तो नमाज़े पंजगाना के लिये अलग जोड़ा रखते थे ।[3]

ईदैन

सुवाल ईदुल फ़ित्र और ईदुल अज़्ह़ा किन चीज़ों के शुक्राने के तौ़र पर मनाई जाती हैं ?

जवाब ईदुल फ़ित्र इबादाते रमज़ान की तौफ़ीक़ मिलने के शुक्रिय्ये की है और बक़र ईद ह़ज़रते इब्राहीम व इस्माईल عَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की कामयाबी के शुक्रिय्या में ।[4]

---

1 ...الاشباہ والنظائر، الفن الرابع، کتاب الصلاۃ، ص ۳۴۲۔

2 .....मिरआतुल मनाजीह़, 2 / 338 ।

3 .....मिरआतुल मनाजीह़, 2 / 337 ।

4 .....मिरआतुल मनाजीह़, 2 / 355 मुल्तक़त़न ।

www.dawateislami.net

सुवाल पहली नमाज़े ईद कब अदा की गई ?

जवाब सिन 2 हिजरी में जब रमज़ान के रोज़े फ़र्ज़ हुवे, उसी साल नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पहले नमाज़े ईद पढ़ी फिर बक़र ईद।[1]

सुवाल ईदैन की नमाज़ का हुक्म बयान करें ?

जवाब ईदैन की नमाज़ वाजिब है मगर सब पर नहीं बल्कि उन्हीं पर जिन पर जुमुआ वाजिब[2] है।[3]

सुवाल नमाज़े ईद में कितनी तक्बीरें ज़ाइद होती हैं ?

जवाब नमाज़े ईद में छे तक्बीरें ज़ियादा कही जाती हैं।[4]

सुवाल नमाज़े ईद में ज़ाइद तक्बीरें किस वक़्त कही जाती हैं ?

जवाब ज़ाइद तक्बीरें हर रक्अ़त में तीन तीन हैं, पहली रक्अ़त में क़िराअत से पहले और तक्बीरे तह़रीमा के बा'द और दूसरी रक्अ़त में रुकूअ़ से पहले और क़िराअत के बा'द कही जाती हैं।[5]

1.....मिरआतुल मनाजीह़, 2 / 355 मुलख़्ख़सन।

2.....जुमुआ वाजिब होने के लिये ग्यारह शर्तें हैं : (1) शहर में मुक़ीम होना (2) सिह़्ह़त या'नी मरीज़ पर जुमुआ फ़र्ज़ नहीं मरीज़ से मुराद वोह है कि मस्जिदे जुमुआ तक न जा सकता हो या चला तो जाएगा मगर मरज़ बढ़ जाएगा या देर में अच्छा होगा। शैख़े फ़ानी मरीज़ के हुक्म में है। (3) आज़ाद होना, ग़ुलाम पर जुमुआ फ़र्ज़ नहीं और उस का आक़ा मन्अ़ कर सकता है (4) मर्द होना (5) बालिग़ होना (6) आ़क़िल होना। येह दोनों शर्तें ख़ास जुमुआ के लिये नहीं बल्कि हर इबादत के वुजूब में अ़क़्ल व बुलूग़ शर्त है (7) अंखयारा होना (8) चलने पर क़ादिर होना (9) क़ैद में न होना (10) बादशाह या चोर वग़ैरा किसी ज़ालिम का ख़ौफ़ न होना (11) मींह या आंधी या औले या सर्दी का न होना या'नी इस क़दर कि उन से नुक़्सान का ख़ौफ़े सह़ीह़ हो। (बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4, 1 / 770-772)

3...درمختار، کتاب الصلاۃ، باب العیدین، ۳/۵۱۔

4...درمختار، کتاب الصلاۃ، باب العیدین، ۳/۶۱۔

5...درمختار وردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب العیدین، ۳/۶۱-۶۳، ملتقطاً۔

www.dawateislami.net

सुवाल नमाज़े ईद में तक्बीरे तह़रीमा के इलावा हाथ कानों तक कब उठाए जाते हैं ?

जवाब नमाज़े ईद में कही जाने वाली छे ज़ाइद तक्बीरों में कानों तक हाथ उठाए जाते हैं ।[1]

सुवाल नमाजे ईद में इमाम को रुकूअ़ में पाने वाला ज़ाइद तक्बीरें कैसे कहेगा ?

जवाब अगर इमाम को रुकूअ़ में पाया और ग़ालिब गुमान है कि तक्बीरें कह कर इमाम को रुकूअ़ में पा लेगा तो खड़े खड़े तक्बीरें कहे फिर रुकूअ़ में जाए वरना اَللّٰهُ اَكْبَرُ कह कर रुकूअ़ में जाए और रुकूअ़ में तक्बीरें कहे ।[2]

सुवाल ईद की नमाज़ से पहले कुछ खाना चाहिये या नहीं ?

जवाब ईदुल फ़ित्र में नमाज़ से पहले चन्द खजूरें त़ाक़ अ़दद में तीन, पांच, सात या कोई भी मीठी शै खा लेना मुस्तह़ब जब कि ईदुल अज़्ह़ा (बक़र ईद) में नमाज़ से पहले कुछ न खाना मुस्तह़ब है अगर्चे कुरबानी न करे ।[3] जैसा कि ह़दीसे पाक में है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ईदुल फ़ित्र के दिन कुछ खा कर नमाज़ के लिये तशरीफ़ ले जाते थे और ईदुल अज़्ह़ा के रोज़ नहीं खाते थे जब तक नमाज़ से फ़ारिग़ न हो जाते ।[4]

---

1 . . . درمختار، کتاب الصلاۃ، باب العیدین، ۳/۶۵، مفصلاً۔

2 . . . ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب العیدین، ۳/۶۴۔

3 . . . فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب السابع عشر فی صلاۃ العیدین، ۱/۱۵۰۔

4 . . . ترمذی، کتاب العیدین، باب ماجاء فی الأکل یوم الفطر قبل الخروج، ۲/۷۰، حدیث: ۵۴۲۔

www.dawateislami.net

सुवाल कुरबानी से पहले ह़जामत बनवाने और नाखुन तरशवाने का क्या हुक्म है ?

जवाब कुरबानी करनी हो तो मुस्तह़ब येह है कि पहली से दसवीं ज़िल हिज्जा तक न ह़जामत बनवाए और न नाखुन तरशवाए ।[1]

सुवाल तक्बीरे तशरीक़ और इस का हुक्म बयान करें ?

जवाब नवीं ज़िल हिज्जा की फ़ज्र से तेरहवीं की अ़स्र तक पांचों वक़्त की फ़र्ज़ नमाज़ें जो मस्जिद की जमाअ़ते ऊला के साथ अदा की गईं उन में (सलाम फेरने के बा'द फ़ौरन) एक बार बुलन्द आवाज़ से तक्बीर कहना वाजिब और तीन बार अफ़्ज़ल ।[2] तक्बीरे तशरीक़ येह है : [3] اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ

सुवाल ईद के दिन की मुस्तह़ब चीज़ें क्या हैं ?

जवाब ग़ुस्ल करना, मिस्वाक करना, अच्छे कपड़े पहनना, ख़ुश्बू लगाना, ईदगाह जल्द चले जाना, ईदगाह पैदल जाना वग़ैरा ।[4]

सुवाल नमाज़े ईद के बा'द मुसाफ़ह़ा व मुआ़नक़ा करना कैसा है ?

जवाब सदरुश्शरीआ़ मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : बा'दे नमाज़े ईद मुसाफ़ह़ा व मुआ़नक़ा करना जैसा उ़मूमन मुसलमानों में राइज है बेहतर है कि इस में इज़्हारे मसर्रत है ।[5]

---

1 . . . ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب العیدین، مطلب فی ازالۃ الشعر . . . الخ، ۳/۷۷۔

2 . . . تبیین الحقائق، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ العیدین، ۱/۵۴۴-۵۴۵، ملتقطاً۔

3 . . . تنویر الابصار، کتاب الصلاۃ، باب العیدین، ۳/۷۲۔

4 . . . فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب السابع عشر فی صلاۃ العیدین، ۱/۱۴۹۔

5 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4, 1 / 784 ।

www.dawateislami.net

बीमारी, इयादत और मौत

सुवाल हदीसे पाक में बीमार और बीमारी की क्या फ़ज़ीलत आई है ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये रहमत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मोमिन जब बीमार हो फिर अच्छा हो जाए, उस की बीमारी गुनाहों से कफ़्फ़ारा हो जाती है और आइन्दा के लिये नसीहत जब कि मुनाफ़िक़ के बीमार हो कर अच्छा होने की मिसाल ऊंट की है कि मालिक ने उसे बांधा फिर खोल दिया तो न उसे येह मा'लूम कि क्यूं बांधा, न येह कि क्यूं खोला ? एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ! बीमारी क्या चीज़ है ? मैं तो कभी बीमार न हुवा ? फ़रमाया : हमारे पास से उठ जा कि तू हम में से नहीं ।[1]

सुवाल हक़ीक़ी बीमारी कौन सी है ?

जवाब सदरुश्शरीआ़ मुफ़्ती अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : हक़ीक़ी बीमारी अमराज़े रूहानिया हैं कि येह अलबत्ता बहुत ख़ौफ़ की चीज़ है और इसी को मरज़ समझना चाहिये ।[2]

सुवाल इयादत के वक़्त मरीज़ से क्या कलिमात कहना सुन्नत है ?

जवाब لَا بَاْسَ طَهُوْرٌ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ تَعَالٰى या'नी कोई हरज की बात नहीं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने चाहा तो येह मरज़ गुनाहों से पाक करने वाला है ।[3]

---

1 . . . ابوداود، کتاب الجنائز، باب الأمراض المکفرة للذنوب، ۳/۲۴۵، حدیث: ۳۰۸۹۔

2 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4, 1 / 799 ।

3 . . . بخاری، کتاب المناقب، باب علامات النبوة في الاسلام، ۲/۵۰۵، حدیث: ۳۶۱۶۔

www.dawateislami.net

सुवाल मरीज़ के पास बैठ कर किस त़रह़ की बात करनी चाहिये ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब मरीज़ के पास जाओ तो उसे ज़िन्दगी की उम्मीद दिलाओ, येह तक़्दीर तो नहीं बदलेगा मगर उस के दिल को ख़ुश करेगा।"(1)

सुवाल मरीज़ की दुआ़ किस की दुआ़ के मानिन्द है ?

जवाब मरीज़ की दुआ़ को मलाइका की दुआ़ की मानिन्द कहा गया है।(2)

सुवाल मरीज़ की इ़यादत करने वाले को आस्मान से क्या निदा की जाती है ?

जवाब ह़दीस शरीफ़ में है : जो शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये मरीज़ की इ़यादत या अपने भाई से मुलाक़ात करने जाता है आस्मान से मुनादी निदा करता है : तू अच्छा है और तेरा चलना अच्छा और जन्नत की एक मन्ज़िल को तू ने ठिकाना बनाया।(3)

सुवाल मुसीबतों से तंग आ कर मौत की तमन्ना करना कैसा है ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तुम में से कोई मुसीबत व तक्लीफ़ पहुंचने पर मौत की आरज़ू न करे अगर नाचार करनी ही है तो यूं कहे : "इलाही मुझे ज़िन्दा रख जब तक ज़िन्दगी मेरे लिये ख़ैर हो और मौत दे जब मौत मेरे लिये बेहतर हो।"(4)

---

1 ...ترمذی، ابواب الطب، باب ۴، ۲۵/۳۵، حدیث: ۲۰۹۴۔

2 ...ابن ماجہ، ابواب ماجاء فی الجنائز، باب ماجاء فی عیادۃ المریض، ۲/۱۹۱، حدیث: ۱۴۴۱۔

3 ...ترمذی، ابواب الصبر والصلۃ، باب ماجاء فی زیارۃ الاخوان، ۳/۴۰۵، حدیث: ۲۰۱۵۔

4 ...بخاری، کتاب المرضی، باب تمنی المریض الموت، ۴/۱۳، حدیث: ۵۶۷۱۔

www.dawateislami.net

सुवाल क्या मा'मूली बीमारी में भी बीमार पुरसी की जाए ?

जवाब मा'मूली बीमारी में भी बीमार पुरसी करना सुन्नत है जैसे आंख या कान या दाढ़ का दर्द कि येह अगर्चे ख़त़रनाक नहीं मगर बीमारी तो हैं ।[1]

सुवाल तल्क़ीन किस वक़्त करनी चाहिये, नीज़ तल्क़ीन करने का त़रीक़ा बयान करें ?

जवाब जान कनी की ह़ालत में जब तक रूह़ गले को न आई हो उस वक़्त तल्क़ीन करें और मरीज़ के पास اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰه बुलन्द आवाज़ से पढ़ें मगर उस को पढ़ने का न कहें ।[2]

सुवाल नज़्अ़ में सख़्ती देखें तो क्या करना चाहिये ?

जवाब नज़्अ़ में सख़्ती देखें तो सूरए यासीन और सूरए रअ़्द पढ़ें ।[3]

सुवाल मौत की अ़लामात पाए जाने पर मरीज़ को कैसे लिटाया जाए ?

जवाब जब मौत का वक़्त क़रीब आए और अ़लामतें पाई जाएं तो सुन्नत येह है कि दहनी करवट पर लिटा कर क़िब्ले की त़रफ़ मुंह कर दें और येह भी जाइज़ है कि चित लिटाएं और क़िब्ले को पाउं करें कि यूं भी क़िब्ला को मुंह हो जाएगा मगर इस सूरत में सर को क़दरे ऊंचा रखें और क़िब्ले को मुंह करना दुश्वार हो कि उस को तक्लीफ़ होती हो तो जिस ह़ालत पर है छोड़ दें ।[4]

---

1 .....मिरआतुल मनाजीह़, 2 / 415 ।

2 ...جوهرة نيرة، كتاب الصلاة، باب الجنائز ص ١٣٠۔

3 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4, 1 / 808 ।

4 ...درمختار، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ٣/ ٩١۔

www.dawateislami.net

सुवाल किस चीज़ को ह़दीसे पाक में क़ातेए लज़्ज़ात कहा गया है ?

जवाब मौत को क़ातेए लज़्ज़ात कहा गया है, ह़दीसे पाक में है : लज़्ज़तों को ख़त्म करने वाली मौत को कसरत से याद करो ।[1]

मय्यित का ग़ुस्ल और कफ़न

सुवाल मय्यित को नहलाने की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो किसी मय्यित को नहलाए, कफ़न पहनाए, ख़ुश्बू लगाए, जनाज़ा उठाए, नमाज़ पढ़े और जो नाक़िस बात नज़र आए उसे छुपाए वोह अपने गुनाहों से ऐसा पाक हो जाता है जैसा जिस दिन मां के पेट से पैदा हुवा था ।[2]

सुवाल मय्यित के ग़ुस्ल व कफ़न में जल्दी करनी चाहिये या नहीं ?

जवाब जी हां, ग़ुस्ल व कफ़न व दफ़्न में जल्दी चाहिये कि ह़दीस में इस की बहुत ताकीद आई है ।[3]

सुवाल मय्यित को ग़ुस्ल देते हुवे कितनी बार पानी बहाना ज़रूरी है ?

जवाब एक मरतबा सारे बदन पर पानी बहाना फ़र्ज़ है और तीन मरतबा बहाना सुन्नत है ।[4]

सुवाल अगर मय्यित को ग़ुस्ल देने वाला जनाबत की ह़ालत में हो तो ग़ुस्ल अदा हो जाएगा ?

---

1 ...ترمذی، ابواب الزھد، باب ماجاء فی ذکر الموت، ۴/۱۳۸، حدیث: ۲۳۱۴۔

2 ...ابن ماجہ، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی غسل المیت، ۲/۲۰۱، حدیث: ۱۴۶۲۔

3 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4, 1 / 806 । جوہرۃ النیرۃ، کتاب الصلاۃ، باب الجنائز، ص ۱۳۱۔

4 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الصلاۃ، الباب الحادی والعشرون فی الجنائز، الفصل الثانی فی الغسل، ۱/۱۵۸۔

www.dawateislami.net

जवाब जी हां मगर ऐसी ह़ालत में गुस्ल देना मकरूह है ।[1]

सुवाल मर्द और औ़रत की कफ़नी में क्या फ़र्क़ है ?

जवाब मर्द की कफ़नी मूंढे पर चीरी जाती है जब कि औ़रत के लिये सीने की त़रफ़ से ।[2]

सुवाल अगर इतनी बारिश बरसे कि मय्यित के सारे बदन पर पानी बह जाए तो क्या फिर भी गुस्ल देना ज़रूरी है ?

जवाब मय्यित के सारे बदन पर पानी बह जाने से गुस्ल तो हो जाएगा मगर ज़िन्दों पर उसे गुस्ल देना वाजिब ही रहेगा लिहाज़ा गुस्ल देना ज़रूरी है ।[3]

सुवाल मय्यित को कफ़न पहनाने की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब सरवरे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने मय्यित को कफ़नाया (या'नी कफ़न पहनाया) तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे सुन्दुस का लिबास (जन्नत का इन्तिहाई नफ़ीस रेशमी लिबास) पहनाएगा ।[4]

सुवाल मर्द व औ़रत के लिये कफ़ने सुन्नत क्या है ?

जवाब मर्द के लिये कफ़न तीन कपड़े हैं : (1) लिफ़ाफ़ा (2) इज़ार (3) क़मीस । औ़रत के लिये कफ़ने सुन्नत पांच कपड़े हैं : (1) लिफ़ाफ़ा (2) इज़ार (3) क़मीस (4) सीनाबन्द (5) ओढ़नी ।[5]

1 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الصلاۃ، الباب الحادی والعشرون فی الجنائز، الفصل الثانی فی الغسل، ۱/۱۵۹۔

2 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4, 1 / 818 ।

3 ...درمختار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، ۳/۱۰۹، ۱۱۰۔

4 ...مستدرک، کتاب الجنائز، فضیلۃ صفوف فی صلاۃ الجنازۃ، ۱/۶۹۰، حدیث: ۱۳۸۰۔

5 ...درمختار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، ۳/۱۱۲، ۱۱۳۔

www.dawateislami.net

सुवाल बच्चों को कौन सा कफ़न दिया जाएगा ?

जवाब जो नाबालिग़ हद्दे शहवत को पहुंच गया वोह बालिग़ के हुक्म में है या'नी बालिग़ को कफ़न में जितने कपड़े दिये जाते हैं उसे भी दिये जाएं और इस से छोटे लड़के को एक कपड़ा (इज़ार) और छोटी लड़की को दो कपड़े (लिफ़ाफ़ा और इज़ार) दे सकते हैं और लड़के को भी दो कपड़े (लिफ़ाफ़ा और इज़ार) दिये जाएं तो अच्छा है और बेहतर येह है कि दोनों को पूरा कफ़न दें अगर्चे एक दिन का बच्चा हो ।[1]

सुवाल मय्यित को आ़म सा कफ़न देना चाहिये या क़ीमती ?

जवाब कफ़न अच्छा होना चाहिये या'नी मर्द ईदैन व जुमुआ़ के लिये जैसे कपड़े पहनता था और औ़रत जैसे कपड़े पहन कर मैके जाती थी उस क़ीमत का होना चाहिये ।[2] हदीसे पाक में है : "मुर्दों को अच्छा कफ़न दो कि वोह क़ब्रों में बाहम मुलाक़ात करते हैं ।"[3]

सुवाल मय्यित को ग़ुस्ल कैसे शख़्स से दिलवाया जाए ?

जवाब अमानतदार और परहेज़गार शख़्स से ग़ुस्ल दिलवाया जाए ताकि वोह दौराने ग़ुस्ल ऐ़ब वाली बात देखे तो उसे छुपाए और भलाई वाली बात देखे तो ज़ाहिर करे । बेहतर येह है कि नहलाने वाला मय्यित का क़रीबी रिश्तेदार हो ।[4]

---

1 ...ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، ۳/۱۱۷۔

2 ...درمختار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، ۳/۱۱۳۔

3 ...مسلم، کتاب الجنائز، باب فی تحسین کفن المیت، ص ۴۷۰، حدیث: ۹۴۳،
الکامل لابن عدی، الرقم: ۷۳۴، سلیمان بن ارقم، ۴/۲۳۷۔

4 ...ھندیہ، کتاب الصلاۃ، الباب الحادی والعشرون فی الجنائز، الفصل الثانی فی الغسل، ۱/۱۵۹۔

www.dawateislami.net

सुवाल मय्यित का कफ़न किस के माल से ख़रीदा जाए ?

जवाब मय्यित ने अगर कुछ माल छोड़ा तो कफ़न उसी के माल से होना चाहिये। मय्यित ने माल न छोड़ा तो कफ़न उस के ज़िम्मे है जिस के ज़िम्मे ज़िन्दगी में नफ़क़ा था और अगर कोई ऐसा नहीं या वोह नादार है तो वहां के मुसलमानों पर कफ़न देना फ़र्ज़ है।[1]

नमाज़े जनाज़ा

सुवाल नमाज़े जनाज़ा फ़र्ज़ है या वाजिब या फिर सुन्नत ?

जवाब नमाज़े जनाज़ा फ़र्ज़े किफ़ाया है।[2]

सुवाल नमाज़े जनाज़ा में कितने रुक्न और कितनी सुन्नतें हैं ?

जवाब नमाज़े जनाज़ा में दो रुक्न हैं : (1) चार तक्बीरें और (2) क़ियाम। और क़ियाम में तीन सुन्नते मुअक्कदा हैं : (1) सना (2) दुरूदे पाक और (3) मय्यित के लिये दुआ।[3]

सुवाल क्या ग़ाइबाना नमाज़े जनाज़ा हो सकती है ?

जवाब मय्यित का सामने होना ज़रूरी है, ग़ाइबाना नमाज़े जनाज़ा नहीं हो सकती।[4]

सुवाल नमाज़े जनाज़ा का इमाम कहां खड़ा हो ?

जवाब मुस्तहब येह है कि इमाम मय्यित के सीने के सामने खड़ा हो।[5]

---

1 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा. 4, 1 / 819-820 ۔درمختار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، ۳/۱۱۴۔

2 ...درمختار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، ۳/۱۲۰۔

3 ...درمختار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، ۳/۱۲۴۔

4 ...درمختار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، ۳/۱۲۳۔

5 ...درمختار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، ۳/۱۳۴۔

www.dawateislami.net

सुवाल किस नमाज़ की आख़िरी सफ़ सब से अफ़्ज़ल है ?

जवाब नमाज़े जनाज़ा की आख़िरी सफ़ तमाम सफ़ों से अफ़्ज़ल है ।[1]

सुवाल जनाज़े में कितनी सफ़ें होनी चाहियें ?

जवाब बेहतर येह है कि जनाज़े में तीन सफ़ें हों कि ह़दीसे पाक में है : जिस की नमाज़ (जनाज़ा) तीन सफ़ों ने पढ़ी उस के लिये जन्नत वाजिब हो गई ।[2]

सुवाल अगर जनाज़ा पढ़ने वाले अफ़राद बहुत ही कम हों तो तीन सफ़ें कैसे बनाएं ?

जवाब अगर कुल सात आदमी हों तो एक इमाम बन जाए अब पहली सफ़ में तीन खड़े हो जाएं दूसरी में दो और तीसरी में एक ।[3]

सुवाल जनाज़े को कन्धा देने का क्या सवाब है ?

जवाब ह़दीसे पाक में है : जो जनाज़े को चालीस क़दम ले कर चले उस के चालीस कबीरा गुनाह मिटा दिये जाएंगे ।[4]

सुवाल नमाज़े जनाज़ा के बा'द दुआ़ करना कैसा है ?

जवाब जनाज़े की नमाज़ के बा'द दुआ़ करना रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और ह़ज़राते सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن की सुन्नत है ।[5]

---

1 . . . درمختار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، ۳/ ۱۳۱۔

2 . . . ترمذی، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی الصلوۃ علی المیت . . . الخ، ۲/ ۳۱۷، حدیث: ۱۰۳۰۔

3 . . . غنیۃ المتملی، فصل فی الجنائز، ص ۵۸۸۔

4 . . . معجم اوسط، ۴/ ۲۵۹، حدیث: ۵۹۲۰۔

5 . . . دلائل النبوۃ، باب ماجاء فی غزوۃ مؤتۃ . . . الخ، ۴/ ۳۶۹،

سنن کبری للبیھقی، کتاب الجنائز، باب الرجل تفوتہ الصلاۃ . . . الخ، ۴/ ۷۴، حدیث: ۶۹۹۶۔

www.dawateislami.net

सुवाल नमाज़े जनाज़ा की इब्तिदा कब हुई ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام के दौरे मुबारक से हुई ।[1]

सुवाल जन्नती शख़्स का जनाज़ा ले कर चलने वालों पर क्या इन्आ़म फ़रमाया जाता है ?

जवाब हदीसे पाक में है कि जब कोई जन्नती शख़्स फ़ौत होता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस का जनाज़ा उठाने, उस के पीछे चलने और उस की नमाज़े जनाज़ा अदा करने वालों को अ़ज़ाब देने से हया फ़रमाता है ।[2]

सुवाल हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जनाज़ा देख कर क्या कहा करते थे ?

जवाब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ येह पढ़ा करते थे : سُبْحٰنَ الْحَیِّ الَّذِیْ لَایَمُوْتُ या'नी पाक है वोह ज़ात जिसे मौत नहीं ।[3]

क़ब्र व दफ़्न

सुवाल मय्यित को दफ़्न करने का क्या हुक्म है ?

जवाब मय्यित को दफ़्न करना फ़र्ज़े किफ़ाया है ।[4]

सुवाल तदफ़ीन में शिर्कत करने की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो मुसलमान के जनाज़े के साथ ईमान से ब निय्यते सवाब जाए

---

1 .....फ़तावा रज़विय्या, 5 / 375 ।

2 ...فردوس الأخبار، ١/١٦٨، حديث: ١١١٥۔

3 ...احياء العلوم، كتاب ذكر الموت ومابعده، الباب الثامن، ٥/٢٦٦۔

4 ...فتاوى هنديه، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون فى الجنائز، ١/١٦٥۔

www.dawateislami.net

और उस के साथ ही रहे हत्ता कि उस पर नमाज़ पढ़ ले और उस के दफ़्न से फ़ारिग़ हो जाए तो वोह सवाब के दो क़ीरात़ (हिस्से) ले कर लौटेगा हर हिस्सा उहुद के बराबर।[1]

सुवाल क़ब्र की कितनी और कौन कौन सी क़िस्में हैं ?

जवाब बनावट के ए'तिबार से क़ब्र की दो क़िस्में हैं : (1) लह़द (या'नी बग़ली क़ब्र) (2) शक़ (या'नी सन्दूक़)।[2]

सुवाल लह़द कैसे बनाई जाती है ?

जवाब सन्दूक़ नुमा गढ़ा खोद कर उस में क़िब्ले की त़रफ़ दीवार में इतनी जगह खोदें जिस में मय्यित को बा आसानी रखा जा सके।[3]

सुवाल "शक़" कैसे बनाई जाती है ?

जवाब येह सन्दूक़ नुमा गढ़ा खोद कर तय्यार की जाती है और आ़म तौ़र पर हमारे यहां येही राइज है, लह़द सुन्नत है अगर ज़मीन इस क़ाबिल हो तो येही करें और नर्म ज़मीन हो तो सन्दूक़ में ह़रज नहीं।[4]

सुवाल क़ब्र की लम्बाई, चौड़ाई और गहराई कितनी होनी चाहिये ?

जवाब क़ब्र की लम्बाई मय्यित के क़द से कुछ ज़ाइद हो और चौड़ाई आधे क़द की और गहराई कम से कम निस्फ़ क़द की और बेहतर येह कि गहराई भी क़द बराबर हो और मुतवस्सित़ (दरमियानी) दर्जा येह

---

1 ...بخاری، کتاب الایمان، باب اتباع الجنازۃ من الایمان، ۱/۲۹، حدیث: ۴۷۔

2 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الصلاۃ، الباب الحادی والعشرون فی الجنائز، ۱/۱۶۵۔

3 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الصلاۃ، الباب الحادی والعشرون فی الجنائز، ۱/۱۶۵۔

4 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الصلاۃ، الباب الحادی والعشرون فی الجنائز، ۱/۱۶۵۔

www.dawateislami.net

कि सीने तक हो ।[1] इस से मुराद येह कि लह़द या सन्दूक़ इतना हो, येह नहीं कि जहां से खोदनी शुरूअ़ की वहां से आख़िर तक येह मिक़्दार हो ।[2]

सुवाल क्या क़ब्र के अन्दरूनी हिस्से में ईंटें लगाई जा सकती हैं ?

जवाब क़ब्र के अन्दर की दीवारें वग़ैरा कच्ची मिट्टी की हों, आग की पकी हुई ईंटें इस्ति'माल न की जाएं ।[3] अगर अन्दर में पकी हुई ईंट की दीवारें ज़रूरी हों तो फिर अन्दरूनी हिस्सा मिट्टी के गारे से अच्छी त़रह़ लीप दिया जाए ।[4]

सुवाल क्या क़ब्र में चटाई वग़ैरा बिछा सकते हैं ?

जवाब क़ब्र के अन्दर चटाई वग़ैरा बिछाना जाइज़ नहीं है कि बे सबब माल ज़ाएअ़ करना है ।[5]

सुवाल मय्यित को क़ब्र में लिटाने का क्या त़रीक़ा है ?

जवाब मय्यित को सीधी करवट पर इस त़रह़ लिटाएं कि उस का मुंह और सीना क़िब्ले की त़रफ़ हो जाए ।[6]

सुवाल क्या मय्यित को क़ब्र में लिटाने के बा'द कफ़न की बन्दिश खोल सकते हैं ?

---

1 . . . ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، مطلب: فی دفن المیت، ۳/ ۱۶۴۔

2 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4, 1 / 843 ।

3 . . . فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الحادی والعشرون فی الجنائز، ۱/ ۱۶۶۔

4 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4, 1 / 843 मफ़्हूमन ।

5 . . . ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، مطلب: فی دفن المیت، ۳/ ۱۶۴۔

6 . . . فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الحادی والعشرون فی الجنائز، ۱/ ۱۶۶۔

www.dawateislami.net

जवाब जी हां ! क़ब्र में रखने के बा'द कफ़न की बन्दिश खोल दें की अब ज़रूरत नहीं और अगर बन्दिश नहीं खोली तो भी ह़रज नहीं ।[1]

सुवाल क़ब्र ऊपर से किस शक्ल की बनाई जाए ?

जवाब क़ब्र ऊंट की कोहान की त़रह़ ढाल वाली बनाएं चौखटी न बनाएं ।[2]

सुवाल क़ब्र पर पानी छिड़कना कैसा है ?

जवाब बा'दे दफ़्न क़ब्र पर पानी छिड़कना मसनून है ।[3] इस के इलावा बा'द में पौदे वग़ैरा को पानी देने की ग़रज़ से छिड़कें तो जाइज़ है ।[4] बा'ज़ लोग अपने अ़ज़ीज़ की क़ब्र पर बिला मक़्सदे सह़ीह़ मह़्ज़ रस्मी त़ौर पर पानी छिड़कते हैं येह नाजाइज़ और इसराफ़ है ।[5]

ज़कात

सुवाल ज़कात का क्या मत़लब है ?

जवाब ज़कात से मुराद शरीअ़त के मुक़र्रर कर्दा माल के एक ह़िस्से को **अल्लाह** तआ़ला के लिये किसी मुसलमान फ़क़ीर (मुस्तह़िक़) को मालिक बना देना है जो हाशिमी हो और न ही किसी हाशिमी का आज़ाद कर्दा ग़ुलाम हो और मालिक बनाने वाला उस माल से अपना नफ़्अ़ बिल्कुल जुदा कर ले ।[6]

---

1 ...جوهرة النيرة، كتاب الصلاة، باب الجنائز، ص ١٤٠۔

2 ...ردالمحتار، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب: في دفن الميت، ٣/١٦٩۔

3 .....फ़तावा रज़विय्या, 9 / 373 ।

4 .....मदनी वसिय्यत नामा, स. 15 ।

5 .....फ़तावा रज़विय्या, 9 / 373 मफ़्हूमन ।

6 ...تنوير الابصار، كتاب الزكاة، ٣/٢٠٣-٢٠٦۔

www.dawateislami.net

सुवाल ज़कात की शरई हैसिय्यत क्या है ?

जवाब ज़कात फ़र्ज़ है, इस का मुन्किर काफ़िर और अदा में ताख़ीर करने वाला गुनहगार है ।[1]

सुवाल कुरआने करीम में ज़कात अदा न करने वालों के लिये क्या वईद आई है ?

जवाब ऐसों को क़ियामत में दर्दनाक अ़ज़ाब होगा । इरशादे बारी तआ़ला है :

﴿وَالَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنْفِقُوْنَهَا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۙ﴿۳۴﴾ يَّوْمَ يُحْمٰى عَلَيْهَا فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوٰى بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوْبُهُمْ وَظُهُوْرُهُمْ ؕ هٰذَا مَا كَنَزْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ فَذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْنِزُوْنَ ﴿۳۵﴾﴾ (پ۱۰، التوبة: ۳۴، ۳۵)

(**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और वोह कि जोड़ कर रखते हैं सोना और चांदी और उसे **अल्लाह** की राह में ख़र्च नहीं करते उन्हें ख़ुश ख़बरी सुनाओ दर्दनाक अ़ज़ाब की जिस दिन वोह तपाया जाएगा जहन्नम की आग में फिर उस से दागेंगे उन की पेशानियां और करवटें और पीठें येह है वोह जो तुम ने अपने लिये जोड़ कर रखा था अब चखो मज़ा इस जोड़ने का ।)

सुवाल अहादीसे करीमा में ज़कात अदा करने के क्या फ़वाइद बयान हुवे हैं ?

जवाब अहादीसे मुबारका में ज़कात की अदाएगी के बा'ज़ फ़वाइद येह बयान हुवे हैं : (1) ज़कात देना बन्दे के इस्लाम की तक्मील है ।[2] (2) ज़कात की अदाएगी से माल की हिफ़ाज़त होती है ।[3] (3) ज़कात अदा करने से माल का शर दूर हो जाता है ।[4]

---

1 ... فتاوی ہندیة، کتاب الزکاة، الباب الاول، ۱/۱۷۰، ملتقطاً۔

2 ... الترغیب والترہیب، الترغیب فی اداء الزکاة وتاکید وجوبها، ۱/۳۰۱، حدیث: ۱۲۔

3 ... معجم کبیر، ۱۰/۱۲۸، حدیث: ۱۰۱۹۶۔

4 ... مستدرک للحاکم، کتاب الزکاة، باب التغلیظ فی منع الزکاة، ۲/۶، حدیث: ۱۴۷۹۔

www.dawateislami.net

सुवाल ज़कात किस पर और कब वाजिब होती है ?

जवाब ज़कात वाजिब होने की दस शराइत़ हैं : (1) मुसलमान होना (2) बुलूग़ (3) अ़क़्ल (4) आज़ाद होना (5) माल ब क़दरे निसाब उस की मिल्क में होना, अगर निसाब से कम है तो ज़कात वाजिब न हुई (6) पूरे तौ़र पर उस का मालिक हो या'नी उस पर क़ाबिज़ भी हो (7) निसाब का दैन से फ़ारिग़ होना (8) निसाब ह़ाजते अस्लिय्या से फ़ारिग़ हो (9) माले नामी होना या'नी बढ़ने वाला ख़्वाह ह़क़ीक़तन बढ़े या हुक्मन (10) साल गुज़रना, साल से मुराद क़मरी साल है या'नी चांद के महीनों से बारह[12] महीने ।[1]

सुवाल क्या रिश्तेदारों को ज़कात दी जा सकती है ?

जवाब रिश्तेदारों में से कोई ह़ाजत मन्द और शरई फ़क़ीर हो तो उस को ज़कात देना अफ़्ज़ल है मगर इन को देने की चन्द शराइत़ हैं : (1) सय्यिद या हाशिमी न हो (2) वालिदैन (3) या अपनी औलाद में से न हों (4) मियां बीवी न हों (5) ऐसा नाबालिग़ न हो जिस का वालिद ग़नी (साह़िबे निसाब मालदार) हो । इन के इलावा भाई, बहन, सास, सुसर, बहू, दामाद, ख़ाला, फूफी, चचा, मामूं इन सब को ज़कात देना जाइज़ है । बशर्ते कि मुस्तह़िक़ हों (या'नी इन को ज़कात लगती हो) ।[2]

सुवाल क्या प्लॉट पर ज़कात होती है ?

जवाब अगर प्लॉट बेचने की निय्यत से लिये थे तो उन पर ज़कात होगी वरना नहीं ।[3]

1.....फ़तावा अह्ले सुन्नत, अह़कामे ज़कात, स. 72 ।

2.....बहारे शरीअ़त, 1 / 927-928 । फ़तावा अह्ले सुन्नत, अह़कामे ज़कात, स. 399 ।

3.....फ़तावा अह्ले सुन्नत, अह़कामे ज़कात, स. 121 ।

www.dawateislami.net

सुवाल शादी करने या ह़ज उ़मरे के लिये जाने या मकान ख़रीदने के लिये जम्अ़ की गई रक़म पर ज़कात है ?

जवाब अगर येह रक़म तन्हा या दूसरे माले ज़कात से मिल कर निसाब के बराबर है और इस पर साल भी गुज़र चुका है तो इस जम्अ़ की गई रक़म पर ज़कात है ।[1]

सुवाल क्या औ़रत के इस्ति'माली ज़ेवरात की भी ज़कात निकालनी होगी ?

जवाब जी हां, उन में भी ज़कात है अगर्चे वोह इस्ति'माल में हों ।[2]

सुवाल ज़कात के मसारिफ़ क्या हैं ?

जवाब ज़कात के मसारिफ़ सात (7) हैं : (1) फ़क़ीर (2) मिस्कीन (3) आ़मिल (ज़कात वुसूल करने के लिये ह़ाकिमे इस्लाम का मुक़र्रर कर्दा शख़्स) (4) रिक़ाब (मुकातब ग़ुलाम) (5) ग़ारिम (मदयून / मक़रूज़) (6) फ़ी सबीलिल्लाह (जिहाद या ह़ज का इरादा रखने वाला या त़ालिबे इ़ल्म वग़ैरा) और (7) इब्ने सबील (मुसाफ़िर जिस के पास माल न रहा) ।[3]

सुवाल किन जानवरों पर ज़कात होती है ? नीज़ उन की ता'दाद कितनी होना ज़रूरी है ?

जवाब तीन क़िस्म के जानवरों पर ज़कात वाजिब है जब कि वोह साइमा हों । (1) ऊंट (2) गाए, भैंस (3) बकरी । ऊंट पांच या पांच से

1.....फ़तावा अह्ले सुन्नत, अह़कामे ज़कात, स. 100 । फ़ैज़ाने ज़कात, स. 47-48 ।

2...نورالایضاح، کتاب الزکاۃ، ص ۳۶۱۔

3.....फ़तावा अह्ले सुन्नत, अह़कामे ज़कात, स. 370 ।

www.dawateislami.net

ज़ियादा हों, गाए तीस या तीस से ज़ियादा हों और बकरियां चालीस या इस से ज़ियादा हों तो ज़कात वाजिब है।[1]

सुवाल क्या ज़मीन की पैदावार पर भी ज़कात फ़र्ज़ है ?

जवाब जी हां ! उ़श्री ज़मीन से ऐसी चीज़ पैदा हुई जिस की ज़राअ़त से मक़्सूद ज़मीन से मनाफ़ेअ़ ह़ासिल करना है तो उस पैदावार की ज़कात फ़र्ज़ है और इस ज़कात का नाम उ़श्र है।[2]

सदक़ा

सुवाल सदक़ा किसे कहते हैं ?

जवाब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से सवाब पाने की उम्मीद पर जो अ़त़िया दिया जाए उसे सदक़ा कहते हैं।[3]

सुवाल ह़दीसे पाक में सदक़ा करने की क्या फ़ज़ीलत आई है ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : सदक़ा रब तआ़ला के ग़ज़ब को बुझाता और बुरी मौत को दफ़्अ़ करता है।[4]

सुवाल सदक़ा करने के कोई दस फ़ाएदे बयान फ़रमाइये ?

जवाब सदक़ा करने के बेशुमार फ़वाइद हैं जिन में से दस येह हैं : (1) बुरी मौत से बचना (2) उ़म्र ज़ियादा होना (3) रिज़्क़ और माल में बरकत होना (4) बलाएं दूर होना (5) मददे इलाही का

1.....फ़तावा अह्ले सुन्नत, अह़कामे ज़कात, स. 567। बहारे शरीअ़त, 1 / 893-896 माख़ूज़न। जो जानवर साल का अक्सर हिस्सा जंगल में चर कर गुज़ारा करते हों और चराने से मक़्सूद सिर्फ़ दूध और बच्चे लेना और फ़र्बा करना हो उन को साइमा कहते हैं। (درمختار و ردالمحتار، کتاب الزکاۃ، ۳/۲۳۲)

2.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 5, 1 / 916।

3...کتاب التعریفات، باب الصاد، ص ۹۵۔

4...ترمذی، کتاب الزکاۃ، باب ماجاء في فضل الصدقة، ۲/۱۴۶، حدیث: ۶۶۴۔

www.dawateislami.net

शामिले ह़ाल होना (6) दरजात का बुलन्द होना (7) रिज़ाए इलाही नसीब होना (8) गुनाहों का मुआ़फ़ होना (9) मह़ब्बतों में इज़ाफ़ा होना और (10) टेढ़े काम दुरुस्त होना वग़ैरा।[1]

सुवाल सदक़ा अ़लानिय्या करना बेहतर है या पोशीदा ?

जवाब पोशीदा सदक़ा करना बेहतर है मगर दूसरों की तरग़ीब के लिये अ़लानिय्या सदक़ा करना अफ़्ज़ल है।[2]

सुवाल सदक़ा कहां ख़र्च करे ?

जवाब सदक़ा रिश्तेदारों, यतीमों, मिस्कीनों, मुसाफ़िरों, साइलों और ग़ुलाम लौंडियां आज़ाद कराने में ख़र्च किया जाए। (پ۲،البقرۃ:۱۷۷)

सुवाल सदक़ा व ख़ैरात किन लोगों को देना अफ़्ज़ल है ?

जवाब सदक़ा व ख़ैरात उन ग़रीब उ़लमा, त़लबा, मुदर्रिसीन और दीन के ख़ादिमों वग़ैरा को देना अफ़्ज़ल है जिन्हों ने अपनी ज़िन्दगियां ख़िदमते दीन के लिये वक़्फ़ कर दी हैं। अगर इन की ख़िदमत न की गई और येह त़लबे मआ़श के लिये मजबूरन मश्ग़ूल हुवे तो दीने इस्लाम का सख़्त नुक़्सान होगा।[3]

सुवाल क्या ह़राम माल से सदक़ा किया जा सकता है ?

जवाब ह़राम माल से सदक़ा नहीं किया जा सकता, ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद

---

1 .....ज़ियाए सदक़ात, स. 174।

2 ...تفسیر مدارک، پ۳،البقرۃ، تحت الآیۃ: ۲۷۱، ص ۱۳۹۔

3 .....तफ़्सीरे नईमी, पारह. 3, अल बक़रह, तह़तुल आयत : 273, 3 / 134।

www.dawateislami.net

फ़रमाया : जो ह़राम माल जम्अ़ करे फिर इस से सदक़ा दे तो इस में उस के लिये कोई अज्र नहीं और इस का वबाल उसी पर होगा।[1]

सुवाल क्या क़र्ज़ देने की भी कोई फ़ज़ीलत है ?

जवाब जी हां ! ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "हर क़र्ज़ सदक़ा है।"[2]

सुवाल क्या बीवी अपने शौहर का माल सदक़ा कर सकती है ?

जवाब जी हां ! हुसूले सवाब की निय्यत से शौहर की रिज़ामन्दी से बीवी माल सदक़ा कर सकती है।[3]

सुवाल क्या सदक़ा करने के बा'द वापस ले सकते हैं ?

जवाब नहीं ले सकते क्यूंकि ह़दीसे पाक में इस की मुमानअ़त है।[4]

सुवाल सदक़ाते वाजिबा, नफ़्ली सदक़ात और औक़ाफ़ की आमदनी बनी हाशिम को देना कैसा ?

जवाब सदक़ाते वाजिबा (जैसे ज़कात, सदक़ए फ़ित्र वग़ैरा) नहीं दे सकते सदक़ए नफ़्ल और औक़ाफ़ की आमदनी दे सकते हैं, ख़्वाह वक़्फ़ करने वाले ने इन की तअ़यीन की हो या नहीं।[5]

---

1 ...صحیح ابن حبان، کتاب الزکاۃ، ذکر البیان بأن المال...الخ، ۸/۵۳، حدیث:۳۳۶۷۔

2 ...شعب الایمان، باب فی الزکاۃ، فصل فی القرض، ۳/۲۸۴، حدیث:۳۵۶۳۔

3 .....मिरआतुल मनाजीह़, 3 / 127 ।

4 ...بخاری، کتاب الزکاۃ، ھل یشتری الرجل صدقتہ، ۱/۵۰۲، حدیث:۱۴۸۹۔

5 .....फ़तावा अह्ले सुन्नत, अह़कामे ज़कात, स. 423, 424 । बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा. 5, 1 / 931 ।

www.dawateislami.net

सुवाल क्या किसी का दिया हुवा तोह़्फ़ा सदक़ा कर सकते हैं ?

जवाब जी हां ! ह़दीस शरीफ़ में है : जब तुम्हें बिन मांगे कुछ दिया जाए तो खाओ और सदक़ा करो ।[1]

रोज़ा

सुवाल रोज़े कब फ़र्ज़ हुवे ?

जवाब रोज़े 10 शा'बान 2 हिजरी को फ़र्ज़ हुवे ।[2]

सुवाल रोज़ा रखने की फ़ज़ीलत और अज्रो सवाब बताइये ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : आदमी के हर नेक अ़मल का बदला दस से सात सौ गुना तक दिया जाता है । **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया : सिवाए रोज़े के कि रोज़ा मेरे लिये है और इस की जज़ा मैं ख़ुद दूंगा क्यूंकि बन्दा अपनी ख़्वाहिश और खाने को सिर्फ़ मेरी वज्ह से तर्क करता है, रोज़ादार के लिये दो ख़ुशियां हैं, एक इफ़्त़ार के वक़्त और एक अपने रब عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात के वक़्त और रोज़ादार के मुंह की बू **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक मुश्क से ज़ियादा पाकीज़ा है ।[3]

सुवाल क्या रोज़ा रखने का कोई त़िब्बी फ़ाएदा भी है ?

जवाब जी हां, रोज़ा रखने से शूगर कन्ट्रोल, दिल की घबराहट दूर, ज़ेह्नी

---

1 ...ابوداود، کتاب الزکاۃ، باب فی الاستعفاف، ۲/۱۷۱، حدیث: ۱۶۴۷۔

2 ...درمختار، کتاب الصوم، ۳/۳۸۳۔

3 ...مسلم، کتاب الصیام، باب فضل الصیام، ص ۵۸۰، حدیث: ۱۱۵۱۔

www.dawateislami.net

डिप्रेशन व नफ़्सानी अमराज़ का ख़ातिमा होता है। नीज़ मे'दे, जिगर और पट्ठों के अमराज़ में इफ़ाक़ा होता है।[1]

सुवाल क्या रोज़ा रखने के लिये निय्यत करना ज़रूरी है?

जवाब जी ज़रूरी है। अगर कोई शख़्स बिग़ैर निय्यत के पूरा दिन भूका प्यासा रहे तो उस का रोज़ा न होगा।[2]

सुवाल क्या रोज़ा रखने के लिये सहरी करना ज़रूरी है?

जवाब ज़रूरी तो नहीं, हां सुन्नत है।[3] लिहाज़ा जान बूझ कर इस अ़ज़ीम सुन्नत को न छोड़ा जाए।

सुवाल क्या रोज़ा बन्द करने या खोलने के लिये अज़ान ज़रूरी है?

जवाब जी नहीं! "रोज़ा बन्द करने का तअ़ल्लुक़ अज़ाने फ़ज्र से नहीं। सुब्हे सादिक़ से पहले पहले खाना पीना बन्द करना ज़रूरी है।" यूं ही "जब ग़ुरूबे आफ़्ताब का यक़ीन हो जाए, इफ़्तार करने में देर नहीं करनी चाहिये। न साइरन का इन्तिज़ार कीजिये, न अज़ान का। फ़ौरन कोई चीज़ खा या पी लीजिये।"[4]

सुवाल किस सफ़र की वज्ह से रोज़ा न रखने की इजाज़त है?

जवाब आ'ला ह़ज़रत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की तह़क़ीक़ के मुताबिक़ शरअ़न सफ़र की मिक़्दार साढ़े सत्तावन मील

---

1 .....फ़ैज़ाने रमज़ान, स. 107।

2 ...درمختار وردالمحتار، کتاب الصوم، ۳/۳۸۴-۳۸۵۔

3 ...بدائع الصنائع، کتاب الصوم، ۲/۲۶۶۔

4 .....फ़ैज़ाने रमज़ान, स. 173-177।

www.dawateislami.net

(या'नी तक़रीबन बानवे किलो मीटर) है जो कोई इतनी मिक़्दार का फ़ासिला तै करने की ग़रज़ से (पन्दरह दिन से कम के लिये) अपने शहर या गाऊं की आबादी से बाहर निकल आया, वोह अब शरअ़न मुसाफ़िर है। उसे रोज़ा क़ज़ा कर के रखने की इजाज़त है।[1]

सुवाल क़ै आने से रोज़ा कब टूटता है?

जवाब रोज़ा याद होने के बा वुजूद जान बूझ कर क़ै की और वोह मुंह भर हो और उस क़ै में खाना, पानी, कड़वा पानी या ख़ून आए तो रोज़ा टूट जाएगा। बिला इख़्तियार क़ै हुई अब अगर वोह मुंह भर है और उस में एक चने के बराबर वापस लौटा दी तो भी रोज़ा टूट जाएगा।[2]

सुवाल क्या जिस पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो उस का रोज़ा हो जाता है?

जवाब जी हां, जनाबत (या'नी ग़ुस्ल फ़र्ज़ होने) की ह़ालत में सुब्ह़ की बल्कि सारा दिन कोई जनाबत की ह़ालत में रहा तो रोज़ा हो जाएगा।[3] मगर उतनी देर तक जान बूझ कर ग़ुस्ल न करना कि नमाज़ क़ज़ा हो जाए गुनाह व ह़राम है।

सुवाल रोज़े के कोई 6 मकरूहात बयान कीजिये?

जवाब झूट, ग़ीबत, बद निगाही, गाली देना, बिला इजाज़ते शरई किसी का दिल दुखाना, दाढ़ी मुंडाना वैसे भी नाजाइज़ व ह़राम हैं रोज़े में

1.....फ़ैज़ाने रमज़ान, स. 235।

2...ردالمحتار، کتاب الصوم، باب مایفسد الصوم ومالا یفسد، ۳/۴۵۰۔

3...درمختار، کتاب الصوم، ۳/۴۲۸۔

www.dawateislami.net

और ज़ियादा ह़राम और इन की वज्ह से रोज़े में कराहिय्यत आती और रोज़े की नूरानिय्यत चली जाती है।[1]

सुवाल मजबूरी के सबब रोज़ा न रखा तो मजबूरी ख़त्म होने पर क्या हुक्म है ?

जवाब बा'ज़ मजबूरियां ऐसी हैं जिन के सबब रमज़ानुल मुबारक में रोज़ा न रखने की इजाज़त है मगर येह याद रहे कि मजबूरी में रोज़ा मुआ़फ़ नहीं वोह मजबूरी ख़त्म हो जाने के बा'द इस की क़ज़ा रखना फ़र्ज़ है। अलबत्ता क़ज़ा का गुनाह नहीं होगा।[2]

सुवाल रोज़े का कफ़्फ़ारा क्या है ?

जवाब मुमकिन हो तो एक बांदी या ग़ुलाम आज़ाद करे और येह न कर सके तो पै दर पै साठ रोज़े रखे। येह भी अगर मुमकिन न हो तो साठ मिस्कीनों को पेट भर कर दोनों वक़्त खाना खिलाए।[3]

ह़ज व उ़मरह

सुवाल एह़राम के क्या मा'ना हैं ?

जवाब एह़राम के लफ़्ज़ी मा'ना हैं : ह़राम करना क्यूंकि एह़राम बांधने पर बा'ज़ ह़लाल बातें भी ह़राम हो जाती हैं।[4]

सुवाल एह़राम की ह़ालत में इत्र की शीशी हाथ में ली और हाथ में ख़ुश्बू लग गई तो क्या कफ़्फ़ारा है ?

1.....फ़ैज़ाने रमज़ान, स. 224।

2.....फ़ैज़ाने रमज़ान, स. 234।

3.....ردالمحتار، کتاب الصوم، مطلب فی الکفارۃ، ۳/۴۴۷۔

4.....रफ़ीकुल मो'तमिरीन, स. 28।

www.dawateislami.net

जवाब अगर लोग देख कर कहें कि येह बहुत सी खुश्बू लग गई है अगर्चे उ़ज़्व के थोड़े से हिस्से में लगी हो तो दम वाजिब है, वरना मा'मूली सी खुश्बू भी लग गई तो सदक़ा है।[1]

सुवाल क्या एह़राम की ह़ालत में जूं भी नहीं मार सकते ?

जवाब जी हां ! जूं मारना, फैंकना, किसी को मारने के लिये इशारा करना, कपड़ा उस के मारने के लिये धोना या धूप में डालना, बालों में जूं मारने के लिये किसी क़िस्म की दवा वग़ैरा डालना, ग़रज़ येह कि किसी त़रह़ उस के हलाक पर बाइस होना येह सब ह़राम है।[2]

सुवाल इज़्त़िबाअ़ किसे कहते हैं ?

जवाब मर्द अपनी चादर सीधे हाथ की बग़ल के नीचे से निकाल कर उस के दोनों पल्ले उलटे कन्धे पर इस त़रह़ डाले कि सीधा कन्धा खुला रहे।[3]

सुवाल इस्तिलाम क्या है ?

जवाब ह़जरे अस्वद को बोसा देने या हाथ या लकड़ी से छू कर चूम लेने या इशारा कर के हाथों को बोसा देने को इस्तिलाम कहते हैं।[4]

---

1 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 6, 1 / 1163 माख़ूज़न ۔فتاوی ہندیہ، کتاب الحج، الباب الثامن فی الجنایات، ۱/ ۲۴۰۔

2 .....फ़तावा रज़विय्या, 10 / 733।

3 ...ردالمحتار، کتاب الحج، مطلب فی دخول مکہ، ۳/ ۵۷۹۔

فتاوی ہندیہ، کتاب المناسک، الباب الخامس فی کیفیۃ اداء الحج، ۱/ ۲۲۵۔

4 ...ردالمحتار، کتاب الحج، مطلب فی دخول مکہ، بہارِ شریعت, حصہ, 6, 1 / 1096

www.dawateislami.net

सुवाल सअ़्य किसे कहते हैं ?

जवाब सफ़ा व मरवा के दरमियान दौड़ने को सअ़्य कहते हैं ।[1]

सुवाल रमी किसे कहते हैं ?

जवाब जमरात (या'नी शैत़ानों) पर कंकरियां मारना रमी कहलाता है ।[2]

सुवाल रमल किसे कहते हैं ?

जवाब अकड़ कर शाने (कन्धे) हिलाते हुवे छोटे छोटे क़दम उठाते हुवे क़दरे (या'नी थोड़ा) तेज़ी से चलना ।[3]

सुवाल त़वाफ़ में कितने फेरे और कितने इस्तिलाम होते हैं ?

जवाब सात (7) फेरे और आठ (8) इस्तिलाम ।[4]

सुवाल तक़्सीर की ता'रीफ़ बताइये ?

जवाब तक़्सीर या'नी कम अज़ कम चौथाई (1 / 4) सर के बाल उंगली के पोरे बराबर कटवाना ।[5]

सुवाल इस्लामी बहनों की तक़्सीर का आसान त़रीक़ा क्या है ?

जवाब इस का आसान त़रीक़ा येह है कि अपनी चुटया के सिरे को उंगली के गिर्द लपेट कर उतना ह़िस्सा काट लें, लेकिन येह एह़तियात़

---

1 .....बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा, 6, 1 / 1048 ।

2 .....रफ़ीकुल ह़रमैन, स. 60 ।

3 ...فتاوی ھندیۃ، کتاب المناسک، الباب الخامس فی کیفیۃ اداء الحج، ۱/۲۲۶۔

4 .....रफ़ीकुल मो'तमिरीन, स. 62 ।

5 ...فتاوی ھندیۃ، کتاب المناسک، الباب الخامس فی کیفیۃ اداء الحج، ۱/۲۳۱۔

www.dawateislami.net

लाज़िमी है कि कम अज़ कम चौथाई (1 / 4) सर के बाल पोरे के बराबर कट जाएं।[1]

सुवाल त़वाफ़ में कितनी और कौन कौन सी बातें ह़राम हैं ?

जवाब त़वाफ़ में सात बातें ह़राम हैं : (1) बे वुज़ू त़वाफ़ करना (2) जो उ़ज़्व सत्र में दाख़िल है उस का चौथाई (1 / 4) ह़िस्सा खुला होना, मसलन रान या आज़ाद औ़रत का कान या कलाई (3) बे मजबूरी सुवारी पर या किसी की गोद में या कन्धों पर त़वाफ़ करना (4) बिला उ़ज़्र बैठ कर सरकना या घुटनों पर चलना (5) का'बे को सीधे हाथ पर ले कर उल्टा त़वाफ़ करना (6) त़वाफ़ में "ह़त़ीम" के अन्दर हो कर गुज़रना (7) सात फेरों से कम करना।[2]

ज़ब्ह़ और कुरबानी

सुवाल कुरबानी किसे कहते हैं ?

जवाब मख़्सूस जानवर को मख़्सूस वक़्त में सवाब की निय्यत से ज़ब्ह़ करना कुरबानी कहलाता है।[3]

सुवाल यौमुन्नह़र किस दिन को कहा जाता है ?

जवाब ज़ुल ह़िज्जा की 10 तारीख़ को "यौमुन्नह़र" कहते हैं।[4]

सुवाल कुरबानी किस पर वाजिब है ?

---

1 .....रफ़ीकुल मो'तमिरीन, स. 85।

2 .....फ़तावा रज़विय्या, 10 / 744। बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा, 6, 1 / 1112-1113।

3 ...درمختار، کتاب الاضحیۃ، ۹/۵۱۹۔

4 ...درمختار وردالمحتار، کتاب الاضحیۃ، ۹/۵۲۹۔

www.dawateislami.net

जवाब हर बालिग़, मुक़ीम, मुसलमान मर्द व औ़रत, मालिके निसाब[1] पर कुरबानी वाजिब है।[2]

सुवाल जिस पर कुरबानी वाजिब हो लेकिन पैसे न हों तो क्या करे ?

जवाब अगर कुरबानी उस पर वाजिब है और उस वक़्त उस के पास रूपिया नहीं तो क़र्ज़ ले कर या कोई चीज़ फ़रोख़्त कर के कुरबानी का जानवर ह़ासिल करे और कुरबानी करे।[3]

सुवाल कुरबानी के जानवरों में किस की कितनी उ़म्र होना ज़रूरी है ?

जवाब कुरबानी के जानवरों में ऊंट की उ़म्र पांच साल, गाए की उ़म्र दो साल और बकरे की एक साल होना ज़रूरी है इस से कम हो तो कुरबानी न होगी अलबत्ता दुम्बा या भेड़ का छे माह का बच्चा जो देखने में साल का लगे उस की कुरबानी जाइज़ है।[4]

सुवाल ज़ब्ह़ में काटी जाने वाली चार रगों के नाम बताइये ?

जवाब वोह चार रगें येह हैं : (1) हुल्क़ूम, (2) मुरी और (3-4) वदजैन।[5]

1.....मालिके निसाब होने से मुराद येह है कि उस शख़्स के पास साढ़े बावन तोले चांदी या इतनी मालिय्यत की रक़म या इतनी मालिय्यत का तिजारत का माल या इतनी मालिय्यत का ह़ाजते अस्लिय्या के इ़लावा सामान हो और उस पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ या बन्दों का इतना क़र्ज़ा न हो जिसे अदा कर के ज़िक्र कर्दा निसाब बाक़ी न रहे। फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : ह़ाजते अस्लिय्या (या'नी ज़रूरियाते ज़िन्दगी) से मुराद वोह चीज़ें हैं जिन की उ़मूमन इन्सान को ज़रूरत होती है और उन के बिग़ैर गुज़र औक़ात में शदीद तंगी व दुश्वारी मह़सूस होती है जैसे रहने का घर, पहनने के कपड़े, सुवारी, इ़ल्मे दीन से मुतअ़ल्लिक़ किताबें और पेशे से मुतअ़ल्लिक़ औज़ार वग़ैरा। (अब्लक़ घोड़े सुवार, स. 6)

2.....अब्लक़ घोड़े सुवार, स. 6।

3.....फ़तावा अमजदिया, 3 / 315।

4.....درمختار، کتاب الاضحیۃ، ۹/۵۳۳۔

5.....درمختار وردالمحتار، کتاب الذبائح، ۹/۴۹۱-۴۹۳۔

www.dawateislami.net

सुवाल जानवर को ज़ब्ह करने में कितनी रगों का कटना ज़रूरी है ?

जवाब ज़ब्ह की चार रगों में से तीन का कट जाना काफ़ी है और अगर चारों में से हर एक का अक्सर हिस्सा भी कट गया तो जानवर ह़लाल है ।[1]

सुवाल जानवर के पेट से अगर बच्चा निकला तो क्या कुरबानी हो जाएगी ?

जवाब जी हां ! इस सूरत में कुरबानी हो जाएगी ।[2]

सुवाल एक ऊंट में कुरबानी के कितने हिस्से होते हैं ?

जवाब ह़दीस शरीफ़ के मुत़ाबिक़ एक ऊंट की कुरबानी में 7 अफ़राद शरीक हो सकते हैं ।[3]

सुवाल हिज्जतुल वदाअ़ के मौक़अ़ पर हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कितने ऊंट नह्र फ़रमाए ?

जवाब इस मौक़अ़ पर हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने मुक़द्दस हाथ से 63 ऊंट नह्र फ़रमाए ।[4]

सुवाल प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बक़र ईद के दिन सब से पहले खाने में क्या खाते ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ईदुल अज़्ह़ा में सब से पहले कुरबानी की कलेजी तनावुल फ़रमाते ।[5]

---

1 ...ردالمحتار، کتاب الذبائح، ۹/۴۹۳۔

2 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الاضحیۃ، الباب السادس فی بیان مایستحب فی الاضحیۃ...الخ، ۵/۳۰۱۔

3 ...مسلم، کتاب الحج، باب الاشتراک فی الھدی...الخ، ص ۶۸۴، حدیث: ۱۳۱۸۔

4 ...مسلم، کتاب الحج، باب حجۃ النبی، ص ۶۳۷، حدیث: ۱۲۱۸۔

5 ...المدخل، فصل من العوائد الردیئۃ...الخ، الموسم الاول عید الاضحی، ۱/۲۰۵۔

www.dawateislami.net

सुवाल कुरबानी के जानवर के हर बाल के बदले कितनी नेकियां मिलती हैं ?

जवाब कुरबानी करने वाले को कुरबानी के जानवर के हर बाल के इवज़ एक नेकी मिलती है ।[1]

निकाह़

सुवाल प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने निकाह़ की इस्तिता़अ़त होने या न होने की सूरत में निकाह़ करने के मुतअ़ल्लिक़ क्या हुक्म दिया है ?

जवाब प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ जवानो ! तुम में जो कोई निकाह़ की इस्तिता़अ़त रखता है वोह निकाह़ करे कि येह अजनबी औ़रत की त़रफ़ नज़र करने से निगाह को रोकने वाला है और शर्मगाह की ह़िफ़ाज़त करने वाला है और जिस में निकाह़ की इस्तिता़अ़त नहीं वोह रोज़े रखे कि रोज़ा क़ात़ेए़ शहवत (या'नी शहवत को तोड़ने वाला) है ।[2]

सुवाल निकाह़ में कौन से उमूर का लिह़ाज़ रखना मुस्तह़ब है ?

जवाब निकाह़ में येह उमूर मुस्तह़ब हैं : (1) अ़लानिय्या होना (2) निकाह़ से पहले ख़ुत़बा पढ़ना (3) मस्जिद में होना (4) जुमुआ़ के दिन (5) गवाहाने आ़दिल के सामने (6) औ़रत उ़म्र, ह़सब (ख़ानदानी शरफ़), माल, इ़ज़्ज़त में मर्द से कम हो और (7) चाल चलन और अख़्लाक़ व तक़्वा व जमाल में बेश (या'नी ज़ियादा) हो ।[3]

---

1 . . . ترمذی، کتاب الاضاحی، باب ماجاء فی فضل الاضحیة، ۳/۱۶۲، حدیث: ۱۴۹۸۔

2 . . . بخاری، کتاب النکاح، باب من لم یستطع الباءة فلیصم، ۳/۴۲۲، حدیث: ۵۰۶۶۔

3 . . . درمختار، کتاب النکاح، ۴/۷۵۔

www.dawateislami.net

सुवाल औ़रत से उस की इ़ज़्ज़त या माल की वज्ह से निकाह़ करने वाले के लिये क्या वईद है ?

जवाब रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : जो किसी औ़रत से उस की इ़ज़्ज़त के बाइ़स निकाह़ करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की ज़िल्लत में इज़ाफ़ा करेगा और जो किसी औ़रत से उस के माल के सबब निकाह़ करेगा **अल्लाह** तआ़ला उस की मोह़ताजी ही बढ़ाएगा ।[1]

सुवाल कम से कम मेह्र कितना है ?

जवाब मेह्र कम से कम दस दिरहम (या'नी दो तोला साढ़े सात माशा (30.618 ग्राम) चांदी या इस की क़ीमत) है इस से कम नहीं हो सकता ।[2]

सुवाल क्या औ़रत के मेह्र मुआ़फ़ कर देने से मुआ़फ़ हो जाएगा ?

जवाब औ़रत कुल मेह्र या जुज़ (कुछ) मुआ़फ़ कर दे तो मुआ़फ़ हो जाएगा बशर्त़ येह कि शौहर ने इन्कार न कर दिया हो ।[3]

सुवाल मेह्र की कितनी क़िस्में हैं ?

जवाब मेह्र तीन क़िस्म (का) है : (1) मुअ़ज्जल कि ख़ल्वत से पहले मेह्र देना क़रार पाया है । (2) मुअज्जल जिस के लिये कोई मीआ़द मुक़र्रर हो । (3) मुत़लक़ जिस में न वोह हो न येह (या'नी न ख़ल्वत से पहले देना क़रार पाया हो, न ही इस के लिये कोई मुद्दत मुक़र्रर हो) ।[4]

---

1 ...معجم اوسط، ۲/۱۸، حدیث: ۲۳۴۲۔

2 ...فتاوی ھندیۃ، کتاب النکاح، الباب السابع فی المھر، الفصل الاول، ۱/۳۰۳۔

3 ...درمختار، کتاب النکاح، باب المھر، ۴/۲۳۹۔

4 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 7, 2 / 74 ।

www.dawateislami.net

सुवाल मेह्र न देने की निय्यत से निकाह़ करने वाले के लिये क्या वईद है ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स निकाह़ करे और निय्यत येह हो कि औ़रत को मेह्र में से कुछ न देगा तो जिस रोज़ मरेगा ज़ानी मरेगा ।[1]

सुवाल क्या मर्द का परी से और औ़रत का जिन्न से निकाह़ हो सकता है ?

जवाब मर्द का परी से या औ़रत का जिन्न से निकाह़ नहीं हो सकता ।[2]

सुवाल बच्चे को मां का दूध कितने साल तक पिलाने की इजाज़त है ?

जवाब बच्चे को दो बरस तक दूध पिलाया जाए, इस से ज़ियादा की इजाज़त नहीं और बरस से मुराद हिजरी बरस है ।[3]

सुवाल क्या लड़के और लड़की को दूध पिलाने की मुद्दत में कोई फ़र्क़ है ?

जवाब जो बा'ज़ अ़वाम में मश्हूर है कि लड़की को दो बरस तक और लड़के को ढाई बरस तक पिला सकते हैं येह सह़ीह़ नहीं ।[4]

सुवाल क्या मुद्दत पूरी होने के बा'द बत़ौरे इलाज दूध पिलाया जा सकता है ?

जवाब मुद्दत पूरी होने के बा'द बत़ौरे इलाज भी दूध पिलाना जाइज़ नहीं ।[5]

---

1 . . . معجم کبیر، ۸/۳۵، حدیث: ۷۳۰۲۔

2 . . . درمختار وردالمحتار، کتاب النکاح، ۴/۷۰۔

3 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 2, 7 / 36 । ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह. 1, अल बक़रह, तह़तुल आयत : 189, स. 63 माख़ूज़न ।

4 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 2, 7 / 36 ।

5 . . . درمختار، کتاب النکاح، باب الرضاع، ۴/۳۸۹۔

www.dawateislami.net

सुवाल हुरमते रज़ाअ़त या'नी निकाह़ ह़राम होने के लिये दूध पिलाने की मुद्दत क्या है ?

जवाब निकाह़ ह़राम होने के लिये ढाई बरस का ज़माना है या'नी दो बरस के बा'द अगर्चे दूध पिलाना ह़राम है मगर ढाई बरस के अन्दर अगर दूध पिला देगी हुरमते निकाह़ साबित हो जाएगी ।[1]

त़लाक़, इद्दत और सोग

सुवाल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को कौन सी ह़लाल चीज़ सब से ज़ियादा ना पसन्द है ?

जवाब ह़दीस शरीफ़ में है : اَبْغَضُ الْحَلَالِ اِلَى اللّٰهِ تَعَالٰى اَلطَّلَاق या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक ह़लाल चीज़ों में सब से ना पसन्दीदा शै त़लाक़ है ।[2]

सुवाल त़लाक़ किसे कहते हैं ?

जवाब निकाह़ से औ़रत शौहर की पाबन्द हो जाती है इस पाबन्दी के उठा देने को त़लाक़ कहते हैं और इस के लिये कुछ अल्फ़ाज़ मुक़र्रर हैं ।[3]

सुवाल त़लाक़े बाइन और रजई में क्या फ़र्क़ है ?

जवाब त़लाक़ की दो सूरतें हैं : एक येह कि औ़रत उसी वक़्त निकाह़ से बाहर हो जाए इसे बाइन कहते हैं । दुवुम येह कि इद्दत गुज़रने पर बाहर होगी, इसे रजई कहते हैं ।[4]

---

1 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 7, 2 / 36 ।

2 ...ابوداود، کتاب الطلاق، باب کراھیۃ الطلاق، ۲/۳۷۰، حدیث: ۲۱۷۸۔

3 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 8, 2 / 110 ।

4 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 8, 2 / 110 ।

www.dawateislami.net

सुवाल क्या नशे की ह़ालत में त़लाक़ देने से त़लाक़ हो जाएगी ?

जवाब नशे वाले ने त़लाक़ दी तो वाक़ेअ़ हो जाएगी, नशा ख़्वाह शराब पीने से हो या भंग वग़ैरा किसी और चीज़ से। अफ़्यून की पीनक में त़लाक़ दे दी जब भी वाक़ेअ़ हो जाएगी त़लाक़ में औ़रत की जानिब से कोई शर्त़ नहीं ना बालिग़ा हो या मजनूना बहर ह़ाल त़लाक़ वाक़ेअ़ होगी।[1]

सुवाल इद्दत से क्या मुराद है ?

जवाब निकाह़ ख़त्म होने के बा'द औ़रत को निकाह़ की मुमानअ़त होना और एक मुद्दत तक इन्तिज़ार करना इद्दत है।[2]

सुवाल जिस का शौहर फ़ौत हो गया तो उस की इद्दत क्या है ?

जवाब **अल्लाह** तआ़ला इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُوْنَ اَزْوَاجًا يَّتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ وَّعَشْرًا﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और तुम में जो मरें और बीबियां छोड़ें वोह चार महीने दस दिन अपने आप को रोके रहें।"(پ۲،البقرۃ:۲۳۴)

तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में है : यहां ग़ैर ह़ामिला का बयान है जिस का शौहर मर जाए उस की इद्दत चार माह दस रोज़ है।[3]

सुवाल ह़ामिला औ़रत की इद्दत क्या है ?

जवाब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

1.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 8, 2 / 111-112।

2...فتاوی ہندیۃ،کتاب الطلاق،الباب الثالث عشر فی العدۃ،۱/۵۲۶۔

3.....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 2, अल बक़रह, तह़तुल आयत : 234, स. 80।

www.dawateislami.net

﴿وَاُولَاتُ الْاَحْمَالِ اَجَلُهُنَّ اَنْ يَّضَعْنَ حَمْلَهُنَّ﴾ (پ۲۸، الطلاق: ۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और ह़म्ल वालियों की मीआ़द येह है कि वोह अपना ह़म्ल जन लें।" **मस्अला :** ह़ामिला औ़रतों की इ़द्दत वज़्ए़ ह़म्ल (बच्चे की पैदाइश तक) है ख़्वाह वोह इ़द्दत त़लाक़ की हो या वफ़ात की।[1]

सुवाल ह़म्ल की कम से कम और ज़ियादा से ज़ियादा मुद्दत क्या है?

जवाब ह़म्ल की मुद्दत कम से कम छे महीने और ज़ियादा से ज़ियादा दो साल है।[2]

सुवाल सोग के क्या मा'ना हैं?

जवाब सोग के येह मा'ना हैं कि ज़ीनत को तर्क करे।[3]

सुवाल किस औ़रत पर सोग वाजिब है?

जवाब सोग उस पर है जो आ़क़िला बालिग़ा मुसलमान हो और मौत या त़लाक़े बाइन की इ़द्दत हो।[4]

सुवाल शौहर के मरने पर औ़रत को कितने दिन के सोग का हुक्म है?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो औ़रत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और क़ियामत के दिन पर ईमान रखती है उसे ह़लाल नहीं कि किसी मय्यित पर तीन रातों से ज़ियादा सोग करे मगर शौहर पर कि चार महीने दस दिन सोग करे।[5]

---

1 .....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 28, अत्तलाक़, तह़तुल आयत : 4, स. 1033।

2 ...ردالمحتار، کتاب الطلاق، فصل فی ثبوت النسب، ۵/۲۳۴۔

3 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 8, 2 / 242।

4 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 8, 2 / 243।

5 ...بخاری، کتاب الجنائز، باب احداد المرأۃ علی غیر زوجھا، ۱/۴۳۳، حدیث: ۱۲۸۰۔

www.dawateislami.net

सुवाल क़रीबी रिश्तेदार के मर जाने पर औ़रत को कितने दिन सोग करने की इजाज़त है ?

जवाब किसी क़रीबी के मरने पर औ़रत को तीन दिन तक सोग करने की इजाज़त है इस से ज़ाइद की नहीं और औ़रत शौहर वाली हो तो शौहर इस से भी मन्अ़ कर सकता है ।[1]

क़सम

सुवाल यमीन या'नी क़सम की कितनी क़िस्में हैं ?

जवाब क़सम की तीन क़िस्में हैं : (1) ग़मूस (2) लग़्व (3) मुन्अ़क़िदा ।[2]

सुवाल यमीने ग़मूस किसे कहते हैं ?

जवाब ग़मूस येह है कि किसी गुज़रे हुवे या मौजूदा अम्र (या'नी मुआ़मले) पर दानिस्ता (या'नी जान बूझ कर) झूटी क़सम खाए ।[3]

सुवाल यमीने ग़मूस का हुक्म बताएं ?

जवाब यमीने ग़मूस खाने वाला सख़्त गुनहगार हुवा, इस्तिग़फ़ार व तौबा फ़र्ज़ है मगर कफ़्फ़ारा लाज़िम नहीं ।[4]

सुवाल यमीने लग़्व किसे कहते हैं ?

जवाब लग़्व येह है कि किसी गुज़रे हुवे या मौजूदा अम्र (या'नी मुआ़मले) पर अपने ख़याल में (या'नी ग़लत़ फ़हमी की वज्ह से) सह़ीह़ जान

1 . . . ردالمحتار، کتاب الطلاق، فصل فی الحداد، ۵/۲۲۳۔

2 . . . فتاوی ھندیۃ، کتاب الأیمان، الباب الثانی فیمایکون یمینا . . . الخ، ۲/۵۲۔

3 . . . فتاوی ھندیۃ، کتاب الأیمان، الباب الثانی فیمایکون یمینا . . . الخ، ۲/۵۲۔

4 . . . فتاوی ھندیۃ، کتاب الأیمان، الباب الثانی فیمایکون یمینا . . . الخ، ۲/۵۲۔

www.dawateislami.net

कर क़सम खाए और दर ह़क़ीक़त वोह बात इस के ख़िलाफ़ (या'नी उलट) हो।[1]

सुवाल यमीने लग़्व का हुक्म बताएं ?

जवाब यमीने लग़्व मुआ़फ़ है और इस पर कफ़्फ़ारा नहीं।[2]

सुवाल यमीने मुन्अ़क़िदा किसे कहते हैं ?

जवाब यमीने मुन्अ़क़िदा येह है कि मुस्तक़्बिल में किसी काम के करने या न करने की क़सम खाई।[3]

सुवाल यमीने मुन्अ़क़िदा का हुक्म बताएं ?

जवाब यमीने मुन्अ़क़िदा में अगर क़सम तोड़ेगा कफ़्फ़ारा देना पड़ेगा और बा'ज़ सूरतों में गुनहगार भी होगा।[4]

सुवाल झूटी क़सम खाने से मुतअ़ल्लिक़ नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का क्या फ़रमान है ?

जवाब नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शिर्क करना, वालिदैन की नाफ़रमानी करना, किसी जान को क़त्ल करना और झूटी क़सम खाना कबीरा गुनाह हैं।"[5]

सुवाल सब से पहले झूटी क़सम किस ने खाई ?

जवाब पहला झूटी क़सम खाने वाला इब्लीस ही है।[6]

---

1 . . . فتاوی ھندیۃ، کتاب الأیمان، الباب الثانی فیما یکون یمینا. . .الخ، ۲/۵۲۔

2 .....बहारे शरीअ़त, 2 / 299, मुलख़्ख़सन।

3 . . . فتاوی ھندیۃ، کتاب الأیمان، الباب الثانی فیما یکون یمینا. . .الخ، ۲/۵۲۔

4 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 2 / 299।

5 . . . بخاری، کتاب الایمان والنذور، باب یمین الغموس، ۲/۲۹۵، حدیث:۶۶۷۵۔

6 .....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 8, अल आ'राफ़, तह़तुल आयत : 22, स. 289।

www.dawateislami.net

सुवाल ग़लती से क़सम खा ली तो क्या उस पर भी कफ़्फ़ारा होगा ?

जवाब ग़लती से क़सम खा बैठा मसलन कहना चाहता था कि पानी पिलाओ और ज़बान से निकल गया कि "ख़ुदा की क़सम पानी नहीं पियूंगा।" तो येह भी क़सम है अगर तोड़ेगा कफ़्फ़ारा देना होगा।[1]

सुवाल भूल कर या किसी के मजबूर करने पर क़सम तोड़ी तो भी कफ़्फ़ारा देना होगा ?

जवाब क़सम तोड़ना किसी के मजबूर करने से हो या भूल चूक से हर सूरत में कफ़्फ़ारा है।[2]

सुवाल क्या दूसरे के क़सम दिलाने से क़सम हो जाएगी ?

जवाब दूसरे के क़सम दिलाने से क़सम नहीं होती। मसलन कहा : तुम्हें ख़ुदा की क़सम येह काम कर दो। तो इस कहने से (जिस से कहा गया) उस पर क़सम न हुई या'नी न करने से कफ़्फ़ारा लाज़िम नहीं।[3]

लुक़्ता

सुवाल लुक़्ता किसे कहते हैं ?

जवाब लुक़्ता उस माल को कहते हैं जो कहीं पड़ा हुवा मिल जाए।[4]

सुवाल लुक़्ता किस सूरत में उठा लेना मुस्तहब है ?

जवाब पड़ा हुवा माल कहीं मिला और येह ख़याल हो कि मैं इस के मालिक को तलाश कर के दे दूंगा तो उठा लेना मुस्तहब है।[5]

---

1 ...تبیین الحقائق، کتاب الأیمان، ۳/۴۲۳۔

2 ...تبیین الحقائق، کتاب الأیمان، ۳/۴۲۳۔

3 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 2 / 303।

4 ...درمختار، کتاب اللقطة، ۶/۴۲۱۔

5 ...درمختار وردالمحتار، کتاب اللقطة، ۶/۴۲۲۔

www.dawateislami.net

सुवाल किस सूरत में लुक़्ता छोड़ देना बेहतर है ?

जवाब अगर अन्देशा हो कि लुक़्ता शायद मैं ख़ुद ही रख लूं और मालिक को तलाश न करूं तो छोड़ देना बेहतर है।[1]

सुवाल किस सूरत में लुक़्ता उठाना जाइज़ नहीं ?

जवाब अगर ज़न्ने ग़ालिब हो कि मालिक को न दूंगा तो उठाना जाइज़ नहीं और अपने लिये उठाना ह़राम है क्यूंकि येह ग़स्ब (या'नी किसी का माल छीन लेने) की त़रह़ है।[2]

सुवाल किस सूरत में लुक़्ता उठा लेना ज़रूरी है ?

जवाब अगर ज़न्ने ग़ालिब हो कि मैं न उठाऊंगा तो येह चीज़ ज़ाएअ़ और हलाक हो जाएगी तो उठा लेना ज़रूरी है लेकिन अगर न उठाए और ज़ाएअ़ हो जाए तो इस पर तावान नहीं।[3]

सुवाल लुक़्ते को इस्ति'माल की निय्यत से उठाया मगर फिर नदामत हुई तो क्या हुक्म है ?

जवाब लुक़्ते को अपने तसर्रुफ़ में लाने के लिये उठाया फिर नादिम हुवा कि मुझे ऐसा नहीं करना चाहिये और जहां से लाया वहीं रख आया तो बरियुज़्ज़िम्मा न होगा या'नी अगर ज़ाएअ़ हो गया तो तावान देना पड़ेगा बल्कि इस पर लाज़िम है कि मालिक को तलाश करे और उस के ह़वाले कर दे।[4]

सुवाल वोह कौन सी सूरत है कि लुक़्ता उठाया, फिर वहीं रख दिया और ज़ाएअ़ हो गया मगर तावान नहीं ?

---

1 ...درمختاروردالمحتار، کتاب اللقطة، ۶/۴۲۲۔

2 ...درمختاروردالمحتار، کتاب اللقطة، ۶/۴۲۲۔

3 ...درمختاروردالمحتار، کتاب اللقطة، ۶/۴۲۳۔

4 ...درمختاروردالمحتار، کتاب اللقطة، ۶/۴۲۲۔

www.dawateislami.net

जवाब अगर लुक़्ता मालिक को देने के लिये उठाया था मगर फिर वहीं रख आया जहां से लाया था तो ज़ाएअ़ होने की सूरत में तावान नहीं।[1]

सुवाल क्या लुक़्ते का ए'लान करना ज़रूरी है?

जवाब जी हां, ह़दीसे पाक में ए'लान का हुक्म दिया गया है।[2]

सुवाल लुक़्ता उठाने के लिये कितने अ़र्से तक इस का ए'लान करना ज़रूरी है?

जवाब लुक़्ता उठाने वाले पर उस की तश्हीर करना लाज़िम है या'नी बाज़ारों और शारेए़ आ़म और मसाजिद में उस वक़्त तक ए'लान करे कि ज़न्ने ग़ालिब हो जाए कि मालिक अब तलाश न करता होगा।[3]

सुवाल शादी में लुटाने के लिये दिये गए पैसे किसी और को लुटाने के लिये देना कैसा?

जवाब शादियों में रूपे पैसे लुटाने के लिये जिस को दिये वोह ख़ुद लुटाए, दूसरे को लुटाने के लिये नहीं दे सकता और कुछ बचा कर अपने लिये रख ले या गिरा हुवा (रूपिया पैसा) ख़ुद उठा ले येह जाइज़ नहीं।[4]

सुवाल शादी में छूहारे वग़ैरा लुटाने के लिये किसी को दिये तो क्या हुक्म है?

जवाब शकर छूहारे लुटाने को दिये तो बचा कर कुछ रख सकता है और दूसरे को भी लुटाने के लिये दे सकता है और दूसरे ने लुटाए तो अब वोह भी लूट सकता है।[5]

---

1 ...درمختار وردالمحتار، کتاب اللقطة، ۶/۴۲۲۔

2 ...مسلم، کتاب اللقطة، باب فی لقطة الحاج، ص۹۵۰، حدیث:۱۷۲۵۔

3 ...فتاوی ھندیة، کتاب اللقطة، ۲/۲۸۹۔

4 ...فتاوی خانیة، کتاب اللقطة، ۲/۳۵۸۔

5 ...فتاوی خانیة، کتاب اللقطة، ۲/۳۵۸۔

www.dawateislami.net

सुवाल क्या कोई ऐसी दुआ है जिस के पढ़ने से गुमी हुई चीज़ मिल जाए ?

जवाब जी हां, जब कोई चीज़ गुम हो जाए तो येह दुआ पढ़ें :

"یَاجَامِعَ النَّاسِ لِیَوْمٍ لَّا رَیْبَ فِیْهِ اِنَّ اللّٰهَ لَا یُخْلِفُ الْمِیْعَادَ اِجْمَعْ بَیْنِیْ وَبَیْنَ ضَآلَّتِیْ"

ضَآلَّتِیْ की जगह उस गुमशुदा चीज़ का नाम ज़िक्र करे वोह चीज़ मिल जाएगी। इमाम नववी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : इस को मैं ने आज़माया है गुमी हुई चीज़ जल्द मिल जाती है।[1]

वक़्फ़ और चन्दा

सुवाल वक़्फ़ के क्या मा'ना हैं ?

जवाब वक़्फ़ के येह मा'ना हैं कि किसी शै को अपनी मिल्क से ख़ारिज कर के ख़ालिस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मिल्क कर दिया जाए इस त़रह़ कि उस का नफ़्अ़ बन्दगाने ख़ुदा में से जिस को चाहे मिलता रहे।[2]

सुवाल वक़्फ़ की चीज़ में मालिकाना तसर्रुफ़ करना कैसा है ?

जवाब वक़्फ़ में तसर्रुफ़े मालिकाना ह़राम है और मुतवल्ली जब ऐसा करे तो फ़र्ज़ है कि उसे निकाल दें अगर्चे (वोह) ख़ुद वाक़िफ़ (या'नी वक़्फ़ करने वाला ही) हो।[3]

सुवाल चन्दा कैसे इस्ति'माल किया जाए ?

जवाब चन्दे का उसूल येह है कि जिस मद्द (या'नी उ़नवान) में वुसूल किया इस के इ़लावा किसी और मद्द में इस्ति'माल करना गुनाह है।[4]

---

1 . . . ردالمحتار کتاب اللقطة، مطلب سرق مکعبه ووجد مثله اودونه، ٦/٤٣٨۔

2 .....वक़्फ़ के शरई मसाइल, स. 30।

3 .....फ़तावा रज़विय्या, 16 / 162।

4 .....फ़तावा अमजदिया, 3 / 38, 39, चन्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 20।

www.dawateislami.net

सुवाल इजतिमाअ़ के लिये किया गया चन्दा बच गया तो क्या करें ?

जवाब चन्दा देने वाले अगर मा'लूम हों तो बची हुई रक़म उन्हीं को लौटानी ज़रूरी है, उन की इजाज़त के बिग़ैर किसी दूसरे मसरफ़ में इस्ति'माल करना जाइज़ नहीं और अगर मा'लूम न हों तो जिस काम के लिये चन्दा देने वालों ने दिया था उसी में सर्फ़ करें (मसलन सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ के लिये दिया था तो किसी दूसरे सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ पर ख़र्च करें) अगर इस त़रह़ का कोई दूसरा काम न पाएं तो फ़ुक़रा पर तसद्दुक़ करें।[1]

सुवाल रमज़ानुल मुबारक में लोग मस्जिद में जो इफ़्त़ारी भिजवाते हैं क्या ग़ैरे रोज़ादार उसे खा सकता है ?

जवाब जो इफ़्त़ारी रोज़ादारों के लिये भेजी जाती है वोह ग़ैरे रोज़ादार नहीं खा सकता, बिलफ़र्ज़ कोई मरीज़ या मुसाफ़िर है या किसी वज्ह से उस का रोज़ा टूट चुका है तो वोह उस इफ़्त़ारी में शरीक न हो। आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : ग़ैरे रोज़ादारों को इस का खाना ह़राम है।[2]

सुवाल क्या मुतवल्ली मस्जिद का चन्दा किसी को उधार दे सकता है ?

जवाब आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : मुतवल्ली को रवा (या'नी जाइज़) नहीं कि माले वक़्फ़ किसी को क़र्ज़ (दे) या बत़ौरे क़र्ज़ अपने तसर्रुफ़ में लाए।[3]

1.....चन्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 22-23।

2.....फ़तावा रज़विय्या, 16 / 487।

3.....फ़तावा रज़विय्या, 16 / 574।

www.dawateislami.net

सुवाल क्या बच जाने की सूरत में मद्रसे में पकाया गया खाना मह़ल्ले में तक़्सीम कर सकते हैं ?

जवाब वोह खाना जो मद्रसे में पकाया गया हो और बच जाए, दूसरे वक़्त त़लबा भी न खाएं, ख़राब हो जाने का अन्देशा होने की सूरत में मह़ल्ले या आ़म मुसलमानों में तक़्सीम कर सकते हैं ।[1]

सुवाल अपनी दुकान पर या घर में पीने के लिये मस्जिद या मद्रसे के कूलर से ठन्डा पानी भर कर ले जाना कैसा ?

जवाब नाजाइज़ है, मुअज़्ज़िन, ख़ादिम या इमाम बल्कि मुतवल्ली भी चन्दे की इन चीज़ों को ख़िलाफ़े शरीअ़त इस्ति'माल करने की इजाज़त नहीं दे सकते ।[2]

सुवाल किसी से मद्रसे का डेस्क टूट गया तो क्या हुक्म है ?

जवाब अगर इस की अपनी ग़लत़ी से डेस्क टूटा या कोई सा नुक़्सान हुवा तो तावान देना होगा अगर अपनी ग़लत़ी से ऐसा नहीं हुवा तो इस पर मुवाख़ज़ा नहीं ।[3]

सुवाल मद्रसे के डेस्क, दरवाज़े और दीवार वग़ैरा पर कुछ लिखना कैसा ?

जवाब मद्रसे और मस्जिद की चीज़ों पर कुजा, किसी दूसरे के मकान, दुकान, दीवार, दरवाज़े या गाड़ी और बस वग़ैरा चीज़ों पर भी बिला इजाज़ते शरई कुछ लिखना स्टीकर या इश्तिहार चस्पां करना ममनूअ़ है ।[4]

1.....चन्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 55 ।
2.....चन्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 57 ।
3.....चन्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 61 ।
4.....चन्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 61 ।

www.dawateislami.net

सुवाल ज़कात व फ़ित्रे का हीला करने का आसान त़रीक़ा बताइये ?

जवाब किसी फ़क़ीरे शरई को या उस के वकील को माले ज़कात व फ़ित्रा का मालिक बना दिया जाए मसलन उस को नोटों की गड्डी येह कह कर दे दी कि येह आप की मिल्क है। वोह उस को हाथ में ले कर या किसी त़रह़ क़ब्ज़ा कर ले अब येह इस का मालिक हो गया और किसी भी काम (मसलन मस्जिद की ता'मीर वग़ैरा) में सर्फ़ कर दे। यूं ज़कात अदा होने के साथ साथ दोनों सवाब के भी ह़क़दार होंगे। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ ।[1]

सुवाल मदनी क़ाफ़िले के इख़्तिताम पर अगर मुश्तरका रक़म बच जाए तो क्या किया जाए ?

जवाब वाजिब है कि पाई पाई का ह़िसाब कर के हर एक को उस के ह़िस्से की रक़म लौटा दी जाए। हां जो मर्ज़ी से अपने ह़िस्से की रक़म किसी कारे ख़ैर में देना चाहे तो दे सकता है, बाहम मश्वरे से मसलन येह भी तै़ किया जा सकता है कि हम बची हुई रक़म उसी मस्जिद के चन्दे में पेश कर देते हैं।[2]

मस्जिद

सुवाल कौन सी इमारत शैत़ान से बचाव के लिये क़ल्आ़ है ?

जवाब मरवी है कि اَلْمَسْجِدُ حِصْنٌ حَصِيْنٌ مِّنَ الشَّيْطٰن या'नी मस्जिद शैत़ान से बचने के लिये एक मज़बूत़ क़ल्आ़ है।[3]

---

1 .....चन्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 71।

2 .....चन्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 92।

3 ...مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الزھد، باب ماجاء فی لزوم المساجد، ۸/۱۷۲، حدیث: ۴۔

www.dawateislami.net

सुवाल रिज़ाए इलाही के लिये मस्जिद बनाने का क्या सवाब है ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये एक मस्जिद बनाएगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जन्नत में एक घर बनाएगा ।[1]

सुवाल किसी इमारत के मस्जिद होने के लिये क्या ज़रूरी है ?

जवाब मस्जिद होने के लिये येह ज़रूर है कि बनाने वाला कोई ऐसा फ़े'ल करे या ऐसी बात कहे जिस से मस्जिद होना साबित होता हो मह्ज़ मस्जिद की सी इमारत बना देना मस्जिद होने के लिये काफ़ी नहीं ।[2]

सुवाल मस्जिद बनाई और जमाअ़त की इजाज़त दे दी तो क्या येह मस्जिद होने के लिये काफ़ी है ?

जवाब मस्जिद बनाई और जमाअ़त से नमाज़ पढ़ने की इजाज़त दे दी मस्जिद हो गई अगर्चे जमाअ़त में दो ही शख़्स हों मगर येह जमाअ़त अ़लल ए'लान या'नी अज़ान व इक़ामत के साथ हो ।[3]

सुवाल मस्जिदें ख़ुश्बूदार रखने के मुतअ़ल्लिक़ ह़दीसे पाक में क्या हुक्म है ?

जवाब उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं कि हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मह़ल्लों में मस्जिदें बनाने का हुक्म दिया और येह कि वोह साफ़ और ख़ुश्बूदार रखी जाएं ।[4]

---

1 ...ابن ماجہ، کتاب المساجد، باب من بنی للہ مسجدا، ۱/۴۰۸، حدیث: ۷۳۷۔

2 ...فتاوی خانیۃ، کتاب الوقف، باب الرجل یجعل دارہ...الخ، ۲/۲۹۶۔

3 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 10, 2 / 557 ।

4 ...ابوداود، کتاب الصلاۃ، باب اتخاذ المساجد فی الدور، ۱/۱۹۷، حدیث: ۴۵۵۔

बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 10, 2 / 557-

www.dawateislami.net

सुवाल कौन से सहाबी मस्जिदे नबवी शरीफ़ में ख़ुश्बू की धूनी देते थे ?

जवाब अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जुमुअ़तुल मुबारक के दिन मस्जिदे नबवी शरीफ़ عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में ख़ुश्बू की धूनी दिया करते थे।[1]

सुवाल मुंह में बदबू हो तो क्या मस्जिद जा सकते हैं ?

जवाब जी नहीं ! मुंह में बदबू हो तो मस्जिद में जाना ह़राम है।[2]

सुवाल मस्जिद में दाख़िल होते ही सब से पहले क्या करना चाहिये ?

जवाब जब से (मस्जिद में) दाख़िल हो बाहर आने तक ए'तिकाफ़ की निय्यत कर ले। इन्तिज़ारे नमाज़ व अदाए नमाज़ के साथ ए'तिकाफ़ का भी सवाब पाएगा।[3]

सुवाल कच्चा लेह्सन और कच्ची प्याज़ खा कर मस्जिद में जाना कैसा ?

जवाब सदरुश्शरीआ़ ह़ज़रते मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : मस्जिद में कच्चा लेह्सन और कच्ची प्याज़ खाना या खा कर जाना जाइज़ नहीं जब तक कि बू बाक़ी हो।[4]

सुवाल मस्जिद में कौन सी बदबूदार चीज़ों की मुमानअ़त है ?

जवाब (1) कच्चा लेह्सन (2) कच्ची प्याज़ (3) गन्दना (येह लेह्सन से मिलती जुलती तरकारी है) (4) मूली (5) कच्चा गोश्त (6) मिट्टी का तेल (7) वोह दिया सलाई जिस के रगड़ने में बू उड़ती हो

---

1 ...مسند ابی یعلی، مسند عمر بن الخطاب، ۱/۱۰۳، حدیث:۱۸۵۔

2 .....फ़तावा रज़विय्या, 7 / 384 मुलख़्ख़सन।

3 .....फ़तावा रज़विय्या, 5 / 674।

4 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 3, 1 / 648।

www.dawateislami.net

(8) रियाह़ ख़ारिज करना (9) बदबूदार ज़ख़्म (10) कोई बदबूदार दवा लगाना।[1]

सुवाल मस्जिद में दुन्यावी बातें करने का क्या हुक्म है ?

जवाब मस्जिद में दुन्या की बातें करनी मकरूह हैं। मस्जिद में कलाम करना नेकियों को इस त़रह़ खाता है जिस त़रह़ आग लकड़ी को खाती है, येह जाइज़ कलाम के मुतअ़ल्लिक़ है नाजाइज़ कलाम के गुनाह का क्या पूछना ?[2]

सुवाल मस्जिद के कुछ आदाब बयान करें ?

जवाब (1) मस्जिद में दौड़ना या ज़ोर से क़दम रखना, जिस से धमक पैदा हो मन्अ़ है। (2) मस्जिद के अन्दर किसी क़िस्म का कूड़ा हरगिज़ न फैंकें। (3) मस्जिद में झाड़ू देने में जो गर्द और कूड़ा वग़ैरा निकले वोह ऐसी जगह मत डालिये जहां बे अदबी हो। (4) मस्जिद के फ़र्श पर कोई चीज़ फैंकी न जाए बल्कि आहिस्ता से रख दी जाए। (5) वुज़ू करने के बा'द आ'ज़ाए वुज़ू से एक भी छींट पानी फ़र्शे मस्जिद पर न गिरे। (6) मस्जिद में अगर छींक या खांसी आए तो कोशिश करें आहिस्ता आवाज़ निकले (7) मस्ख़रा पन वैसे ही ममनूअ़ है और मस्जिद में सख़्त नाजाइज़। (8) मस्जिद में किसी त़रफ़ पाउं न फैलाए।[3]

---

1 . . . ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، مطلب فی الغرس فی المسجد، ۲/۵۲۵۔

2 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 16, 3 / 499।

3 .....नेकी की दा'वत, स. 417-420 मुलख़्ख़सन व मुल्तक़त़न।

www.dawateislami.net

कस्ब और तिजारत

सुवाल सब से बेहतर कमाई कौन सी है ?

जवाब हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : सब से बेहतर ग़िज़ा वोह है जो इन्सान अपने हाथों की कमाई से खाए, ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام भी अपनी कमाई से खाते थे ।[1]

सुवाल इस्लाम में ह़लाल कमाई की क्या अहम्मिय्यत है ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ह़लाल रोज़ी त़लब करना फ़र्ज़ के बा'द फ़र्ज़ है ।[2]

सुवाल झूट से रिज़्क़ में क्या असर पड़ता है ?

जवाब हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : वालिदैन के साथ नेक सुलूक उ़म्र में इज़ाफ़ा करता, झूट रिज़्क़ में कमी करता और दुआ़ क़ज़ा को टाल देती है ।[3]

सुवाल ताजिर को कैसा होना चाहिये ?

जवाब हुज़ूर रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बेशक सब से पाकीज़ा कमाई उन ताजिरों की है जो बात करें तो झूट न बोलें, जब उन के पास अमानत रखी जाए तो ख़ियानत न करें, वा'दा करें तो ख़िलाफ़ वर्ज़ी न करें, जब कोई चीज़ ख़रीदें तो उस में बुराई न निकालें और जब कुछ बेचें तो उस की बेजा ता'रीफ़ न करें, जब उन पर किसी का कुछ आता हो तो देने में पसो पेश न करें और जब उन्हों ने किसी से लेना हो तो वुसूली के लिये तंगी न करें ।[4]

---

1 ...بخاری، کتاب البیوع، باب کسب الرجل وعملہ بیدہ، ۲/۱۱، حدیث: ۲۰۷۲۔

2 ...شعب الایمان، الستون من شعب الایمان...الخ، ۶/۴۲۰، حدیث: ۸۷۴۱۔

3 ...الکامل لابن عدی، ۶۰۰-خالد بن اسماعیل...الخ، ۳/۴۷۹۔

4 ...شعب الایمان، الرابع والثلاثون من شعب الایمان...الخ، ۴/۲۲۱، حدیث: ۴۸۵۴۔

www.dawateislami.net

सुवाल क्या कमाने के लिये भी इल्मे दीन ज़रूरी है ?

जवाब जी हां क्यूंकि ह़राम रोज़ी से वोही बच सकेगा जिसे ह़लाल व ह़राम का इल्म होगा । ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हुक्म फ़रमा दिया था कि हमारे बाज़ार में वोही ख़रीदो फ़रोख़्त करें जो फ़क़ीह (या'नी इल्म वाले) हों ।(1)

सुवाल किस ताजिर पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ग़ज़ब फ़रमाता है ?

जवाब वोह ताजिर जो बहुत क़समें खा कर अपना माल बेचता है ।(2)

सुवाल आ़म मुसलमानों की त़रह़ किस चीज़ का हुक्म पैग़म्बरों को भी दिया गया ?

जवाब हुज़ूर इमामुल अम्बिया صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुसलमानों को वोही हुक्म दिया है जो रसूलों को हुक्म दिया, इरशाद फ़रमाया :

﴿یٰۤاَیُّهَا الرُّسُلُ كُلُوْا مِنَ الطَّیِّبٰتِ وَ اعْمَلُوْا صَالِحًا ؕ اِنِّیْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِیْمٌ ۝۵۱﴾ (پ۱۸، المؤمنون: ۵۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "ऐ पैग़म्बरो पाकीज़ा चीज़ें खाओ और अच्छा काम करो मैं तुम्हारे कामों को जानता हूं ।"

और फ़रमाया : ﴿یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا كُلُوْا مِنْ طَیِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ﴾ (پ۲، البقرة: ۱۷۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो खाओ हमारी दी हुई सुथरी चीज़ें ।"(3)

---

1 ... ترمذی، کتاب الوتر، باب ماجاء فی فضل الصلاۃ علی النبی، ۲/۲۹، حدیث: ۴۸۷۔

2 ... شعب الایمان، الرابع والثلاثون من شعب الایمان ... الخ، ۴/۲۲۰، حدیث: ۴۸۵۳۔

3 ... مسلم، کتاب الزکاۃ، باب قبول الصدقۃ من الکسب ... الخ، ص۵۰۶، حدیث: ۱۰۱۵۔

www.dawateislami.net

सुवाल भीक मांगने से बचने वालों के लिये ह़दीस शरीफ़ में क्या ख़ुश ख़बरी है ?

जवाब सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जो कोई भीक न मांगने का ज़ामिन बन जाए मैं उस के लिये जन्नत का ज़ामिन हूं।[1]

सुवाल सच्चा और अमानतदार क़ियामत में किस के साथ होगा ?

जवाब ह़दीसे पाक में है : सच्चा और अमानतदार ताजिर नबियों, सिद्दीक़ों और शहीदों के साथ होगा।[2]

सुवाल अबुल बशर ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام ने कौन सा पेशा इख़्तियार फ़रमाया ?

जवाब ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام ने अव्वलन कपड़ा बुनने का काम किया[3] और बा'द में खेतीबाड़ी को इख़्तियार फ़रमाया।[4]

सुवाल ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام का ज़रीअ़ए मआ़श क्या था ?

जवाब ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام का ज़रीअ़ए मआ़श लकड़ी का काम (बढ़ई का पेशा) था।[5]

सुवाल ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام का मुबारक पेशा क्या था ?

जवाब ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام खेतीबाड़ी किया करते थे।[6]

---

1 ...ابوداود، کتاب الزکاۃ، باب کراھیۃ المسألۃ، ۲/۱۷۰، حدیث: ۱۶۴۳۔

2 ...ترمذی، کتاب البیوع، باب ماجاء فی التجار...الخ، ۳/۵، حدیث: ۱۲۱۳۔

3 ...فردوس الأخبار، باب اللام والالف، ۲/۴۱۵، حدیث: ۷۵۵۲۔

4 ...مستدرک حاکم، کتاب تواریخ المتقدمین...الخ، ذکر حرف الانبیاء علیھم السلام، ۳/۴۹۱، حدیث: ۴۲۲۱۔

5 ...مستدرک حاکم، کتاب تواریخ المتقدمین...الخ، ذکر حرف الانبیاء علیھم السلام، ۳/۴۹۱، حدیث: ۴۲۲۱۔

6 ...مستدرک حاکم، کتاب تواریخ المتقدمین...الخ، ذکر حرف الانبیاء علیھم السلام، ۳/۴۹۱، حدیث: ۴۲۲۱۔

www.dawateislami.net

क़र्ज़ और सूद

सुवाल क़र्ज़ दे कर उस पर नफ़्अ़ लेना कैसा है ?

जवाब इमामे अह्ले सुन्नत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा रज़विय्या, जिल्द 17, सफ़ह़ा 713 पर फ़रमाते हैं : क़र्ज़ देने वाले को क़र्ज़ पर जो नफ़्अ़ व फ़ाएदा ह़ासिल हो वोह सब सूद और निरा ह़राम है। ह़दीस में है रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : كُلُّ قَرْضٍ جَرَّ مَنْفَعَةً فَهُوَ رِبًا क़र्ज़ से जो फ़ाएदा ह़ासिल किया जाए वोह सूद है।[1]

सुवाल क़ुरआने करीम में सूद की मज़म्मत के ह़वाले से क्या इरशाद फ़रमाया गया है ?

जवाब क़ुरआने करीम की सूरए बक़रह की आयत 275 ता 279 में सूद की भरपूर मज़म्मत फ़रमाई गई है जिस का ख़ुलासा येह है कि सूद खाने वाले बरोज़े क़ियामत ऐसे खड़े होंगे जैसे आसेब ज़दा शख़्स सीधा खड़ा होने की बजाए गिरते पड़ते चलता है, **अल्लाह** तआ़ला ने सूद को ह़राम किया है, सूद न छोड़ने वाला मुद्दतों दोज़ख़ में रहेगा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सूद को हलाक (बरकत से मह़रूम) करता है पस अगर तुम सूद नहीं छोड़ते तो **अल्लाह** तआ़ला और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से लड़ाई के लिये तय्यार हो जाओ।

सुवाल ह़दीस शरीफ़ में सूद की क्या मज़म्मत बयान हुई है ?

जवाब ह़दीसे पाक में है कि हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सूद लेने वाले, सूद देने वाले, इस की तह़रीर लिखने वाले और इस के

---

1 ...مسند حارث، کتاب البیوع، باب فی القرض یجر المنفعة، ۱/۵۰۰، حدیث: ۴۳۷۔

www.dawateislami.net

गवाहों पर ला'नत फ़रमाई और फ़रमाया : येह सब (गुनाह में) बराबर हैं ।[1] और इरशाद फ़रमाया : सूद का गुनाह ऐसे सत्तर गुनाहों के बराबर है जिन में सब से कम दरजे का गुनाह येह है कि मर्द अपनी मां से बदकारी करे ।[2]

सुवाल बैंक में दुगना होने के लिये पैसा जम्अ़ करना कैसा है ?

जवाब बैंक में इस त़रह़ पैसा जम्अ़ करवाना नाजाइज़ व ह़राम है क्यूंकि इस पर जो मुनाफ़अ़ मिल रहा है येह सूद है और सूद को **अल्लाह** جَلَّ مَجْدُهٗ ने कुरआने मजीद में ह़राम क़रार दिया है ।[3]

सुवाल दुकानदार को मख़्सूस रक़म पेशगी देना और थोड़ा थोड़ा सामान ख़रीद कर पैसे कटवाते रहना कैसा है ?

जवाब इस त़रह़ रूपिया देना ममनूअ़ है कि इस क़र्ज़ से येह नफ़्अ़ हुवा कि अपने पास रहने में पैसे ज़ाएअ़ होने का एह़तिमाल था अब येह एह़तिमाल जाता रहा और क़र्ज़ से नफ़्अ़ उठाना जाइज़ नहीं ।[4]

सुवाल क्या मोबाइल कम्पनी से एडवान्स बेलेन्स लेना सूदी मुआ़मला है ?

जवाब येह हरगिज़ सूद नहीं है बल्कि एक जाइज़ त़रीक़ा है क्यूंकि येह इजारा है क़र्ज़ नहीं है क्यूंकि यहां कम्पनी से पैसे वुसूल नहीं किये जा रहे बल्कि इन की सर्विस इस्ति'माल की जा रही है । अलबत्ता इस को लोन (Loan) का नाम न दिया जाए क्यूंकि इस से येह शुबा होता है कि कम्पनी क़र्ज़ दे कर इस पर नफ़्अ़ वुसूल कर रही है ।[5]

---

1 ...مسلم، کتاب المساقاۃ، باب لعن آکل الربا وموکلہ، ص ۸۶۲، حدیث: ۱۵۹۸۔

2 ...معجم اوسط، ۵/۲۲۷، حدیث: ۷۱۵۱۔

3 .....दारुल इफ़्ता अह्ले सुन्नत ।

4 ...درمختار، کتاب الحظر والإباحۃ، فصل في البیع، ۹/۶۴۹۔

5 .....दारुल इफ़्ता अह्ले सुन्नत ।

www.dawateislami.net

सुवाल सूद से बचने के कोई दो इलाज बयान कीजिये ?

जवाब (1) इन्सान क़नाअ़त इख़्तियार करे, इस त़रह़ वोह माल की ह़िर्स से बचेगा और ह़राम ज़राएअ़ इख़्तियार नहीं करेगा। (2) हर दम मौत को याद रखा जाए, जब येह सोच बन जाएगी कि मरना है और मौत का कोई भरोसा नहीं कब आ जाए तो ह़राम रोज़ी की त़रफ़ बढ़ने से रुकना नसीब हो जाएगा (اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ)।[1]

सुवाल कोई चीज़ गिरवी रखवा कर क़र्ज़ लिया हो तो क्या उस चीज़ को इस्ति'माल कर सकते हैं ?

जवाब जी नहीं, उसे इस्ति'माल करना जाइज़ नहीं है।[2]

सुवाल अह़ादीसे करीमा में क़र्ज़ देने के क्या फ़ज़ाइल आए हैं ?

जवाब हुज़ूर ताजदारे रिसालत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : हर क़र्ज़ सदक़ा है।[3] और यूं ही इरशाद फ़रमाया : सदक़े का सवाब दस गुना जब कि क़र्ज़ देने का सवाब अठ्ठारह गुना है।[4]

सुवाल आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ क़र्ज़ की वापसी का मुत़ालबा करते थे न क़र्ज़ को हिबा करते इस की क्या वज्ह थी ?

जवाब इमामे अह्ले सुन्नत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : मेरे पन्दरह सौ रूपे लोगों पर क़र्ज़ हैं, जब क़र्ज़ दिया येह ख़याल कर लिया कि दे दे तो ख़ैर वरना त़लब न करूंगा। जिन

---

1 .....ह़िर्स, स. 58-65 माख़ूज़न।

2 ...فتاوی ھندیۃ، کتاب البیوع، الباب التاسع عشر فی القرض...الخ، ۳/۲۰۴، ۲۰۳۔

3 ...معجم اوسط، ۲/۳۴۵، حدیث: ۳۴۹۸۔

4 ...ابن ماجہ، کتاب الصدقات، باب القرض، ۳/۱۵۴، حدیث: ۲۴۳۱۔

www.dawateislami.net

साहिबों ने क़र्ज़ लिया देने का नाम न लिया। (फिर फ़रमाया) जब यूं क़र्ज़ देता हूं तो हिबा क्यूं नहीं कर देता? इस की वज्ह येह है कि ह़दीस शरीफ़ में इरशाद फ़रमाया : जब किसी का दूसरे पर दैन (या'नी क़र्ज़) हो और उस की मीआ़द गुज़र जाए तो हर रोज़ इसी क़दर रूपिये की ख़ैरात का सवाब मिलता है जितना दैन है।[1] इस सवाबे अ़ज़ीम के लिये मैं ने क़र्ज़ दिये, हिबा न किये कि पन्दरह सौ रूपे रोज़ मैं कहां से ख़ैरात करता।[2]

सुवाल मक़रूज़ अगर तंगदस्त हो तो उसे मोहलत देने की क्या फ़ज़ीलत है?

जवाब रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस को येह बात पसन्द हो कि क़ियामत की सख़्तियों से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे नजात बख़्शे वोह तंगदस्त को मोहलत दे या मुआ़फ़ कर दे।[3]

सुवाल क़र्ज़ लेते वक़्त चीज़ की क़ीमत कम थी मगर लौटाते वक़्त ज़ियादा हो जाए तो क्या अब वोही चीज़ देनी होगी या कम क़ीमत शै भी दे सकते हैं?

जवाब क़र्ज़ की अदाएगी में चीज़ के सस्ते और मेहंगे होने का ए'तिबार नहीं होता, वोही चीज़ वापस करनी होती है। लिहाज़ा चीज़ मेहंगी हो जाए या सस्ती वोही चीज़ लौटाई जाएगी।[4]

---

1 ...مسند امام احمد، مسند عمران بن حسین، ۷/۲۲۴، حدیث: ۱۹۹۹۷۔

2 .....मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 91।

3 ...مسلم، کتاب المساقاۃ...الخ، باب فضل انظار المعسر، ص ۸۴۵، حدیث: ۱۵۶۳۔

4 ...درمختار، کتاب البیوع، باب المرابحۃ والتولیۃ، فصل فی القرض، ۷/۴۰۸۔

www.dawateislami.net

खाना

सुवाल किस सूरत में खाना खाना फ़र्ज़ है ?

जवाब अगर भूक का इतना ग़लबा हो कि जानता हो कि न खाने से मर जाएगा तो इतना खा लेना जिस से जान बच जाए फ़र्ज़ है और इस सूरत में अगर नहीं खाया यहां तक कि मर गया तो गुनहगार हुवा ।[1]

सुवाल "पेट का क़ुफ़्ले मदीना" किसे कहते हैं ?

जवाब अपने पेट को ह़राम ग़िज़ा से बचाना और ह़लाल ख़ूराक भी भूक से कम खाना "पेट का क़ुफ़्ले मदीना" लगाना है ।[2]

सुवाल इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى ने तन्दुरुस्ती के लिये क्या रहनुमा उसूल बताया है ?

जवाब हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : "खाने से पहले भूक लगी होना ज़रूरी है, जो कोई खाना शुरूअ़ करते वक़्त भी भूका हो और अभी भूक बाक़ी हो और हाथ खींच ले वोह हरगिज़ त़बीब का मोह़ताज न होगा ।"[3]

सुवाल क़ियामत के दिन कौन लोग भूके होंगे ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : दुन्या में पेट भर के खाने वाले कल आख़िरत में भूके होंगे ।[4]

---

1 ...درمختار، کتاب الحظر والاباحۃ، ۹/۵۵۹۔

2 .....फ़ैज़ाने सुन्नत, स. 643 ।

3 ...احیاء العلوم، کتاب آداب الاکل، ۲/۵۔

4 ...معجم کبیر، ۱۱/۲۱۳، حدیث: ۱۱۶۹۳۔

www.dawateislami.net

सुवाल पेट भर कर खाना किस सूरत में मुस्तहब है ?

जवाब इस लिये सैर हो कर खाना कि नवाफ़िल कसरत से पढ़ सकेगा और पढ़ने पढ़ाने में कमज़ोरी पैदा न होगी, अच्छी त़रह़ इस काम को अन्जाम दे सकेगा येह मन्दूब है ।[1]

सुवाल हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रोज़ाना कितनी बार खाना खाते ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : हुज़ूर ताजदारे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अगर सुब्ह़ को खाना खा लेते तो रात को न खाते और अगर रात को खाना खाते तो सुब्ह़ को तनावुल न फ़रमाते ।[2]

सुवाल खाने से पहले और बा'द में हाथ धोने का मस्नून त़रीक़ा बयान करें ?

जवाब सुन्नत येह है कि क़ब्ले त़आम और बा'दे त़आम दोनों हाथ गिट्टों तक धोए जाएं, बा'ज़ लोग सिर्फ़ एक हाथ या फ़क़त़ उंगलियां धो लेते हैं बल्कि सिर्फ़ चुटकी धोने पर किफ़ायत करते हैं इस से सुन्नत अदा नहीं होती ।[3]

सुवाल सब से पहली बिदअ़त कौन सी ज़ाहिर हुई ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं : सुल्त़ाने मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द सब से पहली बिदअ़त[4] पेट भर कर खाने की पैदा हुई जब लोगों के पेट भर जाते हैं तो इन के नफ़्स दुन्या की त़रफ़ सरकश हो जाते हैं ।"[5]

---

1 ...ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحة، ۹/۵۶۰۔

2 ...مسند الشامیین، الوضین عن عطا بن ابی رباح، ۱/۳۷۴، حدیث: ۶۵۰۔

3 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 16, 3 / 376 ।

4 .....इस बिदअ़त से मुराद मुबाह़ या'नी जाइज़ बिदअ़त है ।

5 ...قوت القلوب، الفصل التاسع والثلاثون، ۲/۲۸۳۔

www.dawateislami.net

सुवाल बरतन खाना खाने वाले के लिये कब इस्तिग़फ़ार करता है ?

जवाब रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो खाने के बा'द बरतन को चाट लेगा वोह बरतन उस के लिये इस्तिग़फ़ार करेगा।[1]

सुवाल बरोज़े क़ियामत किस शख़्स पर हिसाब की शिद्दत न होगी ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं : उस भूके पर हिसाब की शिद्दत न होगी जिस ने (दुन्या में) फ़ाक़ा और भूक पर सब्र किया होगा।[2]

सुवाल हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه कितने लुक़्मे खाया करते थे ?

जवाब अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه सात या नव लुक़्मों से ज़ियादा खाना नहीं खाते थे।[3]

सुवाल मोमिन और काफ़िर व मुनाफ़िक़ के खाने में क्या फ़र्क़ है ?

जवाब हदीसे पाक में है : मोमिन एक आंत में खाता है और काफ़िर या मुनाफ़िक़ सात आंतों में खाता है।[4]

दा'वत और मेहमान नवाज़ी

सुवाल हदीसे पाक में मेहमान के इकराम की अहम्मिय्यत किस त़रह़ बयान हुई है ?

जवाब रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और क़ियामत के दिन पर ईमान रखता है उसे

1 ...ترمذی، کتاب الاطعمہ، باب ماجاء فی القمۃ تسقط، ۳/۳۱۵، حدیث: ۱۸۱۱۔

2 ...البدور السافرۃ، ص: ۲۱۲۔

3 ...احیاء العلوم، کتاب کسر الشھوتین، ۳/۱۱۱۔

4 ...بخاری، کتاب الاطعمۃ، باب المؤمن یأکل فی معی واحد، ۳/۵۲۶، حدیث: ۵۳۹۳۔

www.dawateislami.net

चाहिये कि (1) वोह मेहमान का इकराम करे (2) अपने पड़ोसी को ईज़ा न दे और (3) वोह भली बात बोले या चुप रहे।[1]

सुवाल मेहमान के लिये कौन सी चार बातें ज़रूरी हैं ?

जवाब (1) जहां बिठाया जाए वहीं बैठे (2) जो कुछ इस के सामने पेश किया जाए उस पर ख़ुश हो (3) साहिबे ख़ाना की इजाज़त के बिग़ैर वहां से न उठे और (4) जब वहां से जाए तो उस के लिये दुआ करे।[2]

सुवाल अगर हमारी मेहमान नवाज़ी न करने वाला हमारे हां आए तो हम क्या करें ?

जवाब एक सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! येह फ़रमाइये कि मैं एक शख़्स के यहां गया, उस ने मेरी मेहमानी नहीं की, अब वोह मेरे यहां आए तो मैं उस की मेहमानी करूं या बदला दूं ? इरशाद फ़रमाया : "बल्कि तुम उस की मेहमानी करो।"[3]

सुवाल क्या मेहमान मेज़बान के गुनाह मुआ़फ़ होने का सबब भी बनता है ?

जवाब जी हां, हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब कोई मेहमान किसी के यहां आता है तो अपना रिज़्क़ ले कर आता है और जब उस के यहां से जाता है तो साहिबे ख़ाना के गुनाह बख़्शे जाने का सबब होता है।[4]

---

1 ...مسلم، کتاب الایمان، باب الحث علی اکرام الجار...الخ، ص ۴۴، حدیث: ۷۷۔

2 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 16, 3 / 394।

3 ...ترمذی، کتاب البر والصلۃ، باب ماجاء فی الاحسان والعفو ۳/۴۰۵، حدیث: ۲۰۱۳۔

4 ...کشف الخفاء، حرف الضاد المعجمۃ، ۲/۳۳، حدیث: ۱۶۴۱۔

www.dawateislami.net

सुवाल मेहमान को रुख़्सत करने का सुन्नत त़रीक़ा क्या है ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : सुन्नत येह है कि मेहमान को दरवाज़े तक रुख़्सत करने जाए ।[1]

सुवाल जिस को दा'वते वलीमा दी गई उस के लिये क्या हुक्म है ?

जवाब दा'वते वलीमा का क़बूल करना सुन्नते मुअक्कदा है जब कि वहां कोई गुनाह मसलन गाने बाजे का काम और कोई और शरई रुकावट न हो, क़बूल करने का मा'ना वहां जाना है, खाने न खाने में इख़्तियार है ।[2]

सुवाल सब से बुरा खाना कौन सा है ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : सब से बुरा खाना वलीमे का वोह खाना है जिस में मालदार लोग बुलाए जाएं और ग़रीब मोह़ताज लोगों को न पूछा जाए ।[3]

सुवाल दा'वते वलीमा कितने दिन हो सकती है ?

जवाब दा'वते वलीमा पहले दिन या इस के बा'द दूसरे दिन बस इन ही दो दिन तक हो सकती है । इस के बा'द की तो वोह सुन्नत नहीं बल्कि रिया व सुम्आ़ (या'नी लोगों को दिखाना सुनाना है) ।[4]

---

1 ...ابن ماجه، کتاب الاطعمة، باب الضيافة، ۴/۵۲، حديث: ۳۳۵۸۔

2 .....फ़तावा रज़विय्या, 21 / 655 माख़ूज़न ।

3 ...بخاری، کتاب النکاح، باب من ترک الدعوة...الخ، ۳/۴۵۵، حديث: ۵۱۷۷۔

4 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 16, 3 / 376 ।

www.dawateislami.net

सुवाल हज़रते सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के वलीमे में क्या खिलाया गया था ?

जवाब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के वलीमे में सत्तू और खजूरें थीं ।[1]

सुवाल बिन बुलाए दा'वत में जाने वाले के लिये क्या वईद है ?

जवाब ऐसे शख़्स के मुतअ़ल्लिक़ हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का येह फ़रमान है : जो बिग़ैर बुलाए गया वोह चोर हो कर घुसा और ग़ारत गरी (या'नी लूट मार) कर के निकला ।[2]

सुवाल दा'वत में बूढ़े और जवान दोनों हों तो पहले किस के हाथ धुलाए जाएं ?

जवाब खाने से क़ब्ल जवानों के हाथ पहले धुलाए जाएं और खाने के बा'द पहले बूढ़ों के हाथ धुलाए जाएं, इस के बा'द जवानों के ।[3]

सुवाल किस सूरत में मेज़बान को मेहमानों के साथ खाने पर बैठना चाहिये ?

जवाब अगर मेहमान थोड़े हों तो मेज़बान उन के साथ खाने पर बैठ जाए कि येही तक़ाज़ाए मुरव्वत है और बहुत से मेहमान हों तो उन के साथ न बैठे बल्कि उन की ख़िदमत और खिलाने में मश्ग़ूल हो ।[4]

लिबास, अंगूठी और ज़ेवर

सुवाल कितना लिबास फ़र्ज़ है ?

जवाब इतना लिबास जिस से सत्रे औ़रत[5] हो जाए और गर्मी सर्दी की

---

1 ...ترمذی، کتاب النکاح، باب ماجاء فی الولیمۃ، ۲/۳۴۹، حدیث: ۱۰۹۷۔

2 ...ابوداود، کتاب الاطعمۃ، باب ماجاء فی اجابۃ الدعوۃ، ۳/۴۷۹، حدیث: ۳۷۴۱۔

3 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 16, 3 / 376 ।

4 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 16, 3 / 394 ।

5 .....बदन का जो हिस्सा छुपाना फ़र्ज़ है उसे छुपाने को "सत्रे औ़रत" कहते हैं, मर्द के लिये इस की मिक़्दार नाफ़ के नीचे से घुटनों के नीचे तक है जब कि औ़रत के लिये सारा.....

www.dawateislami.net

तक्लीफ़ से बचे फ़र्ज़ है।[1]

सुवाल टख़्नों से नीचे कपड़ा लटकाने की क्या वईद है?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये मोह़तशम, शफ़ीए़ उमम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो कपड़ा टख़्ने से नीचे हो वोह आग में है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उस शख़्स की त़रफ़ नज़रे रह़मत नहीं फ़रमाएगा।[2]

सुवाल कपड़ों में दामन और आस्तीन की लम्बाई कितनी होनी चाहिये?

जवाब सुन्नत येह है कि दामन की लम्बाई आधी पिन्डली तक हो और आस्तीन की लम्बाई ज़ियादा से ज़ियादा उंगलियों के पोरों तक और चौड़ाई एक बालिश्त हो।[3]

सुवाल नाबालिग़ लड़कों को रेशमी कपड़े पहनाने का हुक्म बयान करें?

जवाब नाबालिग़ लड़कों को भी रेशम के कपड़े पहनाना ह़राम है और गुनाह पहनाने वाले पर है।[4]

सुवाल क्या रेशम का लिहाफ़ ओढ़ सकते हैं?

जवाब रेशम का लिहाफ़ ओढ़ना नाजाइज़ है कि येह भी लुब्स (पहनने) में दाख़िल है।[5]

सुवाल ऊन और बालों के कपड़े सब से पहले किस ने पहने?

.....बदन छुपाना ज़रूरी है सिवाए मुंह की टिकली, दोनों हथेलियों और पाउं के तल्वों के नीज़ सर के लटकते बालों, गर्दन और कलाइयों का छुपाना भी फ़र्ज़ है।

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा 3, 1 / 481 मुलख़्ख़सन)

1 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 16, 3 / 409।

2 ...ابوداود، کتاب اللباس، باب فی قدر موضع الازار ۴/۸۲، حدیث: ۴۰۹۳۔

3 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 16, 3 / 409।

4 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 16, 3 / 415।

5 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 16, 3 / 411।

www.dawateislami.net

जवाब ऊन और बालों से बने कपड़े सब से पहले ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने पहने।[1]

सुवाल रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अंगूठी का नगीना किस त़रफ़ होता था ?

जवाब हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अंगूठी का मुक़द्दस नगीना हथेली की त़रफ़ होता था।[2]

सुवाल अंगूठी किस के लिये सुन्नत है ?

जवाब जिन को मोहर करने की ह़ाजत होती है जैसे सुल्त़ान, क़ाज़ी और उ़लमा जो फ़तवा पर मोहर करते हैं।[3]

सुवाल किस रंग के लिबास को ह़दीसे पाक में बेहतर कहा गया है ?

जवाब सफ़ेद रंग के लिबास को। नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : सफ़ेद कपड़े पहनो कि वोह ज़ियादा पाक व सुथरे हैं और उन्हीं में अपने मुर्दे कफ़नाओ।[4]

सुवाल मर्द को कैसी अंगूठी पहनना जाइज़ है ?

जवाब सिर्फ़ चांदी की एक अंगूठी एक नगीने वाली जाइज़ है जो वज़्न में साढ़े चार माशा से कम हो। बिग़ैर नगीने की या एक से ज़ियादा नगीने की अंगूठी अगर्चे चांदी की हो मर्द के लिये नाजाइज़ है।[5]

---

1 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 16, 3 / 416।

2 ...مسلم، کتاب اللباس، باب في خاتم الورق فصه حبشي، ص۱۱۶۰، حدیث: ۲۰۹۴۔

3 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 16, 3 / 427।

4 ...مسند احمد، حدیث سمرة بن جندب، ۷/۲۶۰، حدیث: ۲۰۱۷۴۔

5 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 16, 3 / 426-428 मुलख़्ख़सन व मुल्तक़त़न।

www.dawateislami.net

सुवाल क्या लड़कों के कान छिदवाना और इस में बाली पहनाना जाइज़ है ?

जवाब लकड़ों के कान छिदवाना और इस में बाली पहनाना नाजाइज़ है ।[1]

सुवाल घुंगरू के मुतअ़ल्लिक़ ह़दीस शरीफ़ में क्या इरशाद हुवा ?

जवाब ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "हर घुंगरू के साथ शैत़ान होता है ।"[2]

ज़ीनत

सुवाल क्या छोटे लड़कों के हाथ पाउं में मेहंदी लगा सकते हैं ?

जवाब छोटे लड़कों के हाथ पाउं में बिला ज़रूरत मेहंदी लगाना नाजाइज़ है ।[3]

सुवाल क्या मर्द अपने कान छिदवा कर इस में ज़ेवर पहन सकता है ?

जवाब मर्दों का अपने कान छिदवाना और इस में ज़ेवर पहनना दोनों नाजाइज़ हैं ।[4]

सुवाल औ़रतों का नाक, कान छिदवाना फ़र्ज़ है वाजिब है या सुन्नत ?

जवाब न फ़र्ज़ है न वाजिब न सुन्नत सिर्फ़ मुबाह़ (या'नी जाइज़) है । हां अच्छी निय्यत हो तो कारे सवाब है ।[5]

सुवाल औ़रत को ज़ेबाइश व आराइश के लिये मिस्सी सियाह (दन्दासा) लगाना कैसा है ?

---

1 . . . ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل فی البیع، ۹/۲۹۳۔

2 . . . ابوداود، کتاب الخاتم، باب ماجاء فی خاتم الذہب، ۴/۱۲۱، حدیث: ۴۲۲۲۔

3 . . . ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل فی اللبس، ۹/۵۹۹۔

4 . . . ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل فی البیع، ۹/۲۹۳۔

5 . . . . . फ़तावा रज़विय्या, 23 / 483, मुलख़्ख़सन ।

www.dawateislami.net

जवाब मिस्सी किसी रंग की हो औ़रतों को इलाजे दन्दां (दांतों के इलाज के लिये) या शौहर के वासिते़ आराइश के लिये मुत़्लक़न जाइज़ बल्कि मुस्तह़ब है। सिर्फ़ ह़ालते रोज़ा में लगाना मन्अ़ है।[1]

सुवाल क्या औ़रत जूड़ा बांध सकती है?

जवाब जी हां बांध सकती है।[2]

सुवाल औ़रत का अपने शौहर के लिये बनाव सिंगार करना कैसा?

जवाब आ'ला ह़ज़रत, इमामे अह्ले सुन्नत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं: औ़रत का अपने शौहर के लिये गहना (ज़ेवर) पहनना, बनाव सिंगार करना बाइसे अज्रे अ़ज़ीम और इस के ह़क़ में नमाज़े नफ़्ल से अफ़्ज़ल है।[3]

सुवाल मर्द का अपनी बीवी के लिये जमाल इख़्तियार करना कैसा?

जवाब ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं: बिलाशुबा मैं अपनी बीवी के लिये ज़ीनत इख़्तियार करता हूं जिस त़रह़ वोह मेरे लिये बनाव सिंगार करती है और मुझे येह बात पसन्द है कि मैं वोह तमाम हुक़ूक़ अच्छी त़रह़ ह़ासिल करूं जो मेरे उस पर हैं और वोह भी अपने हुक़ूक़ ह़ासिल करे जो उस के मुझ पर हैं।[4]

सुवाल क्या मर्द ज़नाना या औ़रतें मर्दाना कपड़े या जूते पहन सकते हैं?

जवाब जी नहीं। ह़दीसे मुबारका में है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने औ़रतों की मुशाबहत इख़्तियार करने वाले ज़नाने मर्दों और

---

1 .....फ़तावा रज़विय्या, 23 / 489।

2 .....फ़तावा रज़विय्या, 7 / 298 माख़ूज़न।

3 .....फ़तावा रज़विय्या, 22 / 126।

4 ...تفسیر قرطبی، پ ۲، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۲۲۸، ۲/ ۹۶۔

www.dawateislami.net

मर्दों की मुशाबहत इख़्तियार करने वाली मर्दानी औ़रतों पर ला'नत फ़रमाई है ।[1]

सुवाल सुर्मा कब लगाना सुन्नत है ?

जवाब ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : सुन्नत येह ही है कि रात को सोते वक़्त सुर्मा लगाए । दिन में सुर्मा लगाना जुमुआ़ की नमाज़ के लिये, ईदैन के लिये सुन्नत है, यूंही आ़शूरा के दिन और रोज़ाना शब को सुन्नत है ।[2]

सुवाल मर्द और औ़रत की ख़ुश्बू में क्या फ़र्क़ होना चाहिये ?

जवाब ह़दीसे मुबारका में है : मर्दाना ख़ुश्बू वोह है कि उस की ख़ुश्बू तो ज़ाहिर हो मगर रंग ज़ाहिर न हो और ज़नाना ख़ुश्बू वोह है कि उस का रंग तो ज़ाहिर हो मगर ख़ुश्बू ज़ाहिर न हो ।[3]

सुवाल क्या मकान में जानदार की तस्वीर आवेज़ां कर सकते हैं ?

जवाब जी नहीं, मकान में जानदार की तस्वीर आवेज़ां करना नाजाइज़ है ।[4]

सुवाल मीलाद शरीफ़ की ख़ुशी में नीज़ इजतिमाए मीलाद के लिये ज़ेबो ज़ीनत इख़्तियार करना कैसा है ?

जवाब जाइज़ ज़ीनत इख़्तियार करना अज़ ख़ुद जाइज़ है और अगर प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादते बा सआ़दत की ख़ुशी और आप के मुबारक ज़िक्र की ता'ज़ीम की निय्यत से हो फिर तो इस

---

1 . . . مسند امام احمد، مسند ابی ہریرۃ، ۳/۱۳۳، حدیث: ۷۸۶۰۔

2 .....मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 180 ।

3 . . . ترمذی، کتاب الادب، باب ماجآء فی طیب الرجال والنساء، ۴/۳۶۱، حدیث: ۲۷۹۶۔

4 . . . فتاوی ھندیۃ، کتاب الکراہیۃ، الباب العشرون فی الزینۃ، ۵/۳۵۹۔

www.dawateislami.net

अ़मल का मुस्तहब होना वाजेह़ है।[1] उ़लमा फ़रमाते हैं : भलाई के कामों में ख़र्च करने में कोई इसराफ़ नहीं। जिस चीज़ के ज़रीए सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़िक्र की ता'ज़ीम मक़्सूद हो वोह हरगिज़ ममनूअ़ नहीं हो सकती।[2]

बैठने, सोने और चलने के आदाब

सुवाल किसी के आने पर उस के बैठने के लिये जगह कुशादा करने की क्या फ़ज़ीलत है?

जवाब ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है : रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब कोई शख़्स किसी क़ौम के पास आए और उस की ख़ुश्नूदी के लिये वोह लोग जगह में वुस्अ़त कर दें तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ह़क़ है कि उन को राज़ी करे।[3]

सुवाल किस त़रह़ की छत पर सोने की मुमानअ़त है?

जवाब ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि हुज़ूर रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ऐसी छत पर सोने से मन्अ़ फ़रमाया जिस पर मुन्डेर (दीवार की आड़) न हो।[4]

सुवाल क़ैलूला करना किस के लिये मुस्तह़ब है?

जवाब सदरुश्शरीआ़ मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِی फ़रमाते हैं : ग़ालिबन येह उन लोगों के लिये होगा जो शब बेदारी

1.....फ़तावा रज़विय्या, 26 / 553 मुलख़्ख़सन।

2.....मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, ह़िस्सा अव्वल, स. 174 मुलख़्ख़सन।

3...کنز العمال، الجزء التاسع، کتاب الصحبة، قسم الاقوال، حق المجالس والجلوس، ۵/۵۸، حدیث: ۲۵۳۷۰۔

4...ترمذی، کتاب الادب، باب ۴، ۲/۳۸۸، حدیث: ۲۸۶۳۔

www.dawateislami.net

करते हैं, रात में नमाज़ें पढ़ते, ज़िक्रे इलाही करते हैं या कुतुब बीनी में मश्ग़ूल रहते हैं कि शब बेदारी में जो तकान हुवा क़ैलूला से दफ़्अ़ हो जाएगा।[1]

सुवाल किस त़रह़ लेटना जहन्नमियों का त़रीक़ा है ?

जवाब ह़दीस शरीफ़ में है : पेट के बल लेटना जहन्नमियों का त़रीक़ा है।[2]

सुवाल सोने का मुस्तह़ब त़रीक़ा बयान कीजिये ?

जवाब सोने में मुस्तह़ब येह है कि बा त़हारत सोए और कुछ देर दहनी करवट पर दहने हाथ को रुख़्सार के नीचे रख कर क़िब्ला रू सोए फिर इस के बा'द बाईं करवट पर।[3]

सुवाल सोते वक़्त क्या दुआ़ पढ़नी चाहिये ?

जवाब اَللّٰهُمَّ بِاسْمِكَ اَمُوْتُ وَاَحْيَا[4]

सुवाल जागने के बा'द क्या दुआ़ पढ़नी चाहिये ?

जवाब اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْۤ اَحْیَانَا بَعْدَ مَاۤ اَمَاتَنَا وَاِلَیْهِ النُّشُوْرُ[5]

सुवाल सुब्ह़ उठ कर किस बात का पक्का इरादा करना चाहिये ?

जवाब सुब्ह़ उठने, दुआ़ पढ़ने और यादे ख़ुदा करने के बा'द इस बात का पक्का इरादा करे कि तक़्वा व परहेज़गारी करेगा किसी को सताएगा नहीं।[6]

---

1 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 16, 3 / 435।

2 ...ابن ماجه، کتاب الادب، باب النهی عن الاضطجاع علی الوجه، ۴/۲۱۴، حدیث: ۳۷۲۴۔

3 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 16, 3 / 436।

4 ...بخاری، کتاب الدعوات، باب وضع یدالیمنی تحت الخدالایمن، ۴/۱۹۲، حدیث: ۶۳۱۴۔

5 ...ابوداود، کتاب الدعا، باب مایقول عندالنوم، ۴/۴۰۵، حدیث: ۵۰۴۹۔

6 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 16, 3 / 436 मुलख़्ख़सन।

www.dawateislami.net

सुवाल कौन कौन से औक़ात में सोना मकरूह है ?

जवाब दिन के इब्तिदाई हिस्से में सोना या मग़रिब और इशा के दरमियान सोना मकरूह है ।[1]

सुवाल अ़स्र के बा'द सोने वाले को ह़दीसे पाक में क्या तम्बीह की गई है ?

जवाब ह़दीसे पाक में है : जो शख़्स अ़स्र के बा'द सोए और उस की अ़क़्ल चली जाए तो वोह अपने आप को ही मलामत करे ।[2]

सुवाल क्या नमाज़े इशा के बा'द बातें कर सकते हैं ?

जवाब बा'द नमाज़े इशा इ़ल्मी गुफ़्तगू, मस्अला पूछना या जवाब देना या मस्अले की तह़क़ीक़ व तफ़्तीश करना ऐसी गुफ़्तगू सोने से अफ़्ज़ल है जब कि झूटे क़िस्से कहानी कहना, मस्ख़रा पन और हंसी मज़ाक़ की बातें मकरूह हैं अलबत्ता मियां बीवी का बाहम या मेहमान से उन्सिय्यत के लिये कलाम करना जाइज़ है इस क़िस्म की बातें करे तो आख़िर में ज़िक्रे इलाही करे और तस्बीह़ व इस्तिग़फ़ार पर कलाम का ख़ातिमा होना चाहिये ।[3]

सुवाल राह चलने के आदाब बयान कीजिये ?

जवाब राह चलने में तमाम तर उमूर को मल्हूज़ रखना होता है, बीच राह में चलने से बचना चाहिये, परेशान नज़री (इधर उधर देखने) से बचते हुवे, निगाहें नीची किये पुर वक़ार त़रीक़े से चलना चाहिये, नीज़ रास्ते में ख़िलाफ़े तहज़ीब और ना पसन्दीदा काम करने से भी बचना चाहिये ।[4]

---

1 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 16, 3 / 436 ।

2 ...مسند ابی یعلی، مسند عائشۃ رضی اللہ عنہا، ۴/۲۷۸، حدیث: ۴۸۹۷۔

3 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 16, 3 / 436 मुलख़्ख़सन ।

4 .....163 मदनी फूल, स. 6 मुलख़्ख़सन ।

www.dawateislami.net

सलाम और मुसाफ़हा

सुवाल वोह कौन सा अ़मल है जिस से मुसलमानों में बाहमी मह़ब्बत पैदा होती है ?

जवाब वोह सलाम है । प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें ऐसी चीज़ न बताऊं कि जब तुम उसे करो तो आपस में मह़ब्बत करने लगो ! वोह येह है कि आपस में सलाम फैलाओ ।[1]

सुवाल सलाम करने में क्या निय्यत होनी चाहिये ?

जवाब सलाम करते वक़्त दिल में येह निय्यत हो कि जिस को सलाम करने लगा हूं उस का माल और इ़ज़्ज़तो आबरू सब कुछ मेरी ह़िफ़ाज़त में है और मैं इन में से किसी चीज़ में दख़्ल अन्दाज़ी करना ह़राम जानता हूं ।[2]

सुवाल क्या सलाम उसी मुसलमान को करे जिसे पहचानता है ?

जवाब नहीं ! बल्कि हर मुसलमान को सलाम करे चाहे पहचानता हो या न पहचानता हो ।[3]

सुवाल सलाम के जवाब में ताख़ीर करना कैसा ?

जवाब सलाम का जवाब फ़ौरन देना वाजिब है, बिला उ़ज़्र ताख़ीर की तो गुनहगार होगा, जवाब के साथ साथ तौबा भी करनी होगी सिर्फ़ जवाब से गुनाह मुआ़फ़ न होगा ।[4]

---

1 . . . مسلم، کتاب الایمان، باب بیان أنه لا یدخل الجنة الا المؤمنون . . . الخ، ص ۴۷، حدیث: ۹۳۔

2 . . . درمختار و ردالمحتار، کتاب الحظر والإباحة، فصل فی البیع، ۹/ ۶۸۲۔

3 . . . . . बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 16, 3 / 459 ।

4 . . . درمختار و ردالمحتار، کتاب الحظر والإباحة، فصل فی البیع، ۹/ ۶۸۳۔

www.dawateislami.net

सुवाल क्या ख़त़ में लिखे सलाम का जवाब भी वाजिब है और वोह किस त़रह़ दिया जाए ?

जवाब ख़त़ में लिखे हुवे सलाम का भी जवाब देना वाजिब है और इस के जवाब की दो सूरतें हैं । एक येह कि ज़बान से जवाब दे, दूसरी सूरत येह है कि सलाम का जवाब लिख कर भेजे मगर चूंकि सलाम का जवाब फ़ौरन देना वाजिब है और ख़त़ का जवाब फ़ौरन ही नहीं लिखा जाता उ़मूमन कुछ ताख़ीर हो जाती है लिहाज़ा ज़बान से जवाब फ़ौरन दे दे ताकि ताख़ीर का गुनाह न हो ।[1]

सुवाल कौन से औक़ात में सलाम करना सुन्नत है ?

जवाब ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان फ़रमाते हैं : तीन वक़्त सलाम करना सुन्नत है : घर में आने की इजाज़त चाहते वक़्त, मुलाक़ात के वक़्त और रुख़्सत के वक़्त ।[2]

सुवाल अगर ख़ाली घर में जाना हो तो किस त़रह़ सलाम करना चाहिये ?

जवाब ह़ज़रते अ़म्र बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं कि अगर घर में कोई न हो तो यूं कहो :

اَلسَّلَامُ عَلَى النَّبِيِّ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهٗ اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللهِ الصّٰلِحِيْن

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ली क़ारी ह़नफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने फ़रमाया : येह इस लिये कि मुसलमानों के घरों में हुज़ूर रह़मते आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रूह़ मुबारक तशरीफ़ फ़रमा होती है ।[3]

1.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 16, 3 / 463 मुलख़्ख़सन ।

2.....मिरआतुल मनाजीह़ 2 / 404 ।

3 . . . شفا، فصل فی المواطن التی یستحب . . . الخ، الجزء الثانی، ص ٦٧۔

شرح الشفاء، فصل فی المواطن التی یستحب . . . الخ، ٢/١١٨۔

www.dawateislami.net

सुवाल सलाम में اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُه कहने पर कितनी नेकियां मिलती हैं ?

जवाब ह़दीस शरीफ़ में है कि एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की اَلسَّلَامُ عَلَيْكُم हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सलाम का जवाब अ़ता फ़रमाया । जब वोह शख़्स बैठ गया तो इरशाद फ़रमाया : "दस नेकियां हैं ।" फिर दूसरा शख़्स ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللهِ आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे भी सलाम का जवाब दिया । वोह बैठ गया तो इरशाद फ़रमाया : "बीस नेकियां हैं ।" फिर एक और शख़्स ने ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُه फिर वोह बैठ गया तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "तीस नेकियां हैं ।"[1]

सुवाल उंगली या हथेली के इशारे से सलाम करना कैसा है ?

जवाब उंगली या हथेली से सलाम करना ममनूअ़ है । ह़दीस में फ़रमाया कि उंगलियों से सलाम करना यहूदियों का और हथेलियों के इशारे से सलाम करना नसारा का त़रीक़ा है ।[2]

सुवाल मुसाफ़ह़ा का सुन्नत त़रीक़ा क्या है ?

जवाब इस त़रह़ मुसाफ़ह़ा करना सुन्नत है कि दोनों हाथों से मुसाफ़ह़ा किया जाए और दोनों के हाथों के माबैन कपड़ा वग़ैरा कोई चीज़ ह़ाइल न हो ।[3]

---

1 ...ابوداود، کتاب الادب، باب کیف السلام، ۴/۴۴۹، حدیث: ۵۱۹۵۔

2 ...ترمذی، کتاب الاستئذان والآداب، باب ماجاء فی کراھیۃ اشارۃ الید بالسلام، ۴/۳۱۹، حدیث: ۲۷۰۴۔

3 ...ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، باب الاستبراء وغیرہ، ۹/۶۲۹۔

www.dawateislami.net

सुवाल मुलाक़ात के वक़्त किया जाने वाला कौन सा अ़मल मग़्फ़िरत का सबब बनता है ?

जवाब **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "जब दो मुसलमान मुलाक़ात करते वक़्त मुसाफ़ह़ा करते हैं तो उन दोनों के जुदा होने से पहले उन की मग़्फ़िरत कर दी जाती है।"(1)

सुवाल एक मोमिन के दूसरे मोमिन पर कितने हुक़ूक़ हैं ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, शफ़ीए मुअ़ज़्ज़म صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : एक मुसलमान के दूसरे मुसलमान पर छे ह़क़ हैं : (1) जब वोह बीमार हो तो इ़यादत करे (2) जब वोह मर जाए तो उस के जनाज़े में ह़ाज़िर हो (3) जब वोह दा'वत दे तो क़बूल करे (4) जब उस से मिले तो सलाम करे (5) जब वोह छींके तो जवाब दे और (6) ह़ाज़िर व ग़ाइब उस की ख़ैर ख़्वाही करे।(2)

छींक और जमाही

सुवाल ह़दीस शरीफ़ में छींक की क्या फ़ज़ीलत और जमाही की क्या मज़म्मत आई है ?

जवाब ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला को छींक पसन्द और जमाही ना पसन्द है।(3)

---

1 ...ابوداود، کتاب الادب، باب فی المصافحة، ۴/۴۵۳، حدیث: ۵۲۱۲۔

2 ...نسائی، کتاب الجنائز، باب النهی عن سب الاموات، ص ۳۲۸، حدیث: ۱۹۳۵۔

3 ...بخاری، کتاب الادب، باب اذا تثاوب فلیضع یده علی فیه، ۴/۱۶۳، حدیث: ۶۲۲۶۔

www.dawateislami.net

सुवाल दुन्या में सब से पहले छींक किस को आई ?

जवाब हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को पैदा होते ही सब से पहले छींक आई।[1]

सुवाल छींक आने के बा'द ह़म्द करने का क्या हुक्म है ?

जवाब छींक आने के बा'द ह़म्द करना सुन्नत है।[2]

सुवाल छींक का जवाब देने का क्या हुक्म है ?

जवाब छींक का जवाब देना वाजिब है जब कि छींकने वाला اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहे और इस का जवाब भी फ़ौरन देना होता है और इतनी आवाज़ में जवाब दे कि वोह सुन ले वाजिब है जिस त़रह़ सलाम के जवाब में है यहां भी है।[3]

सुवाल एक मजलिस में अगर कई बार छींक आ जाए तो क्या हर मरतबा जवाब देना होता है ?

जवाब एक मजलिस में अगर किसी को कई बार छींक आए तो सिर्फ़ तीन मरतबा जवाब देना है, एक मरतबा वाजिब, दोबारा मुस्तह़ब है, इस के बा'द इख़्तियार है जवाब दे या न दे।[4]

सुवाल छींकने वाले से पहले सुनने वाला اَلْحَمْدُ لِلّٰه कह दे तो क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब ह़दीसे पाक में आया है कि ऐसा शख़्स दांतों और कानों के दर्द और बद हज़्मी से मह़फ़ूज़ रहेगा और एक ह़दीस में है कि कमर के दर्द से मह़फ़ूज़ रहेगा।[5]

---

1 ...ترمذی، ابواب تفسیر القرآن، باب: ۱، ۵/۲۴۱، حدیث: ۳۳۷۹۔

2 ...حاشیۃ طحطاوی، مقدمۃ، ص۷، मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 319

3 .....बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा, 16, 3 / 476۔ ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل في البیع، ۹/۶۸۳۔

4 ...فتاوی بزازیۃ، کتاب الکراھیۃ، نوع في السلام، ۶/۳۵۵۔

5 ...معجم اوسط، ۶/۲۲۴، حدیث: ۷۱۴۱۔ المقاصد الحسنۃ، حرف المیم، ص۴۲۰، حدیث: ۱۱۳۰۔

www.dawateislami.net

सुवाल छींकते वक़्त क्या करना चाहिये ?

जवाब छींक के वक़्त सर झुका ले और मुंह छुपा ले और आवाज़ को पस्त करे, छींक की आवाज़ बुलन्द करना ह़माक़त है ।[1]

सुवाल जहां एक से ज़ाइद अफ़राद हों तो कितने लोग छींक का जवाब दें ?

जवाब छींक का जवाब बा'ज़ ह़ाज़िरीन ने दे दिया तो सब की त़रफ़ से हो गया और बेहतर येह है कि सब ह़ाज़िरीन जवाब दें ।[2]

सुवाल जमाही शैत़ान को क्यूं पसन्द है ?

जवाब क्यूंकि जमाही की वज्ह से इ़बादात में चुस्ती नहीं रहती और ग़फ़्लत आती है इसी लिये शैत़ान को येह पसन्द है ।[3]

सुवाल जब किसी को जमाही आए तो उसे क्या करना चाहिये ?

जवाब मुंह पर हाथ रख लेना चाहिये, ह़दीसे पाक में है : जब किसी को जमाही आए तो मुंह पर हाथ रख ले क्यूंकि शैत़ान मुंह में घुस जाता है ।[4]

सुवाल जमाही को रोकने का त़रीक़ा बयान कीजिये ?

जवाब जमाही आए तो मुंह बन्द किये रहे और न रुके तो होंट दांत के नीचे दबाए । जमाही रोकने का मुजर्रब त़रीक़ा येह है कि दिल में ख़याल करे कि अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام को जमाही नहीं आती थी ।[5]

---

1 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 16, 3 / 478 ।

2 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 16, 3 / 477 ।

3 ...مرقاۃ المفاتیح، کتاب الآداب، باب العطاس والتثاؤب، ۸/۴۹۴، تحت الحدیث: ۴۷۳۲۔

4 ...مسلم، کتاب الزھد، باب تشمیت العاطس...الخ، ص۱۵۹۷، حدیث: ۲۹۹۵۔

5 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 3, 1 / 538 ।

www.dawateislami.net

सुवाल अगर नमाज़ में किसी को जमाही आए और हाथ के ज़रीए रोके बिग़ैर कोई चारए कार न रहे तो क्या करे ?

जवाब क़ियाम में दाहने हाथ की पुश्त से मुंह ढांक ले और ग़ैरे क़ियाम में बाएं की पुश्त से या दोनों में आस्तीन से ।[1]

ज़ियारते क़ुब्रू

सुवाल अज़ीज़ो अक़ारिब की क़ब्रों पर जाने के लिये बेहतर अय्याम कौन से हैं ?

जवाब जुमुआ या जुमा'रात या हफ़्ता या पीर के दिन मुनासिब है, सब में अफ़्ज़ल रोज़े जुमुआ वक़्ते सुब्ह है ।[2]

सुवाल क़ब्र वालों को सलाम करने का क्या त़रीक़ा है ?

जवाब क़ब्र वालों के चेहरों की त़रफ़ मुंह कर के इस त़रह़ सलाम कहिये :

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا اَهْلَ الْقُبُوْرِ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَنَا وَلَكُمْ اَنْتُمْ سَلَفُنَا وَنَحْنُ بِالْاَثَرِ۔[3]

सुवाल अगर क़ब्रिस्तान का रास्ता क़ब्रें मिस्मार कर के बनाया गया हो तो उस पर चलना कैसा ?

जवाब (क़ब्रिस्तान में क़ब्रें मिटा कर) जो नया रास्ता निकाला गया हो उस पर चलना ह़राम है[4] बल्कि नए रास्ते का सिर्फ़ गुमान हो तब भी उस पर चलना नाजाइज़ व गुनाह है ।[5]

---

1 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 3, 1 / 538 ।

2 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4, 1 / 848 ।

3 ...ترمذی، کتاب الجنائز، باب ما یقول الرجل اذا دخل المقابر، ۲/۳۲۹، حدیث: ۱۰۵۵۔

4 ...ردالمحتار، کتاب الطهارة، مطلب: القول مرجح علی الفعل، ۱/۶۱۲۔

5 ...درمختار، کتاب الصلاة، باب صلاة الجنائز، ۳/۱۸۳۔

www.dawateislami.net

सुवाल घर से फ़ातिहा पढ़ कर ईसाल करने में ज़ियादा सवाब है या क़ब्रिस्तान जा कर ?

जवाब क़ब्रिस्तान में जा के पढ़ने में ज़ियादा सवाब है कि ज़ियारते कुबूर भी सुन्नत है और वहां पढ़ने में अमवात (मुर्दों) का दिल भी बहलता है और जहां कुरआने मजीद पढ़ा जाए रह़मते इलाही उतरती है।[1]

सुवाल क़ब्र को सजदा करने का शरई हुक्म क्या है ?

जवाब क़ब्र को सजदए ता'ज़ीमी करना ह़राम है और अगर इबादत की निय्यत हो तो कुफ़्र है।[2]

सुवाल क्या क़ब्र पर अगरबत्ती या मोमबत्ती जला सकते हैं ?

जवाब क़ब्र पर अगरबत्ती या मोमबत्ती न जलाई जाए कि येह आग है और क़ब्र पर आग रखने से मय्यित को तक्लीफ़ होती है। हां अगर ह़ाज़िरीन को ख़ुश्बू पहुंचाना मक़्सूद हो तो क़ब्र के पास ख़ाली जगह पर अगरबत्ती लगा सकते हैं।[3]

सुवाल मज़ार पर किस त़रह़ ह़ाज़िरी दी जाए ?

जवाब मज़ार शरीफ़ पर क़दमों की त़रफ़ से ह़ाज़िर हो और चेहरे के सामने कम अज़ कम चार हाथ के फ़ासिले पर खड़ा हो और दरमियानी आवाज़ में सलाम अ़र्ज़ करे : اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَاسَيِّدِیْ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهٗ फिर दुरूदे ग़ौसिया[4] तीन बार, सूरए फ़ातिहा व आयतुल कुरसी

1.....फ़तावा रज़विय्या, 9 / 609।

2.....फ़तावा रज़विय्या, 22 / 423 माख़ूज़न।

3.....फ़तावा रज़विय्या, 9 / 525, 482 माख़ूज़न।

4.....दुरूदे ग़ौसिया येह है : اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ مَعْدِنِ الْجُوْدِ وَالْكَرَمِ وَاٰلِهٖ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ

www.dawateislami.net

एक एक बार, सूरए इख़्लास और दुरूदे ग़ौसिया सात सात बार पढ़ कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ करे कि इलाही ! इस पढ़ाई पर मुझे अपने करम के मुताबिक़ सवाब दे और इसे मेरी त़रफ़ से साहिबे मज़ार को नज़्र पहुंचा, फिर अपनी जाइज़ त़लब के लिये साहिबे मज़ार की रूह़ को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अपना वसीला क़रार दे, फिर सलाम कर के वापस आ जाए।[1]

सुवाल क्या मज़ाराते औलिया पर ह़ाज़िरी देने के इरादे से सफ़र करना जाइज़ है ?

जवाब बिल्कुल जाइज़ है क्यूंकि वोह अपने ज़ाइर को नफ़्अ़ पहुंचाते हैं।[2] ज़ियारते कुबूर का हुक्म तो ह़दीसे पाक में दिया गया है। रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मैं ने तुम को ज़ियारते कुबूर से मन्अ़ किया था अब तुम क़ब्रों की ज़ियारत किया करो।[3] और हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ुद भी हर साल शुहदाए ग़ज़वए उहुद के मज़ारात पर तशरीफ़ ले जाते थे।[4]

सुवाल मज़ारात पर ग़लत़ काम होते हों तो क्या ह़ाज़िरी तर्क कर दी जाए ?

जवाब अ़ल्लामा सय्यिद मुह़म्मद अमीन इब्ने आ़बिदीन शामी ने इमाम इब्ने ह़जर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمَا के ह़वाले से लिखा है : मज़ार पर कोई मुन्किरे शरई (ना पसन्दीदा काम) हो मसलन औ़रतों से इख़्तिलात़

---

1 .....फ़तावा रज़विय्या, 9 / 522 मुलख़्ख़सन।

2 ...ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، مطلب فی زیارۃ القبور، ۳/۱۷۸۔

3 ...مسلم، کتاب الجنائز، باب استئذان النبی صلی اللہ علیہ وسلم...الخ، ص۴۸۶، حدیث:۹۷۷۔

4 ...مصنف عبدالرزاق، کتاب الجنائز، باب فی زیارۃ القبور، ۳/۳۸۱، حدیث:۶۷۴۵۔

www.dawateislami.net

(टकराव, मेल जोल) वग़ैरा हो तो इस की वज्ह से ज़ियारत तर्क न की जाए कि ऐसी बातों से नेक काम तर्क नहीं किया जाता बल्कि उसे बुरा जाने और मुमकिन हो तो बुरी बात को ख़त्म करे।[1]

सुवाल मज़ार पर फूल डालना और मज़ार को बोसा देना कैसा है ?

जवाब क़ब्र पर फूल डालना बेहतर है कि जब तक तर रहेंगे तस्बीह करेंगे और मय्यित का दिल बहलेगा।[2] और इमामे अह्ले सुन्नत आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मज़ार को न हाथ लगाए न बोसा दे।[3]

सुवाल क्या इस्लामी बहनें मज़ारात पर ह़ाज़िरी दे सकती हैं ?

जवाब इस्लामी बहनें मज़ारात पर न जाएं बल्कि घर से ही ईसाले सवाब कर दिया करें। औ़रत जब घर से क़ुबूर की त़रफ़ चलने का इरादा करती है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और फ़िरिश्तों की ला'नत में होती है और जब वापस आती है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ला'नत में होती है।[4]

सुवाल दा'वते इस्लामी की "मजलिस मज़ाराते औलिया" किस मक़्सद से बनाई गई है ?

जवाब येह मजलिस ह़त्तल मक़्दूर साह़िबे मज़ार के उ़र्स के मौक़अ़ पर इजतिमाए ज़िक्रो ना'त करती है। मज़ार शरीफ़ के इह़ाते में (बिलख़ुसूस उ़र्स के दिनों में) सुन्नतों भरे मदनी ह़ल्क़े लगाती है जिन में वुज़ू, ग़ुस्ल, तयम्मुम और नमाज़ का त़रीक़ा नीज़ सुन्नतें

1 . . . ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، مطلب فی زیارۃ القبور، ۳/۱۷۸۔

2 . . . ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، مطلب فی وضع الجرید ونحوہ الآس علی القبور، ۳/۱۸۴، ماخوذاً۔

3 . . . . . फ़तावा रज़विय्या, 9 / 522।

4 . . . غنیۃ المتملی، فصل فی الجنائز، ص ۵۹۴، ملتقطاً۔

www.dawateislami.net

सिखाई जाती हैं और आ़शिक़ाने रसूल को बा जमाअ़त नमाज़ की अदाएगी, दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त में शिर्कत, दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत देने या सुनने की तरग़ीब दी जाती है।[1]

क़ुरआने करीम (फ़ज़ाइल व मा'लूमात)

सुवाल कुरआने पाक के कितने और कौन से मश्हूर नाम हैं ?

जवाब कुरआने अ़ज़ीम के कसीर अस्मा हैं जो कि इस किताब की अ़ज़मत व शरफ़ की दलील हैं, इन में से छे मश्हूर अस्मा येह हैं : (1) कुरआन (2) बुरहान (3) फ़ुरक़ान (4) किताब (5) मुस्ह़फ़ (6) नूर।[2]

सुवाल कुरआने पाक की तिलावत की कोई फ़ज़ीलत बयान करें ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : जिस को कुरआन ने मेरे ज़िक्र और मुझ से सुवाल करने से मश्ग़ूल रखा, उसे मैं उस से बेहतर दूंगा जो मांगने वालों को देता हूं। और कलामुल्लाह की फ़ज़ीलत दूसरे कलामों पर वैसी ही है जैसी **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की फ़ज़ीलत उस की मख़्लूक़ पर है।[3]

सुवाल कुरआन के एक ह़र्फ़ की तिलावत के बदले कितनी नेकियां मिलती हैं ?

जवाब जिस ने कुरआने मजीद से एक ह़र्फ़ पढ़ा उस के लिये दस नेकियां हैं।[4]

---

1 .....मज़ाराते औलिया की ह़िकायात, स. 31, मुलख़्ख़सन।

2 .....सिरातुल जिनान, 1 / 11।

3 ...ترمذی، کتاب فضائل القرآن، باب: ۲۵، ۴/۴۲۵، حدیث: ۲۹۳۵۔

4 ...مستدرک حاکم، کتاب فضائل القرآن، باب القرآن مأدبة الله...الخ، ۲/۲۵۶، حدیث: ۲۰۸۴۔

www.dawateislami.net

सुवाल वोह कौन सा खुश नसीब है जो अपने घर के दस अफ़राद की शफ़ाअ़त करेगा ?

जवाब जिस ने कुरआन पढ़ा और उस को याद कर लिया, उस के ह़लाल को ह़लाल समझा और ह़राम को ह़राम जाना। उस के घरवालों में से दस शख़्सों के बारे में **अल्लाह** तआ़ला उस की शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमाएगा जिन पर जहन्नम वाजिब हो चुका था।[1]

सुवाल ह़दीसे पाक में किस सीने को वीरान मकान की त़रह़ क़रार दिया गया है ?

जवाब सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस के सीने में कुछ कुरआन नहीं वोह वीरान मकान की त़रह़ है।[2]

सुवाल ज़बान आसानी से न चलने के बाइ़स रुक रुक कर तक्लीफ़ के साथ कुरआने पाक की तिलावत करने वाले को कितना अज्र मिलता है ?

जवाब ऐसे शख़्स को दो गुना सवाब मिलता है।[3]

सुवाल अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के तय्यार कर्दा मसाह़िफ़ (या'नी कुरआने पाक) की ता'दाद कितनी थी ?

जवाब इमामे अह्ले सुन्नत आ'ला ह़ज़रत शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा रज़विय्या, जिल्द 26, सफ़ह़ा 449 पर नक़्ल फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते उ़स्मान ने सात मुस्ह़फ़ तह़रीर फ़रमाए। एक

---

1 ...ترمذی، کتاب فضائل القرآن، باب ماجاء فی فضل قارئ القرآن، ۴/۴۱۴، حدیث: ۲۹۱۴۔

2 ...ترمذی، کتاب فضائل القرآن، باب ۱۸، ۴/۴۱۹، حدیث: ۲۹۲۲۔

3 ...مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین، باب فضل الماھر بالقرآن...الخ، ص ۴۰۰، حدیث: ۷۹۸۔

www.dawateislami.net

मक्कए मुकर्रमा, एक शाम, एक यमन, एक बह़रैन, एक बसरा और एक कूफ़ा में भेज दिया जब कि एक मदीनए मुनव्वरा में रख लिया।[1]

सुवाल कुरआने करीम में कितने नबियों और रसूलों के नाम मौजूद हैं ?

जवाब कुरआने करीम में 26 नबियों और रसूलों के नाम मौजूद हैं।[2]

सुवाल कुरआने पाक में किस वाक़िए को अह़सनुल क़सस सब से अच्छा बयान कहा गया ?

जवाब सूरए यूसुफ़ में ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के वाक़िए को अह़सनुल क़सस (सब से अच्छा बयान) कहा गया।[3]

सुवाल कुरआने पाक में मुबारक दरख़्त किस दरख़्त को कहा गया है ?

जवाब ज़ैतून के दरख़्त को।[4]

सुवाल उन सुवारियों की ता'दाद और नाम बताएं जिन की सराह़त कुरआने पाक में ख़ास तौर पर मौजूद हैं ?

जवाब वोह चार हैं : (1) ऊंट[5] (2) घोड़ा (3) ख़च्चर और (4) गधा।[6]

सुवाल कुरआने करीम में किन लोगों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपनी अ़जीब निशानी फ़रमाया है ?

जवाब अस्ह़ाबे कह्फ़ को।[7]

---

1 ...اتقان فی علوم القرآن، النوع الثامن عشر، ۱/۱۸۹۔

2 ...روح البیان، پ۲۴، المؤمن، تحت الآیۃ:۷۸، ۸/۲۱۶۔

3 ...پ۱۲، یوسف:۳۔

4 ...پ۱۸، النور:۵۳۔

5 ...پ۳۰، الغاشیۃ:۱۷۔

6 ...پ۱۴، النحل:۸۔

7 ...پ۱۵، الکھف:۹۔

www.dawateislami.net

आयात और सूरतों की मा'लूमात

सुवाल कुरआने पाक की कौन सी आयात सब से पहले नाज़िल हुईं ?

जवाब सब से पहले सूरतुल अ़लक़ की इब्तिदाई पांच आयात नाज़िल हुईं ।[1]

सुवाल कुरआने पाक की कौन सी आयत सब से आख़िर में नाज़िल हुई ?

जवाब सब से आख़िर में सूरतुल बक़रह की येह आयते मुबारका नाज़िल हुई : ﴿وَاتَّقُوْا يَوْمًا تُرْجَعُوْنَ فِيْهِ اِلَى اللّٰهِ ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ﴾ (پ۳، البقرة: ۲۸۱) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और डरो उस दिन से जिस में **अल्लाह** की त़रफ़ फिरोगे और हर जान को उस की कमाई पूरी भर दी जाएगी और उन पर ज़ुल्म न होगा ।[2]

सुवाल सूरए रह़मान में ﴿فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ﴾ कितनी मरतबा आया है ?

जवाब इकतीस (31) बार आया है ?

सुवाल किस आयत में उम्मते मुह़म्मदिय्या को सब से बेहतर उम्मत फ़रमाया गया है ?

जवाब ﴿كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ﴾ (پ۴، آل عمرن: ۱۱۰) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तुम बेहतर हो उन सब उम्मतों में जो लोगों में ज़ाहिर हुईं भलाई का हुक्म देते हो और बुराई से मन्अ़ करते हो और **अल्लाह** पर ईमान रखते हो ।

सुवाल वोह कौन सी सूरत है जो एक ही रात में मुकम्मल नाज़िल हुई थी ?

जवाब सूरए अन्आ़म जो मक्कए मुकर्रमा में नाज़िल हुई ।[3]

---

1 ... بخاری، کتاب التفسیر، باب سورۃ اقرأ باسم ربک الذی خلق، ۳/۳۸۴، حدیث: ۴۹۵۳۔

2 ... تفسیر خازن، پ۳، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۲۸۱، ۱/۲۱۹۔

3 ... تفسیر خازن، سورۃ الانعام، ۲/۲۔

www.dawateislami.net

सुवाल वोह कौन सी पहली सूरत है जिस का रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ए'लान फ़रमाया और ह़रम शरीफ़ में मुशरिकीन के रू बरू पढ़ी ?

जवाब सूरतुन्नज्म ।[1]

सुवाल वोह कौन सी सूरत है जिस की हर आयत में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम आया है ?

जवाब सूरतुल मुजादला ।

सुवाल किस सूरत को एक बार पढ़ने से दस मरतबा कुरआने पाक पढ़ने का सवाब मिलता है ?

जवाब सूरए यासीन शरीफ़ ।[2]

सुवाल किस सूरत की तिलावत करने की फ़ज़ीलत चौथाई कुरआन के बराबर है ?

जवाब ह़दीसे पाक में है : जिस ने सूरत قُلْ يٰۤاَيُّهَا الْكٰفِرُوْن पढ़ी तो गोया कि उस ने कुरआने मजीद के चौथाई ह़िस्से की तिलावत की ।[3]

सुवाल रात के वक़्त सूरए मुल्क की तिलावत की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब ह़दीसे मुबारका का ख़ुलासा है कि जब बन्दा क़ब्र में जाएगा तो अ़ज़ाब उस के क़दमों, सीने, पेट या फिर उस के सर की त़रफ़ से आएगा तो येह सब आ'ज़ा कहेंगे तेरे लिये हमारी त़रफ़ से कोई रास्ता नहीं क्यूंकि येह रात में सूरए मुल्क पढ़ा करता था ।[4]

---

1 ...تفسیر قرطبی، سورۃ النجم، ۹/۶۱۔

2 ...ترمذی، ابواب فضائل القرآن، باب ماجاء فی فضل یٰس، ۴/۴۰۶، حدیث: ۲۸۹۶۔

3 ...معجم صغیر، باب الالف، من اسمہ احمد، ص ۶۱، الجزء الاول، حدیث: ۱۶۵۔

4 ...مستدرک حاکم، کتاب التفسیر، المانعۃ من عذاب القبر سورۃ الملک، ۳/۳۲۲، حدیث: ۳۸۹۲۔

www.dawateislami.net

सुवाल हदीसे पाक में किस सूरत को हर मरज़ के लिये शिफ़ा कहा गया है ?

जवाब सूरए फ़ातिहा, हदीसे पाक में है : सूरए फ़ातिहा हर मरज़ के लिये शिफ़ा है ।[1]

सुवाल हर बुरी चीज़ से हिफ़ाज़त के लिये कौन सी सूरतों की ता'लीम फ़रमाई गई है ?

जवाब नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : सुब्ह शाम तीन तीन बार قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَد ، قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَق और قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاس पढ़ो ! इन की तिलावत करना तुम्हें हर बुरी चीज़ से बचाएगा ।[2]

अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام

सुवाल हज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की चार ख़ास फ़ज़ीलतें बताइये ?

जवाब (1) **अल्लाह** तआला ने हज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को अपने दस्ते कुदरत से तख़्लीक़ फ़रमाया (2) इन में अपनी तरफ़ की ख़ास मुअ़ज़्ज़ज़ रूह फूंकी (3) फ़िरिश्तों को इन के हुज़ूर सजदा करने का हुक्म दिया (4) इन्हें दुन्या की तमाम चीज़ों के नाम सिखाए ।[3]

सुवाल हज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की उ़म्र मुबारक कितनी थी ?

जवाब हज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की उ़म्र शरीफ़ एक हज़ार साल थी ।[4]

---

1 ...دارمی، کتاب فضائل القران، باب فضل فاتحة الکتاب، ۲/۵۳۸، حدیث: ۳۳۷۰۔

2 ...نسائی، کتاب الاستعاذة، باب، ص ۸۶۲، حدیث: ۵۴۳۸۔

3 ...پ ۱۴، الحجر: ۲۹، بخاری، کتاب التفسیر، سورة البقرة، باب قول الله: وعلم ادم...الخ، ۳/۱۶۴، حدیث: ۴۴۷۶۔

4 ...ترمذی، کتاب التفسیر، باب المعوذتین، باب منه، ۵/۲۴۱، حدیث: ۳۳۷۹۔

www.dawateislami.net

सुवाल हज़रते इदरीस عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का नाम क्या है ?

जवाब आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का नाम अख़्नूख़ है और कुतुबे इलाहिय्या की कसरते दर्स के बाइस आप का नाम इदरीस हुवा ।[1]

सुवाल हज़रते नूह عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام कितने साल तक क़ौम को तब्लीग़ फ़रमाते रहे ?

जवाब हज़रते नूह عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام साढ़े नौ सौ साल तक अपनी क़ौम को दा'वत व तब्लीग़ फ़रमाते रहे ।[2]

सुवाल सर मुबारक कट जाने के बा वुजूद कौन से नबी عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام हक़ बयान करते रहे ?

जवाब हज़रते यह्या عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ।[3]

सुवाल सब से पहले ज़िरह किस नबी عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने बनाई ?

जवाब हज़रते दावूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने ।[4]

सुवाल हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की वफ़ात का किस त़रह़ पता चला ?

जवाब आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ह़स्बे आ़दत नमाज़ के लिये अपने अ़सा पर तक्या लगा कर खड़े हुवे और इसी ह़ालत में आप की वफ़ात हो गई । आप की वफ़ात के पूरे एक साल बा'द तक जिन्नात आप की वफ़ात पर मुत्त़लअ़ न हुवे और अपनी ख़िदमतों में मश्ग़ूल रहे यहां तक कि ब हुक्मे इलाही दीमक ने आप का अ़सा खा लिया और आप का जिस्मे मुबारक जो लाठी के सहारे से क़ाइम था ज़मीन पर आया, उस वक़्त जिन्नात को आप की वफ़ात का इ़ल्म हुवा ।[5]

---

1 .....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 16, मरयम, तह़्तुल आयत : 56, स. 577, मुल्तक़त़न ।

2 .....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, हूद, तह़्तुल आयत : 26, स. 421 ।

3 ...تاریخ ابن عساکر، حرف الیاء، ذکر من اسمہ یحیی، ۸۱۳۵-یحیی بن زکریا...الخ، ۲۱۵/۶۴-

4 ...تفسیر مدارک، پ۲۲، سبا، تحت الآیۃ: ۱۱، ص۹۵۷-

5 ...تفسیر خازن، پ۲۲، سبا، تحت الآیۃ: ۱۴، ۵۱۹/۳ خ़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 22 सबा तह़्तुल आयत : 14, स. 795

www.dawateislami.net

सुवाल वोह कौन से मेज़बान हैं जो बिग़ैर मेहमान के खाना तनावुल नहीं फ़रमाते थे ?

जवाब हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ।[1]

सुवाल "ऊलुल अ़ज़्म" रुसुल عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام कौन से हैं ?

जवाब वोह पांच हैं : (1) हज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام (2) हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام (3) हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام (4) हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام और (5) प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ।[2] सब में अफ़्ज़ल हमारे आक़ा व मौला सय्यिदुल मुर्सलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द सब से बड़ा मर्तबा हज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام का है, फिर हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام, फिर हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام और हज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام का, येह पांचों हज़रात बाक़ी तमाम अम्बिया व मुर्सलीन इन्सो मलक व जिन्न व जमीअ़ मख़्लूक़ाते इलाही से अफ़्ज़ल हैं ।[3]

सुवाल किस नबी عَلَيْهِ السَّلَام की दुआ़ से उन के भाई को नुबुव्वत मिली ।

जवाब हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने दुआ़ की, कि या रब मेरे घरवालों में से मेरे भाई हारून को मेरा वज़ीर बना **अल्लाह** तआ़ला ने अपने करम से येह दुआ़ क़बूल फ़रमाई और हज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام को आप की दुआ़ से नबी किया ।[4]

---

1 ...تفسیر خازن، پ۱۲، ہود، تحت الآیۃ: ۶۹، ۳/۳۶۱۔

2 ...تفسیر طبری، پ۲۶، الاحقاف، تحت الآیۃ: ۳۵، ۱۱/۳۰۳۔

3 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1, 1 / 52-54 ।

4 .....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 16, मरयम तह़तुल आयत : 53, स. 577 ।

www.dawateislami.net

सुवाल वोह कौन से नबी عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام हैं जिन्हों ने मां की गोद में अपने नबी होने की ख़बर दी ?

जवाब ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام [1]

सुवाल ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के कुछ मो'जिज़ात बताएं ?

जवाब मुर्दे ज़िन्दा करना, अन्धे और बरस वाले को अच्छा करना, परिन्द पैदा करना, ग़ैब की ख़बर देना वग़ैरा ।[2]

हुस्ने अख़्लाक़

सुवाल किन बातों को दुन्या व आख़िरत के बेहतर अख़्लाक़ फ़रमाया गया है ?

जवाब ह़दीसे मुबारका में है कि हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "क्या मैं तुम्हें दुन्या व आख़िरत के अच्छे अख़्लाक़ न बताऊं ? सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : ज़रूर बताइये । इरशाद फ़रमाया : "जो तुम से तअ़ल्लुक़ तोड़े उस से तअ़ल्लुक़ जोड़ो, जो तुम्हें मह़रूम करे उसे अ़त़ा करो और जो तुम पर ज़ुल्म करे उसे मुआ़फ़ कर दो ।"[3]

सुवाल अख़्लाक़े मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुतअ़ल्लिक़ ह़दीस शरीफ़ में क्या आया है ?

जवाब एक मरतबा किसी ने उम्मुल मोमिनीन सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़े करीमा के बारे में पूछा तो इरशाद फ़रमाया : "आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

1 ...پ۱۶، مریم: ۳۰۔

2 .....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 1, अल बक़रह, तह़तुल आयत : 87, स. 30 ।

3 ...شعب الایمان، باب فی حسن الخلق، ۶/۳۱۲، حدیث: ۸۳۰۰۔

www.dawateislami.net

का ख़ुल्क़ कुरआन है।[1] क्या तुम ने कुरआन में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमान नहीं पढ़ा : ﴿وَاِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ﴾ (پ۲۹، القلم:۴) तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक तुम्हारी ख़ू बू बड़ी शान की है।"[2]

सुवाल हुस्ने अख़्लाक़ का सर चश्मा क्या है ?

जवाब उम्मुल मोमिनीन सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का फ़रमान है : رَأْسُ مَكَارِمِ الْاَخْلَاقِ الْحَيَاءُ या'नी हुस्ने अख़्लाक़ का सर चश्मा ह़या है।[3]

सुवाल अच्छे अख़्लाक़ गुनाहों पर क्या असर डालते हैं ?

जवाब रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अच्छे अख़्लाक़ गुनाहों को ऐसे पिघला देते हैं जैसे सूरज की ह़रारत बर्फ़ को पिघला देती है।"[4]

सुवाल हुस्ने अख़्लाक़ वाला मोमिन किस के दरजे को पहुंच जाता है ?

जवाब ह़दीसे पाक में है : "मोमिन अच्छे अख़्लाक़ की बदौलत दिन को रोज़ा रखने और रात को इ़बादत करने वाले का दर्जा पा लेता है।"[5]

सुवाल ख़ादिमों को रोज़ाना कितनी बार मुआ़फ़ कर देना चाहिये ?

जवाब बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की गई : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हम ख़ादिम को कितनी बार मुआ़फ़ कर दिया करें तो हुज़ूर नबिय्ये

---

1 ...या'नी हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कुरआने करीम में बयान कर्दा तमाम आदाब व अह़काम और अख़्लाक़ व अच्छाइयों के पैकर थे। (النهاية في غريب الحديث والاثر، باب الخاء مع اللام، ۲/۶۷)

2 ...مسند احمد، مسند عائشة، ۹/۳۸۰، حديث:۲۴۶۵۵۔

3 ...مكارم الاخلاق لابن ابی الدنیا، باب ذکر الحیاء وماجاء فیه، ص ۶۲۔

4 ...شعب الایمان، باب فی حسن الخلق، ۶/۲۴۷، حدیث:۸۰۳۶۔

5 ...ابوداود، کتاب الادب، باب فی حسن الخلق، ۴/۳۳۲، حدیث:۴۷۹۸۔

www.dawateislami.net

पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : दिन में 70 मरतबा मुआ़फ़ कर दिया करो (या'नी हर दिन उसे बहुत दफ़्अ़ मुआ़फ़ी दो)।[1]

सुवाल क्या अख़्लाक़ के अच्छा होने के लिये कोई दुआ़ भी है ?

जवाब जी हां, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह दुआ़ फ़रमाया करते थे : اَللّٰهُمَّ اَحْسَنْتَ خَلْقِيْ فَاَحْسِنْ خُلُقِيْ ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तू ने मेरी सूरत को अच्छा किया पस मेरे अख़्लाक़ को भी अच्छा फ़रमा।[2]

सुवाल इन्सान को दी गई सब से बेहतरीन चीज़ क्या है ?

जवाब बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की गई : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! इन्सान को दी गई सब से बेहतरीन चीज़ क्या है ? इरशाद फ़रमाया : "अच्छे अख़्लाक़।"[3]

सुवाल सब से ज़ियादा जन्नत में दाख़िल करने वाला अ़मल कौन सा है ?

जवाब ह़दीसे पाक में फ़रमाया गया कि सब से ज़ियादा जन्नत में दाख़िल करने वाला अ़मल तक़्वा और हुस्ने अख़्लाक़ है।[4]

सुवाल कौन सी चार ख़ूबियां हों तो किसी दुन्यावी मह़रूमी का नुक़्सान नहीं पहुंचता ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से इरशाद फ़रमाया : "अगर तुम में चार ख़ूबियां हों तो दुन्या की किसी शै का फ़ौत होना तुम्हें

1 ...ابوداود، کتاب الادب، باب ماجاء فی حق المملوک، ۴/۴۳۹، حدیث: ۵۱۶۴۔

2 ...مسند احمد، مسند عبداللہ بن مسعود، ۲/۶۶، حدیث: ۳۳۶۷۔

3 ...معجم اوسط، ۱/۱۱۷، حدیث: ۳۶۷۔

4 ...ابن ماجہ، کتاب الزہد، باب ذکر الذنوب، ۴/۴۸۹، حدیث: ۴۲۴۶۔

www.dawateislami.net

नुक़्सान नहीं देगा : (1) अमानत की हिफ़ाज़त (2) सच बोलना (3) हुस्ने अख़्लाक़ और (4) पाकीज़ा खाना।"[1]

सुवाल हदीसे पाक में मीज़ाने अ़मल में सब से वज़्नी अ़मल किसे कहा गया है ?

जवाब हुस्ने अख़्लाक़।[2]

सुवाल हुस्ने अख़्लाक़ का सब से ज़ियादा हक़दार कौन है ?

जवाब एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे हुस्ने अख़्लाक़ का ज़ियादा हक़दार कौन है ? इरशाद फ़रमाया : "तुम्हारी मां।" दोबारा अ़र्ज़ की : फिर कौन ? इरशाद फ़रमाया : "तुम्हारी मां।" तीसरी बार अ़र्ज़ करने पर भी येही इरशाद फ़रमाया। चौथी मरतबा अ़र्ज़ की : फिर कौन ? तो इरशाद फ़रमाया : "तुम्हारा बाप, फिर क़रीब वाले का ज़ियादा हक़ है फिर जो उस के बा'द क़रीबी हो।"[3]

ख़ौफ़े ख़ुदा

सुवाल ख़ौफ़े ख़ुदा का मत़लब क्या है ?

जवाब **अल्लाह** तआ़ला की बे नियाज़ी, उस की नाराज़ी, उस की गिरिफ़्त और उस की त़रफ़ से दी जाने वाली सज़ाओं का सोच कर इन्सान का दिल घबरा जाए तो उसे ख़ौफ़े ख़ुदा कहते हैं।[4]

---

1 ...مسند احمد، مسند عبد اللہ بن عمرو بن العاص، ۲/۵۹۲، حدیث: ۶۶۶۴۔

2 ...الادب المفرد، باب حسن الخلق، ص ۹۱، رقم: ۲۷۳۔

3 ...بخاری، کتاب الادب، باب من احق الناس بحسن الصحبۃ، ۴/۹۳، حدیث: ۵۹۷۱۔

4 .....ख़ौफ़े ख़ुदा, स. 14 احیاء العلوم، کتاب الخوف والرجاء، ۴/۱۹۱ ماخوذاً۔

www.dawateislami.net

सुवाल जो बारगाहे इलाही में खड़ा होने से डरे उस के लिये क्या इन्आ़म है ?

जवाब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ ۚ﴾ (پ۲۷، الرحمٰن: ۴۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो अपने रब के हुज़ूर खड़े होने से डरे उस के लिये दो जन्नतें हैं।

सुवाल हिक्मत का सर चश्मा क्या है ?

जवाब ह़दीसे पाक में है : "हिक्मत का सर चश्मा ख़ौफ़े ख़ुदा है।"(1)

सुवाल ख़ौफ़ का कम से कम दर्जा कौन सा है ?

जवाब ख़ौफ़ का कम से कम दर्जा जिस का असर आ'माल में ज़ाहिर हो येह है कि बन्दा उन तमाम कामों से बाज़ आ जाए जो शरअ़न ममनूअ़ हैं।(2)

सुवाल सब से कामिल अ़क़्ल वाला कौन है ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "सब से कामिल अ़क़्लमन्द वोह है जो सब से ज़ियादा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ रखने वाला हो और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जिन चीज़ों के करने का और जिन से बचने का हुक्म दिया है उन में सब से अच्छी त़रह़ ग़ौर करने वाला हो।"(3)

सुवाल जो दुन्या में बे ख़ौफ़ रहा आख़िरत में उस के साथ क्या होगा ?

---

1 ...شعب الایمان، باب فی الخوف من اللہ تعالٰی، ۱/۴۷۰، حدیث: ۷۴۳۔

2 ...احیاء العلوم، کتاب الخوف والرجاء، ۴/۱۹۲۔

3 ...مسند حارث، کتاب الادب، باب ماجاء فی العقل، ۲/۸۰۴، حدیث: ۸۲۰۔

www.dawateislami.net

जवाब हदीसे पाक में है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : मैं अपने बन्दे के दिल में दो ख़ौफ़ और दो अम्न जम्अ़ नहीं करूंगा, अगर वोह दुन्या में मुझ से बे ख़ौफ़ रहा तो मैं उसे क़ियामत के दिन डराऊंगा और अगर वोह दुन्या में मुझ से डरा तो मैं उसे क़ियामत के दिन बे ख़ौफ़ कर दूंगा।[1]

सुवाल ख़ौफ़े ख़ुदा से रौंगटे खड़े होने की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब हदीसे पाक में है : जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से बन्दे के रौंगटे खड़े हो जाएं तो उस के गुनाह ऐसे झड़ते हैं जैसे ख़ुश्क दरख़्त के पत्ते झड़ते हैं।[2]

सुवाल वोह कौन हैं कि ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब उन के सीने की गड़ गड़ाहट एक मील से सुनाई देती थी ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَیْہِ السَّلَام जब नमाज़ के लिये खड़े होते तो ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब गिर्या व ज़ारी से सीने में होने वाली गड़ गड़ाहट एक मील के फ़ासिले से सुनाई देती।[3]

सुवाल वोह कौन हैं कि ख़ौफ़े ख़ुदा में ब कसरत रोने के सबब उन का लक़ब ही उन का नाम हो गया ?

जवाब हज़रते नूह عَلَیْہِ السَّلَام। हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : अपने गुनाहों पर नौहा करना (रोना)

---

1 ...زھد لابن مبارک، باب ماجاء فی الخشوع والخوف، ص ۵۰، حدیث: ۱۵۷۔

2 ...شعب الایمان، باب فی الخوف من اللہ تعالٰی، ۱/۴۹۱، حدیث: ۸۰۳۔

3 ...احیاء العلوم، کتاب الخوف والرجاء، ۴/۲۲۴۔

www.dawateislami.net

ऐन इबादत है, हज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام ख़ौफ़े ख़ुदा में इतना रोते थे कि आप का लक़ब ही नूह़ हो गया वरना आप का नाम यश्कुर है।[1]

सुवाल ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब रोने की क्या फ़ज़ीलत बयान हुई है ?

जवाब हुज़ूर सरवरे कौनैन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस मोमिन बन्दे की आंख से ख़ौफ़े ख़ुदा के बाइस मख्खी के पर बराबर आंसू चेहरे पर बह निकले तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को दोज़ख़ पर ह़राम फ़रमा देता है।"[2]

सुवाल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को कौन से दो क़त़रे सब से ज़ियादा पसन्दीदा हैं ?

जवाब ह़दीसे पाक में है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को ख़ौफ़े ख़ुदा में बहने वाले आंसू का क़त़रा और राहे ख़ुदा में बहने वाले ख़ून का क़त़रा सब से ज़ियादा पसन्द है।"[3]

सुवाल क़ियामत में कौन सी चार आंखें नहीं रोएंगी ?

जवाब मरवी है कि क़ियामत में चार आंखों के सिवा तमाम आंखें रोएंगी : (1) वोह आंख जो दुन्या में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से रोई। (2) वोह आंख जो जिहाद में ज़ख़्मी हुई। (3) वोह आंख जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़राम कर्दा चीज़ों से झुकी रही और (4) वोह आंख जो (इबादत में) रातों को जागती रही।[4]

---

1 .....मिरआतुल मनाजीह़, 2 / 505।

2 ...ابن ماجه، كتاب الزهد، باب الحزن والبكاء، ۴/۴۶۷، حديث: ۴۱۹۷۔

3 ...ترمذی، كتاب فضائل الجهاد، باب ماجاء في فضل المرابط، ۳/۲۵۳، حديث: ۱۶۷۵۔

4 ...كنز العمال، كتاب المواعظ...الخ، الباب الاول، الفصل الرابع، ۸/۳۶۸، الجزء: ۱۵، حديث: ۴۳۴۶۱۔

www.dawateislami.net

सिलए रेह़्मी

सुवाल सिलए रेह़्मी क्या है ?

जवाब सिलए रेह़्म के मा'ना रिश्ते को जोड़ना है या'नी रिश्ते वालों के साथ नेकी और सुलूक करना ।[1]

सुवाल कुरआने करीम में सिलए रेह़्मी से मुतअ़ल्लिक़ क्या इरशाद हुवा ?

जवाब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِیْ تَسَآءَلُوْنَ بِهٖ وَالْاَرْحَامَ ؕ﴾ (پ۴، النساء:۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** से डरो जिस के नाम पर मांगते हो और रिश्तों का लिह़ाज़ रखो ।

सुवाल सिलए रेह़्मी और क़त़्ए़ रेह़्मी का शरीअ़त में क्या हुक्म है ?

जवाब सिलए रेह़्मी वाजिब है और क़त़्ए़ रेह़्म ह़राम है ।[2]

सुवाल सिलए रेह़्मी करने की बा'ज़ सूरतें बयान कीजिये ?

जवाब रिश्तेदारों को हदया व तोह़्फ़ा देना और अगर उन को किसी बात में तुम्हारी इआ़नत दरकार हो तो उस काम में उन की मदद करना, उन्हें सलाम करना, उन की मुलाक़ात को जाना, उन के पास उठना बैठना, उन से बात चीत करना उन के साथ लुत़्फ़ो मेहरबानी से पेश आना ।[3]

सुवाल रिश्तेदारी तोड़ने वाले की क्या सज़ा है ?

जवाब रिश्तेदारी को काटने वाला जन्नत में (इब्तिदाअन) दाख़िल नहीं होगा ।[4]

---

1 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 16, 3 / 558 ।

2 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 16, 3 / 558 ।

3 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 16, 3 / 558 ।

4 ...بخاری، کتاب الادب، باب اثم القاطع، ۴/۹۷، حدیث: ۵۹۸۴۔

www.dawateislami.net

सुवाल हदीसे कुदसी में सिलए रेह़मी के मुतअ़ल्लिक़ क्या आया है ?

जवाब हदीसे कुदसी में है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने रेह़म (या'नी रिश्तेदारी) से फ़रमाया : जो तुझे मिलाएगा मैं उसे मिलाऊंगा और जो तुझे काटेगा मैं उसे काटूंगा।[1]

सुवाल हदीसे पाक में सिलए रेह़मी की क्या फ़ज़ीलत आई है ?

जवाब हुज़ूर ताजदारे नुबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिसे पसन्द हो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की उ़म्र दराज़ करे, उस के रिज़्क़ में इज़ाफ़ा करे और उस से बुरी मौत को दूर फ़रमाए तो उसे चाहिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरे और सिलए रेह़मी (रिश्तेदारों से हुस्ने सुलूक) करे।[2]

सुवाल रिश्तेदार को सदक़ा देने की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : रिश्तेदार पर किये जाने वाले सदक़े का सवाब दो गुना कर दिया जाता है।[3]

सुवाल सिलए रेह़मी के फ़ाएदे बयान कीजिये ?

जवाब (1) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा ह़ासिल होती है (2) लोगों की ख़ुशी का सबब है (3) मुसलमान उस शख़्स की ता'रीफ़ करते हैं (4) शैत़ान को उस से रन्ज पहुंचता है (5) उ़म्र बढ़ती है (6) रिज़्क़ में बरकत होती है और (7) आपस में मह़ब्बत बढ़ती है।[4]

सुवाल क्या बदले के त़ौर पर हुस्ने सुलूक करने वाला भी सिलए रेह़मी करने वाला है ?

---

1 . . . بخاری، کتاب الادب، باب من وصل وصله الله، ۴/۹۸، حدیث: ۵۹۸۸۔

2 . . . مستدرک، کتاب البر والصلة، باب من سره ان یدفع عنه میتة السوء... الخ، ۵/۲۲۲، حدیث: ۷۳۶۲۔

3 . . . معجم کبیر، یحیی بن ایوب المصری . . . الخ، ۸/۲۰۷، حدیث: ۷۸۳۴۔

4 .....फूफी से हाथों हाथ सुल्ह़ कर ली, स. 6 माख़ूज़न।

www.dawateislami.net

जवाब जी नहीं, ह़दीसे पाक में है : बदला देने वाला सिलए रेह़्मी करने वाला नहीं बल्कि सिलए रेह़्मी करने वाला वोह है कि जब उस से रिश्ता तोड़ा जाए तो वोह उसे जोड़े ।[1]

सुवाल क्या क़त़्ए़ रेह़्मी करने वाला क़ौम के लिये भी नुक़्सान देह होता है ?

जवाब जी हां, मरवी है : उस क़ौम पर रह़मते इलाही का नुज़ूल नहीं होता जिस में क़ात़ेए़ रेह़्म हो ।[2]

सुवाल जिन रिश्तेदारों के साथ सिलए रेह़्मी वाजिब है वोह कौन हैं ?

जवाब बा'ज़ उ़लमा ने फ़रमाया : वोह ज़ू रेह़्म मह़रम हैं और बा'ज़ ने फ़रमाया : "इस से मुराद ज़ू रेह़्म[3] हैं, मह़रम हों या न हों ।" और ज़ाहिर येही क़ौमे दुवुम है ।[4]

सब्रो शुक्र

सुवाल सब्र किसे कहते हैं ?

जवाब नफ़्स को उस चीज़ पर रोकना जिस पर रुकने का अ़क़्ल और शरीअ़त तक़ाज़ा कर रही हो या नफ़्स को उस चीज़ से बाज़ रखना जिस से रुकने का अ़क़्ल और शरीअ़त तक़ाज़ा कर रही हो सब्र कहलाता है ।[5]

---

1 . . . بخاری، کتاب الادب، باب لیس الواصل بالمکافیء، ۴/۹۸، حدیث: ۵۹۹۱۔

2 . . . معجم کبیر، خطبۃ ابن مسعود ومن کلامہ، ۹/۱۵۸، حدیث: ۸۷۹۳۔

3 .....जिन का रिश्ता ब ज़रीअ़ए मां बाप के हो उसे "ज़ी रेह़्म" कहते हैं, येह तीन त़रह़ के हैं : एक बाप के क़राबत दार जैसे दादा, दादी, चचा, फूफी वग़ैरा, दूसरे मां के जैसे नाना, नानी, मामूं, ख़ाला, अख़्याफ़ी भाई (या'नी जिन का बाप अलग अलग हो और मां एक हो) वग़ैरा, तीसरे दोनों के क़राबत दार जैसे ह़क़ीक़ी भाई बहन । (तफ़्सीरे नईमी, 1 / 497)

4 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 16, 3 / 558 ।

5 .....तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, पारह 2, अल बक़रह, तह़्तुल आयत : 153, 1 / 246 ।

www.dawateislami.net

सुवाल सब्र की कितनी अक़्साम हैं ?

जवाब बुन्यादी तौर पर सब्र की दो क़िस्में हैं : (1) बदनी सब्र जैसे बदनी मशक़्क़तें बरदाश्त करना और इन पर साबित क़दम रहना। (2) तबई ख़्वाहिशात और उन के तक़ाज़ों से सब्र करना। पहली क़िस्म का सब्र जब शरीअ़त के मुवाफ़िक़ हो तो क़ाबिले ता'रीफ़ होता है लेकिन मुकम्मल तौर पर ता'रीफ़ के क़ाबिल सब्र की दूसरी क़िस्म है।[1]

सुवाल किस सब्र को शरीअ़त ने ह़राम क़रार दिया है ?

जवाब तक्लीफ़ देह फ़े'ल जो शरअ़न ममनूअ़ है इस पर सब्र की मुमानअ़त है। मसलन किसी शख़्स या उस के बेटे का हाथ ना ह़क़ काटा जाए तो उस शख़्स का ख़ामोश रहना और सब्र करना, यूंही कोई शख़्स शहवत से मग़लूब हो कर बुरे इरादे से उस के घरवालों की त़रफ़ बढ़े तो उस की ग़ैरत भड़क उठे लेकिन ग़ैरत का इज़्हार न करे और घरवालों के साथ जो कुछ हो रहा है उस पर सब्र करे, शरीअ़त ने इस सब्र को ह़राम क़रार दिया है।[2]

सुवाल किस चीज़ से सब्र करना हर आदमी पर फ़र्ज़ है ?

जवाब ममनूआ़ते शरइय्या से सब्र करना (रुकना) हर आदमी पर फ़र्ज़ है।[3]

सुवाल शुक्र किसे कहते हैं ?

जवाब किसी के एह़सान व ने'मत की वज्ह से ज़बान, दिल या आ'ज़ा के साथ उस की ता'ज़ीम करना शुक्र कहलाता है।[4]

---

1 ...احیاءالعلوم، کتاب الصبر والشکر، ۴/۸۲۔

2 ...احیاءالعلوم، کتاب الصبر والشکر، ۴/۸۵۔

3 ...احیاءالعلوم، کتاب الصبر والشکر، ۴/۸۵۔

4 .....तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, पारह 1, अल फ़ातिह़ा, तह़तुल आयत : 1, 1 / 43।

www.dawateislami.net

सुवाल ने'मतों पर शुक्र अदा करने का क्या हुक्म है ?

जवाब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों पर शुक्र अदा करना वाजिब है ।[1]

सुवाल शुक्र करने पर **अल्लाह** तआ़ला ने बन्दों से क्या वा'दा फ़रमाया है ?

जवाब **अल्लाह** तआ़ला ने बन्दों के शुक्र पर ने'मत में इज़ाफ़े का वा'दा फ़रमाया । इरशादे बारी तआ़ला है : ﴿لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَاَزِيْدَنَّكُمْ﴾ (پ۱۳، ابراھیم:۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अगर एह़सान मानोगे तो मैं तुम्हें और दूंगा ।

सुवाल अह्ले जन्नत अपनी गुफ़्तगू का आग़ाज़ किस बात से करेंगे ?

जवाब हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जन्नत वालों की गुफ़्तगू के आग़ाज़ में "शुक्र" को रखा है, इरशादे बारी तआ़ला है :

﴿وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ صَدَقَنَا وَعْدَهٗ﴾ (پ۲۴، الزمر:۷۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और वोह कहेंगे सब ख़ूबियां **अल्लाह** को जिस ने अपना वा'दा हम से सच्चा किया ।[2]

सुवाल ने'मत का इज़्हार करना कैसा है ?

जवाब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मत का इज़्हार इख़्लास के साथ हो तो येह भी शुक्र है । हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं : **अल्लाह** को पसन्द है कि बन्दे पर उस की ने'मत ज़ाहिर हो ।[3]

सुवाल क्या ईदे मीलादुन्नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मनाना भी शुक्र गुज़ारी है ?

---

1 .....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 2, अल बक़रह, तह़तुल आयत : 172 ।

2 ...احیاء العلوم، کتاب الصبر والشکر، ۴/۹۹۔

3 ...ترمذی، کتاب الادب، ۴/۳۷۴، حدیث:۲۸۲۸۔

www.dawateislami.net

जवाब जी हां, सदरुल अफ़ाज़िल नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं : ईदे मीलाद मनाना जाइज़ है क्यूंकि येह **अल्लाह** तआ़ला की सब से बड़ी ने'मत की यादगार व शुक्र गुज़ारी है।[1]

सुवाल बन्दे को कब "शुक्र करने वाला" कहा जाएगा ?

जवाब बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों का इस्ति'माल फ़रमां बरदारी में करे तो शुक्र करने वाला होगा क्यूंकि अपने मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ की मरज़ी के मुवाफ़िक़ काम किया और अगर उस की नाफ़रमानी में इस्ति'माल करे तो नाशुक्रा कहलाएगा।[2]

सुवाल ह़दीसे पाक में खा कर शुक्र अदा करने वाले के लिये क्या फ़रमाया गया है ?

जवाब ह़दीसे पाक में है : खा कर शुक्र अदा करने वाला सब्र करने वाले रोज़ादार की त़रह़ है।[3]

तौबा व इस्तिग़फ़ार

सुवाल तौबा किस चीज़ का नाम है ?

जवाब तौबा गुनाहों से **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में रुजूअ़ का नाम है।[4]

सुवाल तौबा का क्या हुक्म है ?

---

1 .....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 6, अल माइदह, तह़तुल आयत : 3, स. 208 माख़ूज़न।

2 ...احیاء العلوم، کتاب الصبر والشکر، ۴/۱۰۹۔

3 ...ترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ، باب:۴۳، ۴/۲۱۹، حدیث:۲۴۹۴۔

4 ...احیاء العلوم، کتاب التوبۃ، ۴/۳۔

www.dawateislami.net

जवाब जूंही गुनाह सादिर हो फ़ौरन तौबा कर लेना वाजिब है ख़्वाह सग़ीरा गुनाह ही क्यूं न हो।[1]

सुवाल कुफ़्र से तौबा कब तक क़बूल है ?

जवाब जब तक रूह गले तक न आ जाए क़बूल है।[2]

सुवाल तौबा के अरकान कितने हैं ? उन की वज़ाहत कीजिये ?

जवाब तौबा के तीन रुक्न हैं : (1) ए'तिराफ़े जुर्म (2) नदामत (3) अ़ज़्मे तर्क (या'नी उस गुनाह को तर्क कर देने का पक्का इरादा) अगर गुनाह क़ाबिले तलाफ़ी हो तो उस की तलाफ़ी (या'नी नुक़्सान का बदला) भी लाज़िम मसलन तारिकुस्सलात (या'नी बे नमाज़ी) के लिये पिछली नमाज़ों की क़ज़ा भी लाज़िम है।[3]

सुवाल तौबा में ताख़ीर का क्या नुक़्सान है ?

जवाब आदमी गुनाह को मुक़द्दम करता है और तौबा को मुअख़्ख़र, येही कहता रहता है : अब तौबा करूंगा, अब अ़मल करूंगा, यहां तक कि मौत आ जाती है और वोह अपनी बदियों में मुब्तला होता है।[4]

सुवाल ह़ज़रते लुक़्मान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने बेटे को तौबा के मुतअ़ल्लिक़ क्या नसीह़त फ़रमाई ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना लुक़्मान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان ने अपने बेटे से फ़रमाया : ऐ जाने पिदर ! तौबा में ताख़ीर न करना क्यूंकि मौत अचानक आ

---

1 ...شرح نووی، جز:۱۷، ۹/۵۹۔

2 ...ابن ماجہ، ۴/۴۹۲، حدیث: ۴۲۵۳۔ مرقاۃ المفاتیح، ۵/۱۷۴، تحت الحدیث: ۲۳۴۳۔

3 .....ग़ीबत की तबाहकारियां, स. 299। ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 1, अल बक़रह, तह़तुल आयत : 37, स. 16।

4 .....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 29, अल क़ियामह, तह़तुल आयत : 5, स. 1070।

www.dawateislami.net

जाती है जो तौबा की त़रफ़ सबक़त नहीं करता और आज कल पर टालता रहा वोह बड़े ख़त़रात में मुब्तला होगा।[1]

सुवाल तौबा किस पर लाज़िम है ?

जवाब तौबा हर फ़र्दे बशर पर लाज़िम है।[2]

सुवाल हर फ़र्दे बशर को तौबा का हुक्म क्यूं है ?

जवाब क्यूंकि कोई आदमी कुसूर से ख़ाली नहीं, जब आदमी आ'ज़ा के गुनाह से मह़फ़ूज़ रहे तो दिल के इरादे से नहीं बचता, अगर दिल में भी इरादा न हो तो वस्वसए शैत़ान से नहीं बच पाता कि वोह ख़यालात दिल में डालता रहता है जिन से यादे इलाही में ग़फ़्लत होती है वग़ैरा वग़ैरा येह सब नुक़्सान ही हैं, अस्ल नुक़्सान किसी त़रीक़े से हो हर एक में मौजूद है, अलबत्ता मिक़्दारे नुक़्सान में फ़र्क़ है।[3]

सुवाल बा बरकत जगहों में जा कर तौबा करना कैसा है ?

जवाब मक़ामाते मुतबर्रका जो रह़मते इलाही के मूरिद (उतरने की जगह) हों वहां तौबा करना और त़ाअ़त बजा लाना समराते नेक (अच्छा नतीजा) और सुरअ़ते क़बूल (जल्दी क़बूल होने) का सबब होता है।[4]

सुवाल क्या तौबा से तमाम छोटे बड़े गुनाह मुआ़फ़ हो जाते हैं ?

जवाब जी हां ! गुनाह ख़्वाह सग़ीरा हों या कबीरा, जब बन्दा इन से तौबा करता है तो **अल्लाह** तबारक व तआ़ला अपने फ़ज़्लो रह़मत से उन सब को मुआ़फ़ फ़रमाता है।[5]

---

1 ...احیاء العلوم، کتاب التوبۃ، ۴/۱۵۔

2 ...احیاء العلوم، کتاب التوبۃ، ۴/۱۱-۱۲۔

3 ...احیاء العلوم، کتاب التوبۃ، ۴/۱۲۔

4 .....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 1, अल बक़रह, तह़तुल आयत : 58, स. 21।

5 .....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 9, अल आ'राफ़, तह़तुल आयत : 153, स. 319।

www.dawateislami.net

सुवाल क्या तौबा व इस्तिग़फ़ार से उ़म्र बढ़ती और रिज़्क़ वसीअ़ होता है ?

जवाब जी हां ! इख़्लास के साथ तौबा व इस्तिग़फ़ार करना दराज़िये उ़म्र (लम्बी ज़िन्दगी) व कशाइशे रिज़्क़ (रिज़्क़ में वुस्अ़त) के लिये बेहतर अ़मल है ।[1]

सुवाल सच्ची तौबा की अ़लामत क्या है ?

जवाब सच्ची तौबा वोह है जिस का असर तौबा करने वाले के आ'माल में ज़ाहिर हो और उस की ज़िन्दगी त़ाअ़तों और इ़बादतों से मा'मूर हो जाए और वोह गुनाहों से मुज्तनिब (बचा) रहे ।[2]

इ़ल्म के फ़ज़ाइल

सुवाल ह़दीस शरीफ़ में इ़ल्म की क्या अहम्मिय्यत बयान हुई है ?

जवाब ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : इ़ल्म ह़ासिल करना हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है ।[3]

सुवाल हर मुसलमान पर कितना इ़ल्म सीखना फ़र्ज़ है ?

जवाब हर मुसलमान आ़क़िल व बालिग़ मर्द व औ़रत पर उस की मौजूदा ह़ालत के मुत़ाबिक़ मस्अले सीखना फ़र्ज़े ऐ़न है । इसी त़रह़ हर एक के लिये मसाइले ह़लाल व ह़राम भी सीखना फ़र्ज़ है । नीज़ मसाइले इ़ल्मे क़ल्ब या'नी फ़राइज़े क़ल्बिय्या (बात़िनी फ़राइज़) मसलन आ़जिज़ी व इख़्लास और तवक्कुल वग़ैरहा और इन को ह़ासिल

1.....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 11, हूद, स. 415, तह़तुल आयत : 3 ।

2.....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 28, अत्तह़रीम, स. 1038, तह़तुल आयत : 8 ।

3.....ابن ماجه، کتاب السنة، باب فضل العلماء والحث علی طلب العلم، ۱/۱۴۶، حدیث: ۲۲۴۔

www.dawateislami.net

करने का त़रीक़ा और बात़िनी गुनाह मसलन तकब्बुर, रियाकारी, ह़सद वग़ैरहा और इन का इलाज सीखना हर मुसलमान पर अहम फ़राइज़ से है।[1]

सुवाल इल्म ह़ासिल करने की बेहतरीन उ़म्र क्या है ?

जवाब इल्म ह़ासिल करने की बेहतरीन उ़म्र जवानी है कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : **अल्लाह** तआ़ला किसी नबी को नहीं भेजता मगर इस ह़ाल में कि वोह जवान होता है और किसी को जो इल्म दिया जाता है उस के लिये बेहतर ज़माना येह है कि वोह जवान हो।[2]

सुवाल इल्म की त़लब में निकलने वाले की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो इल्म की तलाश में निकला वोह अपने लौटने तक राहे ख़ुदा में है।[3]

सुवाल अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام की मीरास क्या है और उन के वारिस कौन हैं ?

जवाब ह़दीसे पाक में है : बेशक उ़लमा ह़ज़राते अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام के वारिस हैं और ह़ज़राते अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام दिरहम व दीनार का नहीं इल्म का वारिस बनाते हैं तो जिस ने इसे लिया उस ने बहुत बड़ा ह़िस्सा पा लिया।[4]

1.....फ़तावा रज़विय्या, 23 / 624 मुलख़्ख़सन।

2 ...الفقیہ والمتفقہ، باب التفقہ فی الحدائۃ...الخ، ۲/۱۷۷، رقم: ۸۱۴۔

3 ...ترمذی، کتاب العلم، باب فضل طلب العلم، ۴/۲۹۴، حدیث: ۲۶۵۶۔

4 ...ابوداود، کتاب العلم، باب الحث علی طلب العلم، ۳/۴۴۴، حدیث: ۳۶۴۱۔

www.dawateislami.net

सुवाल आ़लिमे दीन की तौहीन करने का शरई हुक्म क्या है ?

जवाब अगर आ़लिम को इस लिये बुरा कहता है कि वोह आ़लिम है जब तो सरीह़ काफ़िर है और अगर ब वज्हे इ़ल्म उस की ता'ज़ीम फ़र्ज़ जानता है मगर अपनी किसी दुन्यवी ख़ुसूमत के बाइ़स बुरा कहता है गाली देता तह़क़ीर करता है तो सख़्त फ़ासिक़ फ़ाजिर है अगर बे सबब रन्ज रखता है तो मरीज़ुल क़ल्ब ख़बीसुल बातिन है और इस के कुफ़्र का अन्देशा है ।[1]

सुवाल ह़दीसे पाक में आ़लिम की गुस्ताख़ी पर क्या वई़द आई है ?

जवाब हुज़ूर मुअ़ल्लिमे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तीन आदमियों की तह़क़ीर नहीं करता मगर मुनाफ़िक़ : एक वोह जिसे इस्लाम में बुढ़ापा आया, दूसरा इ़ल्म वाला और तीसरा आ़दिल बादशाहे इस्लाम ।[2]

सुवाल किस की ता'ज़ीम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ता'ज़ीम है ?

जवाब हुज़ूर ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बूढ़े मुसलमान, क़ुरआन में तजावुज़ न करने वाले आ़लिम और इन्साफ़ करने वाले बादशाहे इस्लाम की ता'ज़ीम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ता'ज़ीम का एक ह़िस्सा है ।[3]

सुवाल किस इ़ल्म की आरज़ू करनी चाहिये ?

जवाब हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : इ़ल्मे नाफ़ेअ़ की आरज़ू करो और बे फ़ाएदा इ़ल्म से पनाह मांगो ।[4]

---

1 .....फ़तावा रज़विय्या, 21 / 129 ।

2 ...معجم کبیر، عبیداللہ بن زحر...الخ، ۸/۲۰۲، حدیث: ۷۸۱۹۔

3 ...ابوداود، کتاب الادب، باب فی تنزیل الناس منازلہم، ۴/۳۴۴، حدیث: ۴۸۴۳۔

4 ...ابن ماجہ، کتاب الدعاء، باب ماتعوذ منہ رسول اللہ، ۴/۲۷۰، حدیث: ۳۸۴۳۔

www.dawateislami.net

सुवाल आ़लिम की आ़बिद पर फ़ज़ीलत के बारे में कोई रिवायत बयान करें ?

जवाब नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : आ़लिम की फ़ज़ीलत आ़बिद पर ऐसी है जैसी मेरी फ़ज़ीलत तुम्हारे अदना शख़्स पर है ।[1]

सुवाल कौन सा इ़ल्म मरने के बा'द फ़ाएदा देता है ?

जवाब हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब आदमी मर जाता है तो उस के अ़मल का सिलसिला मुन्क़तेअ़ हो जाता है लेकिन तीन अ़मल मुन्क़तेअ़ नहीं होते सदक़ए जारिया, इ़ल्मे नाफ़ेअ़ और नेक औलाद जो उस के लिये दुआ़ करती है ।[2]

सुवाल आ़लिम की ज़ियारत करने की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : आ़लिम की ज़ियारत करना, उस के पास बैठना, उस से बातें करना और उस के साथ खाना इ़बादत है ।[3]

वालिदैन और इन के हुक़ूक़

सुवाल ह़दीस शरीफ़ में वालिदैन से हुस्ने सुलूक की अहम्मिय्यत क्या बयान हुई है ?

जवाब मरवी है कि एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! वालिदैन का औलाद पर क्या ह़क़ है ? हुज़ूर ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : वोह

---

1 ...ترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء فی فضل الفقه علی العبادة، ۴/۳۱۳، حدیث: ۲۶۹۴۔

2 ...مسلم، کتاب الوصیه، باب مایلحق الانسان...الخ، ص۸۸۶، حدیث: ۱۶۳۱۔

3 ...فردوس الاخبار، ۲/۳۷۵، حدیث: ۷۱۱۹۔

www.dawateislami.net

दोनों तेरी जन्नत व दोज़ख़ हैं ।[1] या'नी उन को राज़ी रखने से जन्नत मिलेगी और नाराज़ रखने से दोज़ख़ के मुस्तहिक़ होगे ।[2]

सुवाल बाप की नाफ़रमानी करने की क्या वईद है ?

जवाब बाप की नाफ़रमानी करना ऐसा है जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी करना । हदीसे पाक में है : مَعْصِيَةُ اللهِ مَعْصِيَةُ الْوَالِدِ या'नी बाप की नाफ़रमानी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी है ।"[3]

सुवाल औलाद पर मां बाप में से किस का हक़ ज़ियादा है ?

जवाब आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : बाप का हक़ निहायत अ़ज़ीम है और मां का हक़ इस से भी अ़ज़ीम । मां बाप के हक़ के हवाले से उ़लमाए किराम ने यूं तक़्सीम बयान फ़रमाई है कि "ख़िदमत में मां को तरजीह हासिल है और ता'ज़ीम में बाप को ।"[4]

सुवाल मां बाप में अगर झगड़ा हो तो औलाद किस का साथ दे ?

जवाब मां बाप में अगर लड़ाई हो तो न मां का साथ दे न बाप का, इन दोनों में से जो मा'सियत (या'नी गुनाह व ख़ता) पर हो उसे समझाए अगर वोह मान लें तो ठीक वरना सुकूत (या'नी ख़ामोशी इख़्तियार) करे और इन के लिये दुआ़ करे ।[5]

सुवाल वालिदैन के विसाल के बा'द औलाद पर उन के क्या हुक़ूक़ हैं ?

---

1 ...ابن ماجه، كتاب الادب، باب بر الوالدين، ٤/١٨٦، حديث: ٣٦٦٢۔

2 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 16, 3 / 553 ।

3 ...معجم اوسط، من اسمه احمد، ١/٦١٤، حديث: ٢٢٥٥۔

4 .....फ़तावा रज़विय्या, 24 / 387-390, माख़ूज़न ।

5 ...ردالمحتار، كتاب الحدود، مطلب في تعزير المتهم، ٦/١٢٥۔

www.dawateislami.net

जवाब (1) सब से पहला ह़क़ उन का ग़ुस्ल व कफ़न और नमाज़े जनाज़ा व दफ़्न है (2) उन के लिये हमेशा दुआ़ व इस्तिग़फ़ार करना (3) सदक़ा व ख़ैरात व आ'माले सालिह़ा का सवाब उन्हें पहुंचाते रहना (4) उन पर किसी का क़र्ज़ हो तो अदा में इन्तिहाई जल्दी करना और इस काम को अपने दीनो दुन्या के लिये बाइ़से सआ़दत समझना (5) उन का कोई फ़र्ज़ रह गया हो तो ब क़दरे इस्तित़ाअ़त उस की अदाएगी की कोशिश करना (6) उन की त़रफ़ से की गई ऐसी वसिय्यत जो शरअ़न जाइज़ हो और उसे पूरा करना उस पर लाज़िम न हो अगर्चे उस पर गिरां हो फिर भी उसे पूरा करने की भरपूर कोशिश करना (7) अगर कोई शरई मुमानअ़त न हो तो उन के इन्तिक़ाल के बा'द भी उन की मर्ज़ी और ख़ुशी का ख़याल रखना (8) हर जुमुआ़ को उन की क़ब्र पर जा कर इतनी आवाज़ से यासीन शरीफ़ की तिलावत करना कि वोह सुनें फिर उन्हें ईसाले सवाब करना जुमुआ़ के इलावा भी जब उन की क़ब्र के पास से गुज़रे तो उन्हें सलाम करना और उन के लिये फ़ातिह़ा ख़्वानी करना (9) उन के रिश्तेदारों के साथ उ़म्र भर नेक सुलूक करते रहना (10) उन के दोस्तों के साथ दोस्ती नबाहना और उन के साथ हमेशा इ़ज़्ज़त व तकरीम से पेश आना (11) किसी के वालिदैन को बुरा कह कर जवाबन उन्हें बुरा न कहलवाना (12) सब से अहम ह़क़ जिस की हर एक को हमेशा सख़्ती के साथ ताकीद है वोह येह है कि कभी कोई गुनाह कर के उन्हें क़ब्र में ईज़ा न पहुंचाना क्यूंकि वालिदैन को उस के तमाम आ'माल की ख़बर पहुंचती है।[1]

1.....फ़तावा रज़विय्या, 24 / 391-392 मुलख़्ख़सन।

www.dawateislami.net

सुवाल वालिदैन से लड़ने, उन्हें मारने और बुरा भला कहने वाले का क्या हुक्म है ?

जवाब ऐसा शख़्स बहुत बड़ा फ़ासिक़, बड़ा ही बद बख़्त और **अल्लाह** रब्बुल आ़लमीन के सख़्त ग़ज़ब और बड़े अ़ज़ाब का मुस्तहिक़ और दोज़ख़ की आग का ह़क़दार है।[1]

सुवाल अगर बेटा मुल्क से बाहर हो और वालिदैन उसे बुलाएं तो उस के लिये क्या हुक्म है ?

जवाब अगर बेटा मुल्क से बाहर हो और वालिदैन उसे बुलाते हैं तो आना ही होगा, सिर्फ़ ख़त़ लिखना काफ़ी न होगा, इसी त़रह़ अगर वालिदैन को उस की ख़िदमत की ह़ाजत हो तो आए और उन की ख़िदमत करे।[2]

सुवाल वालिदा के पाउं चूमने की ह़दीस में क्या फ़ज़ीलत आई है ?

जवाब ह़दीसे पाक में है : "जिस ने अपनी वालिदा का पाउं चूमा तो ऐसा है जैसे जन्नत की चौखट को बोसा दिया।"[3]

सुवाल वालिदैन को नज़रे रह़मत से देखने का क्या सवाब है ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब औलाद अपने वालिदैन की त़रफ़ नज़रे रह़मत करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये हर नज़र के बदले ह़ज्जे मबरूर का सवाब लिखता है।[4]

---

1 .....फ़तावा रज़विय्या, 24 / 402 मुलख़्ख़सन।

2 ...ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحة، فصل فی البیع، ۹/۶۷۸۔

3 ...درمختار، کتاب الحظر والاباحة، ۹/۶۰۶۔

4 ...مشکاۃ المصابیح، کتاب الآداب، باب البر والصلة، الفصل الثالث، ۲/۲۰۹، حدیث: ۴۹۴۴۔

www.dawateislami.net

सुवाल क्या काफ़िर वालिदैन के साथ भी सिलए रेह़मी की जाएगी ?

जवाब जी हां ! ह़ज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते अबू बक्र (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) फ़रमाती हैं कि ज़मानए नबवी में मेरे पास मेरी वालिदा आई जब कि वोह मुशरिका थी। मैं ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : मेरी मां आई है ह़ालांकि वोह मुसलमान नहीं तो क्या फिर भी मैं उस से सिलए रेह़मी करूं ? रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अपनी मां से सिलए रेह़मी करो।[1]

सुवाल क्या वालिदैन का ख़िलाफ़े शरअ़ दिया गया हुक्म मानना पड़ेगा ?

जवाब नहीं। हुज़ूर नबिय्ये मोह़तरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "لَا طَاعَةَ فِیْ مَعْصِیَةِ اللّٰہِ" या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी में किसी की इत़ाअ़त जाइज़ नहीं।[2]

सुवाल अगर वालिदैन नाराज़ी की ह़ालत में फ़ौत हो जाएं तो औलाद क्या करे ?

जवाब उन के लिये ब कसरत दुआए मग़फ़िरत करे, औलाद की त़रफ़ से मुसलसल नेकियों के तह़ाइफ़ पहुंचेंगे तो उम्मीद है कि मर्ह़ूम वालिदैन राज़ी हो जाएं। सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : किसी के मां बाप दोनों या एक का इन्तिक़ाल हो गया और येह उन की नाफ़रमानी करता था तो अब उन के लिये हमेशा दुआ व इस्तिग़फ़ार करता रहता है ह़त्ता कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस को (वालिदैन के साथ) हुस्ने सुलूक करने वाला लिख देता है।[3]

---

1 ...بخاری، کتاب الھبۃ وفضلھا...الخ، باب الھدیۃ للمشرکین، ۲/۱۸۲، حدیث: ۲۶۲۰۔

2 ...مسلم، کتاب الامارۃ، باب وجوب طاعۃ الامراء...الخ، ص۱۰۲۴، حدیث: ۱۸۴۰۔

3 ...شعب الایمان، باب فی بر الوالدین، فصل فی حفظ حق الوالدین بعد موتھما، ۶/۲۰۲، حدیث: ۷۹۰۲۔

www.dawateislami.net

औलाद और इन के हुक़ूक़

सुवाल लड़की पैदा होने पर ग़म व रंज का इज़हार करना किस का त़रीक़ा है?

जवाब कुरआने करीम में इस को कुफ़्फ़ार का त़रीक़ा क़रार दिया गया है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَ اِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمْ بِالْاُنْثٰى ظَلَّ وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا وَّ هُوَ كَظِیْمٌ ۚ﴾ (پ۱۴، النحل:۵۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जब इन में किसी को बेटी होने की ख़ुश ख़बरी दी जाती है तो दिन भर उस का मुंह काला रहता है और वोह गुस्सा खाता है।

सुवाल अह्ले ईमान के लिये किस त़रह़ की बीवियां और औलाद दुश्मन हैं?

जवाब वोह जो उन्हें नेक कामों से रोकें। इरशादे बारी तआ़ला है :

﴿یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّ مِنْ اَزْوَاجِكُمْ وَ اَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا لَّكُمْ فَاحْذَرُوْهُمْ ۚ﴾ (پ۲۸، التغابن:۱۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "ऐ ईमान वालो तुम्हारी कुछ बीबियां और बच्चे तुम्हारे दुश्मन हैं तो इन से एह़तियात़ रखो" इस आयत के तह़त सदरुल अफ़ाज़िल मुफ़्ती नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی लिखते हैं : (इस लिये) कि (वोह) तुम्हें नेकी से रोकते हैं और उन के कहने में आ कर नेकी से बाज़ न रहो।[1]

सुवाल औ़रत की पहली औलाद लड़की होने की क्या फ़ज़ीलत है?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : औ़रत के लिये येह बहुत ही मुबारक है कि उस की पहली औलाद लड़की हो।[2]

---

1 .....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान पारह 28, अत्तग़ाबुन, तह़तुल आयत : 14, स. 1030।

2 ...تاریخ ابن عساکر، العلاء بن کثیر، ۴۷/۲۲۵۔

www.dawateislami.net

सुवाल कौन से अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام की सिर्फ़ बेटियां ही थीं ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना लूत़ और हज़रते सय्यिदुना शुऐ़ब (عَلَيْهِمَا السَّلَام)[1]

सुवाल इमामे अह्ले सुन्नत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के बयान कर्दा औलाद के हुक़ूक़ में से कोई पांच बयान कीजिये ?

जवाब (1) बच्चे को पाक कमाई से पाक रोज़ी खिलाए (2) औलाद को छोड़ कर अकेले न खाए बल्कि अपनी ख़्वाहिश को उन की ख़्वाहिश के ताबेअ़ रखे (3) चन्द बच्चे हों तो सब को बराबर व यक्सां दे, एक को दूसरे पर दीनी फ़ज़ीलत के इलावा तरजीह़ न दे (4) बहलाने के लिये झूटा वा'दा न करे और (5) वोह बीमार हों तो उन का इलाज करवाए ।[2]

सुवाल औलाद को कितनी उ़म्र में नमाज़ का हुक्म दिया जाए ?

जवाब हुज़ूर रह़मते आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अपनी औलाद को नमाज़ का हुक्म दो जब वोह सात साल के हों और उन्हें नमाज़ पर मारो जब वोह दस साल के हों ।[3]

सुवाल कितनी उ़म्र में बच्चों के बिस्तर अलग कर देने का हुक्म है ?

जवाब ह़दीसे पाक में है : दस साल की उ़म्र में बच्चों के बिस्तर अलग कर दो ।[4]

सुवाल बच्चों को ख़ुश करने की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बेशक

---

1 ...تفسیر مدارک، پ۲۵، الشوری، تحت الآیۃ: ۵۰، ص۱۰۹۳۔

2 .....औलाद के हुक़ूक़, स. 19-20, मुलख़्ख़सन ।

3 ...ابوداود، کتاب الصلاۃ، باب متی یؤمر الغلام بالصلاۃ، ۱/۲۰۸، حدیث: ۴۹۴۔

4 ...ابوداود، کتاب الصلاۃ، باب متی یؤمر الغلام بالصلاۃ، ۱/۲۰۸، حدیث: ۴۹۵۔

www.dawateislami.net

जन्नत में एक घर है जिसे दारुल फ़रह़ (ख़ुशी का घर) कहा जाता है। उस में वोही लोग दाख़िल होंगे जो बच्चों को ख़ुश करते हैं।[1]

सुवाल अपने बच्चे को कुरआने पाक सिखाने की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस शख़्स ने दुन्या में अपने बच्चे को कुरआने करीम पढ़ना सिखाया बरोज़े क़ियामत उसे जन्नत में ऐसा ताज पहनाया जाएगा जिस के सबब अह्ले जन्नत जान लेंगे कि इस शख़्स ने दुन्या में अपने बेटे को कुरआने करीम की ता'लीम दी थी।[2]

सुवाल औलाद को अदब सिखाने की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : इन्सान का अपने बच्चे को अदब सिखाना एक साअ़ (तक़रीबन चार किलो और सौ ग्राम) सदक़ा करने से बेहतर है।[3]

सुवाल बेटे के निकाह़ में ताख़ीर करने पर क्या वई़द आई है ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये मोह़तरम, रसूले मोह़तशम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अगर बालिग़ होने के बा'द निकाह़ न किया और लड़का गुनाह में मुब्तला हुवा तो उस का गुनाह वालिद के सर होगा।[4]

सुवाल अपनी बेटी का निकाह़ फ़ासिक़ से करना कैसा है ?

जवाब हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने अपनी बेटी का निकाह़ किसी फ़ासिक़ से किया उस ने क़त़्ए़ रेह़मी की।[5]

---

1 ...جامع صغیر، حرف الہمزۃ، ص ۱۴۰، حدیث: ۲۳۲۱۔

2 ...معجم اوسط، باب الالف، باب من اسمہ احمد، ۱/۴۰، حدیث: ۹۶۔

3 ...ترمذی، کتاب البر والصلۃ، باب ماجاء فی ادب الولد، ۳/۳۸۲، حدیث: ۱۹۵۸۔

4 ...شعب الایمان، الستون من شعب الایمان...الخ، ۶/۴۰۱، حدیث: ۸۶۶۶۔

5 ...الکامل لابن عدی، الحسن بن محمد ابو محمد البلخی...الخ، ۳/۱۶۵۔

www.dawateislami.net

ग़ीबत

सुवाल ग़ीबत की ता'रीफ़ क्या है ?

जवाब सदरुश्शरीआ़ ह़ज़रते मुफ़्ती अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى ने ग़ीबत की ता'रीफ़ येह फ़रमाई है कि "किसी शख़्स के पोशीदा ऐ़ब को उस की बुराई करने के त़ौर पर ज़िक्र करना।"(1)

सुवाल कुरआने करीम में ग़ीबत से किस त़रह़ रोका गया है ?

जवाब **अल्लाह** तआ़ला इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَلَا يَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ بَعْضًا ؕ اَيُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ يَّاْكُلَ لَحْمَ اَخِيْهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوْهُ ؕ﴾ (پ۲۶، الحجرات:۱۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और एक दूसरे की ग़ीबत न करो। क्या तुम में कोई पसन्द रखेगा कि अपने मरे भाई का गोश्त खाए तो येह तुम्हें गवारा न होगा।

सुवाल शबे मे'राज पीठ पीछे बुराई करने वालों का क्या अ़ज़ाब दिखाया गया ?

जवाब शबे असरा के दूल्हा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : मे'राज की रात मेरा गुज़र ऐसी औ़रतों और मर्दों के पास से हुवा जो अपनी छातियों के साथ लटक रहे थे। मैं ने कहा : जिब्राईल ! येह कौन लोग हैं ? अ़र्ज़ की : येह मुंह पर ऐ़ब लगाने वाले और पीठ पीछे बुराई करने वाले लोग हैं।(2)

1.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 16, 3 / 532।

2.. شعب الایمان، باب فی تحریم اعراض الناس، ۵/۳۰۹، حدیث: ۶۷۵۰۔

www.dawateislami.net

सुवाल ग़ीबत और बोहतान में क्या फ़र्क़ है ?

जवाब हुज़ूर ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : (ग़ीबत येह है कि) तुम अपने भाई का इस त़रह़ ज़िक्र करो जिसे वोह ना पसन्द करता है । अ़र्ज़ की गई : अगर वोह बात उस में मौजूद हो तो ? इरशाद फ़रमाया : जो बात तुम कह रहे हो अगर वोह उस में मौजूद हो तो तुम ने उस की ग़ीबत की और अगर उस में न हो तो तुम ने उस पर बोहतान बांधा ।[1]

सुवाल कौन सा दोज़ख़ी है जिसे जहन्नम में मुर्दार खाना पड़ेगा ?

जवाब ह़दीसे पाक के मुत़ाबिक़ ग़ीबत करने वाले को जहन्नम में मुर्दार खाना पड़ेगा ।[2]

सुवाल ग़ीबत करने वाला क़ियामत में किस शक्ल में उठेगा ?

जवाब ग़ीबत करने वाला रोज़े मह़शर कुत्ते की शक्ल में उठाया जाएगा ।[3]

सुवाल लोगों की इ़ज़्ज़त ख़राब करने वालों की क्या सज़ा है ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये ग़ैब दां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم शबे मे'राज ऐसे लोगों के पास से गुज़रे जो अपने चेहरों और सीनों को तांबे के नाख़ुनों से नोच रहे थे, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام से पूछा : येह कौन लोग हैं ? अ़र्ज़ की : येह लोगों का गोश्त खाते (या'नी ग़ीबत करते) थे और उन की इ़ज़्ज़त ख़राब करते थे ।[4]

सुवाल किसी मुसलमान की बे इ़ज़्ज़ती करना कैसा ?

जवाब ह़दीसे पाक में है : हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इरशाद

1 ...مسلم، کتاب البر والصلة، باب تحریم الغیبة، ص۱۳۹۷، حدیث: ۲۵۸۹۔

2 ...مسند احمد، مسند عبد اللہ بن عباس، ۱/۵۵۳، حدیث: ۲۳۲۴۔

3 ...التوبیخ والتنبیہ، باب البهتان وما جاء فیہ، ص۲۳۷، حدیث: ۲۱۶۔

4 ...ابوداود، کتاب الادب، باب فی الغیبة، ۴/۳۵۳، حدیث: ۴۸۷۸۔

www.dawateislami.net

फ़रमाते हैं : बेशक किसी मुसलमान की नाहक़ बे इज़्ज़ती करना कबीरा गुनाहों में से है।[1]

सुवाल हदीस शरीफ़ में कामिल मुसलमान किसे फ़रमाया गया है ?

जवाब हुज़ूर ताजदारे दो जहां صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : कामिल मुसलमान वोह है जिस के हाथ और ज़बान से दूसरे मुसलमान महफ़ूज़ रहें।[2]

सुवाल कौन से तीन लोगों की दुआ़ क़बूल नहीं होती ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना फ़क़ीह अबुल्लैस समरक़न्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : तीन लोगों की दुआ़ क़बूल नहीं होती : (1) ह़राम खाने वाला (2) ब कसरत ग़ीबत करने वाला और (3)मुसलमानों से ह़सद रखने वाला।[3]

सुवाल क्या ग़ीबत की कोई जाइज़ सूरत भी है ?

जवाब जी हां ! ग़ीबत की मुबाह़ (जाइज़) सूरत येह है कि फ़ासिक़े मो'लिन (अ़लानिय्या गुनाह करने वाला) या बद मज़हब (बुरे अ़क़ाइद रखने वाले) की बुराई बयान करे जब कि लोगों को उस के शर से बचाना मक़्सूद हो तो सवाब मिलने की उम्मीद है।[4]

सुवाल क्या ग़ीबत से बचने का कोई वज़ीफ़ा भी है ?

जवाब जी हां ! वोह आसान तरीन विर्द येह है :

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَصَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّدٌ[5]

---

1 . . . ابوداود، کتاب الادب، باب فی الغیبة، ۴/۳۵۳، حدیث: ۴۸۷۷۔

2 . . . بخاری، کتاب الایمان، باب المسلم من سلم المسلمون . . . الخ، ۱/۱۵، حدیث: ۱۰۔

3 . . . تنبیہ الغافلین، باب الحسد، ص ۹۵۔

4 . . . تنبیہ الغافلین، باب الغیبة، ص ۹۰۔

5 . . . القول البدیع، الباب الثانی فی ثواب الصلوة . . . الخ، ص ۲۷۸۔

www.dawateislami.net

बद शुगूनी

सुवाल शुगून की अक़्साम बताइये और इन की वज़ाहत कीजिये ?

जवाब शुगून की दो क़िस्में हैं : (1) अच्छा शुगून (2) बुरा शुगून। अच्छा येह है कि जिस काम का इरादा किया हो उस के बारे में कोई अच्छा कलाम सुन कर दलील पकड़ना, अगर बुरा कलाम हो तो बद शुगूनी है। हुक्मे शरअ़ येह है कि इन्सान अच्छा शुगून ले कर ख़ुश हो और अपना काम ख़ुशी ख़ुशी मुकम्मल करे और बुरा कलाम सुन कर उस की त़रफ़ तवज्जोह न करे और न ही उस के सबब अपने काम से रुके।[1]

सुवाल किसी काम से निकलते वक़्त हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को क्या सुनना पसन्द था ?

जवाब किसी काम से निकलते वक़्त हुज़ूर नबिय्ये मोह़तरम, रसूले मोह़तशम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को يَارَاشِدُ (ऐ हिदायत याफ़्ता) يَانَجِيْحُ (ऐ कामयाब) सुनना पसन्द था।[2]

सुवाल किसी शै को मन्हूस जानने के बारे में इस्लाम क्या फ़रमाता है ?

जवाब किसी शख़्स, जगह, चीज़ या वक़्त को मन्हूस जानने का इस्लाम में कोई तसव्वुर नहीं येह मह़ज़ वह्मी ख़यालात होते हैं।[3]

---

1 ...تفسیر قرطبی، پ۲۶، الاحقاف، ۸/۱۳۲، تحت الآیۃ: ۴۔

2 ...ترمذی، کتاب السیر، باب ماجاء فی الطیرۃ، ۳/۲۲۸، حدیث: ۱۶۲۲۔

3 .....बद शुगूनी, स. 8।

www.dawateislami.net

सुवाल अच्छा शुगून लेने और बद शुगूनी का शरीअ़त में क्या हुक्म है ?

जवाब मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : इस्लाम में नेक फ़ाल लेना जाइज़ है। बद फ़ाली बद शुगूनी लेना ह़राम है।[1]

सुवाल नजूमियों, काहिनों से क़िस्मत का ह़ाल मा'लूम करना कैसा ?

जवाब काहिनों और ज्योतिशियों से हाथ दिखा कर तक़्दीर का भला बुरा दरयाफ़्त करना अगर बत़ौरे ए'तिक़ाद हो या'नी जो येह बताएं ह़क़ है तो कुफ़्रे ख़ालिस है और अगर बत़ौरे ए'तिक़ाद व तयक़्क़ुन (या'नी बत़ौरे यक़ीन) न हो मगर मेल व रग़बत के साथ हो तो गुनाहे कबीरा है और अगर बत़ौरे हज़्ल व इस्तिह्ज़ा (या'नी हंसी मज़ाक़ के त़ौर पर) हो तो अ़बस (या'नी बेकार) व मकरूह व ह़माक़त है, हां ! अगर ब क़स्दे ता'जीज़ (या'नी उसे आ़जिज़ करने के लिये) हो तो ह़रज नहीं।[2]

सुवाल मकान की तब्दीली से बद शुगूनी लेना कैसा ?

जवाब एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हम एक मकान में रहते थे, उस में हमारे अह्लो इ़याल कसीर और माल कसरत से था फिर हम ने मकान बदला तो हमारे माल और अह्लो इ़याल कम हो गए। हुज़ूर ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : छोड़ो ! ऐसा कहना बुरी बात है।[3]

1.....तफ़्सीरे नईमी, 9 / 119।

2.....फ़तावा रज़विय्या, 21 / 155।

3...ادب الدنیا والدین، الفصل السادس فی الطیرۃ والفال، الطیرۃ مفزع الیائسین، ص ۴۹۹۔

www.dawateislami.net

सुवाल छींक से बद शुगूनी लेना किस का त़रीक़ा है ?

जवाब मुजद्दिदे आ'ज़म, इमामे अह्ले सुन्नत, आ'ला ह़ज़रत शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن ने फ़रमाया : छींक अच्छी चीज़ है, इसे बद शुगूनी जानना मुशरिकीने हिन्द का नापाक अ़क़ीदा है ।(1)

सुवाल फ़ाल खोलना या फ़ाल खोलने पर उजरत लेने का क्या हुक्म है ?

जवाब ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن लिखते हैं : फ़ाल खोलना या फ़ाल खोलने पर उजरत लेना या देना सब ह़राम है ।(2)

सुवाल शरीअ़त में इस्तिख़ारे की क्या अहम्मिय्यत है ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इरशाद फ़रमाते हैं : रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हम को तमाम उमूर में इस्तिख़ारा ता'लीम फ़रमाते जैसे क़ुरआन की सूरत ता'लीम फ़रमाते थे ।(3)

सुवाल इस्तिख़ारा के क्या मा'ना हैं ?

जवाब मुह़द्दिसे कबीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : इस्तिख़ारा के मा'ना हैं : ख़ैर मांगना या किसी से भलाई का मश्वरा करना, चूंकि इस दुआ़ व नमाज़ में बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से गोया मश्वरा करता है कि फ़ुलां काम करूं या न करूं इसी लिये इसे इस्तिख़ारा कहते हैं ।(4)

1.....मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 319 ।

2.....तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, पारह 7, अल माइदह, तह़तुल आयत : 90, स. 194 ।

3...بخاری، کتاب التہجد، باب ماجاء فی التطوع مثنی مثنی، ۱/۳۹۳، حدیث: ۱۱۶۲۔

4.....मिरआतुल मनाजीह़, 2 / 301 ।

www.dawateislami.net

सुवाल हदीसे पाक में इस्तिख़ारे की क्या फ़ज़ीलत आई है ?

जवाब हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : जो इस्तिख़ारा करे वोह नुक़्सान में न रहेगा, जो मुशावरत से काम करे वोह पशेमान न होगा और जिस ने मियाना रवी इख़्तियार की वोह मोहताज न होगा ।[1]

सुवाल इस्तिख़ारा छोड़ने का क्या नुक़्सान है ?

जवाब नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बन्दे की बद बख़्ती में से है कि वोह **अल्लाह** तआला से इस्तिख़ारा करना छोड़ दे ।[2]

बद गुमानी

सुवाल बुन्यादी तौर पर गुमान की कितनी अक़्साम हैं ?

जवाब बुन्यादी ए'तिबार से गुमान की दो अक़्साम हैं :

(1) हुस्ने ज़न (2) सूए ज़न (या'नी बद गुमानी) ।

सुवाल बद गुमानी की ता'रीफ़ क्या है ?

जवाब बद गुमानी से मुराद येह है कि बिला दलील दूसरे के बुरे होने का दिल से पुख़्ता यक़ीन करना ।[3]

सुवाल बद गुमानी का शरई हुक्म क्या है ?

जवाब मुसलमान के साथ बद गुमानी हराम है ।[4]

---

1 ...مسند شهاب، باب ما خاب من استخار، ۲/۷، حدیث: ۴۷۴۔

2 ...ترمذی، کتاب القدر، باب ما جاء فی الرضا بالقضاء، ۴/۶۰، حدیث: ۲۱۵۸۔

3 ...فیض القدیر، ۳/۱۵۷، ماخوذاً۔

4 ...احیاء العلوم، کتاب آفات اللسان، الآفۃ الخامسۃ العشرۃ الغیبۃ، بیان تحریم الغیبۃ بالقلب، ۳/۱۸۶۔

www.dawateislami.net

सुवाल कुरआने पाक में ब कसरत गुमान की मुमानअ़त किस मक़ाम पर फ़रमाई गई है ?

जवाब कसरते गुमान की मुमानअ़त कुरआने पाक के पारह 26, सूरए हुजुरात की आयत नम्बर 12 में फ़रमाई है जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है ﴿يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اجْتَنِبُوْا كَثِيْرًا مِّنَ الظَّنِّ ۫ اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ﴾ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ईमान वालो बहुत गुमानों से बचो बेशक कोई गुमान गुनाह हो जाता है।

सुवाल ज़न या'नी गुमान किसे कहते हैं ?

जवाब जिस बात की त़रफ़ नफ़्स झुके और दिल उस की त़रफ़ माइल हो उसे ज़न (या'नी गुमान) कहते हैं।[1]

सुवाल बद गुमानी के ह़राम होने की सूरतें कौन सी हैं ?

जवाब बद गुमानी के ह़राम होने की दो सूरतें : (1) **बद गुमानी को दिल पर जमा लेना**। अ़ल्लामा बदरुद्दीन ऐनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : गुमान वोह ह़राम है जिस पर इसरार किया जाए और उसे अपने दिल पर जमा लिया जाए।[2] (2) **बद गुमानी को ज़बान पर ले आना या उस के तक़ाज़े पर अ़मल कर लेना**। अ़ल्लामा अ़ब्दुल ग़नी नाबुलुसी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : बद गुमानी इस सूरत में ह़राम है जब उस का असर आ'ज़ा पर ज़ाहिर हो, यूं कि उस के तक़ाज़े पर अ़मल किया जाए।[3]

सुवाल बुरे गुमान के दिल में जम जाने की पहचान क्या है ?

जवाब जिस के बारे में इसे बद गुमानी है उस के मुतअ़ल्लिक़ पहले जैसी

1 ...احیاء العلوم، کتاب آفات اللسان، الآفۃ الخامسۃ العشرۃ الغیبۃ، بیان تحریم الغیبۃ بالقلب، ۳/۱۸۶۔

2 ...عمدۃ القاری، کتاب البر والصلۃ، باب ما ینھی...الخ، ۱۵/۲۱۸، تحت الحدیث: ۲۰۶۵۔

3 ...حدیقۃ ندیۃ، الخلق الرابع والعشرون، ۲/۱۳۔

www.dawateislami.net

क़ल्बी कैफ़िय्यत न रहे, उस से बहुत नफ़रत करने लगे, उसे बोझ तसव्वुर करे, उस के अह़वाल की रिआयत और उस की इ़ज़्ज़त करना छोड़ दे।(1)

सुवाल बद गुमानी से कौन से बात़िनी अमराज़ पैदा होते हैं ?

जवाब बद गुमानी से बुग़्ज़ और ह़सद जैसे बात़िनी अमराज़ भी पैदा होते हैं।(2)

सुवाल बद गुमानी को दूर करने का इ़लाज क्या है ?

जवाब बद गुमानी से तवज्जोह हटा दी जाए। ह़दीसे पाक में है कि जब तुम बद गुमानी करो तो उस पर जमे न रहो।(3)

सुवाल ह़दीसे पाक में अच्छे गुमान के बारे में क्या फ़रमाया गया है ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अच्छा गुमान अच्छी इ़बादत से है।(4)

सुवाल बद तरीन झूट क्या है ?

जवाब ह़दीसे पाक में बद गुमानी को बद तरीन झूट फ़रमाया गया है।(5)

सुवाल मुसलमान से बद गुमानी पर ह़दीस शरीफ़ में क्या वई़द आई है ?

जवाब हुज़ूर ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने अपने मुसलमान भाई से बुरा गुमान रखा, बेशक उस ने अपने रब عَزَّوَجَلَّ से बुरा गुमान रखा।(6)

---

1 ...احیاء العلوم، کتاب آفات اللسان، الآفۃ الخامسۃ العشرۃ الغیبۃ، بیان تحریم الغیبۃ بالقلب، ۳/۱۸۶۔

2 ...فتح الباری، کتاب الادب، باب ما ینہی عن التحاسد والتدابر، ۱۱/۴۱۰، تحت الحدیث: ۶۰۶۶۔

3 ...معجم کبیر، باب من اسمہ الحارث، حارثۃ بن النعمان ... الخ، ۳/۲۲۸، حدیث: ۳۲۲۷۔

4 ...ابوداود، کتاب الادب، باب فی حسن الظن، ۴/۳۸۷، حدیث ۴۹۹۳۔

5 ...بخاری، کتاب الادب، باب یا ایھا الذین آمنوا اجتنبوا کثیراً من الظن ... الخ، ۴/۱۱۷، حدیث: ۶۰۶۶۔

6 ...درمنثور، پ ۲۶، الحجرات، تحت الآیۃ: ۱۲، ۷/۵۶۶۔

www.dawateislami.net

हिर्स

सुवाल हिर्स किसे कहते हैं ?

जवाब इरादे में ख़्वाहिश की ज़ियादती हिर्स कहलाती है।[1] दूसरे लफ़्ज़ों में "किसी चीज़ से जी न भरना और हमेशा ज़ियादती की ख़्वाहिश करना हिर्स है।"[2]

सुवाल हदीस शरीफ़ में हिर्स की किस तरह मज़म्मत फ़रमाई गई है ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये रहमत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अगर इन्सान के पास सोने की दो वादियां हों तो वोह तीसरी वादी की ख़्वाहिश करेगा और इन्सान के पेट को मिट्टी के सिवा कोई चीज़ नहीं भर सकती और जो शख़्स तौबा करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की तौबा क़बूल फ़रमाता है।[3]

सुवाल क्या कभी हिर्स अच्छी भी होती है ?

जवाब जी हां, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : दुन्यावी हिर्स बुरी है दीनी हिर्स अच्छी है।[4]

सुवाल बुरी हिर्स की वज़ाहत कीजिये ?

जवाब बुरी हिर्स येह है कि अपना हिस्सा हासिल कर लेने के बा वुजूद दूसरे के हिस्से की लालच रखे।[5]

---

1 ...مرقاۃ المفاتیح، کتاب الرقاق، باب الامل والحرص، ۹/۱۱۹۔

2 .....मिरआतुल मनाजीह, 7 / 86 ।

3 ...مسلم، کتاب الزکاۃ، باب لو ان لابن آدم...الخ، ص ۵۲۱، حدیث: ۱۰۴۸۔

4 .....मिरआतुल मनाजीह, 1 / 222 ।

5 ...مرقاۃ المفاتیح، کتاب الرقاق، باب الامل والحرص، ۹/۱۱۹۔

www.dawateislami.net

सुवाल क्या हिर्स का मुआमला सिर्फ़ दौलत ही में हुवा करता है ?

जवाब ऐसा नहीं है । लालच और हिर्स का जज़्बा ख़ूराक, लिबास, मकान, सामान, दौलत, इज़्ज़त, शोहरत अल ग़रज़ हर ने'मत में हुवा करता है ।[1]

सुवाल कौन से दो हरीस कभी सैर नहीं होते ?

जवाब (1) इल्म का हरीस कि इल्म से कभी उस का पेट नहीं भरेगा और (2) दुन्या का लालची कि येह कभी आसूदा नहीं होगा ।[2]

सुवाल कौन सी दो ख़स्लतें हमेशा जवान रहती हैं ?

जवाब रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि इब्ने आदम बूढ़ा हो जाता है लेकिन उस की दो ख़स्लतें हमेशा जवान रहती हैं एक माल की हिर्स और दूसरी उम्र की हिर्स ।[3]

सुवाल इल्मे दीन के हरीस के लिये क्या क्या इन्आमात हैं ?

जवाब सूफ़िया फ़रमाते हैं : اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इल्मे दीन का मुतलाशी मरते ही जन्नती है । उलमा फ़रमाते हैं कि किसी को अपने ख़ातिमे की ख़बर नहीं सिवा आलिमे दीन के कि उन के लिये हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने वा'दा फ़रमा लिया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस की भलाई चाहता है उसे इल्मे दीन देता है ।[4]

सुवाल किस मुआमले में बे सब्री और हिर्स आ'ला है ?

---

1 .....जन्नती ज़ेवर, स. 111 ।

2 ...دارمی، باب فی فضل العلم والعالم، ۱/۱۰۸، حدیث: ۳۳۱۔

3 ...مسلم، کتاب الزکوٰۃ، باب کراھۃ الحرص علی الدنیا، ص ۵۲۱، حدیث: ۱۰۴۷۔

4 .....मिरआतुल मनाजीह़, 1 / 204 ।

www.dawateislami.net

जवाब हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "दुन्यावी चीज़ों में क़नाअ़त और सब्र अच्छा है मगर आख़िरत की चीज़ों में हिर्स और बे सब्री आ'ला है।"(1)

सुवाल माल व मर्तबे की हिर्स का क्या नुक़्सान है ?

जवाब हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "दो भूके भेड़िये बकरियों के रेवड़ में छोड़ दिये जाएं तो वोह इतना नुक़्सान नहीं करते जितना माल और मर्तबे की हिर्स करने वाला अपने दीन के लिये नुक़्सान देह है।(2)

सुवाल किन लोगों को ज़िन्दा रहने की सब से ज़ियादा हिर्स है ?

जवाब कुरआने करीम की सूरए बक़रह, आयत 96 के तह़्त सदरुल अफ़ाज़िल मुफ़्ती नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं : मुशरिकीन का एक गुरौह मजूसी है आपस में तह़िय्यत व सलाम के मौक़अ़ पर कहते हैं "ज़ेह हज़ार साल" या'नी हज़ार बरस जियो। मत़लब येह है कि मजूसी मुशरिक हज़ार बरस जीने की तमन्ना रखते हैं यहूदी इन से भी बढ़ गए कि इन्हें हिर्से ज़िन्दगानी सब से ज़ियादा है।(3)

सुवाल हिर्स के इलाज के लिये किन चीज़ों की ज़रूरत है ?

जवाब सब्र, इल्म और अ़मल।(4)

1.....मिरआतुल मनाजीह़, 7 / 112।

2...ترمذی، کتاب الزھد، ۴۳- باب، ۴/ ۱۶۶، حدیث: ۲۳۸۳-

3.....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 1, अल बक़रह, तह़्तुल आयत : 96, स. 33।

4...احیاء العلوم، کتاب ذم البخل...الخ، بیان علاج البخل، ۳/ ۲۹۷-

www.dawateislami.net

झूट

सुवाल झूट किसे कहते हैं ?

जवाब किसी चीज़ को उस की ह़क़ीक़त के बर अ़क्स बयान करना ।[1]

सुवाल झूटों के लिये कुरआने पाक में क्या वईद आई है ?

जवाब कुरआने पाक में झूटों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ला'नत का मुस्तह़िक़ क़रार दिया गया है ।[2]

सुवाल झूट इन्सान को कहां ले जाता है ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : झूट इन्सान को बुराई की त़रफ़ ले जाता और बुराई जहन्नम की त़रफ़ ले जाती है ।[3]

सुवाल झूट इन्सान की शख़्सिय्यत पर क्या असर डालता है ?

जवाब हुज़ूर ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : झूट इन्सान को रुस्वा कर देता है ।[4]

सुवाल झूट छोड़ने वाले को ह़दीसे पाक में क्या ख़ुश ख़बरी दी गई है ?

जवाब हुज़ूर शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने बात़िल झूट बोलना छोड़ दिया उस के लिये जन्नत के किनारे पर मकान बनाया जाएगा ।[5]

---

1 ...حدیقۃ ندیۃ، الصنف الثانی، المبحث الاول، النوع الرابع، ۲/۲۰۰۔

2 ...پ۳، آل عمران: ۶۱۔

3 ...مسلم، کتاب البر والصلۃ والآداب، باب قبح الکذب...الخ، ص۱۴۰۵، حدیث: ۲۶۰۷۔

4 ...الترغیب والترھیب، کتاب الادب وغیرہ، الترغیب فی الصدق الترییب من الکذب، ۳/۳۶۸، حدیث: ۲۸۔

5 ...ترمذی، کتاب البر والصلۃ، باب ماجاء فی المراء، ۳/۴۰۰، حدیث: ۲۰۰۰۔

www.dawateislami.net

सुवाल हदीसे पाक में मुनाफ़िक़ की क्या निशानियां आई हैं ?

जवाब (1) जब बात करे झूट बोले (2) जब वा'दा करे तो वा'दा ख़िलाफ़ी करे और (3) जब उस के पास अमानत रखी जाए ख़ियानत करे।[1] (4) एक रिवायत में येह भी है कि जब झगड़ा करे तो गाली दे।[2]

सुवाल सच्चा इन्सान किस रुत्बे का और झूटा किस वईद का मुस्तहिक़ होता है ?

जवाब प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : सच्चाई को लाज़िम कर लो, क्यूंकि सच्चाई नेकी की त़रफ़ ले जाती है और नेकी जन्नत का रास्ता दिखाती है आदमी बराबर सच बोलता रहता है और सच बोलने की कोशिश करता रहता है, यहां तक कि वोह **अल्लाह** के नज़्दीक "सिद्दीक़" लिख दिया जाता है और झूट से बचो, क्यूंकि झूट फ़ुजूर (बुराइयों) की त़रफ़ ले जाता है और फ़ुजूर जहन्नम का रास्ता दिखाता है और आदमी बराबर झूट बोलता रहता है और झूट बोलने की कोशिश करता है, यहां तक कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक, "कज़्ज़ाब" लिख दिया जाता है।[3]

सुवाल झूट की बदबू से फ़िरिश्ता कितना दूर हो जाता है ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब बन्दा झूट बोलता है तो उस की बदबू से फ़िरिश्ता एक मील दूर हो जाता है।[4]

---

1 ...بخاری، کتاب الایمان، باب علامة المنافق، ۱/۴۶، حدیث: ۳۳۔

2 ...بخاری، کتاب الایمان، باب علامة المنافق، ۱/۴۷، حدیث: ۳۴۔

3 ...مسلم، کتاب البر والصلة والآداب، باب قبح الکذب... الخ، ص۱۴۰۵، حدیث: ۲۶۰۷۔

4 ...ترمذی، کتاب البر والصلة، باب ماجاء في الصدق والکذب، ۳/۳۹۲، حدیث: ۱۹۷۹۔

www.dawateislami.net

सुवाल झूट, ह़सद, चुग़ली और ग़ीबत वाले दोज़ख़ में किस शक्ल के होंगे ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिम असम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم फ़रमाते हैं : जहन्नम में झूटा कुत्ते की शक्ल में, ह़सद करने वाला सुवर की शक्ल में, चुग़ुल ख़ोर और ग़ीबत करने वाला बन्दर की शक्ल में बदल जाएगा ।[1]

सुवाल ह़दीसे मुबारका में किन मवाक़ेअ़ पर झूट बोलने की इजाज़त आई है ?

जवाब (1) जंग की सूरत में कि यहां अपने मुक़ाबिल को धोका देना जाइज़ है (2) दो मुसलमानों के दरमियान सुल्ह़ कराने और (3) अपनी बीवी को राज़ी करने के लिये ।[2]

सुवाल झूटी गवाही देने वाले के लिये क्या वईद (सज़ा दिये जाने का फ़रमान) है ?

जवाब ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है, रसूलुल्लाह صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया "झूटे गवाह के क़दम हटने भी न पाएंगे कि **अल्लाह** तआ़ला उस के लिये जहन्नम वाजिब कर देगा ।"[3]

सुवाल झूटा ख़्वाब सुनाने की क्या वईद है ?

जवाब जनाबे रसूले करीम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : झूटा ख़्वाब सुनाने वाले को जव के दो दानों में गांठ लगाने की तक्लीफ़ दी जाएगी जो वोह नहीं कर सकेगा ।[4]

---

1 . . . تنبیہ المغترین، الباب الثالث، ومنہا سد باب الغیبۃ فی الناس فی مجالسہم، ص ۱۹۴ ۔

2 . . . ترمذی، کتاب البر والصلۃ، باب ماجاء فی إصلاح ذات البین، ۳/۳۷۷، حدیث: ۱۹۴۵ ۔

3 . . . ابن ماجہ، کتاب الاحکام، باب شہادۃ الزور، ۳/۱۲۳، حدیث: ۲۳۷۳ ۔

4 . . . بخاری، کتاب التعبیر، باب من کذب فی حلمہ، ۴/۴۲۲، حدیث: ۷۰۴۲ ۔

www.dawateislami.net

और एक ह़दीसे पाक में झूटा ख़्वाब घड़ कर सुनाने वाले को जन्नत की ख़ुश्बू से मह़रूमी की वईद सुनाई गई है।[1]

बुग़्ज़ो कीना

सुवाल कीने की ता'रीफ़ क्या है ?

जवाब कीना येह है कि इन्सान अपने दिल में किसी को बोझ जाने, उस से ग़ैर शरई दुश्मनी व बुग़्ज़ रखे, नफ़रत करे और येह कैफ़िय्यत हमेशा हमेशा बाक़ी रहे।[2]

सुवाल बुग़्ज़ो कीना रखने का शरीअ़त में क्या हुक्म है ?

जवाब किसी भी मुसलमान के मुतअ़ल्लिक़ बिला वज्हे शरई अपने दिल में बुग़्ज़ो कीना रखना नाजाइज़ व गुनाह है। आ़रिफ़ बिल्लाह अ़ल्लामा अ़ब्दुल ग़नी नाबुलुसी ह़नफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى फ़रमाते हैं : अगर ह़क़ व इन्साफ़ की बात करने के सबब किसी से बुग़्ज़ो कीना रखे तो ह़राम है और अगर किसी से उस के ज़ुल्म के सबब बुग़्ज़ रखे तो जाइज़ है।[3]

सुवाल अह़ादीसे करीमा में बुग़्ज़ो कीना का क्या नुक़्सान बयान हुवा है ?

जवाब बुग़्ज़ो कीना के नुक़्सानात पर मुश्तमिल दो अह़ादीसे मुबारका येह भी हैं : (1) जिस ने इस ह़ाल में सुब्ह़ की, कि वोह कीना परवर है तो वोह जन्नत की ख़ुश्बू न सूंघ सकेगा।[4]

---

1 ...جامع صغیر، ص ۲۱۴، حدیث: ۳۵۳۲۔

2 ...احیاء العلوم، کتاب ذم الغضب والحقد والحسد، القول فی معنی الحقد ...الخ، ۳/۲۲۳۔

3 ...حدیقۃ ندیۃ، السادس عشر من الاخلاق ـــ الخ، ۱/۶۲۹۔

4 ...حلیۃ الاولیاء، ۸/۱۰۸، حدیث: ۱۱۵۳۶۔

www.dawateislami.net

(2) बुग़्ज़ व दुश्मनी रखने से बचो ! क्यूंकि बुग़्ज़ दीन को मूंड डालता (या'नी तबाह कर देता) है ।[1]

सुवाल सहाबए किराम से बुग़्ज़ो कीना रखना कैसा ?

जवाब सख़्त ह़राम है । सदरुल अफ़ाज़िल मुफ़्ती नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं : जो बद नसीब सहाबा की शान में बे अदबी के साथ ज़बान खोले वोह दुश्मने ख़ुदा व रसूल है। मुसलमान ऐसे शख़्स के पास न बैठें ।[2]

सुवाल सादाते किराम से बुग़्ज़ रखने का क्या नुक़्सान है ?

जवाब ह़दीस शरीफ़ में है : जो शख़्स हम से बुग़्ज़ या ह़सद करेगा उसे क़ियामत के दिन ह़ौज़े कौसर से आग के चाबुकों के साथ दूर किया जाएगा ।[3]

सुवाल उ़लमाए किराम से बुग़्ज़ रखने वाले का क्या हुक्म है ?

जवाब (आ़लिमे दीन से) अगर बे सबब रंज (या'नी बुग़्ज़) रखता है तो मरीज़ुल क़ल्ब, ख़बीसुल बात़िन और इस के कुफ़्र का अन्देशा है ।[4]

सुवाल औलियाए किराम से बुग़्ज़ रखने पर क्या वई़द आई है ?

जवाब ह़दीस शरीफ़ में है : जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के किसी वली से दुश्मनी रखे तह़क़ीक़ उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ ए'लाने जंग कर दिया ।[5]

---

1 . . . کنزالعمال، کتاب الاخلاق، قسم الاقوال، جزء:۳، ۲/۲۸، حدیث:۵۴۸۶۔

2 .....सवानेह़े करबला, स. 31 ।

3 . . . معجم اوسط، ۲/۳۳، حدیث:۲۴۰۵۔

4 .....फ़तावा रज़विय्या, 21 / 129 ।

5 . . . ابن ماجہ، کتاب الفتن، باب من ترجی لہ سلامۃ الفتن، ۴/۳۵۰، حدیث:۳۹۸۹۔

www.dawateislami.net

सुवाल क्या मालो दौलत की फ़रावानी बुग़्ज़ो कीना का सबब बनती है ?

जवाब जी हां ! येह भी आपस में बुग़्ज़ो कीना का एक सबब है । हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

"لَا تُفْتَحُ الدُّنْيَا عَلٰى اَحَدٍ اِلَّا اَلْقَى اللهُ بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ اِلٰى يَوْمِ الْقِيَامَةِ"

या'नी दुन्या किसी पर कुशादा नहीं की जाती मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ता क़ियामत इन के दरमियान बुग़्ज़ व अ़दावत रख देता है ।[1]

सुवाल बुग़्ज़ो कीना से बचने के कोई दो इलाज बताइये ?

जवाब (1) ईमान वालों के कीने से बचने की दुआ़ कीजिये, पारह 28 सूरए ह़श्र, आयत नम्बर 10 को याद कर लेना और वक़्तन फ़ वक़्तन पढ़ते रहना भी मुफ़ीद है :

﴿وَلَا تَجْعَلْ فِيْ قُلُوْبِنَا غِلًّا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا رَبَّنَاۤ اِنَّكَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝۱۰﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और हमारे दिल में ईमान वालों की त़रफ़ से कीना न रख ऐ रब हमारे बेशक तू ही निहायत मेहरबान रह़्म वाला है ।" (2) मुसलमानों से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये मह़ब्बत करना क्यूंकि मह़ब्बत कीने की ज़िद है ।[2]

सुवाल क्या शबे बराअत में बुग़्ज़ो कीना रखने वाले की मग़फ़िरत हो जाती है ?

जवाब जी नहीं ! हुज़ूर नबिय्ये मोह़तरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ शा'बान की पन्दरहवीं रात अपने बन्दों पर ख़ास तजल्ली फ़रमाता है, मग़फ़िरत चाहने वालों की मग़फ़िरत फ़रमाता

---

1 ...مسند احمد، مسند عمر بن الخطاب، ۱/۴۵، حدیث: ۹۳۔

2 .....बातिनी बीमारियों की मा'लूमात, स. 55-56 ।

www.dawateislami.net

है और रह़्म त़लब करने वालों पर रह़्म फ़रमाता है जब कि कीना रखने वालों को उन की ह़ालत पर छोड़ देता है।[1]

सुवाल दूसरों को अपने कीने से कैसे बचाया जा सकता है ?

जवाब इस के लिये पांच मदनी फूल पेशे ख़िदमत हैं : (1) किसी की बात काटने से बचिये (2) ता'ज़ियत के दौरान मुस्कुराने से बचिये (3) किसी की ग़लत़ी निकालने में एह़तियात़ कीजिये (4) मौक़अ़ मह़ल के मुत़ाबिक़ अ़मल कीजिये (5) ख़्वा म ख़्वाह ह़ौसला शिकनी न कीजिये।[2]

सुवाल क्या अह्ले जन्नत के दरमियान भी बुग़्ज़ो कीना होगा ?

जवाब जी नहीं। ह़दीस शरीफ़ में है : अह्ले जन्नत में आपस में इख़्तिलाफ़ न होगा, न बुग़्ज़ व कदूरत। सब के दिल एक होंगे, सुब्ह़ो शाम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पाकी बयान करेंगे।[3]

ह़सद

सुवाल ह़सद किसे कहते हैं ?

जवाब किसी की दीनी या दुन्यावी ने'मत के छिन जाने की तमन्ना करना या येह ख़्वाहिश करना कि फुलां शख़्स को येह ने'मत न मिले, इसे "ह़सद" कहते हैं।[4]

सुवाल ह़सद करने वाले और जिस से ह़सद किया जाए उसे क्या कहते हैं ?

जवाब ह़सद करने वाले को "ह़ासिद" और जिस से ह़सद किया जाए उसे "मह़सूद" कहते हैं।

---

1 ...شعب الایمان، باب فی الصیام، ماجاء فی لیلۃ النصف من شعبان، ۳/۳۸۲، حدیث: ۳۸۳۵۔

2 .....बुग़्ज़ो कीना, स. 62।

3 ...بخاری، کتاب بدء الخلق، باب ماجاء فی صفۃ الجنۃ...الخ، ۲/۳۹۱، حدیث: ۳۲۴۵۔

4 ...طریقۃ محمدیۃ مع حدیقۃ ندیۃ، الخلق الخامس عشر من الاخلاق السیّئۃ المذمومۃ... الخ، ۱/۶۰۰-۶۰۱۔

www.dawateislami.net

सुवाल गिब्ता किसे कहते हैं ?

जवाब गिब्ता या'नी रश्क के येह मा'ना हैं कि दूसरे को जो ने'मत मिली वैसी मुझे भी मिल जाए और येह आरज़ू न हो कि इसे न मिलती या इस से जाती रहे ।[1]

सुवाल आपस में भाई-भाई होने का क्या नुस्ख़ा है ?

जवाब ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : बद गुमानी, ह़सद, बुग़्ज़ वग़ैरा वोह चीज़ें हैं जिन से मह़ब्बत टूटती है और इस्लामी भाईचारा मह़ब्बत चाहता है लिहाज़ा येह उ़यूब छोड़ो ताकि भाई-भाई बन जाओ ।[2]

सुवाल कौन सी ख़ता सब से पहले वाक़ेअ़ हुई ?

जवाब जो ख़ता सब से पहले की गई वोह ह़सद है ।[3]

सुवाल सब से पहले ह़सद किस ने किया था ?

जवाब सब से पहले ह़सद शैत़ान ने किया ।[4]

सुवाल शैत़ान ने किस से किस मुआ़मले में ह़सद किया था ?

जवाब इब्लीस मलऊ़न ने ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को सजदा करने के मुआ़मले में उन से ह़सद किया ।[5]

सुवाल ह़दीसे पाक में ह़सद की किस त़रह़ मज़म्मत फ़रमाई गई है ?

---

1 ...احیاء العلوم، کتاب ذم الغضب والحقد والحسد، القول فی ذمّ الحسد وفی حقیقتہ ... الخ، ۳/۲۳۴۔

2 .....मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 608 ।

3 ...درمنثور، پ ۱، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۳۴، ۱/۱۲۵۔

4 ...درمنثور، پ ۱، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۳۴، ۱/۱۲۵۔

5 ...درمنثور، پ ۱، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۳۴، ۱/۱۲۵۔

www.dawateislami.net

जवाब हुज़ूर जाने आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ह़सद करने वाला, चुग़ली खाने वाला और काहिन (नजूमी, फ़ाल निकालने वाला) मुझ से नहीं (या'नी मेरे त़रीक़े पर नहीं) और मैं उन से नहीं।[1]

सुवाल ह़सद करने वाला **अल्लाह** तआ़ला की नाराज़ी किस त़रह़ मौल लेता है ?

जवाब **अल्लाह** तआ़ला ने बन्दों पर ने'मतों की जो तक़्सीम फ़रमाई है ह़सद करने वाला उस पर ना पसन्दीदगी का इज़्हार करता है और उस के अ़द्लो इन्साफ़ पर उंगली उठाता है।[2] इस त़रह़ वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी मौल लेता है।

सुवाल ह़सद से नेकियों को क्या नुक़्सान पहुंचता है ?

जवाब ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ह़सद नेकियों को इस त़रह़ खाता है जिस त़रह़ आग लकड़ी को खाती है।[3]

सुवाल पिछली उम्मत से इस उम्मत में आने वाली बात़िनी बीमारियां कौन सी हैं ?

जवाब ह़ज़रते ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अगली उम्मत की बीमारी तुम्हारी त़रफ़ भी आई वोह बीमारी ह़सद व बुग़्ज़ है।[4]

---

1 ...مجمع الزوائد، کتاب الادب، باب ماجاء فی الغیبۃ والنمیمۃ، ۸/۱۷۲، حدیث: ۱۳۱۲۶۔

2 ...احیاء العلوم، کتاب ذم الغضب والحقد والحسد، القول فی ذمّ الحسد وفی حقیقتہ۔۔۔الخ، ۳/۲۴۲۔

3 ...ابن ماجہ، کتاب الزھد، باب الحسد، ۴/۴۷۳، حدیث: ۴۲۱۰۔

4 ...ترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ...الخ، ۵۶-باب، ۴/۲۲۸، حدیث: ۲۵۱۸۔

www.dawateislami.net

सुवाल हसद व बुग़्ज़ इन्सान के दीन पर क्या असरात डालते हैं ?

जवाब येह बातिनी अमराज़ इन्सान के दीन को तबाह कर देते हैं ।[1]

गुस्सा

सुवाल गुस्सा किसे कहते हैं ?

जवाब हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِی फ़रमाते हैं : ग़ज़ब या'नी गुस्सा नफ़्स के उस जोश का नाम है जो दूसरे से बदला लेने या उसे दफ़्अ़ करने पर उभारे ।[2]

सुवाल गुस्सा पीने की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : जो गुस्सा पी जाएगा हालांकि वोह नाफ़िज़ करने पर कुदरत रखता था तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उस के दिल को अपनी रिज़ा से मा'मूर फ़रमा देगा ।[3]

सुवाल क्या गुस्सा हराम है ?

जवाब अ़वाम में येह ग़लत़ मश्हूर है कि गुस्सा ह़राम है । गुस्सा एक ग़ैर इख़्तियारी अम्र है, इन्सान को आ ही जाता है, इस में इस का कुसूर नहीं, हां गुस्से का बेजा इस्ति'माल बुरा है ।[4]

सुवाल गुस्से के सबब जनम लेने वाली कोई छे बुराइयां बयान कीजिये ?

जवाब गुस्से से तक़रीबन 16 बुराइयां जनम लेती हैं जिन में से छे येह हैं :

1 ...ترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ... الخ، ۵۶-باب، ۴/۲۲۸، حدیث: ۲۵۱۸-

2 .....मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 655 ।

3 ...کنز العمال، کتاب الاخلاق، قسم الاقوال، ۳/۱۶۳، حدیث: ۷۱۶۰-

4 .....गुस्से का इलाज, स. 27 ।

www.dawateislami.net

(1) हसद (2) ग़ीबत (3) चुग़ली (4) क़त्ए तअ़ल्लुक़ (5) झूट और (6) गाली गलोच।[1]

सुवाल अगर गुस्सा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी पर ख़त्म हो तो क्या वईद है ?

जवाब रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जहन्नम का एक दरवाज़ा है जिस से वोही लोग दाख़िल होंगे जिन का गुस्सा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी पर ही ख़त्म होता है।[2]

सुवाल हज़रते हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى गुसीले शख़्स के लिये क्या फ़रमाते हैं ?

जवाब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : ऐ आदमी ! गुस्से में तू ख़ूब उछलता है, कहीं अब की उछाल तुझे दोज़ख़ में न डाल दे।[3]

सुवाल अगर गुस्से के सबब गुनाह सरज़द हो जाता हो तो क्या इलाज किया जाए ?

जवाब ऐसे शख़्स को चाहिये कि हर नमाज़ के बा'द بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم 21 बार पढ़ कर अपने ऊपर दम कर ले।[4]

सुवाल किस ख़ुश नसीब का दिल सुकून व ईमान से भर दिया जाता है ?

जवाब हदीसे पाक में है कि "जिस शख़्स ने गुस्सा ज़ब्त कर लिया बा

---

1 .....गुस्से का इलाज, स. 7-8।

2 ...کنزالعمال، کتاب الاخلاق، ۳/۲۰۸، حدیث: ۷۷۰۳۔

3 ...احیاء العلوم، ۳/۲۰۵۔

4 .....गुस्से का इलाज, स. 30।

www.dawateislami.net

वुजूद इस के कि वोह गुस्सा नाफ़िज़ करने पर कुदरत रखता था अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के दिल को सुकून व ईमान से भर देगा।"[1]

सुवाल क्या गुस्से का इलाज करना ज़रूरी है ?

जवाब जी हां, हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : गुस्से का इलाज करना वाजिब है क्यूंकि बहुत सारे लोग गुस्से के बाइस जहन्नम में जाएंगे।[2]

सुवाल हदीसे मुबारका में गुस्से की आग बुझाने का क्या तरीक़ा बयान किया गया है ?

जवाब हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : बेशक गुस्सा शैतान की तरफ़ से है और शैतान आग की पैदाइश है और आग पानी से बुझती है लिहाज़ा जब तुम में से किसी को गुस्सा आए तो वोह वुज़ू कर लिया करे।[3]

सुवाल क्या गुस्से की आदत निकालने के लिये कोई रूहानी इलाज भी है ?

जवाब जी हां, गुस्से की आदत ख़त्म करने के लिये येह दो विर्द किये जा सकते हैं : (1) चलते फिरते कभी कभी يَااَللّٰهُ يَارَحْمٰنُ يَارَحِيْمُ कह लिया करे। (2) चलते फिरते يَااَرْحَمَ الرَّاحِمِيْن पढ़ता रहे।[4]

सुवाल जब गुस्से में अपने आप पर क़ाबू न हो रहा हो तो खुद को कैसे समझाएं ?

जवाब ऐसे वक़्त में खुद को यूं समझाएं कि मुझे दूसरों पर अगर कुछ

---

1 ...جامع صغیر، ص ۵۴۱، حدیث: ۸۹۹۷۔

2 ...کیمیائے سعادت، ۲/۶۰۱۔

3 ...ابوداود، کتاب الادب، باب مایقال عند الغضب، ۴/۳۲۷، حدیث: ۴۷۸۴۔

4 .....गुस्से का इलाज, स. 30।

www.dawateislami.net

कुदरत हासिल भी है तो इस से बेहद ज़ियादा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझ पर क़ादिर है, अगर मैं ने गुस्से में आ कर किसी की दिल आज़ारी या हक़ तलफ़ी कर डाली तो क़ियामत के रोज़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ग़ज़ब से मैं किस तरह महफ़ूज़ रह सकूंगा ?[1]

तकब्बुर

सुवाल तकब्बुर किसे कहते हैं ?

जवाब हक़ की मुख़ालफ़त और लोगों को हक़ीर जानने का नाम तकब्बुर है ।[2]

सुवाल तकब्बुर से बचने की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स तकब्बुर, ख़ियानत और दैन (या'नी क़र्ज़ वग़ैरा) से बरी हो कर मरेगा वोह जन्नत में दाख़िल होगा ।[3]

सुवाल तकब्बुर की कितनी अक़्साम हैं ?

जवाब (1) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुक़ाबले में तकब्बुर (2) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूलों के मुक़ाबले में तकब्बुर (3) बन्दों के मुक़ाबले में तकब्बुर ।[4]

सुवाल "तकब्बुर" के अस्बाब बयान करें ?

जवाब (1) इल्म (2) अ़मल (3) हसब व नसब (4) हुस्नो जमाल

---

1 .....गुस्से का इलाज, स. 15 ।

2 ...مسلم، کتاب الایمان، باب تحریم الکبر وبیانہ، ص ۶۰، حدیث: ۹۱۔

3 ...ابن ماجہ، کتاب الصدقات، باب التشدید فی الدین، ۳/۱۴۴، حدیث: ۲۴۱۲۔

4 ...احیاء العلوم، کتاب ذم الکبر والعجب، الشطر الاول، بیان المتکبر علیہ ودرجاتہ... الخ، ۳/۴۲۴۔

www.dawateislami.net

(5) ताक़त व कुव्वत (6) मालो दौलत और (7) पैरूकारों की कसरत।[1]

सुवाल क्या इल्म की भी कोई आफ़त है ?

जवाब जी हां, एक रिवायत में "तकब्बुर" को इल्म की आफ़त क़रार दिया गया है।[2]

सुवाल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुक़ाबले में तकब्बुर करने वाले फ़िरऔन का क्या अन्जाम हुवा ?

जवाब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उसे और उस की क़ौम को दरयाए कुल्ज़ुम में ग़र्क़ कर दिया और फिर मरे हुवे बैल की त़रह़ दरया के किनारे पर फैंक दिया ताकि वोह बा'द वालों के लिये निशाने इब्रत बन जाए।[3]

सुवाल बन्दों के मुक़ाबले में तकब्बुर से क्या मुराद है ?

जवाब इस से मुराद येह है कि अपने आप को बेहतर और दूसरे को ह़क़ीर जान कर उस पर बड़ाई चाहना और मुसावात (या'नी बाहमी बराबरी) को ना पसन्द करना।[4]

सुवाल ह़सब व नसब तकब्बुर का सबब किस त़रह़ बनता है ?

जवाब इस त़रह़ कि आ'ला नसब इन्सान अपने ख़ानदान के बलबूते पर अकड़ता और दूसरों को ह़क़ीर जानता है।[5]

---

1 ...احیاء العلوم، کتاب ذم الکبر والعجب، الشطر الاول، بیان مابہ التکبر، ۳/۴۲۶۔

2 ...احیاء العلوم، کتاب ذم الکبر والعجب، الشطر الاول، بیان مابہ التکبر، ۳/۴۲۶۔

3 ...حدیقۃ ندیۃ، الصنف الاول، والخلق الثانی عشر...الخ، المبحث الثانی، ۱/۵۴۹۔

الزواجر، الباب الاول، الکبیرۃ الاولی، ۱/۷۱، ملتقطا۔

4 ...احیاء العلوم، کتاب ذم الکبر والعجب، الشطر الاول، بیان المتکبر علیہ ودرجاتہ...الخ، ۳/۴۲۵۔

5 ...احیاء العلوم، کتاب ذم الکبر والعجب، الشطر الاول، بیان المتکبر علیہ...الخ، ۳/۴۳۱۔

www.dawateislami.net

सुवाल वोह कौन से लोग हैं जो बिग़ैर हिसाब के जहन्नम में दाख़िल होंगे ?

जवाब (1) उमरा ज़ुल्म की वज्ह से (2) अ़रब अ़सबिय्यत की वज्ह से (3) रईस और सरदार तकब्बुर की वज्ह से (4) तिजारत करने वाले झूट की वज्ह से (5) अह्ले इ़ल्म ह़सद की वज्ह से (6) मालदार बुख़्ल की वज्ह से।[1]

सुवाल पाईंचे टख़्नों से नीचे रखना किस सूरत में ह़राम है ?

जवाब इमामे अह्ले सुन्नत आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : पाईंचों का का'बैन (या'नी टख़्नों) से नीचा होना अगर बराहे उ़ज्ब व तकब्बुर (या'नी ख़ुद पसन्दी और तकब्बुर की वज्ह से) है तो क़त़्अ़न ममनूअ़ व ह़राम है।[2]

सुवाल क्या थोड़े से तकब्बुर की भी मुआ़फ़ी नहीं ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस के दिल में ज़र्रा बराबर तकब्बुर होगा वोह जन्नत में नहीं जाएगा।[3]

सुवाल क्या अच्छे कपड़े और अच्छे जूते पसन्द होना भी तकब्बुर है ?

जवाब किसी ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : किसी को येह पसन्द होता है कि कपड़े अच्छे हों, जूते अच्छे हों क्या येह भी तकब्बुर है ? तो हुज़ूर जाने आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला जमील है जमाल को दोस्त रखता है और तकब्बुर ह़क़ से सरकशी करने और लोगों को ह़क़ीर जानने का नाम है।[4]

---

1 ...کنز العمال، کتاب المواعظ...الخ، الفصل الخامس، الجزء السادس عشر، ۸/۳۷، حدیث: ۴۴۰۲۳۔

2 .....फ़तावा रज़विय्या, 22 / 164।

3 ...مسلم، کتاب الإیمان، باب تحریم الکبر وبیانه، ص ۶۱، حدیث: ۹۱۔

4 ...مسلم، کتاب الایمان، باب تحریم الکبر وبیانه، ص ۶۰، حدیث: ۹۱۔

www.dawateislami.net

रियाकारी

सुवाल रियाकारी किसे कहते हैं ?

जवाब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के इलावा किसी और निय्यत या इरादे से इबादत करना रियाकारी है। मसलन लोगों पर अपनी इबादत गुज़ारी की धाक बिठाना मक़्सूद हो कि लोग उस की ता'रीफ़ करें, उसे इज़्ज़त दें और उस की ख़िदमत में माल पेश करें।[1]

सुवाल हदीसे पाक में किस बुराई को शिर्के असग़र फ़रमाया गया है ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये रहमत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मुझे तुम पर सब से ज़ियादा ख़ौफ़ शिर्के असग़र का है। लोगों ने अ़र्ज़ की : शिर्के असग़र क्या है ? इरशाद फ़रमाया : रियाकारी।[2]

सुवाल रियाकारी के दरजात कौन कौन से हैं ?

जवाब हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى लिखते हैं : रिया के बहुत दर्जे हैं, हर दर्जे का हुक्म अ़लाहिदा है, बा'ज़ रिया शिर्के असग़र हैं, बा'ज़ रिया हराम, बा'ज़ रिया मकरूह, बा'ज़ सवाब।[3]

सुवाल रियाकारी की अक़्साम बयान करें ?

जवाब रिया की दो क़िस्में हैं : (1) जली (या'नी वोह रियाकारी जो

---

1 ...الزواجر، الباب الاول، الکبیرۃ الثانیۃ، ۱/۸۶۔

2 ...مسند امام احمد، حدیث محمود بن لبید رضی اللہ عنہ، ۹/۱۶۰، حدیث: ۲۳۶۹۲۔

3 .....मिरआतुल मनाजीह, 7 / 127।

www.dawateislami.net

बिल्कुल वाज़ेह् हो) (2) ख़फ़ी (या'नी वोह रियाकारी जो पोशीदा हो)।[1]

सुवाल रियाकारी की सूरतें और इन के अह्काम बयान करें ?

जवाब रिया की दो सूरतें हैं, कभी तो अस्ल इबादत ही रिया के साथ करता है कि मसलन लोगों के सामने नमाज़ पढ़ता है और कोई देखने वाला न होता तो पढ़ता ही नहीं येह रियाए कामिल है कि ऐसी इबादत का बिल्कुल सवाब नहीं। दूसरी सूरत येह है कि अस्ल इबादत में रिया नहीं, कोई होता या न होता बहर ह़ाल नमाज़ पढ़ता मगर वस्फ़ में रिया है कि कोई देखने वाला न होता जब भी पढ़ता मगर इस ख़ूबी के साथ न पढ़ता। येह दूसरी क़िस्म पहली से कम दर्जे की है इस में अस्ल नमाज़ का सवाब है और ख़ूबी के साथ अदा करने का जो सवाब है वोह यहां नहीं कि येह रिया से है इख़्लास से नहीं।[2]

सुवाल क़ियामत के दिन रियाकार को किन नामों से पुकारा जाएगा ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये ग़ैब दान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : रोज़े क़ियामत रियाकारों को तमाम लोगों के सामने इन चार नामों से पुकारा जाएगा : ऐ काफ़िर ! ऐ बदकार ! ऐ धोके बाज़ ! ऐ ख़सारा पाने वाले।[3]

सुवाल जहन्नम की जिस वादी से जहन्नम भी 400 मरतबा रोज़ाना पनाह मांगता है उस में कौन जाएगा ?

---

1 ...احیاء العلوم، کتاب ذم الجاہ والریاء، الشطر الثانی، بیان ریاء الخفی الذی ہو اخفی من دبیب النمل، ۳/۳۷۴۔

2 ...ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل فی البیع، ۹/۷۰۱-۷۰۲۔
बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 16,3 / 637 मुल्तक़त़न।

3 ...الزواجر، الباب الاول، الکبیرۃ الثانیۃ، ۱/۸۵۔

www.dawateislami.net

जवाब येह वादी इस उम्मत में से कुरआने करीम के रियाकार हाफ़िज़, ग़ैरुल्लाह के लिये सदक़ा करने वाले रियाकार, बैतुल्लाह के रियाकार हाजी और राहे ख़ुदा में निकलने वाले रियाकार के लिये बनाई गई है।[1]

सुवाल रियाकार को किस बड़ी ने'मत से महरूमी की वईद सुनाई गई है?

जवाब रियाकार को जन्नत से महरूमी की वईद सुनाई गई है, हदीसे पाक में है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हर "रियाकार" पर जन्नत को हराम कर दिया है।[2]

सुवाल क्या ज़र्रा भर रियाकारी भी नुक़्सान देह है?

जवाब **अल्लाह** तआला उस अमल को क़बूल नहीं फ़रमाता जिस में एक ज़र्रा बराबर भी रियाकारी हो।[3]

सुवाल च्यूंटी की चाल से भी ज़ियादा ख़फ़ीफ़ अमल कौन सा होता है?

जवाब रियाकारी।[4]

सुवाल दिखावे के लिये अमल करने वालों से बरोज़े क़ियामत क्या इरशाद होगा?

जवाब हदीस शरीफ़ में है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत में जब लोगों को जम्अ फ़रमाएगा तो एक मुनादी निदा करेगा : जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये किये गए अमल में किसी को शरीक किया (या'नी रियाकारी की) तो वोह अपना सवाब उसी ग़ैरुल्लाह से ले।[5]

---

1 ...معجم کبیر، ۱۲/۱۳۶، حدیث: ۱۲۸۰۳۔

2 ...جمع الجوامع، قسم الاقوال، حرف الہمزۃ، الھمزۃ مع النون، ۲/۲۴۲، حدیث: ۵۳۲۹۔

3 ...الترغیب والترھیب، الترھیب من الریاء...الخ، ۱/۳۶، حدیث: ۲۷۔

4 ...الزواجر، الباب الاول، الکبیرۃ الثانیۃ، ۱/۹۲۔

5 ...ترمذی، کتاب التفسیر، باب ومن سورۃ الکہف، ۵/۱۰۵، حدیث: ۳۱۶۵۔

www.dawateislami.net

सुवाल रियाकारी के ख़ौफ़ से किसी नेक काम को छोड़ देना कैसा है ?

जवाब रियाकारी के ख़ौफ़ से उस काम को छोड़ देना येह बहुत ग़लत़ सोच है और शैत़ान की मानना है ।[1]

सीरत

सुवाल हुज़ूर जाने आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم किस तारीख़ को दुन्या में तशरीफ़ लाए ?

जवाब 12 रबीउ़ल अव्वल ।[2] मुत़ाबिक़ 20 अप्रेल 571 ईसवी को तशरीफ़ लाए ।[3]

सुवाल हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का तअ़ल्लुक़ अ़रब के किस ख़ानदान से था ?

जवाब नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का तअ़ल्लुक़ अ़रब के मश्हूरो मा'रूफ़ और मुअ़ज़्ज़ज़ व मोह़तशम ख़ानदाने क़ुरैश से था ।[4]

सुवाल प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के परदादा का नाम क्या है ?

जवाब हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के परदादा जान का नाम हाशिम है ।[5]

सुवाल रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم किस नबी की औलाद में से हैं ?

---

1 . . . احیاء العلوم، کتاب ذم الجاہ والریاء، الشطر الثانی، بیان ترک الطاعات خوفاً من الریاء . . . الخ، ۳/۳۹۵۔

2 . . . دلائل النبوۃ للبیہقی، باب الشہر الذی ولد فیہ رسول اللہ، ۱/۹، حدیث: ۴۔

3 .....फ़तावा रज़विय्या, 26 / 414 ।

4 . . . مسلم، کتاب الفضائل، فضل نسب النبی صلی اللہ علیہ وسلم . . . الخ، ص ۱۲۴۹، حدیث: ۲۲۷۶۔

5 . . . بخاری، کتاب مناقب الانصار، باب مبعث النبی، ۲/۵۷۳۔

www.dawateislami.net

जवाब हुज़ूरे अकरम, नबिय्ये मोह़तशम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام की औलाद में से हैं।[1]

सुवाल ह़ज़रते आमिना رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا की वफ़ात कब हुई ?

जवाब हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उ़म्र शरीफ़ जब छे बरस की थी तो आप की वालिदए माजिदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا का विसाल हो गया।[2]

सुवाल हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ाई वालिदा का नाम बताइये ?

जवाब रह़मते कौनैन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ाई वालिदा का नाम ह़ज़रते ह़लीमा सा'दिया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا है।[3]

सुवाल हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के शहज़ादे कितने थे ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चार शहज़ादे हुवे जिन के अस्माए मुबारका येह हैं : (1) ह़ज़रते सय्यिदुना क़ासिम (2) ह़ज़रते सय्यिदुना त़य्यिब (3) ह़ज़रते सय्यिदुना त़ाहिर और (4) ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم) इन में से पहले तीन शहज़ादे उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से हैं और येह ज़ुहूरे इस्लाम से पहले इन्तिक़ाल फ़रमा गए थे और चौथे शहज़ादे ह़ज़रते सय्यिदतुना मारिया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से हैं।[4]

सुवाल प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शहज़ादियां कितनी थीं ?

जवाब रह़मते कौनैन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की चार शहज़ादियां थीं और इन

---

1 ...دلائل النبوۃ للبیہقی، باب الشھر الذی ولد فیہ رسول اللہ، ۱/۹۰، حدیث: ۴۔

2 ...المواھب اللدنیہ، المقصد الاول، ذکر رضاعتہ، ۱/۸۸، ملخصاً۔

3 ...مسند ابویعلٰی، حدیث حلیمۃ بنت الحارث، ۶/۱۷۱، حدیث: ۷۱۲۷۔

4 .....बशीरुल क़ारी, स. 106।

www.dawateislami.net

के अस्माए मुबारका येह हैं : (1) हज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब (2) हज़रते सय्यिदतुना रुक़य्या (3) हज़रते सय्यिदतुना उम्मे कुल्सूम और (4) ख़ातूने जन्नत हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा ज़हरा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ)[1]

सुवाल हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की फूफियों की ता'दाद बयान करें ?

जवाब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की फूफियों की ता'दाद 6 है।[2]

सुवाल प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने चांद के जो दो टुकड़े कर के दिखाए थे वोह किस किस पहाड़ पर देखे गए थे ?

जवाब एक टुकड़ा "जबले अबू कुबैस" और दूसरा टुकड़ा "जबले कुऐक़िआन" पर देखा गया।[3]

सुवाल प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़े करीमा के बारे में कुछ बताइये ?

जवाब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़े ह़सना के बारे में ख़ुद ख़ालिक़े अख़्लाक़ عَزَّوَجَلَّ ने येह फ़रमा दिया : ﴿وَ اِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِیْمٍ ۝﴾ (پ۲۹، القلم:۴) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "और बेशक तुम्हारी ख़ू बू बड़ी शान की है।" हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم महासिने अख़्लाक़ के तमाम गोशों के जामेअ़ थे। या'नी ह़िल्म व अ़फ़्व, रह़्मो करम, अ़द्लो इन्साफ़, जूदो सख़ा, ईसार व क़ुरबानी, मेहमान नवाज़ी, अ़दम तशद्दुद, शुजाअ़त, ईफ़ाए अ़ह्द, हुस्ने मुआ़मला, सब्रो क़नाअ़त, नर्म गुफ़्तारी, ख़ुश रूई, मिलनसारी, मुसावात, ग़म ख़्वारी, सादगी

1 ...فقہ الاکبر، ابناء رسول اللہ وبناتہ، ص ۱۹۹۔

2 ...مواھب اللدنیۃ، المقصد الثانی، الفصل الرابع، ۱/۴۲۵۔

3 ...خصائص کبری، باب انشقاق القمر، ۱/۲۱۰۔

www.dawateislami.net

व बे तकल्लुफ़ी, तवाज़ोअ़ व इन्किसारी, ह़यादारी की इतनी बुलन्द मन्ज़िलों पर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़ाइज़ व सरफ़राज़ हैं कि ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने एक जुम्ले में इस की सह़ीह़ तस्वीर खींचते हुवे इरशाद फ़रमाया कि كَانَ خُلُقُهُ الْقُرْاٰن या'नी ता'लीमाते कुरआन पर पूरा पूरा अ़मल येही आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़ थे।[1]

सुवाल आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का विसाले ज़ाहिरी किस सिने हिजरी में हुवा ?

जवाब ग्यारह सिने हिजरी।[2]

सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه

सुवाल कुरआने पाक में किसे सब से बड़ा परहेज़गार कहा गया ?

जवाब कुरआने पाक में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को सब से बड़ा परहेज़गार कहा गया। चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : ﴿وَسَيُجَنَّبُهَا الْاَتْقَى ﴿۱۷﴾﴾ (پ۳۰، اللیل:۱۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और बहुत जल्द उस (जहन्नम) से दूर रखा जाएगा जो सब से बड़ा परहेज़गार।" इस आयत में اَتْقٰى (सब से बड़ा परहेज़गार) से मुराद सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه हैं। इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی तफ़्सीरे कबीर में इरशाद फ़रमाते हैं : "मुफ़स्सिरीने किराम का इस बात पर इजमाअ़ है कि येह आयते मुबारका अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के बारे में नाज़िल हुई।"[3]

---

1 .....सीरते मुस्त़फ़ा, स. 599-600, मुल्तक़त़न।

2 ...دلائل النبوۃ للبیہقی، جماع ابوب مرض رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم...الخ، باب ماجاء فی الوقت...الخ، ۷/۲۳۴۔

3 ...تفسیر کبیر، پ۳۰، اللیل:۱۷، ۱۱/۱۸۷۔

www.dawateislami.net

सुवाल शाने सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में कुछ फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बयान फ़रमाएं ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शान में तीन फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : (1) "फ़िरिश्ते अबू बक्र सिद्दीक़ को रोज़े क़ियामत लाएंगे और अम्बिया व सिद्दीक़ीन के साथ जन्नत में जगह देंगे।"[1] (2) "मुझ पर जिस किसी का एह़सान था मैं ने उस का बदला चुका दिया है मगर अबू बक्र के मुझ पर वोह एह़सानात हैं जिन का बदला **अल्लाह** तआ़ला रोज़े क़ियामत उन्हें अ़त़ा फ़रमाएगा।"[2] (3) "मेरी उम्मत के लिये सब से ज़ियादा मेहरबान अबू बक्र हैं।"[3]

सुवाल अम्बिया व मुर्सलीन عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के बा'द सब से अफ़्ज़ल कौन हैं ?

जवाब "बा'दे अम्बिया व मुर्सलीन (इन्सो मलक) तमाम मख़्लूक़ाते इलाही इन्सो जिन्न व मलक (फ़िरिश्तों) से अफ़्ज़ल सिद्दीक़े अक्बर हैं, फिर उ़मर फ़ारूक़, फिर उ़स्माने ग़नी, फिर मौला अ़ली (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم)"[4]

सुवाल ख़लीफ़ए अव्वल का नाम, कुन्यत और लक़ब क्या है, नीज़ आप कब पैदा हुवे ?

जवाब ख़लीफ़ए अव्वल जा नशीने पैग़म्बर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का नामे नामी "अ़ब्दुल्लाह", कुन्यत

---

1 ...کنز العمال، فضل ابی بکر الصدیق، ۶/۲۵۵، حدیث: ۳۲۶۲۴۔

2 ...ترمذی، کتاب المناقب، باب فی مناقب ابی بکر و عمر، ۵/۳۷۴، حدیث: ۳۶۸۱۔

3 ...ترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب معاذ بن جبل، ۵/۴۳۵، حدیث: ۳۸۱۵۔

4 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1, 1 / 241।

www.dawateislami.net

"अबू बक्र" और लक़ब "सिद्दीक़ व अ़तीक़" है, आप आ़मुल फ़ील के दो साल छे माह बा'द पैदा हुवे।[1]

सुवाल आप के लक़ब "सिद्दीक़" और अ़तीक़" की वज्ह बयान करें नीज़ येह अल्क़ाब आप को किस ने दिये ?

जवाब दोनों अल्क़ाबात आप को बारगाहे रिसालत से अ़ता हुवे। वाक़िअ़ए मे'राज की तस्दीक़ करने के सबब आप को सिद्दीक़ कहा गया जब कि अ़तीक़ कहने की वज्ह येह है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक मरतबा आप को फ़रमाया : "اَنْتَ عَتِيْقٌ مِّنَ النَّارِ या'नी तुम जहन्नम से आज़ाद हो।" तब से आप को अ़तीक़ कहा जाने लगा।[2]

सुवाल उन शख़्सिय्यत का नाम बताइये जिन्हों ने आज़ाद मर्दों में सब से पहले इस्लाम क़बूल फ़रमाया ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه।[3]

सुवाल प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से वालिहाना अ़क़ीदत व मह़ब्बत और आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की जानिसारी की कुछ झलक बताइये ?

जवाब जिस वक़्त कुफ़्फ़ार आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की जान के दुश्मन थे उस वक़्त आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दिफ़ाअ़ करना और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हमराह मदीने की

---

1 ...ابن حبان، کتاب اخبارہ عن مناقب...الخ، ذکر السبب...الخ، ۹/۶، حدیث: ۶۸۲۵۔ سیرت حلبیہ، ذکر اول الناس ایمانابہ، ۱/۳۹۰۔ ریاض النضرۃ، ۱/۷۷، الاصابۃ فی تمییز الصحابۃ، ۴/۱۴۵۔

2 ...ابن حبان، کتاب اخبار عن مناقب الصحابۃ، ۹/۶۔ الاصابۃ فی تمییز الصحابۃ، ۸/۳۳۲۔ مستدرک، ۴/۲۵، حدیث: ۴۵۱۵۔ फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अक्बर, स. 33

3 ...ترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب علی بن ابی طالب، ۵/۴۱۱، حدیث: ۳۷۵۵۔

www.dawateislami.net

तरफ़ हिजरत करना, ग़ारे सौर में सांप के डसने पर सब्र करना यूंही तमाम ग़ज़वात में सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से जुदा न होना और अपने घर का सारा माल हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में पेश करना येह सब बातें रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से वालिहाना अ़क़ीदत व मह़ब्बत और आप की जानिसारी की एक बड़ी झलक हैं।[1]

सुवाल सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه कब मन्सबे ख़िलाफ़त पर मुतमक्किन हुवे और कितना अ़र्सा ख़लीफ़ा रहे ?

जवाब सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाल के दिन 12 रबीउ़ल अव्वल बरोज़ पीर 11 सिने हिजरी को मन्सबे ख़िलाफ़त पर मुतमक्किन हुवे। आप की मुद्दते ख़िलाफ़त दो साल, तीन माह और कुछ अय्याम थी।[2]

सुवाल ख़लीफ़ा बनने के बा'द आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने सब से पहला काम क्या फ़रमाया ?

जवाब ख़लीफ़ा बनने के बा'द आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने ह़ज़रते उसामा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की सरकर्दगी में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के भेजे गए उस लश्कर को रवाना किया जो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाल के सबब मक़ामे जुरुफ़ पर ठहरा हुवा था।[3]

सुवाल आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अपने दौरे ख़िलाफ़त में जो नुमायां कारनामे सर अन्जाम दिये उन में से कुछ बयान करें ?

---

1 .....फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अक्बर, स. 107-198-251-209-269।

2 ...صفة الصفوة، ذکر خلافة ابی بکر، ۱/۳۲۔ طبقات ابن سعد، ذکر وصیة ابی بکر، ۳/۱۵۱۔

3 ...تاریخ ابن عساکر، اسامة بن زید بن حارثة، ۲۶/۸۵۹۶۔ طبقات ابن سعد، ۴/۵۰۔

www.dawateislami.net

जवाब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने दौरे ख़िलाफ़त में बहुत से नुमायां कारनामे सर अन्जाम दिये जिन में से चन्द येह हैं : (1) मुन्किरीने ज़कात की सरकोबी (2) मुर्तद्दीन की सरकोबी (3) झूटे मुद्दइये नुबुव्वत मुसैलमा कज़्ज़ाब की सरकोबी (4) इराक़ व शाम और इस के मुल्हक़ा अ़लाक़ों में फ़ुतूहात का आग़ाज़ और (5) जम्ए़ क़ुरआन जो सब से अहम कारनामा है ।[1]

सुवाल आप की ख़िलाफ़त के दौर में मुसलमानों को क्या क्या फ़ुतूहात मिलीं ?

जवाब आप की ख़िलाफ़त के दौर में मुसलमानों को बहुत सी फ़ुतूहात ह़ासिल हुईं जिन में से चन्द येह हैं : (1) फ़त्हे ह़ीरा (2) फ़त्हे अम्बार (3) फ़त्हे ऐ़नुत्तमर (4) फ़त्हे दूमतुल जन्दल (5) फ़त्हे उर्दुन और (6) फ़त्हे अजनादैन वग़ैरा । मुन्किरीने ज़कात और मुर्तद्दीन के ख़िलाफ़ फ़ुतूह़ात इस के इ़लावा हैं ।[2]

सुवाल आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का विसाल कब हुवा और आप की नमाज़े जनाज़ा किस ने पढ़ाई ?

जवाब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का विसाल 22 जुमादल उख़रा 13 सिने हिजरी मुत़ाबिक़ 23 अगस्त 634 ईसवी बरोज़ मंगल हुवा और आप की नमाज़े जनाज़ा ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पढ़ाई ।[3]

1.....फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अक्बर, स. 364-404-378-409 ।

2.....फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अक्बर, स. 404-413 ।

3.....फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अक्बर, स. 468-سنن کبری، ۳/۵۵۷، حدیث:۶۶۶۳

طبقات ابن سعد، ۳/۱۵۴- ریاض النضرۃ، ۱/۲۵۸-

www.dawateislami.net

सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

सुवाल किस सहाबी की राए के मुवाफ़िक़ कुरआने पाक की कई आयतें नाज़िल हुईं ?

जवाब वोह सहाबी ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं जिन की राए के मुवाफ़िक़ तक़रीबन 20 आयाते त़य्यिबा नाज़िल हुईं। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم फ़रमाते हैं : बेशक कुरआने करीम में ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की राए के मुवाफ़िक़ अह़काम मौजूद हैं।[1]

सुवाल ह़दीसे पाक में शाने फ़ारूक़े आ'ज़म किस त़रह़ बयान की गई है ?

जवाब अह़ादीसे त़य्यिबा में ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के कसीर फ़ज़ाइल वारिद हैं जिन में एक अ़ज़ीम फ़ज़ीलत हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने यूं बयान फ़रमाई : "अगर मेरे बा'द कोई नबी होता तो उ़मर होता।"[2]

सुवाल ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की कुन्यत व लक़ब क्या है और आप कब पैदा हुवे ?

जवाब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की कुन्यत "अबू ह़फ़्स" और लक़ब "फ़ारूक़" है। आप आ़मुल फ़ील के तेरह साल बा'द मुत़ाबिक़ 583 ईसवी पैदा हुवे।[3]

सुवाल ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मुरादे रसूल क्यूं कहते हैं ?

---

1 ...سیرۃ حلبیۃ، باب الھجرۃ الاولی الی ارض الحبشۃ...الخ، ۱/۴۷۴۔

2 ...ترمذی، کتاب المناقب، باب فی مناقب ابی حفص...الخ، ۵/۳۸۵، حدیث: ۳۸۰۶۔

3 ...تاریخ الخلفاء، ص۱۰۸-۱۱۴۔

www.dawateislami.net

जवाब हुज़ूर रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इ़ज़्ज़ते इस्लाम के लिये आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को बारगाहे इलाही से मांगा था और यूं दुआ़ फ़रमाई थी : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! ख़ुसूसन उ़मर बिन ख़त्ताब के ज़रीए़ इस्लाम को इ़ज़्ज़त अ़ता फ़रमा।"(1)

सुवाल ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने इस्लाम और मुसलमानों को कैसे तक़वियत पहुंचाई ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के इस्लाम लाने के बा'द हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, शफ़ीए़ मुअ़ज़्ज़म صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुसलमानों के साथ मिल कर ह़रमे मक्का में अ़लानिय्या नमाज़ अदा फ़रमाई, यूं आप के क़बूले इस्लाम से इस्लाम व मुसलमानों को तक़वियत ह़ासिल हुई।(2)

सुवाल ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को मुतम्मिमुल अरबईन क्यूं कहते हैं ?

जवाब मुतम्मिमुल अरबईन का मत़लब है कि 40 का अ़दद पूरा करने वाले चूंकि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه चालीसवें मुसलमान थे लिहाज़ा आप को इस लक़ब से भी याद किया जाता है।(3)

सुवाल सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ख़लीफ़ा कब बने और कितना अ़र्सा ख़लीफ़ा रहे ?

---

1 . . . ابن ماجه، کتاب السنة، فضل عمر بن الخطاب، ۱/۷۷، حدیث: ۱۰۵۔

2 . . . طبقات ابن سعد، ومن بنی عدی بن کعب بن لؤی، عمر بن الخطاب، ۳/۲۰۴۔

3 . . . نوادر الاصول، الاصل الحادی والاربعون والمائتان، ۲/۹۱۵، تحت رقم: ۱۲۰۹۔

www.dawateislami.net

जवाब अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ 22 जुमादल उख़रा 13 सिने हिजरी बरोज़ मंगल मन्सबे ख़िलाफ़त पर फ़ाइज़ हुवे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़त दस साल, पांच माह और इक्कीस दिन रही।[1]

सुवाल सब से पहले "अमीरुल मोमिनीन" किस ख़लीफ़ा को कहा गया?

जवाब सब से पहले ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अमीरुल मोमिनीन कहा गया।[2]

सुवाल ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिआ़या के साथ कैसा बरताव फ़रमाते?

जवाब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की आ़दते मुबारका थी कि अपनी रिआ़या की हर वक़्त ख़बरगीरी फ़रमाते रहते, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रात के वक़्त मदीनए मुनव्वरा का दौरा फ़रमाते अगर कोई ह़ाजत मन्द दिखाई देता तो उस की मदद करते।[3]

सुवाल दौरे फ़ारूक़ी में कितने शहर फ़त्ह़ हुवे और कितनी मसाजिद ता'मीर हुईं?

जवाब रौज़तुल अह़बाब में है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौर में एक हज़ार छत्तीस (1036) शहर मअ़ मुज़ाफ़ात फ़त्ह़ हुवे, चार हज़ार (4000) मसाजिद की ता'मीर हुई।[4]

सुवाल दौरे फ़ारूक़ी की कसीर फ़ुतूह़ात का अन्दाज़ा किस चीज़ से लगाया जा सकता है?

---

1 ...طبقات ابن سعد، عمر بن الخطاب، ۳/۲۰۸-۲۷۸، رقم: ۵۶۔

2 ...الادب المفرد، باب التسلیم علی الامیر، ص ۲۶۴، رقم: ۱۰۲۳۔

3 .....फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म, 2 / 120-124।

4 .....फ़तावा रज़विय्या, 5 / 560।

www.dawateislami.net

जवाब हज़रते उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुबारक दौर में मुसलमानों की कसीर फ़ुतूहात का अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि आप के अ़ह्दे ख़िलाफ़त में सल्तनते इस्लामिय्या में 13 लाख नौ हज़ार पांच सौ एक मुरब्बअ़ मील का इज़ाफ़ा हुवा ।[1]

सुवाल हज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहादत कब हुई और आप की नमाज़े जनाज़ा किस ने पढ़ाई ?

जवाब नमाज़े फ़ज्र में अबू लुअ लुअ फ़ीरोज़ मजूसी के ह़म्ले के नतीजे में 63 साल की उ़म्र में यकुम मुह़र्रमुल ह़राम 24 सिने हिजरी को ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहादत हुई और आप की नमाज़े जनाज़ा ह़ज़रते सय्यिदुना सुहैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पढ़ाई ।[2]

सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

सुवाल हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की कुन्यत व लक़ब क्या है और आप कब पैदा हुवे ?

जवाब अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की कुन्यत अबू अ़ब्दुल्लाह और अबू अ़म्र है और लक़ब ज़ुन्नूरैन है । आप वाक़िअ़ए फ़ील के छटे साल मक्कए मुकर्रमा में पैदा हुवे ।[3]

सुवाल ह़दीस में ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की क्या फ़ज़ीलत वारिद हुई है ?

जवाब अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के

1.....फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म, 2 / 686 ।

2...طبقات ابن سعد، عمر بن الخطاب، ۳/۲۷۸-۲۸۰، رقم: ۵۶۔

3...الریاض النضرۃ، جزء: ۲، ۳/۵۔ تہذیب الاسماء واللغات، ۲/۵۲۔ تاریخ الخلفاء، ص ۱۱۸۔

www.dawateislami.net

बहुत से फ़ज़ाइल अहादीसे तय्यिबा में वारिद हुवे हैं जिन में से एक येह भी है कि सरकारे दो आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "हर नबी का एक रफ़ीक़ है और जन्नत में मेरा रफ़ीक़ उ़स्मान है।"(1)

सुवाल हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने इस्लाम कब क़बूल फ़रमाया ?

जवाब अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه बिअ़सते नबवी के पहले साल इस्लाम लाए। आप ने हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की दा'वत पर इस्लाम क़बूल किया और चौथे नम्बर पर इस्लाम लाए। ख़ुद इरशाद फ़रमाते हैं : मैं इस्लाम क़बूल करने वाले चार अश्ख़ास में से चौथा हूं।"(2)

सुवाल दो मरतबा जन्नत ख़रीदने का ए'ज़ाज़ किन सहाबी को हासिल है ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, मालिके जन्नत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से दो मरतबा जन्नत ख़रीदी, एक बार बिरे रूमा ख़रीद कर मुसलमानों के लिये वक़्फ़ किया और दूसरी बार ग़ज़वए तबूक के लिये सामाने जिहाद फ़राहम किया।(3)

सुवाल किस सहाबी के निकाह़ में यके बा'द दीगरे हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दो शहज़ादियां आईं ?

जवाब वोह ख़ुश नसीब सहाबी हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه हैं कि आप के निकाह़ में पहले हज़रते सय्यिदतुना रुक़य्या رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا

---

1 ...ترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب عثمان بن عفان، ۵/۳۹۰، حدیث: ۳۷۱۷۔

2 ...اسد الغابۃ، ۳/۲۰۷۔ سیرت سید الانبیاء، ص ۷۳۔

3 ...مستدرک، کتاب معرفۃ الصحابۃ، باب اشتری عثمان الجنۃ...الخ، ۴/۶۸، حدیث: ۴۶۲۶۔

www.dawateislami.net

और उन के इन्तिक़ाल के बा'द ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे कुल्सूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا आईं और इसी वज्ह से आप को "ज़ुन्नूरैन (दो नूरों वाले)" कहा जाता है।[1] जब ह़ज़रते उम्मे कुल्सूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का भी इन्तिक़ाल हो गया तो हुज़ूर ताजदारे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अगर मेरी तीसरी बेटी होती तो मैं उस का निकाह़ भी उ़स्मान से कर देता।"[2]

सुवाल किस सह़ाबी से फ़िरिश्ते भी ह़या करते थे ?

जवाब ह़दीसे पाक में है कि (ह़ज़रत) उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से तो फ़िरिश्ते भी ह़या करते हैं।[3]

सुवाल ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सख़ावत की कोई मिसाल बयान कीजिये ?

जवाब हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जब ग़ज़वए तबूक की तय्यारी के लिये लोगों को तरग़ीब दिलाई तो सय्यिदुना उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! पालान और दीगर मुतअ़ल्लिक़ा सामान समेत 100 ऊंट मेरे ज़िम्मे हैं। दूसरी बार तरग़ीब दिलाने पर 200 और तीसरी बार तरग़ीब दिलाने पर 300 ऊंटों की ज़िम्मेदारी ली। रावी फ़रमाते हैं कि मैं ने देखा कि हुज़ूर रह़मते कौनैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मिम्बर से नीचे तशरीफ़ लाए और दो बार इरशाद फ़रमाया : "आज से उ़स्मान जो कुछ करे इस पर मुवाख़ज़ा नहीं।"[4]

---

1 ...تہذیب الاسماء واللغات، ۲/۵۲۔

2 ...معجم کبیر، ۱۷/۱۸۴، حدیث: ۴۹۰۔ اسد الغابۃ، ۳/۶۰۷۔

3 ...مسلم، کتاب فضائل الصحابۃ، باب من فضائل عثمان بن عفان، ص۱۳۰۷، حدیث: ۲۴۰۱۔

4 ...ترمذی، کتاب المناقب، مناقب عثمان بن عفان، ۵/۳۹۱، حدیث: ۳۷۲۰۔

www.dawateislami.net

सुवाल हज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को जामेउ़ल कुरआन क्यूं कहा जाता है ?

जवाब दौरे सिद्दीक़ी में कुरआनी सूरतें अगर्चे मुतफ़र्रिक़ मवाक़ेअ़ (जुदा गाना मक़ामात और मुख़्तलिफ़ जगहों) से एक मजमूए़ में मुज्तमअ़ हो गई थीं मगर इन जम्अ़ किये गए मुख़्तलिफ़ सहाइफ़ का एक मुस्ह़फ़ में नक़्ल होना, फिर इस मुस्ह़फ़ के नुस्ख़े को इस्लामी मुमालिक के बड़े बड़े शहरों में तक़्सीम करना वग़ैरा का काम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अमीरुल मोमिनीन जामेउ़ल कुरआन ज़ुन्नूरैन सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से लिया इस लिये सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को जामेउ़ल कुरआन कहते हैं।[1]

सुवाल दौरे उ़स्मानी के बा'ज़ कारहाए नुमायां के मुतअ़ल्लिक़ बताइये ?

जवाब (1) जम्ए़ कुरआन (2) मस्जिदे ह़राम की तौसीअ़ (3) मस्जिदे नबवी की तौसीअ़ और इस में मुनक़्क़श (बेल बूटे वाले) पथ्थर लगाना (4) ईरान के बहुत से शहरों का फ़त्ह़ होना (5) रूम का वसीअ़ रक़्बा फ़त्ह़ करना (6) पहला बह़री बीड़ा तय्यार कर के कुबरुस पर ह़म्ला करना और उसे इस्लामी हुकूमत में शामिल करना। (7) अफ़्रीक़ा की फ़त्ह़ और (8) उन्दुलुस की फ़त्ह़।[2]

सुवाल आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कब ख़लीफ़ा बने और आप का दौरे ख़िलाफ़त कितने अ़र्से रहा ?

जवाब अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ यकुम मुह़र्रम 24 सिने हिजरी को ख़लीफ़ा बने और आप का दौरे ख़िलाफ़त 12 साल है।[3]

---

1 .....फ़तावा रज़विय्या, 26 / 450-452 माख़ूज़न।

2 ...تاریخ الخلفاء، ص ۱۵۴-۱۵۵۔

3 ...تہذیب الاسماء واللغات، ۱/۲۹۸۔

www.dawateislami.net

सुवाल हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहादत कब और कैसे हुई ?

जवाब अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को 18 ज़ुल हिज्जतुल ह़राम 35 सिने हिजरी को तिलावते कुरआन की ह़ालत में शहीद किया गया।[1] आप के मुबारक ख़ून के क़त़रे कुरआने पाक की इस आयते मुबारका पर पड़े : ﴿فَسَیَكْفِیْكَهُمُ اللّٰهُ ۚ وَ هُوَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ ﴾ (پ۱، البقرۃ:۱۳۷) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो ऐ मह़बूब अ़न क़रीब **अल्लाह** उन की त़रफ़ से तुम्हें किफ़ायत करेगा और वोही है सुनता जानता।[2]

सुवाल हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की नमाज़े जनाज़ा किस ने पढ़ाई और आप का मज़ारे पाक कहां वाक़ेअ़ है ?

जवाब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की नमाज़े जनाज़ा ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन मुत़इम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पढ़ाई और आप का मज़ारे पाक "जन्नतुल बक़ीअ़" में "ह़श्शे कौकब" के ह़िस्से में है।[3]

सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم

सुवाल शाने मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم में नाज़िल होने वाली कोई आयत बताएं ?

जवाब कुरआने पाक में इरशाद होता है :

﴿وَ یُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِیْنًا وَّ یَتِیْمًا وَّ اَسِیْرًا ۝﴾ (پ۲۹، الدھر:۸) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और खाना खिलाते हैं उस की मह़ब्बत पर मिस्कीन और

1 ...طبقات ابن سعد، عثمان بن عفان، ۳/۲۲، رقم: ۱۴۔

2 ...طبقات ابن سعد، عثمان بن عفان، ۳/۵۴، رقم: ۱۴۔

3 ...طبقات ابن سعد، عثمان بن عفان، ۳/۵۷، رقم: ۱۴۔

www.dawateislami.net

यतीम और असीर को।" सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : येह आयत ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه और ह़ज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا और इन की कनीज़ फ़िज़्ज़ा के ह़क़ में नाज़िल हुई।[1]

सुवाल आप كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم की शान में कुछ फ़रामीने मुस्त़फ़ा बयान करें ?

जवाब शाने मुर्तज़वी में तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : (1) जिस का मैं मौला हूं अ़ली भी उस के मौला हैं।[2] (2) मैं इ़ल्म का शहर हूं अ़ली उस का दरवाज़ा हैं।[3] (3) अ़ली को देखना इ़बादत है।[4]

सुवाल आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का नाम, कुन्यत और लक़ब बयान फ़रमाएं नीज़ आप की विलादत कब और कहां हुई ?

जवाब आप كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم की वालिदा ने आप का नाम "ह़ैदर" रखा।[5] और वालिद ने आप का नाम "अ़ली" रखा।[6], कुन्यत "अबुल ह़सन और अबू तुराब"[7] और "असदुल्लाह", "मुर्तज़ा", "कर्रार", "शेरे ख़ुदा" और "मौला मुश्किल कुशा" अल्क़ाबात

---

1 .....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 29, अद्दह्र, तह़्तुल आयत : 8, स. 1073।

2 ...ترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب علی بن ابی طالب، ۵/۳۹۸، حدیث: ۳۷۳۳۔

3 ...مستدرک، کتاب معرفۃ الصحابۃ، باب انا مدینۃ العلم وعلی بابھا، ۴/۹۶، حدیث: ۴۶۹۳۔

4 ...مستدرک، کتاب معرفۃ الصحابۃ، باب النظر الی علی عبادۃ، ۴/۱۱۸، حدیث: ۴۷۳۷۔

5 ...مسلم، کتاب الجھاد والسیر، باب غزوۃ ذی قرد وغیرھا، ص ۱۰۰۵، حدیث: ۱۸۰۷۔

6 ...المجالسۃ وجواھر العلم، الجزء السابع، ۱/۳۵۰، رقم: ۹۰۴۔

7 ...ترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب علی بن ابی طالب، ۵/۳۹۷۔

www.dawateislami.net

हैं। आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم आमुल फ़ील के 30 साल बा'द 13 रजबुल मुरज्जब बरोज़ जुमुअ़तुल मुबारक मक्कतुल मुकर्रमा में पैदा हुवे।[1]

सुवाल हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के वालिदैन का नाम बताएं ?

जवाब आप के वालिद का नाम अबू त़ालिब अ़ब्दे मनाफ़ बिन अ़ब्दुल मुत्त़लिब और वालिदा का नाम हज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमा बिन्ते असद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا है।[2]

सुवाल वोह कौन से सह़ाबी हैं जिन्हों ने प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ेरे कफ़ालत तरबिय्यत पाई ?

जवाब हज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم।[3]

सुवाल आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को "शेरे ख़ुदा" और "मौलाए काइनात" कहे जाने की वज्ह बयान फ़रमाएं ?

जवाब आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को "शेरे ख़ुदा" कहने की वज्ह येह है कि रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप को "शेरे ख़ुदा" का लक़ब अ़त़ा फ़रमाया है जब कि "मौलाए काइनात" कहने की वज्ह येह है कि रसूले पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप के मुतअ़ल्लिक़ फरमाया : "जिस का मैं मौला हूं अ़ली भी उस के मौला हैं।"[4]

सुवाल वोह कौन से सह़ाबी हैं जिन को नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी तल्वार ज़ुल फ़िक़ार अ़त़ा फ़रमाई ?

करामाते शेरे ख़ुदा, स. 11-12

1 ... الاصابة في تمييز الصحابة۔۴/ ۴۶۵

2 ... طبقات ابن سعد، الطبقة الاولي علي السابقة... الخ، علي بن ابي طالب، ۳/۱۳-۱۴۔

3 ... رياض النضرة، جزء:۳، ۲/۱۰۹۔

4 ... رياض النضرة، جزء:۱، ۱/۵۰۔ ترمذی، کتاب المناقب، مناقب علی بن ابی طالب، ۵/۳۹۸، حدیث:۳۷۳۳۔

www.dawateislami.net

जवाब हज़रते मौलाए काइनात मौला अ़ली मुश्किल कुशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ।[1]

सुवाल वोह कौन से ख़लीफ़ए राशिद हैं जिन की वालिदा और ज़ौजा का नाम एक ही है ।

जवाब हज़रते अ़ली کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ।[2]

सुवाल जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का निकाह़ शहज़ादिये कौनैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से हुवा उस वक़्त आप की उ़म्र मुबारक क्या थी ?

जवाब 21 साल पांच माह ।[3]

सुवाल शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم की तीनों ख़ुलफ़ाए राशिदीन से मह़ब्बत की कोई मिसाल बयान फ़रमाएं ?

जवाब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के तीनों ख़ुलफ़ाए राशिदीन से मह़ब्बत का अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि आप ने अपने 3 साह़िब ज़ादों के नाम इन के नामों पर "अबू बक्र, उ़मर और उ़स्मान" रखे ।[4]

सुवाल आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कब ख़लीफ़ा बने और आप की ख़िलाफ़त कितने अ़र्से रही ?

जवाब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ 19 ज़ुल ह़िज्जतुल ह़राम 35 सिने हिजरी को ख़लीफ़ा बने और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुद्दते ख़िलाफ़त 4 साल 8 माह 9 दिन है ।[5]

---

1 . . . تاریخ ابن عساکر، ۴۲/۷۱۔

2 . . . طبقات ابن سعد، الطبقة الاولي علي السابقة. . . الخ، علي بن ابي طالب، ۳/۱۴۔

3 . . . الاستيعاب، باب النساء وكناهن، فاطمة بنت رسول الله، ۴/۴۴۸۔

4 . . . طبقات ابن سعد، الطبقة الاولي علي السابقة. . . الخ، علي بن ابي طالب، ۳/۱۴۔

5 . . . طبقات ابن سعد، الطبقة الاولي علي السابقة. . . الخ، علي بن ابي طالب، ۳/۲۲۔ خلفائے راشدین، ص ۳۱۳۔

www.dawateislami.net

सुवाल आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहादत कब और किस त़रह़ हुई नीज़ आप की नमाज़े जनाज़ा किस ने पढ़ाई ?

जवाब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहादत 19 रमज़ान 40 सिने हिजरी में अ़ब्दुर्रह़मान बिन मुल्जम के क़ातिलाना ह़म्ले की वज्ह से हुई और ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई ।[1]

अ़शरए मुबश्शरा

सुवाल अ़शरए मुबश्शरा किन को कहते हैं ?

जवाब वोह दस सह़ाबी जिन के क़त़ई जन्नती होने की बिशारत व ख़ुश ख़बरी रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन की ज़िन्दगी ही में सुना दी थी । इरशाद फ़रमाया : अबू बक्र जन्नती हैं, उ़मर जन्नती हैं, उ़स्मान जन्नती हैं, अ़ली जन्नती हैं, त़ल्ह़ा जन्नती हैं, ज़ुबैर जन्नती हैं, अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ जन्नती हैं, सा'द बिन अबी वक़्क़ास जन्नती हैं, सईद बिन ज़ैद जन्नती हैं और अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ जन्नती हैं ।[2]

सुवाल किस सह़ाबी ने अपने अक्सर बेटों के नाम ह़ज़राते अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام के नामों पर रखे ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अक्सर बेटों के नाम ह़ज़राते अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام के नामों पर हैं ।[3]

---

1 . . . طبقات ابن سعد، الطبقة الاولي علي السابقة . . . الخ، علي بن ابي طالب، ۳/۲۷۔

2 .....दस अ़क़ीदे, स. 100

ترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب عبد الرحمن . . . الخ، ۵/۴۱۶، حدیث: ۳۷۶۸۔

3 . . . طبقات لابن سعد، الرقم: ۴۷، طلحه بن عبيد الله، ۳/۱۶۰۔

www.dawateislami.net

सुवाल हज़रते सय्यिदुना तल्हा बिन उबैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के कितने बेटे थे ? इन के नाम बताइये ?

जवाब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ग्यारह बेटे थे : (1) मुहम्मद (2) इमरान (3) मूसा (4) या'कूब (5) इस्माईल (6) इस्हाक़ (7) ज़करिय्या (8) यूसुफ़ (9) ईसा (10) यह्या (11) सालेह (رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن)[1]

सुवाल सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अव्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से क्या रिश्ता है ?

जवाब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ शहनशाहे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फूफीज़ाद भाई हैं ।[2]

सुवाल सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अव्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बद्र के दिन किस रंग का इमामा शरीफ़ बांध रखा था ?

जवाब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पीले रंग का इमामा शरीफ़ बांध रखा था ।[3]

सुवाल किस सहाबी ने बारगाहे रिसालत से "अमीनुल उम्मत" का लक़ब पाया ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना अबू उबैदा बिन जर्राह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ।[4]

सुवाल हज़रते सय्यिदुना अबू उबैदा बिन जर्राह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मुकम्मल नामो नसब बताइये ?

---

1 . . . طبقات ابن سعد، الرقم: ۴۷، طلحہ بن عبید اللہ، ۳/ ۱۶۰۔

2 . . . بخاری، کتاب المساقات، باب شرب الاعلی قبل الاسفل، ۲/ ۹۶، حدیث: ۲۳۶۱۔

3 . . . مستدرک، کتاب معرفۃ الصحابۃ، اول غزوۃ فی الاسلام بدر، ۴/ ۴۳۸، حدیث: ۵۶۰۸۔

4 . . . بخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب مناقب ابی عبیدۃ . . . الخ، ۲/ ۵۴۵، حدیث: ۳۷۴۴۔

www.dawateislami.net

जवाब आ़मिर बिन अ़ब्दुल्लाह बिन जर्राह़ बिन हिलाल बिन वुहैब बिन ज़ब्बा बिन फ़िह्र बिन मालिक बिन नज़्र बिन किनाना।[1]

सुवाल हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का तआ़रुफ़ किस त़रह़ करवाया ?

जवाब ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने बारगाहे नुबुव्वत में अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मैं कौन हूं ? हुज़ूर नबिय्ये ग़ैब दां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुम सा'द बिन मालिक बिन उहैब बिन अ़ब्दे मनाफ़ हो और जो इस के इलावा कोई और नसब तुम्हारी त़रफ़ मन्सूब करे उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ला'नत हो।[2]

सुवाल ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के लिये ज़बाने रिसालत से क्या दुआ़ निकली ?

जवाब इमामुल अम्बिया व मुर्सलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन के लिये यूं दुआ़ फ़रमाई : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सा'द जब भी तुझ से दुआ़ करे तू उस की दुआ़ क़बूल फ़रमा।[3]

फ़ाएदा : इस दुआ़ए नबवी की बरकत से ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه मुस्तजाबुद्दा'वात बन गए और उन की हर दुआ़ क़बूल होती थी, इस से मुतअ़ल्लिक़ वाक़िआ़त जामेअ़ करामाते औलिया में मज़्कूर हैं।[4]

---

1 ...مستدرک، کتاب معرفۃ الصحابۃ، ذکر مناقب ابی عبیدۃ بن الجراح رضی اللہ عنہ، ۴/۲۹۵، حدیث: ۵۱۹۱۔

2 ...مستدرک، کتاب معرفۃ الصحابۃ، باب ذکر مناقب ابی اسحاق بن ابی وقاص، ۴/۶۲۸، حدیث: ۶۱۴۶۔

3 ...ترمذی، ابواب المناقب، باب مناقب ابی اسحاق سعد...الخ، ۵/۴۱۸، حدیث: ۳۷۷۲۔

4 ...جامع کرامات الاولیاء، سعد بن ابی وقاص رضی اللہ عنہ، ۱/۱۳۷۔

www.dawateislami.net

सुवाल सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की कुन्यत क्या है ?

जवाब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुबारक कुन्यत "अबुल आ'वर" है ।[1]

सुवाल ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने किस किस ग़ज़्वे में शिर्कत फ़रमाई ?

जवाब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ग़ज़्वए बद्र के इलावा उहुद, ख़न्दक़ वग़ैरा तमाम ग़ज़्वात में शरीक हुवे ।[2]

सुवाल कौन से सह़ाबी के सर पर रह़मते आ़लमिय्यां, सरदारे दो जहां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ुद इमामा शरीफ़ का ताज सजाया था ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ।[3]

सुवाल हुज़ूर जाने आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने किस नमाज़ में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इक़्तिदा फ़रमाई थी ?

जवाब नमाज़े फ़ज्र में ।[4]

सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن

सुवाल सह़ाबी किसे कहते हैं ?

जवाब सह़ाबी से मुराद जिन्नो इन्स में से हर वोह फ़र्द है जिस ने ईमान की ह़ालत में हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मुलाक़ात की और इस्लाम की ह़ालत में ही उसे मौत आई ।[5]

---

1 ...ترمذی، ابواب المناقب، باب مناقب عبدالرحمن بن عوف رضی اللہ عنہ، ۵/۴۱۶، حدیث: ۳۷۶۹۔

2 ...مستدرک، کتاب معرفۃ الصحابۃ، باب ذکر مناقب سعید بن زید رضی اللہ عنہ، ۴/۵۴۶، حدیث: ۵۹۰۷۔

3 ...ابوداود، کتاب اللباس، باب فی العمائم، ۴/۷۷، حدیث: ۴۰۷۹۔

4 ...مسلم، کتاب الطہارۃ، باب المسح علی الناصیۃ والعمامۃ، ص ۱۶۰، حدیث: ۲۷۴۔

5 ...حدیقۂ ندیہ، شرح مقدمۃ الکتاب، ۱/۱۳۔

www.dawateislami.net

सुवाल कुरआने पाक में सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की क्या सिफ़ात बयान फ़रमाई गई हैं ?

जवाब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ؕ وَالَّذِیْنَ مَعَهٗۤ اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَآءُ بَیْنَهُمْ تَرٰىهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا یَّبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَ رِضْوَانًا ٞ سِیْمَاهُمْ فِیْ وُجُوْهِهِمْ مِّنْ اَثَرِ السُّجُوْدِ ؕ﴾ (پ۲۶،الفتح:۲۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं और उन के साथ वाले काफ़िरों पर सख़्त हैं और आपस में नर्म दिल तो उन्हें देखेगा रुकूअ़ करते सजदे में गिरते अल्लाह का फ़ज़्ल व रिज़ा चाहते उन की अ़लामत उन के चेहरों में है सजदों के निशान से।

सुवाल कुरआने पाक में सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को क्या ख़ुश ख़बरी सुनाई गई है ?

जवाब सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को रिज़ाए इलाही और जन्नत की ख़ुश ख़बरी सुनाई गई है, इरशादे बारी तआ़ला है :

﴿رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَ رَضُوْا عَنْهُ وَ اَعَدَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِیْ تَحْتَهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِیْنَ فِیْهَاۤ اَبَدًا ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِیْمُ﴾(پ۱۱،التوبة:۱۰۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह उन से राज़ी और वोह अल्लाह से राज़ी और उन के लिये तय्यार कर रखे हैं बाग़ जिन के नीचे नहरें बहें हमेशा हमेशा उन में रहें येही बड़ी कामयाबी है।

सुवाल हुज़ूर रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने अस्ह़ाबे किराम के मुतअ़ल्लिक़ क्या इरशाद फ़रमाया ?

www.dawateislami.net

जवाब रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कई मवाक़ेअ़ पर ह़ज़राते सह़ाबए किराम की अहम्मिय्यत व शान बयान फ़रमाई, चन्द फ़रामीने मुक़द्दसा मुलाह़ज़ा फ़रमाइये : (1) "मेरे सह़ाबा की इ़ज़्ज़त करो कि वोह तुम्हारे नेक तरीन लोग हैं ।"[1] (2) "मेरे सह़ाबा सितारों की मानिन्द हैं तुम उन में से जिस की भी पैरवी करोगे हिदायत पा जाओगे ।"[2] (3) "अगर तुम में कोई उहुद पहाड़ के बराबर सोना ख़ैरात करे तो इस का सवाब मेरे किसी सह़ाबी के एक मुद (थोड़ी मिक़्दार) बल्कि आधा मुद ख़ैरात करने के बराबर भी नहीं हो सकता ।"[3]

सुवाल ह़दीसे मुबारका में दुश्मनाने सह़ाबा के मुतअ़ल्लिक़ क्या वईद आई है ?

जवाब ह़दीसे मुबारका में ऐसे शख़्स को ला'नते ख़ुदावन्दी का मुस्तह़िक़ क़रार दिया गया ।[4] और एक ह़दीसे पाक में सह़ाबए किराम को अज़िय्यत देने वाले को अ़ज़ाब की वईद सुनाई गई है ।[5]

सुवाल ह़ज़राते सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن के मुतअ़ल्लिक़ हमारा क्या अ़क़ीदा है ?

जवाब तमाम सह़ाबए किराम (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) आक़ाए दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जां निसार, सच्चे ग़ुलाम और जन्नती हैं, इन का ज़िक्र अ़क़ीदत व मह़ब्बत के साथ करना फ़र्ज़ है, इन के मुतअ़ल्लिक़

1 ...مشکاۃ المصابیح، کتاب المناقب، باب مناقب الصحابۃ، ۲/۴۱۳، حدیث: ۶۰۱۲۔

2 ...مشکاۃ المصابیح، کتاب المناقب، باب مناقب الصحابۃ، ۲/۴۱۴، حدیث: ۶۰۱۸۔

3 ...بخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب قول النبی "لو کنت متخذا خلیلا"، ۲/۵۲۲، حدیث: ۳۶۷۳۔

4 ...معجم اوسط، من اسمہ عبد الرحمن، ۳/۳۳۶، حدیث: ۴۷۷۱۔

5 ...ترمذی، کتاب المناقب، باب فی من سبّ أصحاب النبی، ۵/۴۶۳، حدیث: ۳۸۸۸۔

www.dawateislami.net

बुरा ख़याल रखने वाला बद मज़हब, गुमराह और अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार है कि जो उन पर ज़बान दराज़ करे गोया वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़िक्मत व कुदरत और प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिफ़्अ़त व वजाहत और शाने मह़बूबी पर ए'तिराज़ करता है, ताबेईन से क़ियामत तक कोई भी उम्मती किसी सह़ाबी के मर्तबे को नहीं पहुंच सकता।[1]

सुवाल सब से पहले सह़ाबिये रसूल कौन हैं ?

जवाब सब से पहले सह़ाबिये रसूल बनने का शरफ़ आज़ाद मर्दों में ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर, बच्चों में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा, ग़ुलामों में ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन ह़ारिसा और औ़रतों में ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़दीजतुल कुब्रा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم) को ह़ासिल है।[2]

सुवाल वोह पहले शहीद कौन हैं जिन की नमाज़े जनाज़ा हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पढ़ाई ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه।[3]

सुवाल राहे ख़ुदा में शहीद होने वाली सब से पहली सह़ाबिया का नाम बताइये ?

जवाब उम्मे अ़म्मार ह़ज़रते सय्यिदतुना सुमय्या رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا।[4]

1.....बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा, 1, 1 / 252-254। दस अ़क़ीदे, पांचवां अ़क़ीदा, स. 77-78, 87, मुलख़्ख़सन।

2.....ख़ाज़िन, पारह 11 अत्तौबह, तह़तुल आयत : 100, 2 / 274।

3.....اسد الغابۃ، حمزۃ بن عبد المطلب، ۲/۷۰۔

4.....اسد الغابۃ، سمیۃ ام عمار، ۷/۱۶۷۔

www.dawateislami.net

सुवाल "ग़सीलुल मलाइका' कौन से सहाबी का लक़ब है और इस की वज्ह क्या है ?

जवाब वोह हज़रते सय्यिदुना हन्ज़ला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं और इस लक़ब की वज्ह येह है कि जंग में शहादत के बा'द आप को फ़िरिश्तों ने ग़ुस्ल दिया था।[1]

सुवाल हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का अस्ल नाम और "अबू हुरैरा" से मश्हूर होने की वज्ह बताइये ?

जवाब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का अस्ल नाम "अ़ब्दुल्लाह" या "अ़ब्दुर्रह़मान"।[2] एक दिन हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन की आस्तीन में एक बिल्ली देखी तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन्हें **या अबा हुरैरा** "या'नी ऐ बिल्ली वाले !" कह कर पुकारा, इसी दिन से आप का येह लक़ब मश्हूर हो गया।[3]

सुवाल हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने किस की कुन्यत "अबू ह़म्ज़ा" रखी थी ?

जवाब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की कुन्यत "अबू ह़म्ज़ा" रखी थी।[4]

सुवाल कौन से सहाबी एक ही रक्अ़त में पूरा क़ुरआने करीम तिलावत फ़रमा लेते थे ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना तमीम दारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ।[5]

---

1 ...الاصابۃ، حنظلۃ بن ابی عامر، ۲/۱۱۹۔

2 ...الاکمال فی اسماء الرجال، حرف الھاء، فصل فی الصحابۃ، ص ۶۲۲

3 ...اسد الغابۃ، ابوھریرۃ، ۶/۳۳۷ ملخصاً۔

4 ...الاستیعاب، انس بن مالک، ۱/۱۹۹۔

5 ...الاکمال فی اسماء الرجال، حرف التاء، فصل فی الصحابۃ، ص ۵۸۸۔

www.dawateislami.net

उम्महातुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ

सुवाल अज़्वाजे मुत़ह्हरात को "उम्महातुल मोमिनीन" क्यूं कहा जाता है ?

जवाब आक़ाए दो जहां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अज़्वाजे मुत़ह्हरात को "उम्महातुल मोमिनीन" इस लिये कहा जाता है कि कुरआने मजीद ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अज़्वाजे मुत़ह्हरात को मोमिनों की मां क़रार दिया है, फ़रमाने बारी तआ़ला है : ﴿وَ اَزْوَاجُهٗۤ اُمَّهٰتُهُمْ﴾(پ۲۲،الاحزاب:۶) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और उस की बीबियां उन की माएं हैं।

सुवाल उम्महातुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ की ता'दाद कितनी है ?

जवाब उम्महातुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ की ता'दाद में इख़्तिलाफ़ है मगर जिन ग्यारह पर सब का इत्तिफ़ाक़ है, उन में से 6 क़बीलए क़ुरैश से और 4 अ़रब के दीगर क़बीलों से और 1 बनी इसराईल के क़बीलए बनू नज़ीर से तअ़ल्लुक़ रखती हैं जिन के अस्माए गिरामी बित्तरतीब येह हैं : (1) ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़दीजा बिन्ते ख़ुवैलिद (2) आ़इशा बिन्ते अबू बक्र सिद्दीक़ (3) ह़फ़्सा बिन्ते उ़मर फ़ारूक़ (4) उम्मे ह़बीबा बिन्ते अबू सुफ़्यान (5) उम्मे सलमा बिन्ते अबू उमय्या (6) सौदह बिन्ते ज़मआ़ (7) ज़ैनब बिन्ते जह़्श (8) मैमूना बिन्ते ह़ारिस (9) ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा (10) जुवैरिया बिन्ते ह़ारिस और (11) सफ़िय्या बिन्ते ह़ुयैय رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ ।[1]

सुवाल कौन सी अज़्वाजे मुत़ह्हरात हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़याते ज़ाहिरी ही में इन्तिक़ाल फ़रमा गईं थीं ?

---

1 ...مواھب لدنیۃ، المقصد الثانی، الفصل الثالث فی ذکر ازواجہ...الخ، ۱/۴۰۱-۴۰۲، ملتقطاً۔

www.dawateislami.net

जवाब हज़रते सय्यिदतुना ख़दीजतुल कुब्रा ।[1] और हज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا)[2]

सुवाल सब से आख़िर में इन्तिक़ाल फ़रमाने वाली ज़ौजए मोहतरमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का नाम बताएं ?

जवाब उम्महातुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ में सब से आख़िर में हज़रते उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने इन्तिक़ाल फ़रमाया ।[3]

सुवाल जन्नती औरतों में सब से अफ़्ज़ल कौन हैं ?

जवाब उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना ख़दीजतुल कुब्रा, हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा, हज़रते सय्यिदतुना मरयम और हज़रते सय्यिदतुना आसिया बिन्ते मुज़ाहिम (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ)[4]

सुवाल हुज़ूर ख़ातमुल अम्बिया वल मुर्सलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पहली वह्य नाज़िल होने की ख़बर सब से पहले किस को दी ?

जवाब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पहली वह्य के मुतअ़ल्लिक़ सब से पहले हज़रते सय्यिदतुना ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को बताया ।[5]

सुवाल हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की इल्मी फ़ज़ीलत बयान करें ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना उ़र्वा बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने किसी को क़ुरआने करीम के मआ़नी, ह़लाल व ह़राम के अह़काम,

---

1 ...بخاری، کتاب مناقب الانصار، باب تزویج النبی عائشة، ۲/۵۸۹، حدیث: ۳۸۹۶۔

2 ...مستدرک، کتاب معرفة الصحابة، ذکر ام المؤمنین زینب بنت خزیمة العامریة، ۵/۴۴، حدیث: ۶۸۸۴۔

3 ...الاصابة، کتاب النساء، ام سلمة بنت ابی امیة، ۸/۴۰۷۔

4 ...مسند احمد، مسند عبد اللہ ابن عباس، ۱/۶۷۸، حدیث: ۲۹۰۳۔

5 ...بخاری، کتاب بدء الوحی، باب: ۳، ۱/۷، حدیث: ۳۔

www.dawateislami.net

अह्ले अ़रब के अश्आ़र और नसबों के इ़ल्म में ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा त़य्यिबा त़ाहिरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से ज़ियादा इ़ल्म वाला नहीं देखा।[1]

सुवाल "उम्मुल मसाकीन" के लक़ब से कौन सी ज़ौजए मोह़तरमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا मश्हूर थीं ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا।[2]

सुवाल उम्मुल मोमिनीन सय्यिदतुना उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का नाम क्या है ?

जवाब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का नाम "हिन्द" है।[3]

सुवाल उम्मुल मोमिनीन सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते जह़्श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का नाम पहले क्या था ?

जवाब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का नाम "बर्रह" था जिसे हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तब्दील फ़रमा कर "ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا" रखा।[4]

सुवाल उम्मुल मोमिनीन सय्यिदतुना उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का अदबे रसूल कैसा था ?

जवाब सुल्ह़े हुदैबिय्या के ह़वाले से (क़बूले इस्लाम से पहले) ह़ज़रते अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मदीनए मुनव्वरा आए तो अपनी बेटी उम्मुल मोमिनीन सय्यिदतुना उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के घर पहुंच कर चाहा कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बिस्तर पर बैठें तो उम्मुल मोमिनीन ने उन्हें बिस्तर पर बैठने से मन्अ़ कर दिया और

1 ...حلیۃ الاولیاء، عائشۃ زوج رسول اللہ، ۲/۶۰، رقم: ۱۴۸۲۔

2 ...مستدرک، کتاب معرفۃ الصحابۃ، ذکر ام المؤمنین زینب بنت خزیمۃ العامریۃ، ۵/۴۴، حدیث: ۶۸۸۴۔

3 ...الاصابۃ، کتاب النساء، ام سلمۃ بنت ابی امیۃ، ۸/۴۰۴۔

4 ...مسلم، کتاب الاداب، باب استحباب تغییر الاسم القبیح الی حسن...الخ، ص ۱۱۸۲، حدیث: ۲۱۴۲۔

www.dawateislami.net

फ़रमाया : येह रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पाकीज़ा बिस्तर है और आप नजासते शिर्क से आलूदा हो लिहाज़ा मुझे आप का इस मुक़द्दस बिस्तर पर बैठना पसन्द नहीं।[1]

सुवाल उम्मुल मोमिनीन सय्यिदतुना सफ़िय्या बिन्ते हुयैय رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا किस क़ौम से हैं ?

जवाब आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا बनी इसराईल से ह़ज़रते सय्यिदुना हारून عَلَيْهِ السَّلَام की औलाद से हैं।[2]

अह्ले बैत رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن

सुवाल कुरआने पाक में अह्ले बैत की फ़ज़ीलत में क्या इरशाद हुवा ?

जवाब ﴿اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ اَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيْرًا﴾ (پ۲۲، الاحزاب: ۳۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह तो येही चाहता है ऐ नबी के घरवालो कि तुम से हर नापाकी दूर फ़रमा दे और तुम्हें पाक कर के ख़ूब सुथरा कर दे।

सुवाल अह्ले बैते किराम की मुक़द्दस जमाअ़त किन अफ़राद पर मुश्तमिल है ?

जवाब अह्ले बैत में नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अज़्वाजे मुत़ह्हरात और ह़ज़रते ख़ातूने जन्नत फ़ातिमा ज़हरा और अ़लिय्ये मुर्तज़ा और ह़सनैने करीमैन (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم اَجْمَعِيْن) सब दाख़िल हैं, आयात व अह़ादीस को जम्अ़ करने से येही नतीजा निकलता है और येही ह़ज़रते इमाम अबू मन्सूर मातुरीदी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मन्क़ूल है।[3]

---

1 ...دلائل النبوۃ للبیہقی، جماع ابواب فتح مکۃ حرسہا اللہ تعالٰی، باب نقص قریش...الخ، ۵/۸۔

2 ...ترمذی، کتاب المناقب، باب فی فضل ازواج النبی صلی اللہ علیہ وسلم، ۵/۴۷۴، حدیث: ۳۹۱۸۔

3 .....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 22, अल अह़ज़ाब, तह़तुल आयत : 33, स. 780।

www.dawateislami.net

सुवाल अह्ले बैत की मह़ब्बत के ह़वाले से हमें क्या ता'लीम दी गई है ?

जवाब फ़ैज़े गंजीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : अपनी औलाद को तीन बातें सिखाओ (1) अपने नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत (2) अह्ले बैत رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن की मह़ब्बत और (3) तिलावते कुरआन।[1]

सुवाल हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अह्ले बैत की ता'ज़ीम व हुरमत के बारे में क्या इरशाद फ़रमाया ?

जवाब हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तीन हुरमतें हैं जो इन की ह़िफ़ाज़त करे **अल्लाह** तआ़ला उस के दीन व दुन्या मह़फ़ूज़ रखे और जो इन की ह़िफ़ाज़त न करे **अल्लाह** तआ़ला उस की किसी चीज़ की ह़िफ़ाज़त न फ़रमाए, अ़र्ज़ की गई : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वोह तीन हुरमतें कौन सी हैं ? इरशाद फ़रमाया : एक इस्लाम की हुरमत, दूसरी मेरी हुरमत, तीसरी मेरी क़राबत की हुरमत।[2]

सुवाल अह्ले बैते किराम से बद सुलूकी करने वाले के लिये क्या वई़द आई है ?

जवाब फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : जिसे पसन्द हो कि उस की उ़म्र में बरकत हो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे अपनी दी हुई ने'मत से बहरामन्द करे तो उसे लाज़िम है कि मेरे बा'द मेरे अह्ले बैत से अच्छा सुलूक करे, जो ऐसा न करे उस की उ़म्र की बरकत उड़ जाए और क़ियामत में मेरे सामने काला मुंह ले कर आए।[3]

---

1 ...جامع صغیر، حرف الہمزۃ، ص ۲۵، حدیث: ۳۱۱۔

2 ...معجم اوسط، باب الالف، من اسمہ احمد، ۱/۷۳، حدیث: ۲۰۳۔

3 ...کنز العمال، کتاب الفضائل، فضل اہل البیت، الفصل الاول، جزء ۱۲، ۶/۴۶، حدیث: ۳۴۱۶۶۔

www.dawateislami.net

सुवाल क़राबते मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बरकत बयान कीजिये ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बरसरे मिम्बर फ़रमाया : उन लोगों का क्या हाल है कि जो येह कहते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की क़राबत रोज़े क़ियामत उन की क़ौम को नफ़्अ़ न देगी ख़ुदा की क़सम मेरी क़राबत दुन्या व आख़िरत में पैवस्ता है ।[1]

सुवाल हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अह्ले बैत से हुस्ने सुलूक के मुतअ़ल्लिक़ क्या फ़रमाया ?

जवाब अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! अपनी क़राबत (रिश्तेदारों) से अच्छा सुलूक करने के मुक़ाबले में मुझे हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की क़राबत से अच्छा सुलूक करना ज़ियादा पसन्द है। नीज़ फ़रमाया : ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ामन्दी आप के अह्ले बैत से मह़ब्बत में है ।[2]

सुवाल ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا का नाम "फ़ातिमा" रखे जाने की ह़िक्मत बयान करें ?

जवाब हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि मैं ने अपनी बेटी का नाम फ़ातिमा इस लिये रखा कि **अल्लाह** तआ़ला ने इस को और इस के साथ मह़ब्बत रखने वालों को दोज़ख़ से ख़लासी अ़ता फ़रमाई ।[3]

---

1 ...مسند احمد، مسند ابی سعید الخدری، ۴/۳۸، حدیث: ۱۱۱۳۸۔

2 ...بخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب مناقب قرابة رسول الله...الخ، ۲/۵۳۸، حدیث: ۳۷۱۲-۳۷۱۳۔

3 ...کنز العمال، کتاب الفضائل، فضل اہل البیت، ۶/۵۰، جزء ۱۲، حدیث: ۳۴۲۲۲۔

www.dawateislami.net

सुवाल शहज़ादिये कौनैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को उम्मुल मोमिनीन सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मह़ब्बत रखने की तरग़ीब किस अन्दाज़ से दी गई ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से फ़रमाया : ऐ फ़ातिमा ! जिस से मैं मह़ब्बत करता हूं तुम भी उस से मह़ब्बत करोगी ? अ़र्ज़ की : ज़रूर या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं मह़ब्बत रखूंगी। इस पर इरशाद फ़रमाया : तो आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मह़ब्बत रखो।[1]

सुवाल हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को कौन सी बेटी सब से ज़ियादा प्यारी थी ?

जवाब ख़ातूने जन्नत ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا।[2]

सुवाल नबिय्ये रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने किन को अपने दुन्यावी फूल फ़रमाया ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन और ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) को।[3]

सुवाल अह्ले बैत में से सब से ज़ियादा हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मुशाबहत कौन रखते थे ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सब से ज़ियादा मुशाबेह ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ थे।[4]

---

1 ...مسلم، کتاب فضائل الصحابة، باب فی فضل عائشة رضی اللہ تعالی عنها، ص ۱۳۲۵، حدیث: ۲۴۴۲۔

2 ...ترمذی، ابواب المناقب، باب مناقب اسامه بن زید رضی اللہ عنه، ۵/۴۴۷، حدیث: ۳۸۴۵۔

3 ...بخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب مناقب الحسن والحسین رضی اللہ عنهما، ۲/۵۴۷، حدیث: ۳۷۵۳۔

4 ...بخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب مناقب الحسن والحسین رضی اللہ عنهما، ۲/۵۴۷، حدیث: ۳۷۵۲۔

www.dawateislami.net

उ़लमा व मुज्तहिदीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی

सुवाल मुज्तहिद किसे कहते हैं ?

जवाब मुज्तहिद वोह है जिस में इस क़दर इल्मी लियाक़त और क़ाबिलिय्यत हो कि कुरआनी इशारात व रुमूज़ को समझ सके और कलाम के मक़्सद को पहचान सके और उस से मसाइल निकाल सके, नासिख़ व मन्सूख़ का पूरा इल्म रखता हो। इल्मे सरफ़ व नह्व, बलाग़त वग़ैरा में उस को पूरी महारत ह़ासिल हो, अह़काम की तमाम आयतों और ह़दीसों पर उस की नज़र हो।[1]

सुवाल आ़लिम किसे कहते हैं ?

जवाब आ़लिम की ता'रीफ़ येह है कि अ़क़ाइद से पूरे तौ़र पर आगाह हो और मुस्तक़िल हो और अपनी ज़रूरियात (ह़ाजत के मसाइल) को किताब से निकाल सके बिग़ैर किसी की मदद के।[2]

सुवाल कुरआने करीम में आ़लिम की शान किस त़रह़ बयान हुई ?

जवाब कुरआने करीम में कई मक़ामात पर इल्म वालों की शानो अ़ज़मत को बयान किया गया है। चुनान्चे, इरशादे बारी तआ़ला है :

﴿يَرْفَعِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ۙ وَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ دَرَجٰتٍ﴾ (پ۲۸، المجادلة: ۱۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह तुम्हारे ईमान वालों के और उन के जिन को इल्म दिया गया दर्जे बुलन्द फ़रमाएगा।

सुवाल ह़दीस शरीफ़ में आ़लिम का क्या मर्तबा बयान किया गया है ?

जवाब अह़ादीसे करीमा में उ़लमा के कसीर फ़ज़ाइल व मरातिब बयान हुवे हैं जिन में से एक येह भी है कि हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम

1.....आ'ला ह़ज़रत से सुवाल जवाब, स. 44।

2.....मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, हिस्सा अव्वल, स. 58।

www.dawateislami.net

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जिस के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है उसे दीन की समझ अ़ता फ़रमा देता है और बेशक मैं तक़्सीम करने वाला हूं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अ़ता फ़रमाता है।[1]

सुवाल फ़िक़्ह के मश्हूर मज़ाहिब कितने हैं और उन के पेश्वाओं के नाम क्या हैं ?

जवाब फ़िक़्ह के मश्हूर मज़ाहिब चार हैं : (1) ह़नफ़ी (2) शाफ़ेई (3) मालिकी (4) ह़म्बली। **फ़िक़्हे ह़नफ़ी** के पेश्वा इमामुल अइम्मा काशिफुल ग़ुम्मा इमामे आ'ज़म ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़नीफ़ा नो'मान बिन साबित رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه हैं। **फ़िक़्हे शाफ़ेई** के पेश्वा आ़रिफ़ बिल्लाह ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इदरीस शाफ़ेई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه हैं। **फ़िक़्हे मालिकी** के पेश्वा आ़लिमे मदीना इमामे दारुल हिजरत ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه हैं और **फ़िक़्हे ह़म्बली** के पेश्वा इमामुल मुह़द्दिसीन ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه हैं।

सुवाल दुन्या में किस फ़िक़्ही मज़्हब के पैरूकार सब से ज़ियादा हैं ?

जवाब दुन्या में ह़नफ़ी मज़्हब के पैरूकार सब से ज़ियादा हैं।[2]

सुवाल इमामे आ'ज़म رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه कब पैदा हुवे और विसाल मुबारक कब हुवा ?

जवाब आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का सिने विलादत 70 हिजरी जब कि सिने वफ़ात 150 हिजरी है।[3]

---

1 ...بخاری، کتاب العلم، باب من یرد اللہ بہ...الخ، ۱/۴۲، حدیث: ۷۱۔

2 .....मिरआतुल मनाजीह़, 2 / 48 माख़ूज़न।

3 .....नुज़्हतुल क़ारी, 1 / 169।

www.dawateislami.net

सुवाल इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का सिने विलादत और सिने वफ़ात क्या है ?

जवाब आप का सिने विलादत 150 हिजरी जब कि सिने वफ़ात 204 हिजरी है ।(1)

सुवाल इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की विलादत और वफ़ात कब हुई ?

जवाब आप का सिने विलादत 164 हिजरी जब कि सिने वफ़ात 241 हिजरी है ।(2)

सुवाल इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का सिने विलादत व वफ़ात क्या है ?

जवाब आप का सिने विलादत 93 हिजरी जब कि सिने वफ़ात 179 हिजरी है ।(3)

सुवाल ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का नाम क्या है ?

जवाब आप का इस्मे गिरामी या'क़ूब बिन इब्राहीम है ।(4)

सुवाल इमाम शाफ़ेई عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِی पर फ़िक़्ह में सब से ज़ियादा एह़सान किस का है ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : फ़िक़्ह में मुझ पर सब से ज़ियादा एह़सान इमाम मुह़म्मद बिन ह़सन शैबानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का है ।(5)

---

1 ...سیر اعلام النبلاء، الامام الشافعی، ۸/۳۷۹، मिरआतुल मनाजीह़, 1 / 13

2 .....मिरआतुल मनाजीह़, 1 / 13 ।

3 ...سیر اعلام النبلاء، مالک الامام، ۷/۳۸۳-۴۳۴۔

4 ...لسان المیزان، باب الکنی حرف الیاء، من کنیته ابو یعلی وابو یوسف، ۸/۶۲، رقم: ۱۰۹۰۴۔

5 ...تاریخ بغداد، محمد بن حسن، ۲/۱۷۳۔

www.dawateislami.net

औलिया व सालिहीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی

सुवाल वलियों के सरदार से मश्हूर हस्ती का नाम क्या है और इन का मज़ार कहां है ?

जवाब वोह मुक़द्दस हस्ती महबूबे सुब्हानी, कुत़्बे रब्बानी, ग़ौसे समदानी हुज़ूरे ग़ौसे पाक अबू मुहम्मद अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی हैं और आप का मज़ारे पुर अन्वार इराक़ के शहर बग़दाद में है।(1)

सुवाल हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की विलादत और विसाल कब हुवा ?

जवाब हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه यकुम रमज़ानुल मुबारक 471 हिजरी को पैदा हुवे और आप ने 561 हिजरी में विसाल फ़रमाया।(2)

सुवाल "कश्फ़ुल महजूब" किस बुज़ुर्ग की किताब है और येह किस मौज़ूअ़ पर है ?

जवाब येह किताब ह़ज़रते दाता गंज बख़्श सय्यिद अबुल ह़सन अ़ली बिन उ़स्मान हिजवेरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की है और इस का मौज़ूअ़ तसव्वुफ़ है।

सुवाल ह़ज़रते इमाम रब्बानी, मुजद्दिदे अल्फ़े सानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی का अस्ल नाम क्या है ?

जवाब ह़ज़रते मुजद्दिदे अल्फ़े सानी अबुल बरकात नक़्शबन्दी सरहिन्दी का अस्ल नाम शैख़ अह़मद फ़ारूक़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی है।(3)

सुवाल फ़ितनए क़ादियानिय्यत के ख़िलाफ़ किस पीर साहिब ने क़ाइदाना व मुजाहिदाना किरदार अदा किया ?

---

1 ...طبقات کبریٰ، ابو صالح سیدی عبدالقادر الجیلی، ۱/۱۷۸۔

2 ...بهجة الاسرار ذکر نسبه وصفته رضی الله تعالیٰ عنه، ص ۱۷۱۔

طبقات کبریٰ للشعرانی، ابو صالح سیدی عبدالقادر الجیلی، ۱/۱۷۸۔

3 .....तज़्किरए मुजद्दिदे अल्फ़े सानी, स. 1।

www.dawateislami.net

जवाब वोह पीर साहिब माहे शरीअ़त, महरे त़रीक़त, ताजदारे गोलड़ा ह़ज़रत पीर सय्यिद मेहर अ़ली शाह गीलानी चिश्ती निज़ामी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى हैं।[1]

सुवाल कौन से बुज़ुर्ग को 30 साल तक हंसते नहीं देखा गया ?

जवाब ह़ज़रते फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को 30 साल तक किसी ने हंसते हुवे नहीं देखा मगर आप अपने बेटे के विसाल पर मुस्कुरा दिये थे।[2]

सुवाल ह़ज़रते साबित बुनानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِى की क़ब्र से क्या आवाज़ आती थी ?

जवाब लोगों का बयान है कि जब हम ह़ज़रते सय्यिदुना साबित बुनानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِى की क़ब्र के पास से गुज़रते हैं तो हमें कुरआने करीम पढ़ने की आवाज़ आती है।[3]

सुवाल ह़ज़रते ख़्वाजा कुत़्बुद्दीन बख़्तियार काकी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى किस के मुरीद थे ?

जवाब आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ह़ज़रते शैख़ुल इस्लाम ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى के मुरीद व ख़लीफ़ा थे।[4]

सुवाल वोह कौन से बुज़ुर्ग हैं जो नंगे पाउं रहा करते थे ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى जूते नहीं पहना करते थे। किसी ने अ़र्ज़ की : आप जूते क्यूं नहीं पहनते ? इरशाद

1.....मेहरे मुनीर, स. 140। फ़ैज़ाने पीर मेहर अ़ली शाह, स. 30।

2.....تذکرۃ الاولیاء فارسی، ۱/۸۶، ملخصاً۔

3.....حلیۃ الاولیا، ثابت البنانی، ۲/۳۶۵، رقم: ۲۵۸۳۔ شرح الصدور، باب احوال الموتی فی... الخ، ص ۱۸۸۔

4.....سیر الاولیاء، ص ۱۰۵۔

www.dawateislami.net

फ़रमाया : जिस वक़्त मैं ने अपने परवरदगार عَزَّوَجَلَّ से सुल्ह़ (या'नी तौबा) की तो मेरे पाउं में जूता नहीं था लिहाज़ा अब मैं मरते वक़्त तक जूता नहीं पहनूंगा।[1]

सुवाल ह़ज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْغَنِى की क़ब्रे अन्वर की क्या बरकत है ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अ़ब्दुर्रह़मान ज़ोहरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى फ़रमाते हैं : मैं ने अपने वालिदे माजिद को फ़रमाते सुना है कि ह़ज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْغَنِى की क़ब्रे अन्वर पर तमाम ह़ाजात पूरी होती हैं।[2]

सुवाल ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद त़ाई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى किस के शागिर्द थे ?

जवाब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इमामुल अइम्मा, काशिफ़ुल ग़ुम्मा ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के शागिर्द थे और 20 साल तक उन की ख़िदमत में रहे।[3]

सुवाल "त़म्अ़ नहीं, मन्अ़ नहीं और जम्अ़ नहीं" येह किस का फ़रमान है ?

जवाब ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत कुत़्बे मदीना ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ियाउद्दीन मदनी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْغَنِى फ़रमाया करते थे : "त़म्अ़ नहीं, मन्अ़ नहीं और जम्अ़ नहीं" या'नी लालच मत करो कि कोई दे और अगर कोई बिग़ैर मांगे दे तो मन्अ़ मत करो और जब ले लो तो जम्अ़ मत करो।[4]

---

1 ...روض الریاحین، الفصل الثانی فی اثبات کرامات الاولیاء، ص ۲۱۸۔

2 ...روض الفائق، المجلس الرابع والثلاثون فی مناقب معروف الکرخی، ص ۱۸۸۔

3 ...تذکرۃ الاولیاء، ذکر ابی سلیمان داود الطائی، ص ۲۴۹۔

4 .....सय्यिदी कुत़्बे मदीना, स. 7।

www.dawateislami.net

इमामे अह्ले सुन्नत, आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه

सुवाल आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की विलादत कब हुई और आप का तारीख़ी नाम क्या है ?

जवाब 10 शव्वालुल मुकर्रम 1272 हिजरी रोज़े शम्बा (या'नी हफ़्ते के दिन) वक़्ते ज़ोहर मुत़ाबिक़ 14 जून 1856 ईसवी को हुई । और आप का तारीख़ी नाम "अल मुख़्तार" है ।[1]

सुवाल आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के आबाओ अज्दाद कहां से तअ़ल्लुक़ रखते थे ?

जवाब इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के आबाओ अज्दाद क़न्धार (अफ़ग़ानिस्तान) के बा अ़ज़मत क़बीले बड़हैच के पठान थे ।[2]

सुवाल इमामे अह्ले सुन्नत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को कितने उ़लूमो फ़ुनून पर महारत ह़ासिल थी ?

जवाब 100 से ज़ाइद क़दीमो जदीद, दीनी, अदबी और साइन्सी उ़लूम पर इमामे अह्ले सुन्नत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को दस्त्रस ह़ासिल थी ।[3]

सुवाल इमामे अह्ले सुन्नत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की तस्नीफ़ात की ता'दाद बयान कीजिये ?

जवाब इमामे अह्ले सुन्नत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने कमो बेश 1000 किताबें तह़रीर फ़रमाईं ।[4]

सुवाल आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की शोहरए आफ़ाक़ किताबों में से कुछ के नाम बताएं ।

1.....सवानेह़े इमाम अह़मद रज़ा, आ'ला ह़ज़रत का नसब नामा, स. 95 ।
2.....सवानेह़े इमाम अह़मद रज़ा, आ'ला ह़ज़रत का नसब नामा, स. 93 ।
3.....अ़क़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत, स. 159 ।
4.....फ़ैज़ाने आ'ला ह़ज़रत, स. 566 ।

www.dawateislami.net

जवाब (1) कुरआने करीम का तर्जमा बनाम "**कन्ज़ुल ईमान फ़ी तर्जमतिल कुरआन**" (2) फ़िक़्हे ह़नफ़ी का एन्साईक्लो पीडिया ब नाम "**अल अ़त़ायन्नबविय्या फ़िल फ़तावर्रिज़विय्या**" जो 33 जिल्दों पर मुश्तमिल है। (3) फ़िक़्हे ह़नफ़ी की मश्हूर किताब फ़तावा शामी पर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के ह़वाशी बनाम "**जद्दुल मुमतार अ़ला रद्दिल मुह़तार**" जो मक्तबतुल मदीना से 7 जिल्दों में शाएअ़ हो चुके हैं। (4) शोहरए आफ़ाक़ ना'तिया कलाम का मजमूआ़ "ह़दाइक़े बख़्शिश"।

सुवाल इमामे अह्ले सुन्नत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपनी मश्हूर किताब "अद्दौलतुल मक्किय्या" कितने घन्टों में तस्नीफ़ फ़रमाई ?

जवाब आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने येह किताब अपनी ख़ुदादाद याददाश्त के बल पर तफ़ासीर, अह़ादीस और कुतुबे अइम्मा की अस्ल इबारतों के ह़वाला जात नक़्ल फ़रमाते हुवे सिर्फ़ साड़े आठ घन्टे के क़लील वक़्त में तस्नीफ़ फ़रमाई।[1]

सुवाल आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की शान में डॉक्टर इक़्बाल ने क्या कहा था ?

जवाब शाइरे मशरिक़ डॉक्टर इक़्बाल ने कहा : हिन्दुस्तान के दौरे आख़िर में इन जैसा त़ब्बाअ़ व ज़हीन फ़क़ीह पैदा नहीं हुवा। मैं ने इन के फ़तावा के मुत़ालए़ से येह राए क़ाइम की है और इन के फ़तावा इन की ज़हानत, फ़त़ानत, जूदते त़ब्अ़, कमाले फ़क़ाहत और उ़लूमे दीनिया में तबह़्ह़ुरे इल्मी के शाहिदे अ़द्ल हैं।[2]

सुवाल इमामे अह्ले सुन्नत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की सीरत की कुछ झल्कियां बयान करें ?

1.....सवानेह़े इमाम अह़मद रज़ा, स. 305।

2.....इमाम अह़मद रज़ा और रद्दे बिदआ़त व मुन्किरात, स. 370।

www.dawateislami.net

जवाब आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه अक्सर फ़िराक़े मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में ग़मगीन रहते और सर्द आहें भरा करते। ग़ुरबा को कभी ख़ाली हाथ नहीं लौटाते थे, बल्कि आख़िरी वक़्त भी अ़ज़ीज़ो अक़ारिब को वसिय्यत की, कि ग़ुरबा का ख़ास ख़याल रखना। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه अक्सर तस्नीफ़ो तालीफ़ में लगे रहते। पांचों नमाज़ों के वक़्त मस्जिद में ह़ाज़िर होते और हमेशा नमाज़े बा जमाअ़त अदा फ़रमाया करते, आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की ख़ूराक बहुत कम थी।[1]

सुवाल आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की कोई करामत बयान कीजिये ?

जवाब जनाबे सय्यिद अय्यूब अ़ली शाह साह़िब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه एक बार पीलीभीत से बरेली शरीफ़ ब ज़रीअ़ए रेल जा रहे थे। रास्ते में नवाब गंज के स्टेशन पर जहां गाड़ी सिर्फ़ दो मिनट के लिये ठहरती है, मग़रिब का वक़्त हो चुका था, आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने गाड़ी ठहरते ही तक्बीरे इक़ामत फ़रमा कर गाड़ी के अन्दर ही निय्यत बांध ली, ग़ालिबन पांच शख़्सों ने इक़्तिदा की उन में मैं भी था लेकिन अभी शरीके जमाअ़त नहीं होने पाया था कि मेरी नज़र ग़ैर मुस्लिम गार्ड पर पड़ी जो प्लेटफ़ॉर्म पर खड़ा सब्ज़ झन्डी हिला रहा था, मैं ने खिड़की से झांक कर देखा कि लाइन क्लियर थी और गाड़ी छूट रही थी, मगर गाड़ी न चली और हुज़ूर आ'ला ह़ज़रत ने ब इत़मीनाने तमाम बिला किसी इज़्तिराब के तीनों फ़र्ज़ रक्अ़तें अदा कीं और जिस वक़्त दाईं जानिब सलाम फेरा था गाड़ी चल दी। मुक़्तदियों की ज़बान से बे साख़्ता سُبْحٰنَ اللهِ سُبْحٰنَ اللهِ سُبْحٰنَ اللهِ निकल गया। इस करामत में क़ाबिले ग़ौर येह बात थी कि अगर जमाअ़त प्लेटफ़ॉर्म

1.....तज़्किरए इमाम अह़मद रज़ा, स. 13-14, मुल्तक़त़न।

www.dawateislami.net

पर खड़ी होती तो येह कहा जा सकता था कि गार्ड ने एक बुज़ुर्ग हस्ती को देख कर गाड़ी रोक ली होगी ऐसा न था बल्कि नमाज़ गाड़ी के अन्दर पढ़ी थी। इस थोड़े वक़्त में गार्ड को क्या ख़बर हो सकती थी कि एक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मह़बूब बन्दा फ़रीज़ए नमाज़ गाड़ी में अदा करता है।[1]

सुवाल वोह कौन सी चीज़ थी जिस का इज़हार आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के हर क़ौलो फ़े'ल से हुवा करता था ?

जवाब इश्क़े मुस्त़फ़ा और ह़िमायते मज़हब।

सुवाल आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के पीरो मुर्शिद का नाम बताएं नीज़ आप को ख़लीफ़ा बनाते वक़्त आप के पीरो मुर्शिद ने क्या इरशाद फ़रमाया था ?

जवाब आप के पीरो मुर्शिद ह़ज़रते शाह आले रसूल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه हैं और आप ने इरशाद फ़रमाया : मैं मुतफ़क्किर था कि अगर क़ियामत के दिन रब्बुल इ़ज़्ज़त ने इरशाद फ़रमाया कि आले रसूल ! तू दुन्या से मेरे लिये क्या लाया ? तो मैं क्या जवाब दूंगा, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ आज वोह फ़िक्र दूर हो गई मुझ से रब तआ़ला जब येह पूछेगा कि आले रसूल ! तू दुन्या से मेरे लिये क्या लाया है ? तो मैं **मौलाना अह़मद रज़ा** को पेश कर दूंगा ! ! ![2]

सुवाल आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का विसाल कब हुवा था ?

जवाब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने 25 सफ़र 1340 हिजरी मुत़ाबिक़ 28 अक्तूबर 1921 ईसवी को जुमुअ़तुल मुबारक के दिन 2 बज कर 38 मिनट पर ऐन अज़ाने जुमुआ़ के वक़्त विसाल फ़रमाया।[3]

1.....तज़किरए इमाम अह़मद रज़ा, स. 15-16।

2.....फ़ैज़ाने आ'ला ह़ज़रत, स. 317।

3.....सवानेह़े इमाम अह़मद रज़ा, स. 388।

www.dawateislami.net

अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

सुवाल अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की विलादत किस सिने हिजरी में हुई ?

जवाब आप 26 रमज़ानुल मुबारक 1369 हिजरी मुत़ाबिक़ 1950 ईसवी को पैदा हुवे ।[1]

सुवाल अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का इस्मे गिरामी और उ़र्फ़ी नाम क्या है ?

जवाब आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का इस्मे गिरामी "मुह़म्मद" और उ़र्फ़ी नाम "इल्यास" है ।[2]

सुवाल अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के नाम के साथ ज़ियाई निस्बत क्यूं लगाई जाती है ?

जवाब ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, कुत़्बे मदीना ह़ज़रते मौलाना ज़ियाउद्दीन मदनी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْغَنِى के मुरीद होने की निस्बत से "ज़ियाई" कहलाते हैं ।[3]

सुवाल अमीरे अह्ले सुन्नत مُدَّظِلُّهُ الْعَالِى कितना अ़र्सा मुफ़्तिये आ'ज़म पाकिस्तान मुफ़्ती वक़ारुद्दीन क़ादिरी रज़वी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى की सोह़बते बा बरकत से मुस्तफ़ीज़ होते रहे ?

जवाब मुसलसल 22 साल ।[4]

सुवाल अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को किन बुज़ुर्गों से ख़िलाफ़त ह़ासिल है ?

1.....तआ़रुफ़े अमीरे अह्ले सुन्नत स. 10 ।

2.....तज़किरए अमीरे अह्ले सुन्नत, क़िस्त़ 2, स. 6 ।

3.....तज़किरए अमीरे अह्ले सुन्नत, क़िस्त़ 2, स. 6 ।

4.....तआ़रुफ़े अमीरे अह्ले सुन्नत, अमीरे अह्ले सुन्नत का शौक़े इ़ल्म, स. 18 ।

www.dawateislami.net

जवाब आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को मुफ़्तिये आ'ज़म पाकिस्तान मुफ़्ती वक़ारुद्दीन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه, शारेहे बुख़ारी मुफ़्ती शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه, जा नशीने क़ुत़्बे मदीना मौलाना फ़ज़्लुर्रह़मान साहि़ब अशरफ़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه और दुन्याए इस्लाम के कई अकाबिर उ़लमा से ख़िलाफ़त ह़ासिल है।[1]

सुवाल जिस दिन अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का निकाह़ हुवा उस दिन के कुछ मुआ़मलात बताएं ?

जवाब उस दिन अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने नूर मस्जिद में नमाज़े जुमुआ़ अदा फ़रमाई, क़ब्रिस्तान भी गए, खारादर में वाक़ेअ़ ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद शाह दूल्हा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के मज़ार शरीफ़ पर ह़ाज़िरी की सआ़दत भी ह़ासिल की और हस्पताल जा कर अपने एक दोस्त की इ़यादत भी की।[2]

सुवाल अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का बा जमाअ़त नमाज़ की पाबन्दी का कोई वाक़िआ़ बताएं ?

जवाब (अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं) रब عَزَّوَجَلَّ के करम से शुरूअ़ से ही बा जमाअ़त नमाज़ पढ़ने का ज़ेह्न था, जमाअ़त तर्क कर देना मेरी लुग़त में ही नहीं था। यहां तक कि जब मेरी वालिदए मोह़तरमा का इन्तिक़ाल हुवा तो उस वक़्त घर में दूसरा कोई मर्द न था मैं अकेला था मगर اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मां की मय्यित छोड़ कर मस्जिद में नमाज़ पढ़ाने की सआ़दत पाई। मां के ग़म में दौराने नमाज़ मेरे आंसू ज़रूर बह रहे थे मगर इस सूरते ह़ाल में भी اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ जमाअ़त न छोड़ी।[3]

1.....तआ़रुफ़े अमीरे अह्ले सुन्नत, स. 73।

2.....तज़्किरए अमीरे अह्ले सुन्नत, क़िस्त़ 3, स. 17 मुलख़्ख़सन।

3.....तज़्किरए अमीरे अह्ले सुन्नत, क़िस्त़ 3, स. 19।

www.dawateislami.net

सुवाल अमीरे अह्ले सुन्नत مُدَّظِلُّهُ الْعَالِی सुनह्री जालियों के रू बरू क्या दुआ़एं करते हैं ?

जवाब अमीरे अह्ले सुन्नत مُدَّظِلُّهُ الْعَالِی फ़रमाते हैं : मुझे याद नहीं पड़ता कि मैं ने आक़ा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के दरबार से कभी दुन्या की ज़लील दौलत का मुत़ालबा किया हो बल्कि मैं ने तो आक़ा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की याद में तड़पने वाला दिल, आप के ग़म में रोने वाली आंखें और ईमानो आ़फ़ियत पर मदीने शरीफ़ में मौत नसीब होने की दुआ़ की है ।[1]

सुवाल अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की बैनल अक़्वामी शोहरत याफ़्ता किताब का नाम बताएं ?

जवाब फ़ैज़ाने सुन्नत ।

सुवाल अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने ईमानियात और कुफ़्रिय्यात के मौज़ूअ़ पर कौन सी किताब तस्नीफ़ फ़रमाई है ?

जवाब आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने ईमानियात और कुफ़्रिय्यात के मौज़ूअ़ पर उर्दू ज़बान में इन्तिहाई ज़ख़ीम किताब बनाम "कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब" तस्नीफ़ फ़रमाई है ।

सुवाल मुआ़शरे को अम्न का गहवारा बनाने और बाहमी इ़ज़्ज़तो एह़तिराम की फ़ज़ा हमवार करने के लिये अमीरे अह्ले सुन्नत ने कौन से रसाइल तह़रीर फ़रमाए हैं ?

जवाब एह़तिरामे मुस्लिम, हाथों हाथ फूफी से सुल्ह़ कर ली, नाचाक़ियों का इ़लाज, ग़ुस्से का इ़लाज ।

सुवाल शैख़े त़रीक़त अमीरे अह्ले सुन्नत के "मदनी मुज़ाकरों" से

1 .....तआ़रुफ़े अमीरे अह्ले सुन्नत, माल की मह़ब्बत से परहेज़, स. 52 माख़ूज़न ।

www.dawateislami.net

मुसलमानों की इनफ़िरादी और इजतिमाई ज़िन्दगी पर क्या असरात मुरत्तब हो रहे हैं ?

जवाब मदनी मुज़ाकरे की बरकत से लोग गुनाहों से ताइब हो कर न सिर्फ़ फ़राइज़ो वाजिबात की पाबन्दी करने लग जाते हैं बल्कि मुस्तहब आ'माल के भी आ़दी हो जाते हैं।

ज़िक्रो अज़्कार

सुवाल अज़्कारे मासूरा किसे कहते हैं ?

जवाब ऐसे कलिमात और दुआ़एं हैं जो हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मन्क़ूल हैं कि उन को ख़ुद हुज़ूर ने पढ़ा, या उन के पढ़ने का हुक्म दिया या उन को पढ़ने की फ़ज़ीलत या फ़ाएदा और सवाब बताया, ऐसे कलिमात और दुआ़ओं को "अज़्कारे मासूरा" कहते हैं।[1]

सुवाल अल्लाह तआ़ला के 99 नाम याद करने की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब ह़दीसे पाक में है : बेशक अल्लाह तआ़ला के निनानवे नाम हैं या'नी एक कम सौ, जिस ने इन्हें याद कर लिया वोह जन्नत में दाख़िल हुवा।[2]

सुवाल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को सब से ज़ियादा मह़बूब चार कलिमात कौन से हैं ?

जवाब वोह कलिमात येह हैं : "سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ"।[3]

सुवाल अफ़्ज़ल ज़िक्र और अफ़्ज़ल दुआ़ क्या है ?

जवाब अफ़्ज़ल ज़िक्र لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه है और अफ़्ज़ल दुआ़ اَلْحَمْدُ لِلّٰه है।[4]

---

1 .....बिहिश्त की कुन्जियां, स. 157।

2 ...بخاری، کتاب الشروط، باب مایجوز من الاشتراط والثّنیا فی الاقرار...الخ، ۲/۲۲۹، حدیث: ۲۷۳۶۔

3 ...مشکاۃ المصابیح، کتاب الدعوات، باب ثواب التسبیح...الخ، ۱/۴۲۹، حدیث: ۲۲۹۴۔

4 ...مشکاۃ المصابیح، کتاب الدعوات، باب ثواب التسبیح...الخ، ۱/۴۳۱، حدیث: ۲۳۰۶۔

www.dawateislami.net

सुवाल दिन भर में 100 मरतबा سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهٖ पढ़ने की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब जो शख़्स दिन भर में 100 मरतबा سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهٖ पढ़ेगा उस के तमाम गुनाह मुआफ़ हो जाएंगे अगर्चे समन्दर की झाग के बराबर हों।[1]

सुवाल ह़दीसे पाक में किस कलिमे को 99 बीमारियों की दवा कहा गया ?

जवाब ग़म गुसारे दो जहां صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मुक़द्दस फ़रमान है : "لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ" 99 बीमारियों की दवा है जिस में सब से कम दवा येह है कि उस के पढ़ने वाले को कोई रंजो ग़म नहीं होता।[2]

सुवाल वोह कौन सी तस्बीह़ है जो हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا को बताई थी ?

जवाब हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से फ़रमाया : सोते वक़्त 33 बार "سُبْحٰنَ اللهِ" 33 बार "اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ" और 34 बार "اَللهُ اَكْبَر" पढ़ लिया करो।[3] इसे तस्बीहे फ़ातिमा कहते हैं।

सुवाल गुस्सा आने, कुत्ते के भोंकने और गधे के रेंकने पर कौन सी दुआ पढ़नी चाहिये ?

जवाब اَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم या'नी मैं **अल्लाह** तआला की पनाह मांगता हूं शैत़ान मर्दूद से।[4]

सुवाल पढ़ा हुवा याद रखने का कोई वज़ीफ़ा बताइये ?

जवाब मन्क़ूल है कि अगर तुम चाहते हो कि एक ह़र्फ़ भी न भूलो तो पढ़ने से पहले येह कह लिया करो :

---

1 ...مشکاۃ المصابیح، کتاب الدعوات، باب ثواب التسبیح ...الخ، ۱/۴۳۰، حدیث: ۲۲۹۶۔

2 ...مشکاۃ المصابیح، کتاب الدعوات، باب ثواب التسبیح ...الخ، ۱/۴۳۴، حدیث: ۲۳۲۰۔

3 ...بخاری، کتاب النفقات، باب خادم المراۃ، ۳/۵۱۶، حدیث: ۵۳۶۲۔

4 ...بخاری، کتاب الادب، باب الحذر من الغضب، ۴/۱۳۰، حدیث: ۶۱۱۵۔

مسند احمد، مسند جابر بن عبد اللہ، ۵/۳۴، حدیث: ۱۴۲۸۷، ملتقطاً۔

www.dawateislami.net

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وانْشُرْعَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! ऐ अ़ज़मत व बुज़ुर्गी वाले ! हम पर अपनी हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ।[1]

सुवाल मुसीबत ज़दा को देख कर कौन सी दुआ़ पढ़ी जाए ?

जवाब اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ عَافَانِىْ مِمَّا ابْتَلَاكَ بِهٖ وَفَضَّلَنِىْ عَلٰى كَثِيْرٍ مِّمَّنْ خَلَقَ تَفْضِيْلًا या'नी तमाम ता'रीफ़ें उस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये जिस ने मुझे इस मुसीबत से बचाया जिस में तुझे मुब्तला किया और उस ने मुझे अपनी बहुत सी मख़्लूक़ पर फ़ज़ीलत दी ।[2]

सुवाल शिआ़रे कुफ़्फ़ार (गिरजा / मन्दर वग़ैरा) को देखे या आवाज़ सुने तो कौन सी दुआ़ पढ़े ?

जवाब اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ اِلٰهًا وَّاحِدًا لَا نَعْبُدُ اِلَّا اِيَّاهُ या'नी मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** तआ़ला के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं वोह अकेला इ़बादत के लाइक़ है हम उसी की इ़बादत करते हैं ।[3]

सुवाल मजलिस के इख़्तिताम पर क्या पढ़ा जाए ?

जवाब سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ اَسْتَغْفِرُكَ وَ اَتُوْبُ اِلَيْكَ या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तू पाक है और तेरे ही लिये ह़म्द है, मैं गवाही देता हूं कि तेरे सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं, मैं तुझ से मग़फ़िरत त़लब करता हूं और तेरी बारगाह में तौबा करता हूं ।[4]

---

1 ...مستطرف، الباب الرابع فی العلم والادب...الخ، ۱/۴۰۔

2 ...ترمذی، کتاب الدعوات، باب مایقول اذا رأی مبتلی، ۵/۲۷۲، حدیث: ۳۴۴۲۔

3 .....मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, हिस्सा दुवुम, स. 312 ।

4 ...ابوداود، کتاب الادب، باب فی کفارۃ المجلس، ۴/۳۴۸، حدیث: ۴۸۵۹۔

www.dawateislami.net

दुरूदे पाक

सुवाल दुरूदे पाक से मुतअ़ल्लिक़ कुरआने पाक में क्या इरशादे ख़ुदावन्दी है ?

जवाब दुरूदे पाक से मुतअ़ल्लिक़ कुरआने पाक में **अल्लाह** तआ़ला इरशाद फ़रमाता है :

﴿اِنَّ اللّٰهَ وَ مَلٰٓىٕكَتَهٗ یُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِیِّ ؕ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَیْهِ وَ سَلِّمُوْا تَسْلِیْمًا ۝۵۶﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अल्लाह** और उस के फ़िरिश्ते दुरूद भेजते हैं उस ग़ैब बताने वाले (नबी) पर ऐ ईमान वालो उन पर दुरूद और ख़ूब सलाम भेजो ।

सुवाल दुरूदे पाक पढ़ने से मुतअ़ल्लिक़ ह़दीसे मुबारका में क्या इरशाद हुवा ?

जवाब ह़दीसे मुबारका में है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** तआ़ला उस पर दस रह़मतें भेजता है ।"[1]

सुवाल दुरूदे पाक न पढ़ने वाले के लिये क्या वई़द आई है ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस के सामने मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तो वोह सब से बड़ा बख़ील है ।[2]

सुवाल सुब्हो शाम कितने कितने हज़ार फ़िरिश्ते दरबारे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर दुरूदो सलाम पेश करते हैं ?

---

1 ...مسلم، کتاب الصلاۃ، باب الصلاۃ علی النبی، ص ۲۱۶، حدیث: ۴۰۹۔

2 ...الترغیب والترھیب، کتاب الذکر والدعا، باب الترغیب فی اکثار الصلاۃ...الخ، ۲/۳۳۲، حدیث: ۲۶۱۳۔

www.dawateislami.net

जवाब रह़मते दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दरबार में 70 हज़ार फ़िरिश्ते सुब्ह़ उतरते हैं और शाम तक रहते हैं यूंही 70 हज़ार शाम में उतरते हैं जो अगली सुब्ह़ तक रहते हैं और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में दुरूदो सलाम के नज़राने पेश करते रहते हैं।[1]

सुवाल नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नामे नामी इस्मे गिरामी के साथ दुरूदो सलाम लिखने की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब जिस ने किताब में हुज़ूरे अकरम, शफ़ीए मुअ़ज़्ज़म صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक लिखा जब तक आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मुबारक नाम किताब में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते और सुब्ह़ो शाम उस पर दुरूद भेजते रहेंगे।[2]

सुवाल अगर नामे अक़्दस लिया या सुना मगर उस वक़्त दुरूद न पढ़ा तो अब क्या करे ?

जवाब अगर उस वक़्त न पढ़ा तो किसी और वक़्त में इस के बदले का पढ़ ले।[3]

सुवाल आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नामे मुबारक के साथ पूरा दुरूद लिखने की बजाए सिर्फ़ "صلعم" लिखना कैसा ?

जवाब येह सख़्त नाजाइज़ व ह़राम है।[4]

सुवाल दुरूदे पाक का इख़्तिसार (Shortcut) ईजाद करने वाले के साथ क्या किया गया ?

---

1 ...مشکاۃ المصابیح، کتاب احوال القیامۃ وبدء الخلق، باب الکرامات، ۲/۴۰۱، حدیث: ۵۹۵۵۔

2 ...القول البدیع، الباب الخامس فی الصلاۃ علیہ فی اوقات مخصوصۃ، ص ۴۶۰۔۴۶۱۔

3 ...درمختار وردالمحتار، کتاب الصلاۃ، مطلب: ھل نفع الصلاۃ...الخ، ۲/۲۷۹۔

4 .....फ़तावा अफ़्रीक़ा, स. 50। बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 3, 1 / 534।

www.dawateislami.net

जवाब दुरूद शरीफ़ का इख़्तिसार ईजाद करने वाले शख़्स का हाथ काट दिया गया था।[1]

सुवाल किस दुरूद शरीफ़ की बरकत से रह़मत के 70 दरवाज़े खुलते हैं ?

जवाब जो शख़्स येह दुरूदे पाक "صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد" पढ़ता है उस पर रह़मत के 70 दरवाज़े खोल दिये जाते हैं।[2]

सुवाल वोह कौन सा दुरूद शरीफ़ है जिस के पढ़ने से खड़ा था तो बैठने से पहले और बैठा था तो खड़े होने से पहले गुनाह मुआ़फ़ हो जाते हैं ?

जवाब اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَسَلِّمْ[3]

सुवाल वोह कौन सा दुरूद शरीफ़ है जिसे एक बार पढ़ने से छे लाख दुरूद शरीफ़ पढ़ने का सवाब ह़ासिल होता है ?

जवाब اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَدَدَ مَا فِيْ عِلْمِ اللّٰهِ صَلَاةً دَآئِمَةً بِدَوَامِ مُلْكِ اللّٰهِ[4]

सुवाल वोह कौन सा दुरूद शरीफ़ है जिस के पढ़ने से सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का कुर्ब नसीब होता है ?

जवाब اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كَمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰى لَهٗ[5]

बैअ़त व त़रीक़त

सुवाल तसव्वुफ़ व त़रीक़त किसे कहते हैं ?

जवाब तसव्वुफ़ व त़रीक़त येह है कि बन्दा नफ़्स की बजाए रब عَزَّوَجَلَّ के

1 . . . تدریب الراوی، النوع الخامس والعشرون، الترضی علی الصحابة . . . الخ، ص ۲۸۴۔

2 . . . القول البدیع، الباب الثانی، ص ۲۷۷، جذب القلوب، ص ۲۳۵۔

3 . . . افضل الصلوات علی سید السادات، الصلاة الحادیة عشر، ص ۶۵۔

4 . . . افضل الصلوات علی سید السادات، الصلاة الثانیة والخمسون، ص ۱۴۹۔

5 . . . القول البدیع، الباب الاول، ص ۱۲۵۔

www.dawateislami.net

लिये ज़िन्दा हो और अपने तमाम औक़ात में रूह व क़ल्ब के साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ मुतवज्जेह रहे।[1]

सुवाल सूफ़िया का क्या मर्तबा व मक़ाम है ?

जवाब इमाम अबुल क़ासिम कुशैरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : **अल्लाह** तआ़ला ने इस गुरौह को अपने हां नुमायां हैसिय्यत दी है, इन्हें अपने रसूलों और नबियों के इलावा तमाम मख़्लूक़ पर बरतरी दे रखी है, पूरी उम्मत में से सिर्फ़ इन के हां नूरे इस्लाम उतरता रहता है।[2]

सुवाल तसव्वुफ़ का इन्कार करना कैसा ?

जवाब ह़ज़रते दाता गंज बख़्श अ़ली हिजवेरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : अगर इस के मआ़नी व ह़क़ाइक़ से इन्कार है तो येह इन्कार कुल शरीअ़ते इस्लामी का इन्कार बन जाएगा सिर्फ़ येही नहीं बल्कि हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़े ह़मीदा और ख़साइले जमीला और उस्वए ह़सना का इन्कार भी कहलाएगा।[3]

सुवाल शैख़ व पीर बनाने का फ़ाएदा बयान करें ?

जवाब शैख़ मुरीद को तज़्कियए नफ़्स पर चलाता है जिस का नतीजा येह होता है कि बन्दा अपने परवरदगार عَزَّوَجَلَّ से मह़ब्बत करने लगता है।[4]

सुवाल बैअ़त से पीर और मुरीद में क्या तअ़ल्लुक़ क़ाइम होता है ?

जवाब बैअ़त के सबब पीर और मुरीद में रूह़ानी रिश्ता क़ाइम हो जाता है कि शैख़ रूह़ानी और मा'नवी बाप की हैसिय्यत रखता है।[5]

---

1 .....आदाबे मुर्शिदे कामिल, स. 119।

2 ...رسالۃ قشیریۃ، ص ۸۔

3 ...کشف المحجوب، باب التصوف، ص ۴۲۔

4 ...عوارف المعارف، الباب العاشر، ص ۵۳ ملخصاً۔

5 ...عوارف المعارف، الباب العاشر، ص ۵۶ ملخصاً۔

www.dawateislami.net

सुवाल मशाइख़ और पीराने उ़ज़्ज़ाम की ख़िलाफ़त से क्या मुराद है ?

जवाब मुरीद अपने शैख़ से उ़लूम व अह़वाल ह़ासिल करते हैं, फिर उसे दूसरे की अमानत में दे देते हैं और वोह लोग दूसरों को उसी त़रह़ फ़ैज़ पहुंचाते हैं जिस त़रह़ उन को अपने मशाइख़ के ज़रीए़ रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ह़ासिल हुवा है, इसी अ़मल का नाम ख़िलाफ़ते मशाइख़ है ।[1]

सुवाल त़रीक़त के चार मश्हूर सिलसिले कौन से हैं ?

जवाब चार मश्हूर सिलसिले येह हैं :

(1) सिलसिलए क़ादिरिय्या (2) सिलसिलए नक़्शबन्दिया

(3) सिलसिलए चिश्तिया (4) सिलसिलए सोहरवर्दिया ।[2]

सुवाल सिलसिलए क़ादिरिय्या के पेश्वा कौन हैं ?

जवाब सिलसिलए क़ादिरिय्या के पेश्वा ह़ज़रते सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى हैं ।[3]

सुवाल सिलसिलए चिश्तिया के पेश्वा कौन हैं ?

जवाब बर्रे सग़ीर में सिलसिलए चिश्तिया के पेश्वा ख़्वाजा मुई़नुद्दीन चिश्ती अजमेरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِى हैं ।

सुवाल सिलसिलए नक़्शबन्दिया के पेश्वा कौन हैं ?

जवाब सिलसिलए नक़्शबन्दिया के पेश्वा ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा मुह़म्मद बहाउद्दीन नक़्शबन्द رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه हैं ।[4]

सुवाल सिलसिलए सोहरवर्दिया के पेश्वा कौन हैं ?

---

1 ...عوارف المعارف، الباب العاشر، ص ۵۵ - الباب الثانی عشر، ص ۶۱ ملخصاً۔

2 ...تاریخ مشائخ نقشبندیہ، ص ۱۲۔

3 ...مرآۃ الاسرار، ص ۷۸۔ اقتباس الانوار، ص ۵۷۔

4 ...مرآۃ الاسرار، ص ۷۹۔ اقتباس الانوار، ص ۵۸۔

www.dawateislami.net

जवाब हज़रते सय्यिदुना शैख़ शिहाबुद्दीन अबू हफ़्स उ़मर बिन मुह़म्मद सोहरवर्दी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ।[1]

सुवाल आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने पीर की कौन सी शराइत़ बयान की हैं ?

जवाब मुजद्दिदे आ'ज़म इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان फ़रमाते हैं : ऐसे शख़्स से बैअ़त का हुक्म है जो कम अज़ कम येह चारों शर्तें रखता हो : (1) सुन्नी सह़ीहुल अ़क़ीदा हो (2) इ़ल्मे दीन रखता हो (3) फ़ासिक़ न हो (4) उस का सिलसिला रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तक मुत्तसिल हो । अगर इन में से एक बात भी कम है तो उस के हाथ पर बैअ़त की इजाज़त नहीं ।[2] وَاللهُ تَعَالٰی اَعْلَم

मुक़द्दस मक़ामात

सुवाल ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की मक्कए मुकर्रमा के लिये मांगी गई कुरआनी दुआ़ बताइये ?

जवाब ﴿وَ اِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا بَلَدًا اٰمِنًا وَّ ارْزُقْ اَهْلَهٗ مِنَ الثَّمَرٰتِ مَنْ اٰمَنَ مِنْهُمْ بِاللّٰهِ وَ الْیَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ﴾ (پ۱، البقرۃ، ۱۲۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और जब अ़र्ज़ की इब्राहीम ने कि ऐ रब मेरे इस शहर को अमान वाला कर दे और इस के रहने वालों को त़रह़ त़रह़ के फलों से रोज़ी दे जो इन में से **अल्लाह** और पिछले दिन पर ईमान लाएं ।" और सूरए इब्राहीम में आप عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की येह दुआ़ मज़कूर है :

﴿وَ اِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا الْبَلَدَ اٰمِنًا وَّ اجْنُبْنِیْ وَ بَنِیَّ اَنْ نَّعْبُدَ الْاَصْنَامَ ؕ۳۵﴾ (پ۱، البقرۃ، ۱۲۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और याद करो जब इब्राहीम ने अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब इस शहर को अमान वाला कर दे और मुझे और मेरे बेटों को बुतों के पूजने से बचा ।"

---

1 ... عوارف المعارف مترجم، مقدمہ، ص ۳۷ ۔ फ़तावा रज़विय्या, 21 / 389, 545 माख़ूज़न

2 ..... फ़तावा रज़विय्या, 21 / 603 ।

www.dawateislami.net

सुवाल प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मदीनए मुनव्वरा के लिये क्या दुआ फ़रमाई ?

जवाब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : या इलाही عَزَّوَجَلَّ ! जिस त़रह़ तू ने मक्कए मुकर्रमा को हमारा मह़बूब बनाया इसी त़रह़ मदीनए मुनव्वरा को भी हमारा मह़बूब बना दे ।[1]

सुवाल ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام ने बैतुल मुक़द्दस की बुन्याद किस जगह पर रखी थी ?

जवाब मुल्के शाम में जिस जगह ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का ख़ैमा गाड़ा गया था उस जगह ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام ने बैतुल मुक़द्दस की बुन्याद रखी ।[2]

सुवाल ह़दीसे पाक में जबले उहुद के मुतअ़ल्लिक़ क्या इरशाद फ़रमाया गया है ?

जवाब हुज़ूर जाने आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : اُحُدٌ هٰذَا جَبَلٌ يُّحِبُّنَا وَنُحِبُّهٗ या'नी येह उहुद पहाड़ हम से मह़ब्बत करता है और हम इस से मह़ब्बत करते हैं ।[3]

सुवाल मस्जिदे क़िब्लतैन में कौन सा मश्हूर वाक़िआ़ रू नुमा हुवा था ?

जवाब इसी मस्जिद शरीफ़ में तह़वीले क़िब्ला की आयत नाज़िल हुई और बैतुल मुक़द्दस की बजाए बैतुल्लाह शरीफ़ की त़रफ़ मुंह कर के नमाज़ पढ़ने का हुक्म हुवा ।[4]

---

1 ...مسند احمد، مسند الانصار، حدیث ابی قتادۃ الانصاری رضی اللہ عنہ، ۸/۳۸۴، حدیث: ۲۲۶۹۳۔

2 ...تفسیر مدارک، پ ۲۲، سبا، تحت الآیۃ: ۱۴، ص ۹۵۹۔

3 ...معجم اوسط، ۵/۳۷، حدیث: ۶۵۰۵۔

4 ...تفسیر بغوی، پ ۲، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۱۴۴، ۱/۸۵۔

www.dawateislami.net

सुवाल सरवरे अम्बिया, महबूबे किब्रिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हिज्जतुल वदाअ़ तशरीफ़ ले जाते वक़्त किस मक़ाम पर दो रक्अ़त नमाज़ अदा फ़रमाई ?

जवाब "ज़ुल हुलैफ़ा" पहुंचे तो वहां मस्जिद में दो रक्अ़त पढ़ीं।[1]

सुवाल "मस्जिदे इजाबा" के मक़ाम पर हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कौन सी तीन दुआ़एं मांगी थीं ?

जवाब वोह दुआ़एं येह थीं : (1) या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरी उम्मत क़ह़त़ साली के सबब हलाक न हो। (2) या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरी उम्मत पानी में डूब कर हलाक न हो और (3) या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरी उम्मत आपस में न लड़े (पहली दो दुआ़एं क़बूल हुईं और तीसरी से रोक दिया गया)।[2]

सुवाल मस्जिदे बनी ह़िराम को क्या ख़ुसूसिय्यत ह़ासिल है ?

जवाब येह वोही मस्जिद है जहां आक़ाए दो जहां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तीन मो'जिज़ात ज़ाहिर हुवे : (1) एक बकरी में बहुत सारे सह़ाबए किराम का पेट भर गया।[3] (2) बकरी की हड्डियों पर दस्ते मुबारक रख कर कुछ पढ़ा तो बकरी ज़िन्दा हो गई।[4] (3) ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के फ़ौतशुदा दो मदनी मुन्ने इमामुल अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दुआ़ से ज़िन्दा हो गए।[5]

---

1 ...مسلم، کتاب الحج، باب الصلاۃ فی مسجد ذی الحلیفۃ، ص ۶۰۶، حدیث: ۱۱۸۸۔ تاریخ مدینہ منورہ، ص ۵۰۱-۵۰۲۔

2 ...مسلم، کتاب الفتن واشراط الساعۃ، باب ھلاک ھذہ الامۃ بعضھم ببعض، ص ۱۵۴۴، حدیث: ۲۸۹۰۔

3 ...خصائص کبری، باب آیاتہ فی احیاء الموتی وکلامھم، ۲/۱۱۲۔

4 ...خصائص کبری، باب آیاتہ فی احیاء الموتی وکلامھم، ۲/۱۱۲۔

5 ...شواھد النبوۃ، ص ۱۰۵۔ مدارج النبوت، ۱/۱۹۹۔

www.dawateislami.net

सुवाल मस्जिदे मुस्तराह़ को इस नाम से क्यूं पुकारा जाता है ?

जवाब सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ग़ज़वए उहुद के मौक़अ़ पर यहां पर आराम फ़रमाया था इसी लिये इसे मस्जिदे मुस्तराह़ कहते हैं ।[1]

सुवाल ह़ज़रते सय्यिदुना हारून عَلَيْهِ السَّلَام का मज़ारे पुर अन्वार कहां वाक़ेअ़ है ?

जवाब आप عَلَيْهِ السَّلَام का मज़ारे मुबारक जबले उहुद पर वाक़ेअ़ है (लेकिन अब इस की ज़ियारत बेह़द मुश्किल है) ।[2]

सुवाल सफ़ा व मरवा पहाड़ों को इतनी इ़ज़्ज़त व अ़ज़मत क्यूं मिली ?

जवाब इन पहाड़ों पर ह़ज़रते हाजरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا पानी की तलाश में सात बार चढ़ीं और उतरीं । इस अल्लाह वाली के क़दम पड़ जाने की बरकत से येह दोनों पहाड़ शआ़इरुल्लाह (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की निशानियां) बन गए और ता क़ियामत ह़ाजियों पर इस पाक बीबी की पैरवी में इन पर चढ़ना और उतरना सात बार लाज़िम हो गया ।[3]

सुवाल जहां "मस्जिदे ज़ुल हुलैफ़ा" क़ाइम है वोह मक़ाम आज कल किस नाम से मश्हूर है ?

जवाब उस मक़ाम को आज कल "बीरे अ़ली" या "अबयारे अ़ली" के नाम से याद किया जाता है ।[4]

---

1 . . . وفاء الوفاء، الباب الخامس فی مصلی النبی فی الاعیاد. . . الخ، الفصل الرابع فی المساجد التی. . . الخ، ۲/۸۶۵۔

2 . . . . . आ़शिक़ाने रसूल की 130 ह़िकायात, स. 322 ।

3 . . . . . इल्मुल कुरआन, तक़्वा, स. 48, मुलख़्ख़सन ।

4 . . . ردالمحتار کتاب الحج، مطلب فی المواقیت، ۳/۵۴۹۔ बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा, 6,1 / 1067

www.dawateislami.net

दा'वते इस्लामी का तआ़रुफ़

सुवाल **दा'वते इस्लामी** के बानी कौन हैं ?

जवाब तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **"दा'वते इस्लामी"** के बानी शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه हैं।

सुवाल अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने दा'वते इस्लामी का मदनी काम किस सिन में शुरूअ़ फ़रमाया ?

जवाब 1401 हिजरी मुत़ाबिक़ 1981 ईसवी।[1]

सुवाल दा'वते इस्लामी का पैग़ाम अब तक कितने ममालिक में पहुंच चुका है ?

जवाब اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तक़रीबन 200 से ज़ाइद ममालिक में।

सुवाल दा'वते इस्लामी का मदनी मक़्सद क्या है ?

जवाब **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।"** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

सुवाल दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा कितने अराकीन पर मुश्तमिल है ?

जवाब दा'वते इस्लामी की मजलिसे शूरा फ़िल वक़्त 26 अराकीन पर मुश्तमिल है।

सुवाल मदनी इन्आ़मात व मदनी क़ाफ़िला से क्या मुराद है ?

जवाब मदनी इन्आ़मात से मुराद अमीरे अह्ले सुन्नत مُدَّظِلُّهُ الْعَالِي की जानिब से इस्लामी भाइयों, इस्लामी बहनों, जामिअ़तुल मदीना व मदारिसुल

1.....दा'वते इस्लामी का तआ़रुफ़, स. 4।

www.dawateislami.net

मदीना के तलबा व तालिबात और मदनी मुन्नों को अताकर्दा सुवालात पर मुश्तमिल वोह रसाइल हैं जिन के मुताबिक़ अमल कर के नेकियों में इज़ाफ़ा और गुनाहों से बचा जा सकता है जब कि मदनी क़ाफ़िले से मुराद आशिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों की तरबिय्यत और इल्मे दीन के हुसूल के लिये मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर सफ़र करना है।

सुवाल मदनी हुल्या किसे कहते हैं ?

जवाब दाढ़ी, ज़ुल्फ़ें, सर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ (सब्ज़ रंग गहरा या'नी डार्क न हो) कली वाला सफ़ेद कुर्ता सुन्नत के मुताबिक़ आधी पिन्डली तक लम्बा, आस्तीनें एक बालिश्त चौड़ी, सीने पर दिल की जानिब वाली जेब में नुमायां मिस्वाक, पाजामा या शल्वार टख़्नों से ऊपर। (सर पर सफ़ेद चादर और पर्दे में पर्दा करने के लिये मदनी इन्आमात पर अमल करते हुवे कथ्थई चादर भी साथ रहे तो मदीना मदीना)[1]

सुवाल दा'वते इस्लामी का अव्वलीन मदनी मर्कज़ कहां था ?

जवाब जामेअ मस्जिद गुलज़ारे हबीब, गुलिस्ताने औकाड़वी, सोलजर बाज़ार, बाबुल मदीना (कराची)।

सुवाल दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे का नाम क्या है ?

जवाब मक्तबतुल मदीना, जो अब तक 527 से ज़ाइद कुतुबो रसाइल शाएअ कर चुका है।

1.....163 मदनी फूल, स. 23।

www.dawateislami.net

सुवाल दा'वते इस्लामी कितने शो'बाजात में काम कर रही है ? सात के नाम बताइये ?

जवाब तादमे तह़रीर दा'वते इस्लामी 102 शो'बाजात में मदनी काम कर रही है, जिन में से सात येह हैं : (1) दारुल इफ़्ता अह्ले सुन्नत (2) अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (3) जामिअ़तुल मदीना (4) मजलिसे तराजिम (5) मजलिसे तह़क़ीक़ाते शरइ़य्या (6) मदनी चैनल (7) मजलिसे आई टी ।

सुवाल मजलिसे ख़ुद्दामुल मसाजिद किस मक़्सद के तह़्त क़ाइम की गई ?

जवाब अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की तमन्ना है कि हमारी मसाजिद आबाद हो जाएं, उन की रौनक़ें पलट आएं और पुरानी मसाजिद आबाद करने की कोशिश के साथ साथ नई मसाजिद भी ता'मीर की जाएं, इस ज़िम्न में "मजलिसे ख़ुद्दामुल मसाजिद" क़ाइम की गई ।[1]

सुवाल मदनी तरबिय्यती कोर्स कितने दिन का होता है और इस का मक़्सद क्या है ?

जवाब येह कोर्स 63 दिन का होता है जिस का मक़्सद मुबल्लिग़ीन की तय्यारी और उन की तरबिय्यत है ।[2]

1.....दा'वते इस्लामी का तआ़रुफ़, स. 11 ।

2.....दा'वते इस्लामी का तआ़रुफ़, स. 39 माख़ूज़न ।

www.dawateislami.net

"इख़्लास का नूर" के दस (10) हुरूफ़ की निस्बत से दस मदनी फूल

(1) येह सिलसिला 6 मराहिल (Segments) पर मुश्तमिल होगा।

(2) दो टीमें (टीम मक्की और टीम मदनी) होंगी।

(3) हर टीम में कुल तीन इस्लामी भाई होंगे इस त़रह़ कुल छे इस्लामी भाई होंगे।

(4) हर सुवाल का जवाब 25 सेकन्ड के अन्दर देना होगा 25 सेकन्ड के बा'द जवाब देने पर नम्बर नहीं मिलेंगे। जब कि "समझाइये मगर इशारों से" में 41 सेकन्ड दिये जाएंगे।

(5) हर सुवाल के दो (2) नम्बर हैं।

(6) **"समझाइये मगर इशारों से"**। इस मर्ह़ले में जो इशारे हैं वोह अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रसाइल के नाम या मुक़द्दस अश्या या कोई ह़िकायत होंगी लेकिन इन तमाम इशारों में इस बात का ख़ास त़ौर पर ख़याल रखा जाए कि इस का इशारा भी बन सकता हो।

(7) हर मर्ह़ले में टीम के इस्लामी भाई आपस में मश्वरा कर के जवाब दे सकते हैं सिवाए **"सफ़र है मगर अकेले"** मर्ह़ले के कि इस मर्ह़ले में बिग़ैर मश्वरा किये ही जवाब देना होगा और इस में टीम मक्की का एक इस्लामी भाई टीम मदनी के इस्लामी भाइयों के साथ या'नी दरमियान में खड़ा रहेगा इसी त़रह़ टीम मदनी का एक इस्लामी भाई टीम मक्की के इस्लामी भाइयों के दरमियान में।

www.dawateislami.net

(8) तमाम सुवालात निसाब से किये जाएंगे सिवाए **"सफ़र है मगर अकेले"** मर्हले के। इस मर्हले में पूछे जाने वाले सुवालात वोह होंगे जो आ़म तौ़र पर मदनी मुज़ाकरे या मदनी माहोल वाले या कसरत से मुत़ालआ़ करने वाले इस्लामी भाई जानते हैं।

(9) **"जोश के साथ मगर होश से"** के मर्हले में बज़र (Buzzer) लगाया जाएगा और इस में जिस इस्लामी भाई ने पहले बज़र (Buzzer) दबाया उसी को जवाब देने का मौक़अ़ दिया जाए और ग़लत़ जवाब पर दो (2) नम्बर मिन्हा (कम) कर दिये जाएंगे।

(10) सिलसिले में दिलचस्पी पैदा करने के लिये नाज़िरीन या ह़ाज़िरीन से भी सुवालात किये जाएंगे।

मराह़िल की तफ़्सील

(1) **इल्म नूर है :** इस मर्हले में टीम मक्की और टीम मदनी दोनों से पांच पांच सुवालात किये जाएंगे।

(2) **इश्क़ के बोल :** इस मर्हले में टीम मक्की और टीम मदनी दोनों से पांच पांच अश्आ़र पूछे जाएंगे।

(3) **कुरआनी मा'लूमात :** इस मर्हले में टीम मक्की और टीम मदनी दोनों से तीन तीन सुवालात किये जाएंगे।

(4) **समझाइये मगर इशारों से :** इस मर्हले में दोनों टीमों के तीन तीन इशारे होंगे या'नी टीम का एक इस्लामी भाई आ कर अपनी टीम के इस्लामी भाइयों को इस का इशारा कर के बताएगा और टीम को इशारे की मदद से उस नाम तक पहुंचना होगा।

www.dawateislami.net

(5) **सफ़र है मगर अकेले :** इस मर्हले में हर इस्लामी भाई से एक एक सुवाल होगा।

(6) **जोश के साथ मगर होश से :** इस मर्हले में 5 अश्आ़र और 5 सुवालात होंगे।

(1) इल्म नूर है। (टीम मक्की)

सुवाल ज़ब्ह़ में काटी जाने वाली चार रगों के नाम बताइये ?

जवाब वोह चार रगें येह हैं : (1) हुल्क़ूम, (2) मुरी और (3-4) वदजैन।

सुवाल निकाह़ में कौन से उमूर का लिहाज़ रखना मुस्तह़ब है ?

जवाब निकाह़ में येह उमूर मुस्तह़ब हैं (1) अ़लानिय्या होना (2) निकाह़ से पहले ख़ुत़बा पढ़ना (3) मस्जिद में होना (4) जुमुआ़ के दिन (5) गवाहाने आ़दिल के सामने (6) औ़रत उ़म्र, ह़सब (ख़ानदानी शरफ़), माल, इ़ज़्ज़त में मर्द से कम हो और (7) चाल चलन और अख़्लाक़ व तक़्वा व जमाल में बेश (या'नी ज़ियादा) हो।

सुवाल यमीन या'नी क़सम की कितनी क़िस्में हैं ?

जवाब क़सम की तीन क़िस्में हैं : (1) ग़मूस (2) लग़्व (3) मुन्अ़क़िदा।

सुवाल लुक़्त़ा किसे कहते हैं ?

जवाब लुक़्त़ा उस माल को कहते हैं जो कहीं पड़ा हुवा मिल जाए।

सुवाल कौन सी इमारत शैत़ान से बचाव के लिये क़ल्आ़ है ?

जवाब मरवी है कि اَلْمَسْجِدُ حِصْنٌ حَصِيْنٌ مِّنَ الشَّيْطٰنِ "या'नी मस्जिद शैत़ान से बचने के लिये एक मज़बूत़ क़ल्आ़ है।"

www.dawateislami.net

(1) इल्म नूर है। (टीम मदनी)

सुवाल मस्जिद में कौन सी बदबूदार चीज़ों की मुमानअ़त है ?

जवाब (1) कच्चा लहसन (2) कच्ची प्याज़ (3) गन्दना (येह लहसन से मिलती जुलती तरकारी है) (4) मूली (5) कच्चा गोश्त (6) मिट्टी का तेल (7) वोह दिया सलाई जिस के रगड़ने में बू उड़ती हो (8) रियाह़ ख़ारिज करना (9) बदबूदार ज़ख़्म (10) कोई बदबूदार दवा लगाना।

सुवाल सब से बेहतर कमाई कौन सी है ?

जवाब हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : सब से बेहतर ग़िज़ा वोह है जो इन्सान अपने हाथों की कमाई से खाए। ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام भी अपनी कमाई से खाते थे।

सुवाल सूद से बचने के कोई दो इलाज बयान कीजिये ?

जवाब (1) इन्सान क़नाअ़त इख़्तियार करे, इस त़रह़ वोह माल की ह़िर्स से बचेगा और ह़राम ज़राएअ़ इख़्तियार नहीं करेगा। (2) हर दम मौत को याद रखा जाए, जब येह सोच बन जाएगी कि मरना है और मौत का कोई भरोसा नहीं कब आ जाए तो ह़राम रोज़ी की त़रफ़ बढ़ने से रुकना नसीब हो जाएगा। (اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ)

सुवाल पेट का क़ुफ़्ले मदीना किसे कहते हैं ?

जवाब अपने पेट को ह़राम ग़िज़ा से बचाना और ह़लाल ख़ूराक भी भूक से कम खाना "पेट का क़ुफ़्ले मदीना" लगाना है।

सुवाल ह़दीसे पाक में मेहमान के इकराम की अहम्मिय्यत किस त़रह़ बयान हुई है ?

www.dawateislami.net

जवाब रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और क़ियामत के दिन पर ईमान रखता है उसे चाहिये कि (1) वोह मेहमान का इकराम करे (2) अपने पड़ोसी को ईज़ा न दे और (3) वोह भली बात बोले या चुप रहे।

(2) शे'र मुकम्मल कीजिये (टीम मक्की)

काश ! तैबा में शहादत का अ़ता हो जाए जाम

जल्वए महबूब में अन्जाम मेरा हो बख़ैर (वसाइले बख़्शिश, स. 233)

उम्मते महबूब का या रब बना दे ख़ैरख़्वाह

नफ़्स की ख़ातिर किसी से दिल में मेरे हो न बैर (वसाइले बख़्शिश, स. 233)

अक्सर मेरे होंटों पे रहे ज़िक्रे मुहम्मद

अल्लाह ज़बां का हो अ़ता कुफ़्ले मदीना (वसाइले बख़्शिश, स. 93)

आक़ा की हया से झुकी रहती नज़र अक्सर

आंखों पे मेरे भाई लगा कुफ़्ले मदीना (वसाइले बख़्शिश, स. 94)

अल्लाह करम इतना गुनहगार पे फ़रमा

जन्नत में पड़ोसी मेरे आक़ा का बना दे (वसाइले बख़्शिश, स. 112)

(2) शे'र मुकम्मल कीजिये (टीम मदनी)

अल्लाह मिले हज की इसी साल सआ़दत

बदकार को फिर रौज़ए महबूब दिखा दे (वसाइले बख़्शिश, स. 112)

www.dawateislami.net

बाएं रस्ते न जा मुसाफ़िर सुन
माल है राह मार फिरते हैं (ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 100)
रखिये जैसे हैं ख़ाना ज़ाद हैं हम
मौल के ऐबदार फिरते हैं (ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 100)
वरदियां बोलते हैं हर कारे
पहरा देते सुवार फिरते हैं (ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 100)
आह कल ऐश तो किये हम ने
आज वोह बे क़रार फिरते हैं (ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 99)

(3) क़ुरआनी मा'लूमात (टीम मक्की)

सुवाल किस आयत में उम्मते मुह़म्मदिय्या को सब से बेहतर उम्मत फ़रमाया गया है ?

जवाब ﴿كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ﴾ (پ۴، ال عمرن:۱۱۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम बेहतर हो उन सब उम्मतों में जो लोगों में ज़ाहिर हुई भलाई का हुक्म देते हो और बुराई से मन्अ़ करते हो और **अल्लाह** पर ईमान रखते हो।

सुवाल रात के वक़्त सूरए मुल्क की तिलावत की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब ह़दीसे मुबारका का ख़ुलासा है कि जब बन्दा क़ब्र में जाएगा तो अ़ज़ाब उस के क़दमों, सीने, पेट या फिर उस के सर की त़रफ़ से आएगा तो येह सब आ'ज़ा कहेंगे तेरे लिये हमारी त़रफ़ से कोई रास्ता नहीं क्यूंकि येह रात में सूरए मुल्क पढ़ा करता था।

सुवाल वोह कौन सा ख़ुश नसीब है जो अपने घर के दस अफ़राद की शफ़ाअ़त करेगा ?

जवाब जिस ने क़ुरआन पढ़ा और उस को याद कर लिया, उस के ह़लाल

www.dawateislami.net

को ह़लाल समझा और ह़राम को ह़राम जाना। उस के घरवालों में से दस शख़्सों के बारे में अल्लाह तआ़ला उस की शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमाएगा जिन पर जहन्नम वाजिब हो चुका था।

(3) क़ुरआनी मा'लूमात (टीम मदनी)

सुवाल कुरआने पाक की कौन सी आयत सब से आख़िर में नाज़िल हुई ?

जवाब सब से आख़िर में सूरतुल बक़रह की येह आयते मुबारका नाज़िल हुई :

﴿وَاتَّقُوْا يَوْمًا تُرْجَعُوْنَ فِيْهِ اِلَى اللّٰهِ ۗ ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿۲۸۱﴾﴾ (پ۳، البقرة: ۲۸۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और डरो उस दिन से जिस में अल्लाह की त़रफ़ फिरोगे और हर जान को उस की कमाई पूरी भर दी जाएगी और उन पर ज़ुल्म न होगा।

सुवाल किस सूरत की तिलावत करने की फ़ज़ीलत चौथाई कुरआन के बराबर है ?

जवाब ह़दीसे पाक में है : जिस ने सूरत قُلْ يٰۤاَيُّهَا الْكٰفِرُوْن पढ़ी तो गोया कि उस ने कुरआने मजीद के चौथाई ह़िस्से की तिलावत की।

सुवाल हर बुरी चीज़ से ह़िफ़ाज़त के लिये कौन सी सूरतों की ता'लीम फ़रमाई गई है ?

जवाब नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : सुब्ह़ शाम तीन तीन बार قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَد, قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَق और قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاس पढ़ो ! इन की तिलावत करना तुम्हें हर बुरी चीज़ से बचाएगा।

www.dawateislami.net

(4) समझाइये मगर इशारों से (टीम मक्की)

(1) ख़ाके मदीना

(2) ख़ौफ़नाक जादूगर

(3) तीन उंगलियों से खाना

(4) समझाइये मगर इशारों से (टीम मदनी)

(1) बकरी की खाल

(2) पतला जिन्न

(3) अनार का दरख़्त

(5) सफ़र है मगर अकेले (टीम मक्की)

सुवाल सब से आख़िर में किस को मौत आएगी ?

जवाब सब से आख़िर में ह़ज़रते मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام को मौत आएगी।

सुवाल दारोग़ए जन्नत का नाम बताएं ?

जवाब ह़ज़रते रिज़वान عَلَيْهِ السَّلَام।

सुवाल मछली, मच्छर या मख्खी वग़ैरा का ख़ून अगर कपड़ों पर लग जाए तो क्या हुक्म है ?

जवाब मछली और पानी के दीगर जानवरों और खटमल और मच्छर का ख़ून और ख़च्चर और गधे का लुआ़ब और पसीना पाक है।

(5) सफ़र है मगर अकेले (टीम मदनी)

सुवाल हाथ वग़ैरा से ख़ून निकलने के बा वुजूद कब वुज़ू नहीं टूटता ?

जवाब ख़ून निकला लेकिन बहा नहीं तो येह वुज़ू को नहीं तोड़ता।

www.dawateislami.net

सुवाल नमाज़े जनाज़ा फ़र्ज़ है या वाजिब या फिर सुन्नत ?

जवाब नमाज़े जनाज़ा फ़र्ज़े किफ़ाया है।

सुवाल हिज्जतुल वदाअ़ के मौक़अ़ पर हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कितने ऊंट नह्र फ़रमाए ?

जवाब इस मौक़अ़ पर हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने मुक़द्दस हाथ से 63 ऊंट नह्र फ़रमाए।

(6) जोश के साथ मगर होश से (सुवालात)

सुवाल किस नबी عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की दुआ़ से उन के भाई को नुबुव्वत मिली ?

जवाब ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने दुआ़ की, कि या रब मेरे घरवालों में से मेरे भाई हारून को मेरा वज़ीर बना, **अल्लाह** तआ़ला ने अपने करम से येह दुआ़ क़बूल फ़रमाई और ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को आप की दुआ़ से नबी किया।

सुवाल किन बातों को दुन्या व आख़िरत के बेहतर अख़्लाक़ फ़रमाया गया है ?

जवाब ह़दीसे मुबारका में है कि हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "क्या मैं तुम्हें दुन्या व आख़िरत के अच्छे अख़्लाक़ न बताऊं ? सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : ज़रूर बताइये। इरशाद फ़रमाया : "जो तुम से तअ़ल्लुक़ तोड़े उस से तअ़ल्लुक़ जोड़ो, जो तुम्हें मह़रूम करे उसे अ़त़ा करो और जो तुम पर ज़ुल्म करे उसे मुआ़फ़ कर दो।"

www.dawateislami.net

सुवाल ख़ौफ़े ख़ुदा का मत़लब क्या है ?

जवाब **अल्लाह** तआ़ला की बे नियाज़ी, उस की नाराज़ी, उस की गिरिफ़्त और उस की त़रफ़ से दी जाने वाली सज़ाओं का सोच कर इन्सान का दिल घबरा जाए तो उसे ख़ौफ़े ख़ुदा कहते हैं।

सुवाल कुरआने करीम में सिलए रेह़मी से मुतअ़ल्लिक़ क्या इरशाद हुवा ?

जवाब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِیْ تَسَآءَلُوْنَ بِهٖ وَالْاَرْحَامَ ؕ﴾ (پ۴، النساء: ۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** से डरो जिस के नाम पर मांगते हो और रिश्तों का लिह़ाज़ रखो।

सुवाल सब्र किसे कहते हैं ?

जवाब नफ़्स को उस चीज़ पर रोकना जिस पर रुकने का अ़क़्ल और शरीअ़त तक़ाज़ा कर रही हो या नफ़्स को उस चीज़ से बाज़ रखना जिस से रुकने का अ़क़्ल और शरीअ़त तक़ाज़ा कर रही हो सब्र कहलाता है।

(6) जोश के साथ मगर होश से (अश्आ़र)

चल पड़े हैं क़ाफ़िलों पर क़ाफ़िले सूए ह़िजाज़

मैं रहा जाता हूं हाए ! जाने रह़मत या रसूलल्लाह (वसाइले बख़्शिश, स. 240)

शरफ़ हर बरस ह़ज का पाऊं ख़ुदाया

चले त़यबा फिर क़ाफ़िला या इलाही (वसाइले बख़्शिश, स. 100)

www.dawateislami.net

मुझे औलिया की महब्बत अ़ता कर

तू दीवाना कर ग़ौस का या इलाही (वसाइले बख़्शिश, स. 106)

फ़रमाते हैं येह दोनों हैं सरदारे दो जहां

ऐ मुर्तज़ा ! अ़तीक़ो उ़मर को ख़बर न हो (वसाइले बख़्शिश, स. 130)

जिन को सूए आस्मां फैला के जल थल भर दिये

सदक़ा उन हाथों का प्यारे हम को भी दरकार है

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 176)

नाज़िरीन के लिये सुवालात

सुवाल सब से पहले झूटी क़सम किस ने खाई ?

जवाब पहला झूटी क़सम खाने वाला इब्लीस ही है।

सुवाल वोह कौन सा अ़मल है जिस से मुसलमानों में बाहमी मह़ब्बत पैदा होती है ?

जवाब वोह सलाम है।

सुवाल छींक आने के बा'द ह़म्द करने का क्या हुक्म है ?

जवाब छींक आने के बा'द ह़म्द करना सुन्नत है।

सुवाल सब से पहले ज़िरह किस नबी عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने बनाई ?

जवाब ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने।

सुवाल ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की उ़म्र मुबारक कितनी थी ?

जवाब ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की उ़म्र शरीफ़ एक हज़ार साल थी।

www.dawateislami.net

स्कोरिंग शीट

नम्बर शुमार	मराहिल	टीम मक्की					टोटल स्कोर	
1	इल्म नूर है							
2	इश्क़ के बोल							
3	कुरआनी मा'लूमात							
4	समझाइये मगर इशारों से							
5	सफ़र है मगर अकेले							
6	जोश के साथ मगर होश से							

नम्बर शुमार	मराहिल	टीम मदनी					टोटल स्कोर	
1	इल्म नूर है							
2	इश्क़ के बोल							
3	कुरआनी मा'लूमात							
4	समझाइये मगर इशारों से							
5	सफ़र है मगर अकेले							
6	जोश के साथ मगर होश से							

www.dawateislami.net

مآخذ ومراجع

کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ
قرآن پاک	**********	سنن ابن ماجہ	دار المعرفہ، بیروت ۱۴۲۰ھ
ترجمہ کنزالایمان	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۲ھ	سنن ابی داود	دار احیاء التراث العربی، ۱۴۲۱ھ
کتب التفسیر وعلوم القرآن		سنن النسائی	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۶ھ
تفسیر الطبری	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۰ھ	المستدرک علی الصحیحین	دار المعرفہ، بیروت ۱۴۱۸ھ
تفسیر البغوی	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۴ھ	مصنف عبد الرزاق	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۱ھ
التفسیر الکبیر	دار احیاء التراث العربی، ۱۴۲۰ھ	مصنف ابن ابی شیبۃ	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ
تفسیر القرطبی	دار الفکر، بیروت ۱۴۲۰ھ	المسند	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ
تفسیر المدارک	دار المعرفہ، بیروت ۱۴۲۱ھ	سنن الدارمی	دار الکتاب العربی، ۱۴۰۷ھ
تفسیر الخازن	مطبعہ میمنیہ، مصر ۱۳۱۷ھ	مسند الحارث	مرکز خدمۃ السنۃ والسیرۃ النبویہ، ۱۴۱۳ھ
الدر المنثور	دار الفکر، بیروت ۱۴۰۳ھ	مسند ابی یعلی	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۸ھ
الاتقان	دار الفکر، بیروت ۱۴۲۳ھ	مسند الشہاب	مؤسسۃ الرسالہ، ۱۴۰۵ھ
روح البیان	دار احیاء التراث العربی، ۱۴۰۵ھ	مسند الشامیین	مؤسسۃ الرسالہ، ۱۴۰۹ھ
خزائن العرفان	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۲ھ	شعب الایمان	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۱ھ
تفسیر نعیمی	مکتبہ اسلامیہ، لاہور	السنن الکبری	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۴ھ
نور العرفان	پیر بھائی کمپنی، لاہور	المعجم الاوسط	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۰ھ
علم القرآن	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۲۸ھ	المعجم الکبیر	دار احیاء التراث العربی، ۱۴۲۲ھ
صراط الجنان	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۴ھ	الجامع الصغیر	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۵ھ
کتب الحدیث		الاوائل للطبرانی	مؤسسۃ الرسالہ، ۱۴۰۳ھ
صحیح البخاری	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۹ھ	مشکاۃ المصابیح	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۴ھ
صحیح مسلم	دار ابن حزم، بیروت ۱۴۱۹ھ	فردوس الاخبار	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۸ھ
سنن الترمذی	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ	الترغیب والترھیب	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۸ھ

www.dawateislami.net

مجمع الزوائد	دار الفکر، بیروت ۱۴۲۰ھ	مرآۃ المناجیح	ضیاء القرآن پبلیکیشنز، لاہور
الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۷ھ	بشیر القاری	باب المدینہ کراچی
کنز العمال	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۹ھ	نزہۃ القاری	فرید بک سٹال، لاہور ۱۴۲۱ھ
جمع الجوامع	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۱ھ	**کتب العقائد**	
معرفۃ السنن والآثار	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۲ھ	الفقہ الاکبر	باب المدینہ کراچی
المجالسۃ وجواہر العلم	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۱ھ	شرح اصول اعتقاد اہل السنۃ والجماعۃ	دار البصیرۃ، مصر
نوادر الاصول	مکتبۃ الامام بخاری، قاہرہ	شرح العقائد النسفیۃ	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۰ھ
الادب المفرد	مدینۃ الاولیاء، ملتان	المسامرۃ	مطبعۃ السعادۃ، مصر
تاریخ دمشق لابن عساکر	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۵ھ	الیواقیت والجواہر	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۹ھ
حلیۃ الاولیاء	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۹ھ	منح الروض الازہر	باب المدینہ، کراچی
المقاصد الحسنۃ	دار الکتاب العربی، ۱۴۲۵ھ	النبراس	مدینۃ الاولیاء، ملتان
کشف الخفاء	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۲ھ	المعتقد المنتقد	برکاتی پبلشرز، کراچی ۱۴۲۰ھ
کتاب العظمۃ	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۴ھ	دس عقیدے	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۷ھ
مکارم الاخلاق لابن ابی الدنیا	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۱ھ	الدولۃ المکیۃ	مؤسسہ رضا، لاہور ۱۴۲۲ھ
الکامل فی ضعفاء الرجال	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۸ھ	عقیدۂ ختم نبوت	الادارۃ لتحقیق الحقائق الاسلامیہ، ۱۴۲۶ھ
کتب شروح الحدیث		**کتب الرجال والطبقات**	
شرح النووی علی المسلم	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۰۱ھ	الطبقات الکبری لابن سعد	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۸ھ
فتح الباری	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۵ھ	الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۲ھ
عمدۃ القاری	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۸ھ	صفۃ الصفوۃ	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۳ھ
ارشاد الساری	دار الفکر، بیروت ۱۴۲۱ھ	الاکمال فی اسماء الرجال	باب المدینہ، کراچی
مرقاۃ المفاتیح	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۸ھ	سیر اعلام النبلاء	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۷ھ
فیض القدیر	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۲ھ	الاصابۃ فی تمییز الصحابۃ	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۵ھ
اشعۃ اللمعات	کوئٹہ	اسد الغابۃ	دار احیاء التراث العربی، ۱۴۱۷ھ

www.dawateislami.net

تدریب الراوی	دار الفکر، بیروت ۱۴۲۰ھ	الفتاوی الحدیثیة	دار احیاء التراث العربی، ۱۴۱۹ھ
الطبقات الکبری	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۵ھ	تنویر الابصار	دار المعرفہ، بیروت ۱۴۲۰ھ
کتب التاریخ		نور الایضاح	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۲ھ
تاریخ بغداد	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۷ھ	مراقی الفلاح	باب المدینہ کراچی
تاریخ الخلفاء	باب المدینہ، کراچی	الدر المختار	دار المعرفہ، بیروت ۱۴۲۰ھ
سوانح کربلا	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۲۹ھ	الفتاوی الھندیة	دار الفکر، بیروت ۱۴۰۳ھ
سوانح امام احمد رضا	مکتبہ نوریہ رضویہ، ۱۴۰۷ھ	حاشیۃ الطحطاوی علی مراقی الفلاح	باب المدینہ کراچی
تاریخ مشائخ نقشبندیہ	مونال پبلیکیشنز، راولپنڈی	رد المحتار	دار المعرفہ، بیروت ۱۴۲۰ھ
کتب الفقہ والفتاوی		مجموعۃ رسائل اللکنوی	انتشارات شیخ الاسلام احمد جام، ۱۳۸۲ھ
الفقیہ والمتفقہ	دار ابن جوزی، دمام ۱۴۲۸ھ	عمدۃ الرعایة	باب المدینہ، کراچی
المبسوط	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۱ھ	الفتاوی الرضویة	رضا فاؤنڈیشن، لاہور
بدائع الصنائع	دار احیاء التراث العربی، ۱۴۲۱ھ	جد الممتار	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۵ھ
الفتاوی الخانیة	پشاور	فتاوی افریقہ	نوری کتب خانہ، ۲۰۰۳ء
الھدایة	دار احیاء التراث العربی، بیروت	بہارِ شریعت	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۵ھ
المدخل	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۵ھ	فتاوی امجدیہ	مکتبہ رضویہ، کراچی ۱۴۱۹ھ
تبیین الحقائق	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۰ھ	نماز کے احکام	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۲۰۰۴ء
شرح الوقایة	باب المدینہ، کراچی	رفیق المعتمرین	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۳ھ
الفتاوی التاتارخانیہ	باب المدینہ کراچی	رفیق الحرمین	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۳ھ
الجوھرۃ النیرۃ	باب المدینہ کراچی	اسلامی بہنوں کی نماز	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۲۰۰۸ء
الفتاوی البزازیة	دار الفکر، بیروت ۱۴۰۳ھ	فیضان اذان	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۵ھ
غنیۃ المتملی	سہیل اکیڈمی، لاہور	فتاوی اہلسنّت	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۳ھ
الاشباہ والنظائر	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۹ھ	فیضان زکوۃ	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۲۹ھ
البحر الرائق	کوئٹہ	فیضان رمضان	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۲۷ھ

www.dawateislami.net

چندے کے بارے میں سوال جواب	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۲۹ھ	تذکرۂ مجدد الف ثانی	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۸ھ
وقف کے شرعی مسائل	مکتبہ اہلسنت، فیصل آباد ۲۰۰۹ء	امام احمد رضا اور رد بدعات و منکرات	فرید بک سٹال، لاہور ۲۰۰۰ء
کتب السیرۃ		تذکرۂ امام احمد رضا	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۳۹۳ھ
دلائل النبوۃ	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۳ھ	فیضان اعلیٰ حضرت	شبیر برادرز، لاہور ۱۴۳۴ھ
الشفا بتعریف حقوق المصطفی	مرکز اہلسنت برکات رضا، ہند	فیضان صدیق اکبر	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۳ھ
تذکرۃ الاولیاء (فارسی)	انتشارات گنجینہ، ۱۳۷۹ھ	فیضان فاروق اعظم	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۶ھ
تذکرۃ الاولیاء	دار الکتب العلمیہ، ۲۰۱۰ء	فیضان پیر مہر علی شاہ	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۵ھ
الریاض النضرۃ فی مناقب العشرۃ	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۳ھ	سیدی قطب مدینہ	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۱ھ
بھجۃ الاسرار	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۳ھ	تعارف امیر اہلسنت	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۲۸ھ
شواہد النبوت	مکتبہ حقیقیہ، استنبول ۱۴۱۵ھ	تذکرہ امیر اہلسنت	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۲۹ھ
الخصائص الکبری	دار الکتب العلمیہ، بیروت	قوم جنات اور امیر اہلسنت	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۲۸ھ
وفاء الوفاء	دار احیاء التراث العربی، بیروت	**کتب التصوف**	
المواھب اللدنیۃ	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۷ھ	کتاب الزھد لابن مبارک	دار الکتب العلمیہ، بیروت
شرح الشفا	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۱ھ	قوت القلوب	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۶ھ
السیرۃ الحلبیۃ	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۲ھ	التوبیخ والتنبیہ	مکتبۃ التوعیۃ الاسلامیۃ، ۱۴۰۸ھ
جذب القلوب	نوریہ رضویہ پبلشنگ کمپنی، ۱۴۳۱ھ	تنبیہ الغافلین	دار الکتاب العربی، ۱۴۲۰ھ
شرح المواھب	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۷ھ	الرسالۃ القشیریۃ	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۸ھ
جامع کرامات الاولیاء	مرکز اہلسنت برکات رضا، ۱۴۲۲ھ	کشف المحجوب	نوائے وقت پرنٹر، لاہور
سیرت مصطفی	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۲۹ھ	احیاء علوم الدین	دار صادر، بیروت ۲۰۰۰ء
سیرت سید الانبیا (مترجم)	مظہر علم، لاہور ۱۴۲۴ھ	کیمیائے سعادت	انتشارات گنجینہ، تہران
سیر اولیاء (مترجم)	مشتاق بک کارنر، لاہور	عوارف المعارف	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۶ھ
مرآۃ الاسرار (مترجم)	الفیصل ناشران و تاجران کتب، ۲۰۰۶ء	عوارف المعارف (مترجم)	پروگریسو بکس، لاہور ۱۹۹۸ء
اقتباس الانوار (مترجم)	الفیصل ناشران و تاجران کتب، ۲۰۰۹ء	شرح الصدور	مرکز اہلسنت برکات رضا، ہند

www.dawateislami.net

تنبیہ المغترین	دار المعرفہ، بیروت ۱۴۲۵ھ	اولاد کے حقوق	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۲۹ھ
الزواجر	دار المعرفہ، بیروت ۱۴۱۹ھ	بہشت کی کنجیاں	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۲۹ھ
الطریقۃ المحمدیۃ	دار الطباعۃ العامرہ، مصر	جنتی زیور	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۲۷ھ
الحدیقۃ الندیۃ	دار الطباعۃ العامرہ، مصر	مہر منیر	کتب خانہ درگاہ غوثیہ مہریہ، ۱۴۲۳ھ
البریقۃ المحمودیۃ	مطبعہ شرکت صحافیہ عثمانیہ ۱۳۱۸ھ	نیکی کی دعوت	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۲ھ
الکتب المتفرقۃ		فیضان سنت	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۲۰۰۶ء
ادب الدنیا والدین	دار ابن کثیر، بیروت ۱۴۲۳ھ	غیبت کی تباہ کاریاں	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۰ھ
النہایۃ فی غریب الحدیث والاثر	دار الکتب العلمیہ، ۲۰۱۱ء	باطنی بیماریوں کی معلومات	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۵ھ
الاذکار للنووی	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۰ھ	خوف خدا	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۲۶ھ
تہذیب الاسماء واللغات	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۶ھ	بغض وکینہ	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۴ھ
روض الریاحین	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۱ھ	غصے کا علاج	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۵ھ
الروض الفائق	دار احیاء التراث العربی، ۱۴۱۶ھ	ابلق گھوڑے سوار	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۲ھ
التعریفات للجرجانی	دار المنار	آداب مرشد کامل	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۲۶ھ
المستطرف فی کل فن مستظرف	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۹ھ	عاشقان رسول کی 130 حکایات	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۳ھ
لسان المیزان	دار احیاء التراث العربی، ۱۴۱۶ھ	ضیائے صدقات	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۲۹ھ
القول البدیع	مؤسسۃ الریان، ۱۴۲۲ھ	حرص	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۳ھ
الہدور السافرۃ فی امور الآخرۃ	مؤسسۃ الکتب الثقافیہ، ۱۴۲۵ھ	163 مدنی پھول	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۳ھ
الحبائک فی اخبار الملائک	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۰۸ھ	پھوپھی سے ہاتھوں ہاتھ صلح کرلی	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۶ھ
لقط المرجان فی احکام الجان	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۰۶ھ	دعوت اسلامی کا تعارف	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۲۹ھ
افضل الصلوات علی سید السادات	دار النشر، ۲۰۰۰ء	مزارات اولیاء کی حکایات	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۲۳ھ
اعلیٰ حضرت سے سوال جواب	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۲۵ھ	مدنی وصیت نامہ	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۴ھ
ملفوظات اعلیٰ حضرت	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۰ھ	بدشگونی	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۵ھ
فضائل دعا	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۰ھ	**********	**********

www.dawateislami.net

याद दाश्त

दौराने मुतालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़नवान	सफ़ह़ा	उ़नवान	सफ़ह़ा

www.dawateislami.net

याद दाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़नवान	सफ़ह़ा	उ़नवान	सफ़ह़ा

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमा 'रात बा 'द नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले दा 'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ❁ सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए़ मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा 'मूल बना लीजिये।

मेरा मदनी मक़्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ के लिये "मदनी इन्आ़मात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

MC 1286
ISBN
0133010

मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

❁ देहली :- उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली -6, फ़ोन : 011-23284560
❁ अह़मदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अह़मदाबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200
❁ मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा इस्टेट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997
❁ हैदराबाद :- मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786
E- mail : maktabadelhi@gmail.com, Web : www.dawateislami.net